Registered under Act XX of 1847.

सुंदरीतिलक ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संगृहीत ।

जिसको हिन्दीभाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये
क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक श्री म० कु० बाबू रामदीन सिंह ने
प्रकाशित किया ।

"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।
साहबप्रसाद सिंह ने मुद्रित किया ।
१८९२ ई०
हरिश्चन्द्र संवत् ८.

प्रथम बार ९००] [मूल्य २॥) रुपया ।

भूमिका ।

—*—

संवत् १९२६ में गोलोकवासी बाबू हरिश्चन्द्र जी की यह इच्छा हुई कि सवैया का एक संग्रह तयार कर के छपाया जाय । और उन्हों ने कवि मन्नालाल जी से उसे प्रकट किया । कुछ संग्रह भारतेन्दु ने स्वयं किया और कुछ सहायता पं० हनुमान कवि से मिली, निदान यह कि आदि में ४६ प्राचीन वो नवीन कवियों के २६६ सवैया संगृहीत हुए और बाबू साहिब ने ग्रंथ का नाम सुन्दरीतिलक रखकर छपवाया । उस के उपरान्त पण्डित मन्नालाल (द्विज कवि) ने कुछ सवैयायें और संग्रह कर के दूसरी बार मुद्रित कराया कि जो भारतेन्दु जी की इच्छा के विरुद्ध हुआ और अन्त में भारतेन्दु ने कईएक छापनेवालों को उस के छापने का अधिकार दिया और इसी पर कवि मन्नालाल से कुछ दिन खटपट हो गई थी । बाबू हरिश्चन्द्र जी ने सुन्दरीतिलक की आकृति को और बढ़ा कर छपवाया । जिस समय यह सुन्दरी तिलक शिवसिंह जी को मिला था उस समय इस में ६७ कवियों की कविता थी । सम्वत् १९४२ में जब पं०मन्नालाल ने सुन्दरीसर्वस्व छापा तो उस में उन्हों ने लिखा कि—

दोहा—पहले मैं कीन्ह्यो रह्यो, तिलक सुन्दरी ह्रस्व ।
भूप प्रताप बिनोद हित, अब सुन्दरि सरवस्व ॥

जिसे देख कर बड़ा आश्चर्य्य हुआ क्योंकि उस के पहिले कोई नहीं जानता था कि पं० मन्नालाल ने सुन्दरीतिलक का संग्रह किया है । जहां तक जांच की गई सुन्दरीतिलक के संग्रहकर्त्ता भारतेन्दु ही ठहरते हैं, और वह नीचे लिखे हुए प्रमाणों से सिद्ध है:—

१—पं० व्यास रामशङ्कर शर्म्मा ने कश्मीर कुसुम में भारतेन्दु रचित ग्रन्थों की जो सूची दी है उस में सुन्दरीतिलक भी है ।

२—शिवसिंहसरोज में लिखा है कि "बाबू हरिश्चन्द्र बनारसी कृत सुन्दरीतिलक नाम संग्रह जो सं० १९३१ में बनाई गई और जिस में ६७ कविलोगों के सुन्दर सवैया शृंगार रस के हैं ।

३—कविवचनसुधा इत्यादि पत्रों में बाबू हरिश्चन्द्र जी की ओर से विज्ञापन मुद्रित हुआ था कि बिना मेरी अनुमति के अब कोई सुन्दरी-

तिलक न छापै, और यह विज्ञापन उस समय दिया गया कि जब लखनऊ वो कानपुर में सुन्दरीतिलक छपी थी और उस पर उन का नाम न रख कर प्रकाशक ने अपना ही नाम लिखा था।

४—अन्त में बाबू हरिश्चन्द्र जी ने एक विज्ञापन इस आशय का दिया था कि जो सवैया सुन्दरीतिलक में छूट गये हैं उन सब को सुन्दरी-सिन्दूर में संग्रह करूंगा।

निदान यह कि सुन्दरीतिलक के संग्रहकर्ता सब प्रकार से बाबू हरिश्चन्द्र ही थे न कि पं० मन्नालाल या कोई और अन्त में जो सुन्दरी-तिलक छपा था उस में ६९ कवियों के ४२७ सवैया थे, परन्तु इस सुन्दरी तिलक में १४५५ सवैया छापे गये हैं। यद्यपि बाबू साहिब के संग्रह वाले अनेक सवैया छूट गये हैं परन्तु जो हो गया उसी को बहुत समझिए, शरीर रहा तो दूसरी वार सब दोष दूर कर दिये जायंगे।

प्रकाशक।

विरह निवेदन।

कवियों की नामावली।

८ सवैये में—

चन्दन चन्द गुलाब के नीरन तोख करै कछु गंग की धार है।
औधहरी कुल आलम मै अजवेस लखी जसवंत विचार है॥
केशव श्रीभगवंत किशोर वै नागर है पै नवीन अचार है।
गोकुलनाथ जू की ठकुराई की शोभ सुमेरहरी वे शुमार है॥१॥
जानती हैं छितपाल भे भूपति जादव के सरदार बने हो।
है कमलापति श्री जगदीश जू मंडन माथुर लोग घने हो॥
जे कविराज कविन्द धुरंधर ते रसिकेस कहैं क्या गने हो।
ए हो दयानिधि देवकीनंदन प्रेमिन पै रसवीर सने हो॥२॥
राखति है तुमही मै अलीमन हे गिरधारन ग्वाल महा कवि।
अम्बिकादत्त सनेह किया हम सुंदर श्री घनस्याम महा छवि॥
है कै चतुर्भुज श्री घनआनंद व्योग तें मुंदरी कंकन की फवि।
ताहर केहर श्री हरि कालिका औध मुमारख कूबरी कौ अब॥३॥
हे द्विजदेव दरिद्र द्विजानतें दूर करौ बलदेउ के भैया।
देव ता दास है राउरे दूलह दत्त दिनेस समान समैया॥
प्रेमिन वल्लभ होजू दामोदर तेज दिवाकर नाथ सहैया।
नौनिधि नूर नारायन दायक नंद के नंदन प्रान बसैया॥४॥
जादौ नरेस नरेंद्र मृगेश हौ नीके नरोत्तम श्री परमेस।
ब्रह्म के बोधा सदा बिजयानंद बेनी प्रवीन हौ श्री पजनेस॥
प्रेमसखी के पुखी परसाद है पारस प्रेम प्रताप असेस।
शंभु कृपा नृपशंभु के सेवक सांचे हैं श्रीधर श्री हरिकेस॥५॥
जो रघुनाथ सुई रसिया रसरान यो भाषत है ऋषिनाथ।
जानत या रस कौ रसखान रसीले सुभान अमीरन साथ॥
है प्रगटी पदमाकर तें लैछ मों मतिराम सुरामहि हाथ।

श्री मणिदेव[100] की रीति महेश[101] जू श्री हरिदास[102] न के सतसंगी ।
लाल[103] मुकुंद लला[104] पद की मकरंद[105] है मोतियराम[106] को अंगी ॥
सेखर[107] सो बिरहा मे कछू[108] नहिं संकर श्रीशिव सौह अंनगी ।
साहिबराम[109] सिरोमणि[110] श्री शिवलाल[111] कहो करुणा मै अभंगी ॥७॥
सीय के हेतु पठ्यो हनूमान[112] औ श्री रघुराज[113] समुद्र पठायो ।
जंगल की उपजी तुलसी[114] सो निवाज[115] कै श्री महाराज[116] कहायो ॥
राम गुपाल[117] की कीरत कौ हरिचंद[118] जू है नर सिंह[119] लखायो ।
का कहिए गुन रावरे सावरे दै कै बियोग संजोगिनि तायो ॥८॥

कवियों का नाम।

(अ)

१ आलम.
२ अलीमन.
३ अजबेस.
४ औधहरी. (पं० अयोध्यासिंह).
५ पं० अम्बिकादत्त व्यास (सुकवि)
६ अजान (नकछेदी तिवारी)

(क)

१ केशव.
२ किशोर.
३ कंकन.
४ कविराज.
५ कमलापति.
६ कविन्द.
७ कालिका.
८ केहर.

(ग)

१ गोकुलनाथ.
२ ग्वाल.
३ गंग.
४ गिरधारन. (बाबू गोपालचन्द्र श्रीहरिश्चन्द्र जू के पिता.)
५ गुलाब.

(घ)

१ घनआनद.
२ घनस्याम.

(च)

१ चन्द.
२ चन्दन.
३ चतुर्भुज.

(छ)

१ छितपाल. (राजा माधोसिंह अमेठी.)

(ज)

१ जसवंत.
२ जगदीस.

(ठ)

१ ठाकुर.

(त)

१ तुलसी.
२ तोष.
३ ताहर.

(द)

१ देव.
२ द्विज. (पं० मन्नालाल.)
३ द्विजदेव. (राजा मानसिंह.)
४ दास. (भिखारीदास.)
५ दुलह.
६ दत्त.
७ दामोदर.
८ दिनेस.
९ दिवाकर.

ए अलि या बलि के अधरान में आनि चढी कछू माधुरई सी । ज्यौं पदुमाकर माधुरी त्यौं कुच दोउन पैं चढती उनई सी ॥ ज्यौं कुच त्यौंहीं नितंब चढे कछू ज्यौं ही नितंब त्यौं चातुरई सी। जानी न ऐसी चढा चढि में केहि धौं कटि बीच हीं लूटि लईसी ॥ २० ॥

मनोहर अंग की भाठी रची सिसुताई जराई अनंग कलार । भने नृपसंभु जू दीपति ज्वाल अँगार से राजत लाल के हार ॥ लसैं सिरवार ज्यौं धूम की धार धन्यो तरें भाजन नाभी सुढार । रुमावली कंचन कुंभ उरोजनि तैं मनो च्वै चली आसवधार ॥ २१ ॥

स्वेद को भेद न कोऊ कहै व्रत अँखिन हूं अँसुवान को धारो । त्यौं पदमाकर देखती हौ तन को तन कंप न जात सम्हारो ॥ ह्वै धौं कहा को कहां यों गयो दिन द्वै कहीं ते कछु ख्याल हमारो। कानन में बसी बांसुरी की धुनि प्रानन में बस्यो बांसुरीवारो ॥ २२ ॥

सखि तैंहूं हुती निसि देखतही जिन पैं वे भईहीं निछावरियां । जिन पानि गह्यो हुतो मेरो

तबै सब गाय उठीं ब्रज डावरियां ॥ अँसुवाँ भरि आवत मेरे अजौं सुमिरौं उनकी पग पाँवरियां। कहि को हैं हमारे वे कौन लगैं जिन के सँग खेली ही भांवरियां ॥ २३ ॥

देखिये आनि कछू दिन तें उर तें उठे व्याधि के अंकुर वारे। कीजिये बेगि उपाय न तौ दुख पाई हैं आगे भये पर भारे ॥ हे प्रिय सेवक प्रान तुम्है सुख देहैं अनोखे बिरंचि सँवारे। बीरअधीर क्यौं होत खरी अरी पीर सहैंगे बिलोकनं-वारे ॥ २४ ॥

छाती नितंब लखे दुलही के सखीन हूँ की मनसा ललचानी। ऐसी नबेली को नायक हूजैरी आपुस मै सब यों बतरानी ॥ सुंदर जोबन रूप सराहत सुंदरी आँखिनहीं में लजानी । दीठि बचाय सखीन हूँ की निज देह को देखि उहो मुसकानी ॥ २५ ॥

नवोढा।

गौने के द्यौस कहै मतिराम सहेलिन को जुरि कै गन आयो। कंचन की बिछिया पहिरा-वत प्यारी सखी परिहास बढायो ॥ प्रीतम श्रौन

समीप सदाँ बजैंयों कहिकै पहिलैं पहिरायो। कामिनी कौल चलावन कों कर ऊंचो कियो पै चल्यो न चलायो ॥ २६ ॥

दिसि पूरब पछिम दाहिने बायें अधोरध संक न मेली फिरै। सखि सौति के पीछे लगै छन जैसें गुरायिनी के संग चेली फिरै ॥ टहरै ठहरै नहिं सेवक यों खर पौननि ज्यौं बन बेली फिरै। मनमोहन के डर मै घर मै अलबेली अकेली अकेली फिरै ॥ २७ ॥

अब तेहूं कहै तिहिं भाँति की बातें कठोर हिये की भई तौ कहा। हरिनी कों चहैं हरि संग खेलायो अनूझ में बुद्धि गई तौ कहा ॥ बिधि ऐसियै जो रचि राखी अली बिसबासिनी आड लई तौ कहा। सेवकाई भली हमै सौतिही की दया तोहि दई न दई तौ कहा ॥ २८ ॥

सुख आकर मानै निसाकर कों न दिवाकर तें अनुरागी रहै। तजि लाज के ब्याज परोसिन हूं कों जेठानिन तें ज्वर जागी रहै ॥ कबि सेवक रूठि सहेलिन सों सुठि सासु के प्रेम न पागी रहै। चित आनि कै बानि परी धों कहा नित सौति के सासन लागी रहै ॥ २९ ॥

बैरिनि मेरी किते गईं वे कर छोडि उन्हें क़िन देखन तूँ दै। यों कहि कै उचकी परजंक तें पूरि रही दृग बारि की बूंदै॥ जोरनं देति नहीं मुख सों मुख छोरन देति न नीवी की फूँदै। देव सकोचन सोचन तें मृगलोचनी लोचन लाल के मूंदै॥३०॥

लै परजंक निसंक नवेली कौं अंक मै लाय लगे गहि गूँमन। ऊरुन सौं कसिकै कवि संभु सुजान कौं भेटि लगे मुख चूँबन॥ गोरे करेरे तरेरे उरोजन दै कर लागे लला झुकि झूँमन। गूँजन लागो गरो गरबीली को नीर भरी पुतरी लगि घूँमन॥ ३१॥

बिथुरी अलकैं झलकैं स्रम बारि सखी को गहैं कर हालत सी। दृग नींद भरे मुख ऊची उसास सुंगध दसों दिसि चालत सी॥ रघुनाथ मतंगज की गति गोपि गहैं पिय पैं रिस पालत सी। तिय जागी चली रति मंदिर तें सब सौतिन के उर सालत सी॥ ३२॥

जामिन जागी जगाई है लालन नींद लखो अँखिया मै रही भरि। सेज सँवारन पाई न फेरि कै घेरि कै आलस आनि रही परि॥ सोवन देहु जू सोभा लखो रघुनाथ खरे पलिका के तरे हरि।

ऐसी लसै बिधि नै थिरकै मनो राखी है बारिद मे बिजुरी धरिं ॥ ३३ ॥

सांझही सेज लौं ल्याई सखी नख तें सिख भूखन साज चुनी को। यौं हुलस्यौ लखि प्रान पिया जिमि जोत मिलें मन होत मुनी को ॥ लाज गडी मुख खोलै न बोलै कियो रघुनाथ उपाव ढुनी को। कोटि रँगे नहिं एक लगै जिमि सूम के आगे सयान गुनी को ॥ ३४ ॥

जाहि न चाह कहूं रति की सु कछू पति कौं पतियान लगी है। त्यौं पदमाकर आनन मे रुचि कानन भौंह कमान लगी है ॥ देति तिया न छुवैं छतिया बतिया न मै तौ मुसुकानि लगी है। पीतमै पान खवाइबे कौं परजंक के पास लौं जान लगी है ॥ ३५ ॥

मुख चुंबन मे मुख लै जो भजै पियं के मुख मे मुख नायो चहै। गलबाहीं गोपाल के मेल-तहीं मुख नाहीं कहै मनतें न कहै ॥ नाहिं देति नेवाज छुवै छतियां छतिया मे लगाय तें लागी-रहै। कर खैचत सेज की पाटी गहै रति में रति की परि पाटी गहै ॥ ३६ ॥

आई जो चालि गोपाल घरें ब्रजबाल बिसाल

चुरीन सों मांगती हैं। सब देखत देव अनोखे नये बिछियान की जीभें न लागती हैं ॥ सुकि सारिका तूती कपोती पिकी अधरातक लौं अनुरागती हैं। छन एक छमा करि देखो इतै घरहाँई हहा अबै जागतीं हैं ॥ ४४ ॥

बिपरीति रची रति दंपति यों जहां छाय रहे बँगला खसके। कबि चन्द दुहून के मोद बढ्यो कहि सो कबि बृन्द कथा न सके ॥ मुख चूँमती भावती भाँवतें को अरु देती उरोजन के मसके। रस के उपजावत पुंज खरे पिय लेत परे रस के चसके ॥ ४५ ॥

बिपरीति रची रति राजिवनैन सों राधिका राजति ता पल में। झपकैं पलकैं बिथुरी अलकैं अरु हार लुरें मुकता गल में ॥ कबि सुंदर झांई दोऊ कुच की झलकैं इमि श्याम उरस्थल में। छतिया तर तूंबन दे मकरध्वज मानो तिरे जमुना जल में ॥ ४६ ॥

सेज समीप सधी रुचि दंपति कुंज कुटी ब्रज भूपर री। कबि आलम केलि रची बिपरीति मनोज लसे दृग दूपर री ॥ सरसीरुह आनन तें श्रम बिन्दु परैं ने जसोमति सूपर री। बरसैं

बरसाने की गोरी घटा नँदगाँव के साँवरे ऊपर री ॥ ४७ ॥

श्रीमनमोहनै राधे मिली बिपरीति रची रति की परनाली । हार रहे न बिहार समय कबिराज पगे रस में बनमाली ॥ सौंधे सनी सुथरी बिथुरी झलकैं अलकैं हरि के उर आली । मानो कुटुंब समेत सहेत फिरै जमुना जल पैरत काली ॥ ४८ ॥

दमकैं दुति लोल तर्योन न की मुसुकात में गोल कपोलनि पैं । छबि केसरि की छहरै तन तें कढ़ि बाहिर सेत निचोलनि पैं ॥ बिपरीति में बेनी रमै ललना लटैं यों ह्वै लुरैं द्दग लोलनि पैं । मनो फन्द से ह्वै मखतूहल के डारै अहेरी मनोज ममोलनि पै ॥ ४९ ॥

केलि करैं बिपरीत समय हरि मन्द भये घुघरू सुर भूपर । बेंदी जराय की छूटी ललाट तें टूटी परी हरयें हरि जू पर ॥ ब्रह्म भनै कबरी कर छोर बिराजत यों द्दग चंचल दूपर । पूंछि पसारि मनो फनिराज मुयो मनि काज मयंक के ऊपर ॥ ५० ॥

कहिकै रस की बतियाँ लहि कै रति के

सुख कों मन रंजन सों। बिपिरीति मचाय रही बहु-चाय भरी गही गींवैं सु पंजन सों ॥ मनिदेव कहैं इमि बेनी को छोर लुरै लगि नैन सु अंजन सों। लखु आय अली अनुराग रई मनु खेलति नागिनी खंजन सों ॥ ५१ ॥

करि कै बिपिरीति थकी ललना पिय के ढिग यों अति भाय रही। झपकीं पलकैं हनुमान कहै रति के मनहूँ कों लुभाय रही ॥ लट एक लुरी मुख तें कुच पैं सुभ यों स्रम स्वेद गिराय रही। मनु ब्यालिनि चंद तें लैकै पियूष गिरीस के सीस चढाय रही ॥ ५२ ॥

रति रंग छकी चख मूंदति ज्यों ज्यों त्योंत्यों मनमोहन चोपत से। कबि बेनी हहा करि हाँसी के हाँस जगावत जागैं न कोपत से ॥ कर मंडित मोतिन के गजरा दृग मीडत आनन ओपत से। अरि कोलन कों पकरे मनो तारे कलानिधि भूपत सौंपत से ॥ ५३ ॥

भोर भये तकिया सों लगी तिय कुंतल पुंज रहे बगराय कै। कंजन से करके तल ऊपर गोल कपोल धरे अलसाय कै ॥ आनन पै बिलसै रद की छबि श्रीपति रूप रह्यौ अति छाय कै। मानहुँ

राहु सों घायल कै बिधु पौढो है पंकज के दल आय के ॥ ५४ ॥

कांम कला करि कै बनिता पलँगा पर पौढि रही अलसाय कै। त्यों पदुमाकर स्वेद के बुंद रहे मुकताहल से तन छाय के ॥ बिंदु घने मेहँदी के लसैं कर ताकर पैं रह्यो आनन आय कै। सोयो है चंद मनो अरविंद पैं इंद बधून के बृंद बिछाय कै ॥ ५५ ॥

प्रात समै रति मानि भटू धुनि गंग सिखि की हिये खटकी है। चाय भरी अलसाय नितंबिनि बातन मोहन सों अटकी है ॥ उन्नत कै कर जोरत बाँह बढी छबि यों मुख के तटकी है। कंज सनाल के कुंडल मे मनो सीखत चंदकला नट की है ॥ ५६ ॥

रेख कछू कछू अंजन की कछू कंजन की अरुनाई रहे भ्वै। आलस लाजि पगे रघुनाथ कछू कछू चंचलता कों रहे छ्वै ॥ ऐसे लखे दृग प्यारी के प्रातहि भौंह समेटि रही उपमा है। बेलि सिंगार की द्वै दल के तर खेलत खंजन के चिगुला द्वै ॥ ५७ ॥

बाल उठी रति केलि किये कबि सुंदर सोहत अंग रसोंहैं। आरसी मे मुख देखि सकोचन सोचन लोचन होत लजोंहैं ॥ लाल हँसि इंहिं बीच रही ललना पिय कों तकि के तिरछोंहैं। पोंछि कपोल अँगोछति ओठ अमेठति आँखिन ऐंठति भौंहें ॥ ५८ ॥

केलि कलोल के रंग मे सुन्दरी पीतम संग रमी रजनी है। नेह सनी दरसाति भटू अरसाति प्रभा सरसाति घनी है ॥ औरही सोभा भई दृग आजु अनंतन की सिर मौर गनी है। नाह के नेह की सोहै मनी पटलाज मे चारू छनी सी बनी है ॥ ५९ ॥

पिय के संग राति जगी सुख सों छबि अंग अनंग की छाय रही। रघुनाथ न बानक जाय कही बनी जैसी कछू सुखदाय रही ॥ तकिया पर बोझ दये भुज मूल को बैठी यों भोरही भाय रही। कर लै कै बिरी मुख लाय रही अरसाय रही औ लजाय रही ॥ ६० ॥

सोवन देहु जगाओ इन्हैं मत जो पै लला जिय बात लोभानो। जागे तें वा छबि सों नहीं

भेंट खरे रघुनाथ लखौ लखि जानो ॥ कैसी बिराजति है पलिका दृग नीर भरे अति आलस सानो । खासी मनोज महीपति की यह बासी धरी नवला सी है मानो ॥ ६१ ॥

भोर जगी वृषभानलली अलसे बिलसे निसि कुंजबिहारी । केसव पोंछत अंजन ओरन पीक की लीक गई मिटि कारी ॥ नेक लग्यो कुच बीच नखच्छत देखि भई दृग दूनी लजारी । मानो बियोग वराह हन्यौ जुग सैल के संधि मैं इंगवैडारी ॥ ६२ ॥

अलसोंहें से अंग लजोंहें से नैन कछूक खुले से मुदे बर हैं । परि पीक की लीकें कपोल रहीं रिखिनाथ अनूपम ता घर हैं ॥ नखरेख उरोजन पैं झलकें छलकैं छबि त्यों मुकता लर हैं । धरे सीस कला ससि की जुत गंग मनोहर दोऊ मनोहर हैं ॥ ६३ ॥

सखि भोर उठी बिन कंचुकी कामिनी कान्हर तें करि केलि घनी । कबि ब्रह्म भनै छबि देखत हीं बलि जाति नहीं मुख तें बरनी ॥ कुच अग्र नखक्षत नाह दियो सिरनाय निहारति यों सजनी ।

ससिसेखर के सिर तें सु मनो निहुरे ससि लेत कला अपनी ॥ ६४ ॥

छूटी लटैं लटकैं सिरहाँने के फैलि रह्यौ मुख स्वेद को पानी । सोहैं नए नख दाग उरोजन ओठन की छबि है मुरझानी ॥ पौढी पिया के गरे भुज मेलि कै केलि कै प्यारी नेवाज अघानी । नाह की बाँह दियें तकिया सुख सोवै तिया छतियाँ लपटानी ॥ ६५ ॥

साम तें भोर लौं प्यारे जगाई जगैबे के ब्यौंत कछू फिर नाधे । सोवत ही मिसु खेलन के कर दोऊ लै फूल की माल सों बाँधे ॥ सेज ही मै अंगिराति जम्हाति अनेक तमासे बतावति राधे । आधे खुले दृग आधे मुदे अखरा मुह तें कढे आधे ही आधे ॥ ६६ ॥

छतियाँ छतियाँ सों लगाय दोऊ दोऊ जीमे दुहूँ के समाने रहैं । गई बीति निसा पै निसा न भई नये नेह में दोऊ बिकाने रहैं ॥ पट खोलैं नेवाज न भोर भयें लखि द्यौस कों दोऊ सकाने रहैं । उठि जैबे कों दोऊ डेराने रहैं लपटाने रहैं पट ताने रहैं ॥ ६७ ॥

बाँह दुहूँ की दुहूँ के उसीसे दुहूँ हिय सों हिय गाढे गहे.हैं। दूसरी बाँह दुहूँ दुहूँ ऊपर दोऊ नेवाज जूं नेह नहे हैं॥ सोंहैं दुहूँ के मिले मुख चंद दुहूँन के स्वेद के बुंद बहे हैं। खोइ कै दोऊ मनोज बिथा श्रम अंक समोइ के सोइ रहे हैं॥ ६८ ॥

दीपक जोति मलीनी भई मनि भूषन जोति की आतुरिया है। दासन कौंल कली बिकसी निज मेरी गई लगि आँगुरिया है॥ सीरी लगैं मुकताहल तेऊ कपूर की धूरिन सों पुरिया है। पौढे रहौ पटताने लला नाहिं बोली अबै चिरिया चुरिया है॥ ६९ ॥

राधिका स्याम लसैं पलिका पर कापर जात दसा कहि हाल की। आपने हाथ सों रीझि कै भाँवती प्रीति सों अंजुली जोरी गुपाल की॥ ठाकुर तामै धर्‍यौ मुख बालनै को बरनै उपमा इहिं ख्याल की। पाननि मै तिय आनन यों लसै चंद चढ्यो मनो कंज की नाल की॥७०॥

सोवत तें जगी सुन्दरी प्रात उठी अलसाति उतंग उरोज सों। देव दुहूँ कर कंचुकी दाबि

कसी रसना उकसी चित चोज सों ॥ सारी सँवारि सवाँरति बार जैंभौंन हरे वह ठोढ़ी के ओज सों। इंदु सुधा भरि कै दरक्यो मनों मूद्यो सुनारि सनाल सरोज सों ॥ ७१ ॥

परजंक परी पति सों रति कै रति मै सरसी मति मै सरसै । सब छूटि कै वार सिंगार गये तऊ कोटि सिंगार सबी दरसै ॥ श्रम कंकन सिंह चहूँ मुख पैं ढरकैं छवि यों उपमा दरसै । जनु राहु के फंद तें छूटि सुरिन्द ह्वै मानहुं चंद सुधा बरसै ॥ ७२ ॥

केसि बार के मध्य फस्यौ उकस्यौ बिकस्यौ बिलस्यौ अरबिन्द नयो । किधौं कोर के पन्नन की परभा बिच सुन्दर आरसी रूप छयो ॥ बिथुरे कच बीच बिराजत आनन संभु नयो उपमा न दयो । डर डारि किधौं अति साहस कै तम वृन्द मै चंद समाइ गयो ॥ ७३ ॥

रस रंग भरे अँग अंग पिया पिय सोइ गये सुख दै सुख लै । इहिं बीच जगे हरि जू उघरी अँगियाँ पर डीठि गई परि कै ॥ कुच ऊपर देख्यो नखच्छत सुन्दर आँठ को आँक सो

ऐसो लसै । मनहू मनमथ्थ के हाथी चढ्यो सु महावत जोबन अंकुस लै ॥ ७४ ॥

सोवंतही रति केलि किये पति संग तिया अतिही सचु पाये । देखि सरूप सखी सब सुन्दर रीझि रहीं ठगि सी टकुलाये ॥ कंचुकी स्याम सजे कुच ऊपर छूटी लटैं लपटी छबि छाये । बैठ्यो है ओढ़ि मनो गज खाल महेस भुजंगनि अंग लगाये ॥ ७५ ॥

बलि जाँउ बिचच्छन बेगि बिचार बिचित्रित गाय चरैबो करौ । सुखदान सुजान सबै घर की प्रन पालन प्यास बुझैबो करौ ॥ सरदार सदा चित चारु चढ़ीं बडी आँखिन आन रिझैबो करौ। हित हेरि हमार हमारे हहा इहिं बेर मे बालम अइबो करौ ॥ ७६ ॥

आजु कहा तजि बैठी हौ भूषन ऐसेही अंग कछू अरसीले । बोलति बोल रुखाई लिएँ मति राम सनेह सुने तें सुसीले ॥ क्योंन कहौ दुख प्रानपिया अँसुवाँ न रहे भरि नैन लजीले । कौन तिन्है दुख है जिन के तुम से मन भाँवन छैल छबीले ॥ ७७ ॥

रैन जगे तुम काहू के साथ लहे रति चैन भए अति आरसी। रावरे ओठ रह्यो रमि भौंर सो मेरे हिये मैं गडावत आरसी॥ नेकुन आवति लाज अजौं हनुमान वहै तिय नैनन आरसी। बातैं बनावत काहे लखौ किन हाथ के कंकन कों कहा आरसी॥ ७८॥

भोर भएँ मनभाँवन आए बनी बिन डोरन हीं उर माल है। प्रानपियारी रही है निहारि न रूखेई बैन कहे न रसाल है॥ नेकु लला ढिग बैठन दीन्हो तिया एतनेहीं मे कीन्हो निहाल है। बाँहैं गही जबहीं तब पै भईं भौंहैं तिरीछीं भए दृग लाल हैं॥ ७९॥

घूमत नैन कढै मुख बैन न झूमत नींद भरे अलसाने। अंजन ओट महाउर भाल मरू करि संभु परो पहिचाने॥ गोद गहो तिनहीं जिन तैं सब रैन बिनोद करे मन माने। पाँयन जाय परो तिनहीं के रहे जिन के हरि हाथ बिकाने॥८०॥

भोरहीं न्यौति गई ती तुम्है वह गोकुल गांव की ग्वालिनि गोरी। आधिक राति लों बेनीप्रबीन कहा ढिग राखि करी बरजोरी॥ आवै हँसी मोहि

देखत लालन भाल मे दीन्हो महावर घोरी। एते बडे व्रजमंडल मे न मिली कहूँ मागेहूँ रंचक रोरी ॥ ८१ ॥

देव जू जो चित चाहिए नाह तौ नेह निबाहिए देह हर्‍यो परै। जो समुझाय सुझाइए राह अमारग मे पग धोखें धर्‍यो परै ॥ नीके में फीके ह्वै आँसू भरो कत ऊंचे उसास गरो क्यों भर्‍यो परै। रावरो रूप पियो अँखियान भर्‍यो सो भर्‍यो उबर्‍यो सो ढर्‍यो परै ॥ ८२ ॥

आए कहूँ रति मानि लख्यो तिय के असुवाँन की धार चली ह्वै। देखि कहा रघुनाथ कह्यो तो कही सकुचें इमि चातुरता छ्वै ॥ रावरे को मुख चंद चितै ए कुमोदनि आखें अनंद महा भ्वै। ही मे न बंद सकीं करि फूल तें ऊपर ह्वै मकरंद चल्यौ च्वै ॥ ८३ ॥

जावक सीस धरें उठि भोरही पीव कहूं ते प्रिया ढिग आयो। कौने दियो यह भाल मै लाल गुलाब को फूल कहौ कहाँ पायो ॥ यों कहि मागति खेलिबे कों लइ बावरी बातन ज्यो बहलायो।

त्यों हँसिके मुख सों मुख छ्वाय लिलार सों प्यार लिलार लगायो ॥ ८४ ॥

रैन जगे रतिरंग रँगे परभात भएँ पिय आये गये री । ऊँचे उरोजन खोज लगे उर मौज मनोज के चोज दये री ॥ बूझिबे कों नव बाल रसाल के ओठन लों अखरा उनये री । पौरि ते दौरि के प्यारे ने प्यारी के पानिन लोयन मूंदि लये री ॥ ८५ ॥

भोरहीं आवत नौलकिसोर बिलोकत ही ललना उठि दौरी । बेनीप्रवीन दोऊ कर सों गहि गाढ़े कै लागि गई लडबौरी ॥ जानै कहा ये अजानै सबै मे देखाय हों लै सखियान कों ओरी । साँवरे रंग लगे हरि रावरो साँवरी ह्वै गई पीत पिछौरी ॥ ८६ ॥

अंकित चारु चुरी बलया मलयागिर जात लगो लखि लीजे । सिंदुर बिंदुर बानके चिन्ह चुनी जरि केसर कुंदन कीजै ॥ चूर ह्वै लागि रह्यौ कन सो जसवंत जू पूरन प्रेम लहीजे । राख्यौ भुजा मै छपाय जराय को कंकन सो हम कों पिय दीजे ॥ ८७ ॥

नाह की छाती मै देखि नखच्छत नारि नवोढ कह्यो पुनि ऐसें । सुंदर बागे कि चोली मै भूलि कै ल्याएहो चंद्रकला धरि कैसें ॥ खेलिबे कों हम कों यह देहु जू यों सुनि कै हरि दौरे हरेंसें । लाय लई उर सों हँसि यों गसि दोऊ रहे कसि राखिये जैसें ॥ ८८ ॥

लाल के भाल मै पावक सी अवलोकति जावक जोति जगाए । दौरि कै गोरी भरे अँसुवा जसवंत सखी सो कहे चितलाए ॥ दीजे हमै जू बताय हमारी सों बूझति तोहि हितू हित पाए । काल तो द्वैज को टीको कह्यो अब आजु कहो ये कहां हैं लगाए ॥ ८९ ॥

अंजन बिंदु बन्यो अधरानि मै मै छवि आजु अनूपम पेखी । तो पुतरीन की छाँहँ परी ढरि ओर की और अली लखि लेखी ॥ जो यह छाँह तौ नाह कहा यह है नखरेख हिये अवरेखी । लाय लई हँसिके हिय मै कहि तेरी सों तेरी है तें अब देखी ॥ ९० ॥

आये कहूँ रति मानि कै भोरही भूषन भेष सबै बदले हैं । यों पिय को तकि रूप तिया दोऊ

बोली कछू न बुरे की भले हैं ॥ आँखिन छोर तें आँसू गिरे कहि सुंदर काजर सों मसले हैं। सो छबि यों अरबिंदन तें अलि के मनो चेटुवा छूटि चले हैं ॥ ९२ ॥

राति कहूं रमिके मनमोहन प्रात बड़े उठि गेह कों आये। देखतही उर माँह नखच्छत बाल के लोचन लाल सुहाये ॥ भूलि गयो रस रोस वढ़ो उर बैन कहे न कछू मन भाये। आँसू कढ़े दृग माँहि जबै अँगिराय जम्हाय जम्हाय छिपाये ॥ ९३ ॥

हार बड़े औ उरोज गड़े उर यों निरख्यो ढिंग प्यौ परभात है। ताही समै नख ते सिखं लौं अति तीछन ताप गयो चढ़ि गात है ॥ चित्र मै काढ़ी सी ठाढ़ी ठगी सी रही कछु देख्यौ सुन्यौ न सुहात है। रोचन से भए लोचन लाल सकोचन ते न कही कछु बात है ॥ ९४ ॥

मुख आरसी मै लखि आयो करो सखि सेवक यों कहि आली भई। धन रावरी बावरी तें बढ़ी है गुन जोबन जोति निहाली भई ॥ समुझो समुझाओ कहा अब मै सिखिं लाज मनोज

प्रनाली भई । झखियाँ सम सोच सनी इनकी अँखिया दोऊ रोवत लाली भई ॥ ९५ ॥

आइये बैठिये आज अजौं अँखियानि तें आरस होत न हीनो। साँवरे अंग मे साँवरोई कछू आज बिराजि रह्यौ पट झीनो ॥ भाग तें आए हौ भौन हमारे पै काहू सिंगार भलो यह कीनो। ओठ मै अंजन रेख दई अरु भाल मै लाल महावर दीनो ॥ ९६ ॥

जाही पै आए हौ मान महारति साँझ समै पुनि ताही पै जैहो। आवत प्रातहि योंही चले घर मेरे यहाँ पै कहा सुख पैहौ ॥ चिन्ह लगे गर में कुचं दोउ के मोहि भले फिरि अंक मिलैहौ। देखहु क्यों न बनाय कै अंक कहांलों कलंकी कलंक छिपैहौ ॥ ९७ ॥

पीतम आये प्रभात तिया मुसकाय उठी दृग सों दृग जोरे। आगे ह्वै आदर कै मतिराम कहे मृदुबैन सुधारस बोरे ॥ ऐसे सयान सुभायन हीं सों मिली मनभावन सों मन मोरे। मानगो जान सुजान तबै अँगिया की तनीं न छुटी जब छोरे ॥ ९८ ॥

नख ते सिखलों लखि मोहन को तन लाड़िली लोटिन प्रीठि दई। कवि बेनी छबीले भरी अँकवार पसारि भुजा करि नेह मई॥ यह गुंज की माल कठोर अहो रहो मो छतियाँ गड़ि पीर भई। उचकी लची चौंकी चकी मुख फेरि तरेरि बड़ी अँखियाँ चितई॥ ९९॥

भोरही भाँवतो आनि कह्यो तिय गैल ह्वै नैन किये सकुचौंहें। लाल लिलार लला को लखे गए लोचन ह्वै ललना के ललौंहें॥ डोरन हीं बिनहार हिये लखि दूती की ओर तके सतरौंहें॥ पाँय अँगूठे खरी छिति छोलति बोलति है न चितौति है सौंहें॥ १००॥

साहस हूं न कहूं दुख आपनो भाखे बनै न बने बिन भाखें। त्यों पदमाकर यौं मग में रँग देखति हौं कब कीं रुख राखें॥ वा बिधि साँवरे रावरे कौन मिलै मरजी न मजान मजाखें। बोलनि बानि बिलोकनि प्रीति की वे मन वे न रही अब आँखें॥ १०१॥

आए हो मेरे मया करि मोहन मोहनी मूरति मैन मई है। आरस सों रस सों अनुराग सों

वाही कि दीठि सों दीठि छई है ॥ रावरे ओठन अंजन देखि के मीरन मो मति तेह तई है । मानहूं आन तें बोलिबे कों वहि भौंवती ने मुख छाप दई है ॥ १०२ ॥

खंजन को परदा करिकें अलि कंज दुवो पखुरी पर रागें । काम तरोवर साख उए ससि बाल बिसाल महासुख पागे ॥ चित्रइ सो सरदार बनाय बिचित्र महा जिहि ते जस जागे । बालन सीख सिखाइन ते धरे लाल के पिंजर लाल के आगे ॥१०३॥

ताए हुतासन में न घरी भरिना मनि मानिक के जरवाए । खैंचि खराद चढाए नहीं न सुढार सुढारिन मध्य ढराए ॥ ए सरदार कहो हम सों तुम स्याम सुजान कहा कर पाए । वे कलधौत कड़े ककना कहु कौन गँवार सुनार बनाए ॥१०४॥

रीत पतिव्रत सुंदर की पति में मन वाको रहे अनुरागी । आप सुखी पति होत सुखी पति के सुख दुष्यित होत सभागी ॥ आपर दक्षन ना हरि दछत तेरे कहावत को बुधि जागी । मेर ही ओठ को चाहिये पीर कै आपने ओठन काटन लगी ॥ १०५ ॥

आजुही के अधरातक में अधरा जुग देख्यो न काहू जनायो। या सपनों को सुभाउ कहीं तुमही पिय आपन बुद्धिन भायो॥ नींद बिदा कै दई जबते महाराज हियो चक चोहट छायो। लाल. गयो छुट मेरे हिये तें कहा. कहिए जो परोसिन पायो॥ १०६॥

भावै नहीं मुहि कोटि उपाइन आपन .पान की पान सो जोल है। काल्ह गए तुम आन ढिठाई हो गाठि हिये कहो क्यों कर खोलि है॥ ब्रह्म भनें तुम मो सहयो कहु तो संग नेह डुलाइन डोलि है। आय हो आज उजागर बोलन ए दई हो तुम सो फिर बोलि है॥ १०७॥

बिसरो बल दूति सहेलिन को औ चिचोरी कै चेरिन को अरिबो। बतिया चिकनाइ सबै बिसरो बल हाइ हहा करते करिबो॥ उसरो बनमाल को टूटबो लाल ओ धूरि ते भालहू को भरिबो। अब नेकहू नाहि परो पिय पाइन बैनन पाइन को परिबो॥ १०८॥

जान परी जेहि लायक हो इनहीं गुन ते घर घाले कई को। मोहि कलंक हुतो इतनो

यह दोष तुम्हे नहीं दोष दई को ॥ मोतिय राम न बाद कछू हम सों तुम सों यह बीच भई को। देहु कृपा करि राह इतै उत लेउ निबाहन नेह मई को ॥ १०९ ॥

लोचन लाल गुलाल भरे की खरे अनुराग सों पागि जगाये। कै रस चाँचरि चौंचँद मै छतिया पर छैल नखच्छत छाये ॥ भीजि रहे श्रम नीर सुजान धरौ डग ढीलियै लागौ सहाये। भोरहू ऐसी खेलारिन पैं घनआँनद का छल छूटन पाये ॥ ११० ॥

हिय की गति जानत जान सुजान हौ कौन सी बात जू आय दुरी। टपक्योई परै हिय अंकुर ओस लौं ऐसी कछू रस रीति बुरी ॥ बिछुरे कित साँति मिलेहू न होति छिदी छतियां अकुला बिछुरी। तुमहीं तेहिँ साखी सुनो घन आनद प्यार निगोड़े कि पीर बुरी ॥ १११ ॥

बंक बिसाल रँगीले रसाल छबीले कटाच्छ कलानि मैं पंडित। साँवल सेत निकाई निकेत हियो हरि लेत हौ आरस मंडित ॥ बेधि कै प्रान करो फिरि दान सुजान भरे खरे नेह अखंडित।

आनद आसव घूमरे नैन मनोज के चोजनि ओज प्रखंडित ॥ ११२ ॥

एहो हितू हित ऐसोई कीजत कै हित साँचो कियो उपखान है। बेनी हँसाय हमै जग मै बरसाय सनेह बढ़े यतमांन हैं॥ पौरि पराई के पाहरू ह्वै बलि कीबो गरूर बड़ोई अयान है। नातो कहा हम सों तुम सों रस राखिबो सैनन हीं को सयान है॥ ११३॥

रमि रैन सबै अनतै बितई सो कियो इत आवन भोर ही को। नहिं छूटत छैल छबीले लला जो सुभाव रह्यौ परि छोरही को॥ हित प्रान है सोहन बेनीप्रबीन कहो नित है उत ओर ही को। तरवा सहरावन मेरे चले हरवा पहिराय कै और ही को॥ ११४॥

भोरही आवत प्रीतम के टकटोरिबे कों सजनी समझाई। चोरिबे कों चितयों बित बालनै कोरिक कामकला बगराई॥ तोरि न दीजिये मोतिन माल तें मोरिये ना मुख भाखि अगाई। थोरि ही बार में आँगुरी छोर तें मानिक की मुदरी उतराई॥ ११५॥

ह्यां हम सों मिलिबो ठहरायकै सैन कहूं अनतें ही करीजे । भोरही आय बनाय कै बातन चातुर है बिनती बहु कीजे ॥ ऐसियै रीति सदाँ मतिराम सु कैसे पियारे जु प्रेम पतीजे । सौंहैं न खाइये जाइयै ह्यां तें न मानिहौं जोऊ पै लाख न दीजे ॥ ११६ ॥

छैल की छाती मै छाप छबीली की छोभ छई छतियाँ छबि छाकी । झीने झगा मै झपी झुमका दुति झूमै झुके झपकैं दृग ताकी ॥ ऐंड़ भरे मग पैंड़ धरैं उघरै न कछू मति की गति थाकी । बाँकी सी दीठि फिराय कह्यौ अहो जाउ जू दै करि कालि की बाकी ॥ ११७ ॥

मोहि चढी तरुनाई नहीं तुम्हें चोप चढ़ी इहिं ओप भुराए । बेनी जबै उभरे कुच रंच परे तुम मानो महा धन पाए ॥ जाहू जू जानि परे हो खरे कित दूतिन सों जित भेद लगाए । मै अपनाए जबै चित दै हित तोरि कहा बित दै इत आए ॥ ११८ ॥

द्वारिका छाप लगे भुजमूल कह्यो फल बेद पुरानन तौन है । कागद ऊपर छाप सुनी जेहि

को सिगरे जग जाहिर गौन है ॥ आप लगाई लगाई जो कुंकुम की सो सोहाई लगै छवि सों उर भौनं है । छाती की छाप को प्यारे पिया कहिये बलि याको महातम कौन है ॥ ११९ ॥

पग छाप सु भाल मे लाल कहा हिथ को अहो माल दई गुन हीनी । पल पीक की लीक रची असुपी बलि मे नखरेख खची दुख भीनी ॥ यह स्यामलता अधरान धरी सु करी घनस्याम सु नीति प्रबीनी । मुखही तो अलीक रचे हैं लला तुम काहे सजाय समीपिन कीनी ॥१२०॥

आए कहूं रति मानि के मोहन मोहिनी देखि भई मन हीनी । सुन्दर दास तुमैं न कछू बिधि मेरे लिलाट में यों लिखि दीनी ॥ बैर कन्यो सिगरे जग सों तुम सों हित सो तुमहू यह कीनी । सुन्दरि यों इतनो कहिके भरि सांस लयो अंखिया भरि लीनी ॥ १२१ ॥

पाछे जो प्रीति करी सो करी अब आन परी तुमै औरन की दब । लालन राखिये लालनहार करी जिहि प्यार भरो कर दै सब ॥ को बिन काज करै बकबाद सुनी हती आज लई लखि

वा छब । आज तें राज करो बालि आइ सु काज कहा हम सों तुम सों अब ॥ १२२ ॥

भोरहीं आये कहूं तें सखी रति की सिगरी लगीं अंग निसानी । प्यारी के आँसू चले दुख ते लखि बूझी यों प्यारे कहा उर आनी ॥ लाज तें उत्तर आयो न और कही तब यों रघुनाथ सयानी । कीन्ही खटो मन मोसों सु देखि चल्यो अँखियान को जीभ तें पानी ॥ १२३ ॥

सालत है उर में हँसि बोलिबो आजु की ये लखि के झिझिकारियाँ । नीर नदी करि जारियाँ हारियाँ आखें हमारी बिचारीं दुखारियाँ ॥ कौन सी बात नबीन के कीजियै सोच परेखो परै न सुमारियाँ । नेकु न लाजत है मिलते अब देखि के भाजत है बलिहारियाँ ॥ १२४ ॥

हम कों तुम एक अनेक तुम्हे उनहीं के बिबेक बनाय बहो । इत आस तिहारी तिहारी उतै बिभिचारी को नेम कबै निबहो ॥ मन भावै मसा-रख सोई करो अनुराग लता जिन बोय दहो । घनस्याम सुखी रहो आँनद सों तुम नीके रहो उनहीं के रहो ॥ १२५ ॥

हम कों तुम एक अनेक तुम्है उनहीं के बिबेक बिकाने रहो। इत चाह तिहारी तिहारी उतै बिभिचारी सनेह में साने रहो ॥ हम तो अब और की औरे भई उनहीं को प्रिया निज जाने रहो। अरसाने रहो सरसाने रहो हरसाने रहो तरसाने रहो॥१२६॥

तुमरेई लिये ब्रजबीथिन मे फिरि कै बिन देखें तई तौ तई। नहिं काहू कि खोरि है यामै कछू दई मोहि ब्यथा जौ दई तौ दई ॥ हनुमान इती बिनती है सुनो बिछुरें निसि मेरी गई तौ गई। उनहीं कों लगावो लला छतियाँ हम कों बद-नामी भई तौ भई ॥ १२७ ॥

रावरे नेह कों लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये। डार दयो गुरु लोगन को डर गाँव चवाय मै नाँव धराये ॥ हेत कियो हम जो तौ कहा तुम तौ मतिराम सबै बिसराये। कोऊ कितेक उपाय करो कहूँ होत हैं आपने पीउ पराये ॥ १२८ ॥

गुन औगुन का कहिये किहि तें अपनो तन आप जराने परो। सब गाँव मै गैल में गोकुल मै गुरु लोगन देखि लजाने परो ॥ सरदार बिचार

बिना बन के बन के बिन काज बिकानें परो । बिन जाने अजाने सु जाने हमै करि प्रीति महा पछि-ताने परो ॥ १२९ ॥

सीख न मानि सयानी सखीन की यों पदुमाकर की अमने की । प्रीति करी तुम तें बजिकै सु बिसारि करी तुम प्रीति घने की ॥ रावरी रीति लखी इमि साँवरे होति है संपति ज्यों सपने की। साँचहूँ ताको न होत भलो जो न मानत है कही चार जने की ॥ १३० ॥

पापी पिया से सदाँ हीं रहे दग पायो न मैं कहूँ पानिप पीको । घेरि रहे न भए चहुँघाँ घर-हाँई करैं उपहास कितीको ॥ नाहक हौं बदनाम भई न भयो परमेस मनोरथ जीको । जौ कहूँ अंक मे लागती री तौ कलंक हू लागिबो लागतो नीको ॥ १३१ ॥

रोज न आइये जो मनमोहन तौ यह नेक मतो सुनि लीजे । नैन हमारे तिहारे बसै सो कहो बिन देखें सु कैसे के जीजे ॥ ठाकुर लाल पियारे सुनो बिनती इतनी पैं अहो चित दीजे । दूसरें तीसरें पाँचयें सातयें आठयें तौ भला आयबो कीजे ॥ १३२ ॥

छल छोरिके दौरि मिलें तब तौ अब और नहीं चित लावनो है । रस-लोभ अधीन भये अब तो कछू लालच दै बिरमावनो है ॥ कबि ठाकुर बाँह गही सो गही पुनि मुद्दत लौं पहुँचावनो है । यह नेह की नाव चलाई सो तो पर खेई कै पार लगावनो है ॥ १३३ ॥

रमि कै रस रीति की गैलन माहिं अनीति को पंथ न गाहिये जू । अब तौ छल छंद की बानि तजो हँसि बोलि कै चित्त उमाहिये जू ॥ रसिया कर जोरि करौं बिनती कछू और हमें नहिं चाहिये जू । यह प्रेम की आँखें लगीं सो लगीं पै कुलीन ज्यों ओर निवाहिये जू ॥ १३४ ॥

हम चोरी तिहारी करी न कछू चितचोर किते कतरान लगे । यह नीति नहीं है अनीति महा करि प्रीति कहा इतरान लगे ॥ मुख रावरो प्यारे बिलोके बिना अँग अंग सबै पतरान लगे । रिसकै हम सों सतरान लगे हँसि औरन सों बतरान लगे ॥ १३५ ॥

प्रीति करी तुम तें हम ने निसिबासर रूप तिहारो सराहत । बूझि परी बिपरीत कछू हित

और किये इत रीति निबाहत ॥ एहो हरी इन बातन तें तुम काहे कों मेरो हियो नित दाहत । पन्नग की मनि कीनी तुम्हें तुम पन्नग की केचुरी कियो चाहत ॥ १३६ ॥

छाँडि पतिव्रत प्रीति करी निबही नहीं सौन सुनि हम सोऊ । मौन भये रहनोहीं पर्यो सह-नोहीं पर्यो जो कह्यो कछू कोऊ ॥ साँची भई कहनावति वा कबि ठाकुर कान सुनी हुती जोऊ। माया मिली नहिं राम मिले दुबिधा मे गये सजनी सुनो दोऊ ॥ १३७ ॥

जानत ती अपने नहीं होत पराय पिया यह बेदन गाई । सो परहेलि कै प्रीति करी गुरु लोगन में कुल कानि गँवाई ॥ ठाकुर ते न भये अपने अब कौन कों दोस लगाइये माई । दूध की माखी उजागर बीर सो हाथ मे आँखिन देखत खाई ॥ १३८ ॥

जाके लियें गृहकाज तज्यो न सिखी सखि-यान की सीख सिखाई । बैर कियो सिगरे ब्रज गाँव सों जाके लियें कुलकानि गँवाई ॥ जाके लियें घर बाहिर हूँ मतिराम रहे हँसि लोग चवाई।

ता हरि सों हित एक ही बार गँवारि मै तोरत बार नां लाई ॥ १३९ ॥

ए घरहाँई लुगाँइन के ढिग साँवरे रावरे के गुन गाए । जाने कछू न सयानप ए करिहैं सँग मै विसवास बढाए ॥ दोसं दै कौन सों रोस करौं अपसोस हिये के मिटैं न मिटाए । मै निज हाथन हीं ब्रजनाथ दियो तुम्है भूलि कै हाथ पराए ॥१४०॥

कासौं कहा मै कहौं दुख यों मुख सूखत ही है पियूष पिये तें । त्यों पदमाकर या उपहास की त्रास मिटै न उसास लिये तें ॥ ब्यापै ब्यथा यह जानि परी मनमोहन मीत सों मान किये तें । भूलि हूँ चूक परी जो कछू तेहिं चूक की हूक न जाति हिये तें ॥ १४१ ॥

अनुराग सों खेलि फागु थक्यो रह्यो कंत इकंत कहूँ टरि कै । पहुँचीं दोऊ सौतें समीप तहाँ दुरि अंजन आँगुरी मे करि कै ॥ यह पेंच कियो तहँ छैल छबीले कछू छल रीति हिए धरि कै । मुह एक के दीन्ही गुलाल मुठी लई एक कौं तौलों भुजा भरि कै ॥ १४२ ॥

सँग नौलबधू लिएं दोऊ अटा पर बैठे बिलो-

कत जोन्ह अरी । रघुनाथ गुलाब को धोखे बनाय मँगाय के बारुनी पास धरी ॥ पियो आपु औ कै हठ प्यायो उन्है सरसाय कै एकहि नींद भरी । तिय एक सों काम कला रचि कै सब राति लला रस लूटि करी ॥ १४३ ॥

अति सुन्दर मंदिर मैं रुचि सों परजंक बिछाय दयो है अली । लखि काम ते स्याम महा अभिराम बनाय कै बानिक भाँति भली ॥ मनभाई निहारि बिचारि हिये चतुराई करी तहाँ छैलछली । कर एक सों आरसी कै मुख ओर गही कर एक सों कंज कली ॥ १४४ ॥

बैठी ही भाँवती दोऊ जहाँ तहाँ मोहन आनि करी चतुराई । बेनी जु तेरे बिलोचन चाहि कोऊ कहै कौलनि यों छबि पाई ॥ होंहूँ लख्यौ करि नीरे दुहून बहू कियो भाँवते दीठि बराई । कै बस एक तिया बतियान सों एक तिया छतिया सों लगाई ॥ १४५ ॥

तीज के आज सिंगार के काज बरोबरि साज धर्‍यो दुहुँ आगे । साजे लगी अपने कर एक प्रबीनता सेवक सों सुनि रागे ॥ एक पै रोस

बेहोस बखानत बेंदी बिरी कजरा बहु बागे। भूखन·अंगन अंगन सेवक आपने हाथ सँवारन लागे॥ १४६ ॥

मध्य दुहूँन के बैठे लला कियो हास बिलास महा सुख पाई। दोउन तें पुनि श्रीधर जू रस की बतियाँ कहि लीन्ह भुराई॥ एक तें बाँए बताय कह्यौ लखु नागिनी नेरे अचानक आई। ताकन लागी तिया जब लौं तब लौं लियो दाहिनी कों उर लाई॥ १४७॥

राजै नवीन निकाई भरी रतिहूँ तें खरी वे दुहूँ परजंक मे। आइ के बैठे तहाँ मनमोहन ज्यों घन बीच लसै दु मयंक मे॥ सीसा उसीसा के सिस तें लै कर एक के सौंप्यो जु प्यारे ससंक मे। लागी निहारन आरसी जौं लगि तौ लगि दूजी भरी पिय अंक मे॥ १४८॥

आंगन आई अरी नंदनंदन चंदन तें छवि छाप छपाई। छैल छली छरकाइल छिप्र छको मद के मद छाजत माई। हा सरदार न जान परी जु करी अधिकी अलि आप अढाई। दे

पिचकी इक ओर मनोहर एक के गाल गुलाल लगाई ॥ १४९ ॥

चौपर खेलती दोऊ दुरें तहां आइगो लंगर सूधे सुभाइ कें। हारिहि सों मिले आपु हि यों ठहराइ हराइ दई सुख पाइ कें॥ जीत के जोम भरी हासि येक रही इक बैसियो बैठ लजाइ कें। काहू को नेक न संक करी भरी अंक मयंक मुखी सुख पाइ कें॥ १५० ॥

खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बढ़ भाग कन्हाई। एकही भौन में दोहुन देखि के देव करी इक चातुरताई॥ लाल गुलाल सों लीनी मुठी भर बाल की भाल की ओर चलाई। वा द्रिग मूंदि उतै चितई इन भेंटी इतै व्रषभान की जाई ॥१५१॥

जाय नहीं कुल गोकुल मे अरु दूनी दुहूँ दिसि दीपति जागै। त्यों पदमाकर जोई सुनै जहँ सो तहँ आँनद मे अनुरागे॥ ए दई ऐसो कछू करु ब्योत जो देखे अदेखिन के द्दग दागे। जामे निसंक है मोहन कों भरियै निज अंक कलंक न लागे॥ १५२ ॥

देख्यो चहूँ निसि बासर हूँ पै न देखिबे की

कछू जानति बातें । मैधौं कहाँ तें गई ओहि ओर गई परि मेरी धौं दीठि कहाँ तें ॥ ब्याहि दियो चहैं तात कहूँ मोहि मै सखि तोहि सिखावति यातें । तूँ गुरु लोगन सों न करै किन कान्ह सों मेरेई ब्याह की बातें ॥ १५३ ॥

गुंज हरा रिखिनाथ गरें कढि कुंजन तें छबि पुंजन छाइगो । मंद हँसी है बसीकर सी सरसी-रुह लोचन लोल नचाइगो ॥ सूही सजी सिर पै पगरी लियें फूल छरी इत औंचक आइगो । कै नियरे सियरे दृग को पियरे पट को हियरे मै समाइगो ॥ १५४ ॥

गैल मै छैल कढै जितहीं तहीं बंसी बजावत हीं यह टेक है । गेह सों नेह भरीं कढै कामिनी दामिनी सीं छुटि जात बिबेक है ॥ देखतीं बेख निमेख न लावतीं लेखतीं या जग ठाकुर एक है। होति निहाल महा सो बडी अँखियाँन सों जाहि निहारत नेक है ॥ १५५ ॥

मोर पखा मतिराम किरीट मनोहर मूरति सों मन लैगो । कुंडल डोलनि गोल कपोलनि बोलनि नेह के बीजनि बैगो ॥ लोल बिलोचन कोरनि

सों मुसकाय इतै अरुझाय चितैगो । एक घरी घन सैं तन सों · अँखियान घनो घनसार सो दैगो ॥ १५६ ॥

को है अरी वह गैल चलो गयो बेनु बजावत साँवरो सोहै । सोहै सदाँ अँग अँग बिभूषन धीर सुधा सब को मन मोहै ॥ मोहि बताव हियें हित कै बलि गाँव औ ठाँव जहाँ अब जोहै । जोहै सोहै सुनु भोरी भटू जनि झाँकि झरोखें को जानिये कोहै ॥ १५७ ॥

अंबरपीत कसें कटि सुन्दर मैन हूँ जाहि बिलोकि लजो है । साँवरी सी रही सोहनी सूरति हेरत को जुवती नहीं मोहै ॥ मोसों बताव सखी हितकै अरी तूँ हनुमान जो राखति छोहै । नेकु चितै दुचितै करि मोहि गयो री इतै सो के जानिये को है ॥ १५८ ॥

चन्दन खौरि लिलाट बिराजत मोरपखा सिर ऊपर सोहै । कुँडल लोल कपोल लसै मुरली की बजावनि मै मन मोहै ॥ मोहि बिलोकि बिलोकि हँसै चित चोर बडे बडे नैनन जोहै । पूछति गोप-बधू भगवंत या सांवरो सो जमुनातट को है ॥ १५९ ॥

सांवरो रंग अनंग सो अंग है गायँन के सँग जात उवानै । यों गुन देव जू हेर्‍यो . अचानक काव कहौं सुख दै गयो प्रानै ॥ ज्यो न सुहात कछू बिन देखें रि कासों कहौं कोउ जी की न जानै । आयगो कान्ह समायगो नैननि नायगो चेटक गायगो तानै ॥ १६० ॥

एक वहै मुख देखोई भावत बादि सबै मिली माडती राहो । कीजै कहा बस है न कछू सिगरी मिलि डाहन आई तौ डाहो ॥ मोहि न काज कछू कुलकानि सों जाहि निबाहनी है सो निबाहो । मेरे तो माई वहै उर आनि रह्यो गडि गैयन को चरवाहो ॥ ॥ १६१ ॥

क्यों इन आँखिन सों निरसंक ह्वै मोहन को तन पानिप पीजै । नेकु निहारें कलंक लगै यह गांव बसें कहो कैसे कै जीजै ॥ होत रहै मन यों मति राम कहूं बन जाय बडो तप कीजै । व्है बनमाल हियें लगिए अरु व्है मुरली अधरारस लीजै ॥ १६२ ॥

देखि हमै सब आपुस मे जो कछू मन आवत सो कहती हैं । ए घरहांई लोगाई सबै निसि

द्यौस नेवाज हमे दहतीं हैं ॥ बातें चवाव भरी सुनिकै रिसि लागति पै चुप ह्वै रहतीं हैं । प्रान पियारे तिहारे लिए सिगरे ब्रज को हँसिबो सहतीं हैं ॥ १६३ ॥

या डरही घरही मे रही कहि देव दुर्यो नहीं दूतन को दुख । काहू की बात कही न सुनी मनमारि बिसारि दियो सिगरो सुख ॥ भीर में भूले भए सखि मै जब तें ब्रजराज की ओर कियो रुख । मोहि भटू तबतें निसि द्यौस चितौत हीं जात चवाइन को मुख ॥ १६४ ॥

गोकुल के कुल कों तजि कै भजि के बन बीथिन मे बढि जैये । त्यों पदमाकर कुंज कछार बिहार पहारन मे चढिजैये ॥ हैं नंदनंद गोविंद जहां तहां नंद के मंदिर मै मढिजैये । यों चित चाहत एरी भटू मनमोहनै लै कै कहूँ कढि जैये ॥ १६५ ॥

धारत ही बन्यो येही मतो गुरु लोगन को डर डारत ही बन्यो । हारत ही बन्यो हेरि हियो पदमाकर प्रेम पसारत ही बन्यो ॥ बारत ही बन्यो काज सबै बरु यों मुख चंद निहारत ही

कन्यो ॥ ढारत ही बन्यो घूंघुट को पट नंदकुमार निहारत बन्यो ॥ १६६ ॥

कुल लाज जैंजरिन सो जकन्यो जुलमी तक ऊधम ठानत है। तन मैन महावत एइके आंकुस ताहू की आनि न आनत है ॥ झुकि झूमै झुकै उझकै न रुकै परमेस जू जो जग जानत है। प्रिय रावरो रूप बिलोकें बिना मन मेरो मतंग न मानत है ॥ १६७ ॥

सब संक तजि गुरु लोगन की कुलकानि की आनि न आनती हैं। करि कोटि उपाव बुझावै कोऊ अपनी एक टेकही ठानती हैं ॥ परमेस जू और न जानैं कछू एक प्रेम को पंथ पिछानती हैं। पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियाँ नहीं मानती हैं ॥ १६८ ॥

मालिनी रविमध्य को आड करै जुग फूटें जुराफा उडावहि को। मन चुंबक बीच को लोहो भयो तहां दूसरो रूप दिखावहि को॥ कवि संभु सनेह की रीति यही बिछुरें जल मीन जियावहि को। गुनवारे गोपाल की आंखिन तें अरुझीं अंखियां सरुझावहि को ॥ १६९ ॥

ठाडी कहा दुचिती सुचिती चलु देखुरी कौनसी गोहन गो। वह बेनु बजाय रिझाय हमैंरी सु धेनु कहूं बन दोहन गों ॥ कवि ठाकुर ऐसिही जानि परी अरी गुंज के हारन पोहन गो। कोऊ दौरियो टेरियो फेरियो री वा अहीर को मोहन मोहन गो ॥ १७० ॥

रैन दिना घुटिबो करैं प्रान झरैं अंखियां दुखियां झरना सी। पीतम की सुधि अंतर मे कसकै सखि ज्यौं पंसुरीन मे गांसी ॥ चौचंद चारु चबाइन के चहुं ओर मचै बिरचै करि हांसी। यौं मरिये भरिये कहि क्यों सु परो जिन काहू के प्रेम की फांसी ॥ १७१ ॥

भूलिहू मो गली आवै जो मोहन पूरब पुन्यन को व्रत पूजै। हाय दई न बसाय कछू दुरि देखिबो दूबर छांह को छूजै ॥ मागों यहै बिधिना पै बड़े खिन जो कबहूं पिय आसही पूजै। चौथि कौ चंद लखैं बज्रचंद सों लागे कलंक पै ऊज्रे हूजै ॥ १७२ ॥

सवरे दिन सास रिसौत रहे ननदी नित बोक कुबोक कहै। सकि ऊंचे न झांकि सकौं कबहूं गुरु लोगनि को उपहास दहै॥ मिलि मागम आनि

अचानक तूं यह औसर पाइ हियो उमहै। बरु तूंही उपाय बताव सखी जिहिं लाल मिलैं अरु लाज रहै ॥ १७३ ॥

अजू नंद के नंदन सों कहियै कहो नैननि रावरो हौस रहै। संग छाँह ज्यों सास फिरै अनखानी जेठानी ढुकाढुकी सौसरहै ॥ कवि नाथ जू जानति हों जिय मै बय वीति गयें कहा मौसरहै। पर कीजे कहा इहिं गांव को लोग गुहै चरचा न को चौसर है ॥ १७४ ॥

यह डोंड़ी सनेह की औंड़ी बजैं जग भौंडी भली बकही तो कहा। कुलकानि तें कौलौं कनौड़ी रहौं पुर कानि रही न रही तो कहा ॥ चित तो गाड़िगो वा चितौनिही मै कहो नाथ चही न चही तो कहा। जब लाज नेवारि भई हरि की अब लाज रही न रही तो कहा ॥ १७५ ॥

हम जानती हैं सुनी हूं कै गुनी कुलकानि सों ज्ञान मुरो सो मुरो। रँग साँवरो ऐसो न छूटत सेवक लालिमा लाइ पुरो सो पुरो ॥ अब का समुझावति को समुझै जिय जो कछु आइ फुरो सो फुरो। पट गाँठि को जोरि सुऔरही सों मन स्याम सों जाइ जुरो सो जुरो ॥ १७६ ॥

हौं कित ह्वै इत आनि कढ़ौंगी कहाँ तें इतै वह कान्हर ऐहै। ह्वै है कहाँ तें अचानक भेट कहाँ तें लिलाट लिख्यो फल पैहैं ॥ और सों और भई गति मेरी दईबे किसोर कहा कर देहै। हौं कहा जानो हमारेह्व भाग की लागलगी अँखियाँ लगि जैहै ॥ १७७ ॥

साँकरी गैल वा खोरि हमै किन खोरि लगाय खिजैबो करो कोउ। धीरज देव धरो सो धरो अधराधर दंत पिसैबो करो कोउ ॥ हाय नहीं करिहैं कबहूं जिय घाय पै लोन घसैबो करो कोउ। रूप हमै दरसैबो करो अरसैबो करो की रिसैबो करो कोउ ॥ १७८ ॥

जा दिन तें निरख्यौ नदनंदन कानि तजी घर बंधन छूट्यो। चारु बिलोकनि कीनी सुमार सम्हार गई मन मारनै लूट्यो ॥ सागर कों सरिता जिमि धावे न रोकी रहै कुल को पुल टूट्यो। मत्त भयो मन संग फिरै रसखान सरूप अमी रस घूँट्यो ॥ १७९ ॥

जब रीझि सवाद भरी अँखियाँ तव रूप भले अरु पोच कहा। अपने अंग व्याधि असाध

उठी तब बेदन हीं सों सकोच कहा ॥ रस रासि मिलाप सुधा अँचयो तब जाति औ पाँति को सोच कहा। छकि लोड़ी भई हित डौंड़ी बजाय कनौड़ी भए अवलोच कहा ॥ १८० ॥

कहते न बने कछुओ कहूघाँ सब की सब हू तें बने सहतें। घर बाहिर घेर उठ्यो री भटू मनमोहन लालन के चहतें ॥ कहि ठाकुर हाथ चलै गांहिये अरु जीभ चलें न बनै गहतें। सखिया नदगाँव को कौतुक री लखतेही बनै न बनै कहतें ॥ १८१ ॥

पिय मोहन को वह मोहिनी रूप निहारे बिना नहिं जीजतु है। तिहिं तें जुलटी भली या जगं मैं सिखमानि सबै सुनि लीजतु है ॥ कहि ठाकुर लाल के देखिबे के लिये ज्वाब न काहु वै दीजतु है। अब का कहिये अपने अरुझे सबही की खुसामद कीजतु है ॥ १८२ ॥

चौचँदहाई जरैं ब्रज की जे परायो बन्यो हर भाँति बिगारैं। काहू की बेटी बहून के घेर फिले घर जाय कमंध से पारैं ॥ ठाकुर या बिसवास की कौस न आठहूं गांठ रही हैं हमारैं। केकरे

पैसे करौं करनी करि आवै कहुं तो कहा करि पावैं ॥ १८३ ॥

काहु के होय तो कैसी करो किन तैसे मनै लगे तैसे सिखाये । ज्यों ज्यों अरी हटक्यो इन लोगन त्यों त्यों खरे बिगरे ये सवाये ॥ ठाकुर काहू रुचै न तो का करौं मोहि तो ऐसे लटे भले भाये । नैन हमारे हमारे मनै लगे चाहे जहाँई तहाँई लगाये ॥ १८४ ॥

ए जो कहैं तो भले कहिबो करो मान सहा सो सबै सहि लीजै । ते बकि आपुहि तैं चुप होइँगी काहे कों काहु वै ऊतर दीजै ॥ ठाकुर मेरे मते की यहै धनिमान कै जोबन रूप पतीजै । या जग में जनमें को जिये को यहै फल है हरि सों हित कीजै ॥ १८५ ॥

अब तौ जो भई सो भई सो भई हम वाही में आँनद लीवो करैं । इन कानन की यह बानि अरी बतरानि सुधा मधु पीवो करैं ॥ कविराम कहै अभिराम सरूप चितै चित वाही में दीवो करैं । सखि हों वा रँगीले के रंग रँगी ये चवाइनै चौचँद कीबो करैं ॥ १८६ ॥

कानन दूसरो नाम सुनै नहीं एकही रंग रँग्यो यह डोरो। धोखेहु दूसरो नाम कढ़े रसना मुख काढ़ि हलाहल बोरो॥ ठाकुर चित्त की वृत्ति यही हम कैसे हूं टेक तजैं नहीं भोरो। बावरी वे अँखियाँ जरि जाहिं जो साँवरो छोड़ि निहारतीं गोरो॥१८७॥

पूरब तें पुनि पच्छिम ओर कियो सुरआपगा धारन चाहै। तूलन तोपि कै है मतिमंद हुतासन दंड प्रहारन चाहै॥ दास जू देखि कलानिधि कालिमा छूरिन तें छिलि डारन चाहै। नीति सुनाय कै मो मन तें नंदलाल को नेह निवारन चाहै॥१८८॥

घर पास परोसिनी घैर करो अरु नाव धरौ ब्रज गाँवरी री। जब ढोल दई बदनाम भई तब कौन की लाज लजावरी री॥ कबि ठाकुर प्रेम के फँद परी व्रज खोरि फिरौं भई बावरी री। अब होन दे बीरि हँसी सो हँसी हिरदै बसी मूरति साँवरी री॥ १८९॥

तुम चाहो सो कोऊ कहौ हम कौ नँदवारे के संग ठई सो ठई। तुमहीं कुल बीने प्रबीने सबै हमही कुल छांडि गई सो गई॥ रसखान या प्रीति की रीति नई सुकलँक की मोटैं लई सो

लई । इहिं गाँव के वासी हैंसो सो हँसो हम स्याम की दासी भई सो भई ॥ १९० ॥

देवन देखतिं हों दुति दूसरी देखे हैं जा दिन तें ब्रजभूप मैं । पूरी रही री वहे पुर कानन आनन ध्यानन ओप अनूप मै ॥ ये अँखियाँ सखियाँ हे हमारी सो जाइ मिली जलबूंद ज्यों कूप मै । कोर करो नहिं पाइये केहूँ समाइ गई ब्रज-राज के रूप मै ॥ १९१ ॥

नाम कुनाव धरैं पल मै बलि लोग लबार बुरे बजमारे । नेक किसोर की ओर निहारत बात अनेक रचैं बदकारे ॥ कौन से नैन बिगूचे हमै अब जीते सबै सब ते हम हारे । आन हमारे न हैं हम आन के हैं हम कान्ह के कान्ह हमारे ॥१९२॥

ननदी औ जेठानी नहीं हँसती तो हितू तिनहूँ कों बखानती मै । घरहाँई चवाव न जो करती तो भलो औ बुरो पहिचानती मै ॥ हनुमान परोसिन हूँ हित की कहती तो अठानन ठानती मै । यह सीख तिहारी सुनो सजनी रहती कुल कानि तो मानती मै ॥ १९३ ॥

ग्वारि गई एक झाँकी उहाँ मग रोकि सुतौ

मिल के दधिदान को। वासों भटू भरि भेटी भुजा पुनि नातो निकास्यो कछू पहिचान को॥ आई निछावरि के मन मानिक गोरस दै रस लै अधरान को। वाही दिना तें हिये मै गड्यो वह ढीठ बडो बडरी अँखियान को॥ १९४॥

सासु कह्यो दधि बेचन कों सु दई दुखदाई कहाँ तें धों हाँकरी। मोहि मिले नृपसंभु गोपाल तमाल तरें वह गैल जो साँकरी॥ मो तन ताकि बडी अँखियाँन तें काँकरी लै फिर मो तन घाँकरी। काँकरी ओडि लई कर तें पै करेजे कहाँ धौं गई गडि काँकरी॥ १९५॥

गाय के तान बजाय के बाँसुरी मोहि कै मोहनी मो सिर दीन्ही। ऐंठि कै पाग उमेठि कै पेचनि टेढी सी चाल चलै रस भीनी॥ रीझ रिझाय के जात भये मकरंद कहो सु कहा गति कीन्ही। जाँवरी का पर नावरी बूझन साँवरी मूरति बावरी कीन्ही॥ १९६॥

बावरी तूँ तो बके बहु तेरो लग्यो नहिं तोहि कहूँ यह घावरी। घावरी घायल जानत हैं जिन के निसि बासर प्रेम सुभाव री॥ भावरी भोजन

मौन न नींद हियें अरुझी वह मूरति साँवरी। साँवरे रँग मे हौं तो रंगी न चढै अब दूसरो रंग सो बांवरी ॥ १९७ ॥

बैर बढे तें बढै अतिहीं अब को कहि कै कढि कौन सों जूझै। जैसी भई हरि हेरत हीं सतौ को छिप की जिय की गति बूझै ॥ बाहिर हूँ घर हूँ मे सखी अँखियाँन वहे छबि आनि अरूझै। साँवरो रंग रह्यो उर मे सिगरो जग साँवरो साँवरो सूझै ॥१९८॥

ब्रजबीथिन मे फिरिबे के लियें गुरु लोगन हूँ मिलि कीन्ही खई। परमान्यो नहीं उनहूँ को कह्यो जिय ऐसी कछू मति आनि ठई ॥ तुम हूँ अब का समुझावती हौ बिधि नै हनुमान लिखी सो भई। अब तौ मनमोहन हाथ सखी कुलकानि दई बदनामी लई ॥ १९९ ॥

अब का समुझावती को समुझै बदनामी के बीजन बो चुकी री। तब तौ इतनो न बिचार कियो यह जाल परें कहु को चुकी री ॥ कवि ठाकुर या रस रीति रँगे सब भाँति पतिव्रत खो चुकी री। अरी नेकी बदी जो बदी हुती भाल मै होनी हुती सुतो हो चुकी री ॥ २०० ॥

जब तें दरसे मनमोहन जू तब तें अँखियाँ ये लगी सो लगी। कुलकानि गई सखि वाही घरी जब प्रेम के फंद पगी सो पगी॥ कहि ठाकुर नेह के नेजन की उर मै आनि आनि खगी सो खगी। तुम गाँवरे नावरे कोऊ धरो हम साँवरे रंग रँगी सो रँगी॥ २०१॥

हम एक कुराह चलीं तो चलीं हटको इन्हे ये ना कुराह चलैं। यह तौ बलि आपनो सूझ तो है प्रनपालिये सोई जो पालें पलैं॥ कहि ठाकुर प्रीति करी है गोपाल सों टेरे कहौं सुनो ऊँचे गलैं। हमै नीकी लगी सो करी हमने तुम्हे नीकी लगो ना लगो तौ भलैं॥ २०२॥

नाम धरो जो चहौ सो कहौ कछू, बूझौ हमै सु तो कै चुकी हैं। लखि लाजत मैन जिन्हे तिन्ह सों बलदेव सनेह तो वै चुकी हैं॥ अब काम नहीं समुझाँवन को मन भावँन कों मन दे चुकी हैं। अपने मग आप चलैं हम तौ निज जीवन को फल लै चुकी हैं॥ २०३॥

चहुँ ओर सों चौचँद कीबो करैं न चवाँइन को डर मानती हैं। अपने अरु औरन के उर की

भली भाँतिन सों पहिंचानती हैं ॥ गति भाल की सेवक जो ध्रुव तो सब प्रीति की रीति पिछौंनती हैं । तुम जानंती हो तौ बचायें चलो हम जानती हैं की अजानती हैं ॥ २०४ ॥

अपबाद कोऊ किन कीबो करो हम नेकु नहीं सक मानती हैं । वहि छैल छबीले कि चाहन तें द्विज प्रेम की बारुनि छानतीं हैं ॥ वेद फूँकि कै पावँ धरें सिगरी अपने कों सदाँ जे बखानती हैं । नहिं काज भली औ बुरी तें कछू हम जानती हैं की अजानती हैं ॥ २०५ ॥

जिहिं तें तजि दीन कलिंदी को कूल औ भूल हूँ आई न जाय कै री । कुल कानि की आनि हूँ एही हुती सो भई दुख दानि बजाय कै री ॥ अब कौन सोच रह्यो है सुमेर हरी भी निसंक बनाय कै री । जौ कलंक लग्यो मोहि धाय कै री तौ सु अंक हू लागि हों धाय कै री ॥ २०६ ॥

गुरु लोग करेंगे चबाव घनो तिन कों सुनि कै नहिं भाखिहों मे । करिहैं जो पै दंड प्रचंड तुपै सुमेरसहरि नहिं भाखिहों मे ॥ बदनाम जो गाँव करे सिगरो तऊ रूप सुधा रस चाखिहों

मै। ब्रजराज जो आजु मिलैं सजनी इहिं लाज सों काज न राखिहौं मै ॥ २०७ ॥

लहि जीवन मूरि को लाहु अली वे भली जुग चारि लौं जीवो करैं। द्विजदेव जू त्यों हरषाय हियें वर बैन सुधा मधु पीवो करैं ॥ कछु घूँघुट खोलि चितै हरि औरन चौथि ससी दुति लीवो करैं। हम तौ ब्रज को बसिबोई तजो अब चाव चवाइनै कीवो करैं ॥ २०८ ॥

जानि झुकाझुकी भेष छपाय कै गागरी लै घर तें निकरी ती। जानो कहाँ तें कबै केहिं बेर ते आइ जुरे जितै होरी धरी ती ॥ ठाकुर दौरि परे मोहि देखत भाग बची जु कछू सुघरी ती। बीर जो द्वारन देहुं किवार तो मै होरिहारन हाथ परी ती ॥ २०९ ॥

हौं अलि आजु गई तरके वहाँ महेस जू कालिंदी नीर के कारन। ज्यों पग एक बढ़ायो चहौं रपट्यो पग दूसरो लागी पुकारन ॥ आय गयो धौ कहाँ तें अचानक नंद को बारोरि मोहि उबारन। जो गहि लेतो न मोहि कहूं मिलतो न संदेस हू दीन्हे हजारन ॥ २१० ॥

बछरा सखि एक भज्यो खरिका तें महूँ तेहि दौरि पछेरो कियो। घन कानन जाय परी कपि त्यों लपटाइ दई भट भेरो कियो ॥ कुच कंचुकी केस कपोलनि त्यों अधरानन दे कै निबेरो कियो। श्रमसीकर कंप उसासनि सेवक संचित यौं तन मेरो कियो ॥ २११ ॥

जानी न मै ललिता अलि ताहि जु सोवन माहिं गई करि हांसी । लाये हिये नख नाहर के सम मेरी नहीं तऊ नींद बिनासी ॥ लै गई अंबर बेनीप्रबीन उढ़ाय लटी दुपटी ठग मासी । तोरि तनी तन छोरि अभूषन देन कों भूल गई गल फाँसी ॥ २१२ ॥

बार बहारन भोरही हौं पठई मति हीन मतो कै लोगाइन । घेरी किवार उघारत ही अलि मोर चकोर कठोर कुदाइन ॥ देव कहा कहौं देह दसा यह हौं सकुचौं कुल लोग लोगाइन । सासुरे की उपहाँस करैं बिसवास करो तुम सासु गोसाँइन ॥ २१३ ॥

कौन सी चाल चली बृज मै गुरु लोगन सौं कहिं बैर बढ़ावैं । और की बात न कान सुनैं

अपनी कहि कै उलटी समुझावें ॥ कौन बोलावन जात इन्हे निसि बासर चौचँद आन मचावैं । चोरि चवाइन चातुर ये हियरे को हरा अनतै धरि आवें ॥ २१४ ॥

आज भटू एक गोप कुमार ने रास रच्यो एक गोप के द्वारें । सुंदर बानक सों रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारें ।। ए बिधना जो हमै हँसतीं अब नेक कहीं उत कों पग धारें । ताहि बदौं फिरि आवे घरें विनहीं तन औ धन जोवन हारें ॥ २१५ ॥

है ब्रजबालन मै बसिबो बिन कारन बैरु करें कुल वामे । हौं गुरुलोगन माझ गनी कुलकानि घनी बर तौं प्रति जामे ॥ हौ तुम प्रान हितू सिगरी कबि सेखर देहु सिखावन यामे । गैल मै गोपद नीर भर्‍यो सखि चौथ को चंद पर्‍यो लखि तामे ॥ २१६ ॥

भूलेहु नंद के भौन न जैहौं मै तूं किन केतिको सौंह दिवावै । पाले पखेरू अनेक तहाँ मनि मानिक देखि सुवा डर पावै ।। ओठ मै दाग कहूं पर जाय तो मो पै न केहूँ कछू कहि आवै ।

कैसी करौं कहु मो मुख चंद की ओर चकोर जो चोंच चलावे ॥ २१७ ॥

जाति हौं गोरस बेचन कों ब्रजबीथिन धूम मची चहुँघाँ तें। बाल गोपाल सबै अमनेक हैं फागुन मे बाचि हौंव कहाँ तें ॥ छींटि हू जो परी बेनीप्रबीन कहूँ पट मैं रंग की बरखा तें। नेह के ज्योंही पठावती हैं करिहैं फिरि नेह भरी बिष बातें ॥ २१८ ॥

दैहों सकों सिर तो कहूँ भाभी पै ऊख के खेत न देखन जैहों। जैहों तो जीउ डेरावन देखिहों बीचही खेत के जाय छपैहों ॥ पैहों छरोर जो पातन को फटिहे पट के हूँ तो हों न डेरैहों। रैहों न मौन जो गेह के रोस करैंगे तो दोस मै तेरोई दैहों ॥ २१९ ॥

सँग गांव को गोधन लै सिगरो रघुनाथ भरे मन चाइन मे। नहिं जानिये जात रहे कित कों बन भीतर कुंज सुहाइन मै ॥ दुख जानती है न कछू उत को छत लागत जो अँग पाइन मे। कहे धाय मिलाय के आव उताल तू गाय गोपाल की गाइन मै ॥ २२० ॥

जानि नहीं पहिचानि नहीं दुख होत बड़े यह साँवरो कोरी । हों तो चली जमुनाजल कों कवि दूलह सुद्ध सुभाव सों भोरी ॥ गाज परो ब्रज को बसिबो तुमहूँ सखि देखती हौ बरजोरी । मेरो गगे गहि ऐसें कहे तुम.काहे न आवती खेलन होरी ॥ २२१ ॥

गैयन घेरन वे चले गेह सु मै चली रैन भये अकुलानी । स्याम सरीर महा इन को झलके मेरी देह सुगंध सों सानी ॥ देखती तें न जो बेनी-प्रबीन न मानत केहूं अचंभित बानी । बेलि के धोखे गह्यो इन मोहि तमाल के धोखे इन्हैं लपटानी ॥ २२२ ॥

कामरी डारे कँधा पर देव अहीरक के सबही ठहरायो । जोई है सोई है मेरो तो प्रान है बाहिरी पाय मैं प्रान सो पायो ॥ कामरी लीन्ही उढ़ाय तुरन्त ही कामरी मेरो कियो मन भायो । कामरी मो जिय मार्‍यो हुतो इहिं कामरी वारे बिचारे बचायो ॥ २२३ ॥

आजु अकेली उतावली हों पहुँची तट लों तुम आई करार मै । बाल सखीन के हाहा किये

मन केहूँ दियो जलकेलि बिहार मैं । सीतल गात भये सिगरे उछरी तो मरू कै कितेक हूं बार मै । कान्ह जो धाय धरै ना अली तो बही ती भली जमुनाजलधार मे ॥ २२४ ॥

अब हीं की है बात हों न्हात हुती औंचका गहिरे पग जात भयो । गहि ग्राह अथाह कों लै ही चल्यो मनमोहन दूरही तें चितयो ॥ द्रुत दौरि के पौरि कै दास बरोरि कै छोरि कै मोहि बचाय लयो । इन्हे भेटती भेटिहौं तोहि अली भयो आज तौ मो अवतार नयो ॥ २२५ ॥

उधम ऐसो मच्यो ब्रज मे सब अंग तरंग उमंग न सींचे । त्यों पदमाकर छज्जन छातिन छ्वै छिति छाजत केसर कीचे ॥ दै पिचकी भजी भीजी तहाँ परे पीछे गोपाल गुलाल उलीचे । एक ही संग इहाँ रपटे सखि ये भये ऊपर हौं भई नीचे ॥ २२६ ॥

आई सँदेस सुनावन कों सु भई कवि दूलह झोल हमारी । वारिये कुम्भकरन की नींद कि है मुचकुन्द की नींद कहा री ॥ ऊपर हों मचकी मचकों लचकै पलिका सखि देखि हहा री । तैं

क्यों न आय जगावें इन्है हौं जगाय जगाय जगाय कै हारी ॥ २२७ ॥

परिपूरन प्रेम तें पूजि सिवा प्रति जाम पति-ब्रत पालती हैं। निसि बासर ध्यान धरें तिनको मन तें तन नेक न हालती हैं ॥ सरदार निबा-हनहार वही हम को न कला लखि लालती हैं। ननदी ए तिहारी सुने बतिया नटसाल लो साहिब सालती हैं ॥ २२८ ॥

वे थिर की बतियाँ करि कें थिर जे थिरकी करि वे थिरकी हैं। वे खिरकी खिरकी न बनावत कै खिरकी खिरकी खिरकी हैं ॥ ए सरदार सुनें सवरीं नवरी नवरी नवरी ढरकी हैं। वे घर की घर की न बिचारत ए पर की पर की परकी हैं ॥ २२९ ॥

रहो अरगाइ लगाइ के काहू सों काहे को देति हौ मार रिसानी। आन जो काहू के कान परेंगी तो होयगी बैरिन की मन मानी ॥ कंकन टेव तिहारी यो आकरी तूही न बाहिर जात जिठानी। योही चलाइ बजाइ लई अब जाइ बलाइ तु लाइ के पानी ॥ २३० ॥

बैठियो देखि सुखेन सखी सँग बाल खिलौनन

देखि जरी हैं। सास गने निस वासर हू सुन एक की सोक बनाइ धरी है।। जान चतुर्भुज मोहि सचै निज सूधे सुभावन ते पसरी है। मैं इन को धौं कियो है कहा घर घालिनी बैरिनी बैर परी है ॥ २३१ ॥

आवत याहि खिलाइबे कों नित सूने बिसूने न तोहूँ सकाति हौं। छोह भरी बतियानहुँ सों यह छोहरा मोलि लई सब भाँति हौं ॥ टूटे हरा अचरा फटे ज्यों जु सु त्यों सुख लूटत हौं न अघाति हौं। योही दिये छतियान खरोट पै आंखिन ओट भये मरि जात हौं ॥ २३२ ॥

निज काज करें अपने मन को तन को न दया उर धारति हैं। गिरि सों गिर आइ मिलावति फेर उपाइन सों विच पारती हैं ॥ मिलि चोंचदि यानी चवाइन ये कुलकानन नेक निहारती हैं। इन सो न उपाइ चले कबहूँ मिलि मोहनी मंत्र सो डारती हैं ॥ २३३ ॥

बैठो भटू उठि मो ढिग आन सुता दिन की रिस पेट पचायें। गारि दये को न माने भलो बुरो या· सुनि के सुर सोर सचायें ॥ तू न उघारिए आनन को पट धूर लगै द्रिग नेक बचायें।

कामरी ओढि के नंद को सामरो ऐसे विचारो बयार बचायें ॥ २३४ ॥

याही ते नीके परोस बसें सब अत परोसई होत सहाई । आली है सौति मतो रस बादिने जानत्ति हो नहीं पीर पराई ॥ कान्ह उठाय लयो मुहि दौर कहा कहिए कविराम बडाई । बैठि गई सुधि यो न रही तन ऐसी कछू मोहि घूमरि आई ॥२३५॥

खेलि रहे हैं हमेंस जिहाँ उहि बैस कहाँ बर ही सुखदानि है । वैसही पीछे तें आन के मोहन मूंदत नैनन काहू की कानि है ॥ ए तो सयानी हैं जानती हैं यह रावरी जो लडबाउरि बानि है । देखि है कोऊ जो ऐसे मे और सो और की और कछू जिय आनि हैं ॥ २३६ ॥

चोर सो मोहि पऱ्यो पहिचानि लग्यो कछू दूरि तें सेवक सोहे । आनि अचानक बाँह गही मोहि जानि अकेली महावन मोहे ॥ आवत लोगहि इतै लखि कै तब ढीठ हिये मे कछू सकुच्यो है । गेंद हमारे हरे कहिकै अँचरा गहि भाज्यो न जानिये को है ॥ २३७ ॥

अलि हों तौ गई जमुनाजल कों सु कहा

कहौ बीर बिपत्ति परी । घहराय कै कारी घटा उनई इतने हीं मे गागरि सीस धरी ॥ रपट्यो पग घाट चढो न गयो कबि मंडन ह्वै कै बिहाल गिरी । चिरजीवहि नंद को बारो अरी गहि बाँह गरीबनै ठाढी करी ॥ २३८ ॥

ज्यों ज्यों चबाव चलै चहुँओर धरैं चित चाव ये त्योंही त्यों चोखे । कोऊ सिखावनहार नहीं बिन लाज भये बिगरैल अनोखे ॥ गोकुल गाँव कों एती अनीति कहाँ तें दई धौं दई अन-जोखे । देखती हौ मोहि माझ गली मे गही इन आनि धौं कौन के धोखे ॥ २३९ ॥

बेनी जू या ब्रज मे बसि कै हँसि कै न चली न मै सीस उठायो । काल्हि कलिंदी के तीर गयो गिरि टीको लिलार को नीको न पायो ॥ हेरि लियो हरि टेरि कह्यो यह कौन को है अजू मै पर्‍यो पायो । मोहि जँजाल पर्‍यो री महा नंदलाल सों बोलत हीं बनि आयो ॥ २४० ॥

लोग लोगाइन होरी लगाई मिला मिली चारन-मेटत ही बन्यो । देव जू चंदन चूर कपूर लिलारन लै लै लपेटत ही बन्यो ॥ वै तिहिं

औसर आय गये समुहाय हियो न समेटत ही बन्यो। कीन्ही अनाकनी मै मुख मोरि पै जोरि भुजा भटू भेटत ही बन्यो ॥ २४१ ॥

आयो सुहायो सु मो मन भायो कह्यो सुख सासु ननंद तें भारो। मो तें जुदो कबहूँ न रह्यो कबि दूल्ह मो मन प्रान अधारो ॥ कोककलान के सीखत हूँ यह किंकिनी पायल को झनकारो। सो जा सखी भरमै मति री यह खोजा हमारे ही माय के वारो ॥ २४२ ॥

तूँ मुसुकाति कहा कनखैयन भैयन सों इन कों समुझाऊँ। हार हरो हरि मो जमुनातट लै गुरुलोगन नाऊँ कढाऊँ ॥ सासु सुनै ननदी दुख दारुन तौ घर भीतर पैठ न पाऊँ। पानि धरै न पयोधर पै सखी ईस के सीस की सोंह खवाऊँ ॥२४३॥

जाके चरित्र औ चातुरई चित चेति चितै चतुरानन हारो। त्यों पदुमाकर स्वाँग सबै दसहूँ अवतार को ल्यावन हारो ॥ देखती हौं नख तें सिख लौं बनि बैठो वहै मनों नंद को वारो। मोहि सकेलि कै केलि करै सखी या बहुरूपिया कंत हमारो ॥ २४४ ॥

हों तो कहा जुपै भाखतीं ए हमहूं तुमहूं को कहूं अनुरागत। जानतीं एऊ इहाँ मिलते छतियां छतियाँन सों कीन्हे गतागत ॥ त्यों पदमाकर कै तिरछे कढि जाउ लला कर जोरि या मागत। खोरि ना नंदकिसोर तुम्हे यह खोरि तो साँकरी खोरि को लागत ॥ २४५ ॥

जोर जगी जमुनाजल धार मे धाय धंसी जलकेलि की माती। त्यों पदुमाकर पैग चलै उछलै जब तुंग तरंग विघाती॥ टूटे हरा छरा छूटे सबै सरबोर भई अंगिया रंग राती। को कहतो यह मेरी दसा गहतो न गोविंद तो मै बहिजाती २४६॥

आजु अकेली उतावली हों पहुंची तटलौं तुम आई करार मे। बाल सखीन के हाहा कियें मन केहूं दियो जलकेलिबिहार मे ॥ सीतल गात भये सिगरे उछरी तो मरूकै कितक हू बार मे। कान्ह जो धाय धरैं न अली तो बहीती भली जमुनाजलधार मे ॥ २४७ ॥

गाँव के लोग धरैं सब नाव बचाव चहूं दिसी मैं उनयो है। भीतर संभु सदाँ रहिबे जमुना को नहायबो छूटिगयो है॥ देखतहीं लगि जात कलंक निसंक है काहू न अंक लयो है। गोकुल

मैं अरी नँदलला अबलान कीं बाँधि को पट मर्यो है ॥ २४८ ॥

कातिकी न्हैबे कों लोग चले अपनो अपनो सबही संग जोन्यो। राखि गई घर सूने बिसासिनि सासु जंजाल तें मोहि ना छोन्यो ॥ है तो भली घरही जो रहो तुम यों कहिके ननदी हू निहोन्यो। प्यारी परोसिन सों कह्यो टेरि परोसी के कान हुँवा सों निचोन्यो ॥ २४९ ॥

धाय रिसाय गई घर आपने तीरथ न्हान गए पितु भैया । स्यामैं सुनाइ कहै को दुहैगो लगै निसि आधिक में यह गैया ॥ दासियों रुसि गई कितहूँ सजनी यह कौन सुनै दुख दैया । द्वै पट पौढ़ि रहौंगी भटू पलगाँ पर मेरिऊ जानै बलैया ॥ २५० ॥

भादव की निसि भूरि उठे घनघोरन तें तन जोर बितैहैं । सासु बिसासिन औ ननदी प्रन-पालि परोसिन के घर जैहैं । चौ चँदचोरन को चहुँवा सरदार कहाँ केहितें दुख कैहैं । सोच हमें सबरी दिसि को निसि पाछिले जाम पिया घर ऐहैं ॥ २५१ ॥

आलि गोधन पूजन को उमह्यो ब्रज मांहि चली

लख सोमन तें । सब पैहैं मनोरथ को फल बेगि रही घर मे महा भागेन तें ॥ सजनी रजनी अरी एक रहैं संत्र पूजिहैं पूरब जोगन तें । योहू कान्हैं सुनावती आली के ओखें जियोंगी मैं क्यों छुटे लोगन तें ॥ २५२ ॥

खेलतही सजनीन मिली संग चौपर चाक महा रस लैबो । नंदन गोकुलचंदजू को कहूं दीठि पर्‍यो ललचाय चितैबो ॥ नागरि नारि कहा पर गोट सों कीजतु है कत आपुन ऐबो । जो करै ईस तो बीस बिसे कछू दांव परे अब कै मिलि जैबो ॥ २५३ ॥

जातहुती गुरु लोगनि मैं कहूं आय गए हरि कुंज गली सों । लाज सों सौंहैं चितै न सकी फिर ठाढी भई लगि आलि अली सों ॥ आरसी ऊँची करी कर की कहि तोष लख्यो छबि भांति भली सों । चारुता चातुरता पर लाल गयो बिकि श्रीवृषभानलली सों ॥ २५४ ॥

बैठी तिया गुरुलोगनि मे रति तें अति सुंदर रूप बिसेखी । आयो तहां मतिराम सो जामें मनोभव ते बढि कांति उरेखी ॥ लोचन रूप पियोई चहैं अरु लाजनि जात नहीं छबि पेखी ।

नैन नवाइ रही हिय माल में लाल की मूरति लाल में देखी ॥ २५५ ॥

बैठी तिया गुरुलोगन मे रतिते रमनीय सी रूप सोहाई। आयो तहां मनमोहन त्यों सब की अंखियां न वहे छबि छाई ॥ कैसे लखें पिय बैनी-प्रबीन नवीन सनेह सकोच समाई । पीठि दै भांवरे कों सजनी सजनीन की दीठि सों दीठि लगाई ॥ २५६ ॥

जातही बाल अलीन के साथ में पीछे ते बोल सुन्यो अनुरागी। क्यों लखिये लखि जाय सखी लखिबे ही कों लालच के रस पागी ॥ छाड दई सब साथ की सुंदरी यों डगरी डग द्वै करि आगी। फेरि के नारि कह्यो चल नारि सों टेरन के मिस हेरन लागी ॥ २५७ ॥

कैसेहु देव बधून में कोऊ जु होय तो ताकी बरब्बरी बाछे । सोहति है नख तें सिख लौं मनि अंग अनूप सिंगारनि काछे ॥ सील बडाई जनाय बिनै चलै सासु औ नंद जिठानी के पाछे । नैनि के सैननि मोहन कों मुरि के मुसुकाइ बिलोकति आछे ॥ २५८ ॥

खेलै अलीजन के गन मै उत प्रीतम प्यारे सों नेह

बीनो । नैनन बोध करै इत कों उत सैनन मोहन को मन लीनो । नैनन की चलबी कछु जानि सखी सखानि चितैबे कों कीनो । जी लखि पाय जम्हाय गई चुटकी चुटकाय बिदा करि दीनों ॥ २५९ ॥

कसिबे मिसि नीबिहि के छिन तों अंग अंगन दास दिखाय रही । अपनेहीं भुजानि उरोजनि कों गहि जानु सों जानु मिलाय रही ॥ ललचो हैं लजों हैं हँसों हैं चितै हित सों चित चाय बढ़ाय रही । कनखी करिकै पग सों परिकै फिरि सून निकेत मे जायरही ॥ २६० ॥

बंसुरी सुनि देखन दौरिचली जमुनाजल के मिसि बेगि तबै । कवि देव सखी के सकोचन सों करि ऊधम यों रस कों त्रितवै ॥ ब्रखभानकुमारि मुरारि की ओर कटाच्छन कोरन सों चितवै । चलिबे कों घरैं न करै मन नेक घरै फिरि फेर भरै रितवै ॥ २६१ ॥

गोरस बेचि फिरी बनिता अरु गाइन लाल लियें अनुरागी । गेंदें बनाइ कै फूलन की चली खेलत आपुस माझ सभागी ॥ आवत कान्ह बजावत बांसुरी देखि तिया मनो सोवत जागी । और सखी मिस लै कर बाल चलाई सुगेंद गुपाल कै लागी ॥ २६२ ॥

भूजिबे कों वरसाइत के दिन सुंदरि आई सा[illegible] मनोरति । फेरी फिरें सुकह्या कहिबे लखि [illegible] कों आनंद सिंधु हिलोरति । जोरै सखी [illegible] लैं इत सूतहि तोलै तिया उत आंखिन जोरति । आबति सामुहें सांवरे के जब हेरि रहैं फिरि तार हि तोरती ॥ २६३ ॥

भौन मे जान न देति हमें विन बातन देन[illegible] करतालें । देखि सुभाव खरो रिस को सुनजीक [illegible] आइ सकें परवालें ॥ बोलति बोल कुबोल सबै नटसाल सेते उर मे अति साले। जाति रही ननदी जबतें तबतें लगी सासु चवाइ के चालें ॥२६४॥

सिगरी निसि जागत जात सदा पल सों पल लागत ना इनके । घरही रहिए अब का कहिए गुन औगुन चोज चवाइन के॥ हमरे नहि पीतम होत सगे लगे बातन लोग लुगाइन के। किन्हु के बल ऊतर दीजे इने सु सुने वने चोज चवाइन के २६५

धाइ नही घर दाई परी जु रहाई खिलाई की आंख बहाऊं । औरही आवै रतौंधी इते पर ऊंचो सुने सो महा दुख पाऊं ॥ कान्हनवेरियेन्याउन घोइन आलिन को लगिहौं बहराऊं। ए हमरे घर सोवन आवें कि हौं इनके घर सोवन जाऊं ॥२६६॥

छुवो जनि हाथ सों हाथ किये पलहू पल बाढत प्रेम कला । न जानिये जीभें कहा चढि जाइ चले पुनि केशव कौन चला ॥ भलेही भले निबहे सों भली यह देखिवेही की यह लाहू भला । मिलो मन तो मिलिवोइ कहू मिलिबो न अलौकिक नंदलला ॥ २६७ ॥

जबलों घर को धनी आवे घरें तबलों तों कहीं चित दीवो करो । पदमाकर ए बछरा अपने बछरान के संग चरैवो करो ॥ अरु औरन के घरते हम सों तुम दूनी दुहावनी लैवो करो । नित सांझ सवेरे हमारी हहा हरि गाँएँ भला दूहि जैवो करो ॥ २६८ ॥

पिय पागे परोसिनि के रस मे बस मे न कहूं बस मेरे रहें । पदमाकर पाहुनी सी ननदी ननदी तजें ए अवसेरे रहैं ॥ दुख और ऊ कासों कहौं को सुने ब्रज की बनिता हग फेरे रहैं । न सखी घरें सांझ सबेरे रहैं घनस्याम घरी घरी घेरे रहैं ॥२६९॥

यह लात चलावनी हाय देया हर एक पैं नाहिं चलावनी है । सुनी तेरी तरीफ मिलाइबे की हित तेरे सों माल पुहावनी है ॥ कवि ग्वाल चराओ लैआवो इहाँ फिरि बाँधनी पौरि सोहाँवनी

है। मनभावनी दैहौं दुहावनी पै यह गाय तुहीं पै दुहाँवनी है ॥ २७० ॥

मासुरे जाय कछू दीनतें रह्यो छाडिदियो निज मंदिर भैंयाँ। दाऊदु दाऊद हैं जर सों परसों लई कातिकी की मग मैंयाँ॥ याही मसूस मरों का करों रिखिनाथ परों में परोसिनि पैंयां। कोऊ कहूं न मिलै मग मै हों सवारहीं जाति दुहावन गैंयां॥ २७१ ॥

ऐसे वने रघुनाथ कहै हरि काम कलानिधि के मद गारे। झाँकि झरोखे सों आवत देखि खडी भई आय कै आपने द्वारे॥ रीझी सरूप सों भींजी सनेह यों बोली हरें रस आखर भारे। ठाढ हो तोसों कहौंगी कछू अरे ग्वाल बडी बडी आंखिन वारे ॥ २७२ ॥

बुरा मानती जो सिख देत भटू दुख पावती बात सुनाइबे मे। कही जायगी देखि कुरीति कछू समुझोगी न जो समुझाइबे मे ॥ कहा लैजौ हाथ पराये बिकें कहि ठाकुर लोग हंसाइबे मैं। हमै को गनै कासां परोजन है बुनिबे मे न बीन बजाइबे मे ॥२७३ ॥

कहि आई इहाँ की कुरीति लखें सो कही

सुख बात चलाइबे में। तुम पांच कि सात मिलाय कहो इत लैहो कहा खिसियाइबे में॥ कहि ठाकुर कौन सों का कहिये दुख पावती हो समुझाइबे में। परो कौन परोजन है जू हमैं बुनिबे मैं न बीन बजाइबे में ॥ २७४ ॥

उते आहट पायके सांवरे को इते देखिबे मैं मन थारो पगो। मिसकै सखियांन तें ह्वै कै जुदी झुकि झांकी झरोखे अनंद खगो॥ यह मैं हूं निहारत ही तुलसी समुझायबे मैं कत मोसों जगो। परो कौन परोजन है तुम सों कहिये कछू तो को हमारी लगो॥ २७५॥

व्रजमंडली देखि सबै पदुमाकर ह्वै रही यों चुप चापरी है। मनमोहन की बहियां में छुटी उलटी यह बेनी दिखा परी है॥ मकराकृत कुंडल की झलकैं इतहूँ भुज मूल मैं छापरी है। इनकी उन तें जो लगीं अँखियाँ कहिये कछू तो हमै का परी है।' २७६ ॥

बीतिबें ही सुतो बीति चुकी अब आँजती हो केहिं कांज लुकंजन। त्यों पदमाकर हाल कहें मत लाल करो हग ख्याल के खंजन ॥ रोखित रुचुकी

कंचुकी के बिच होत छिपायें कहां कुच कंजन। तोहि कलंक लगाइबे कों लग्यो कान्हहीं के अधरान में अंजन ॥ २७७ ॥

नैन बडे बडे बांकी चितौनी चलाकी पढी मनो भू परखी है। जाकें बिलोकत बेनीप्रबीन कहै दुति मै न काहू की नखी है ॥ आई कहांतें है राधे कहौ अबलौं वृजमंडल मै न लखी है। भांवरी सी मग देत फिरै संग सांवरी सी यह कोन सखी है ॥ २७८ ॥

तिन सों कहियै यह बात बलायल्यों गोपन की नहिं जानत जो । हमसों इतनो छल हेत कहा हम साथिनी हैं इहां बाहरी को ॥ रघुनाथ जो है दसा सो सुनियै कछू है न छपी जग जानत सो। जबसों मिली सादर तूं उनसों तबसौं घटि ब्याही को आदरगो ॥ २७९ ॥

अंजन दै दृग खंजन से करि केसरि आनन सों मसती हो। पान को आनि अहार रह्यो अरु हार के भार चलें फसती हो॥ देखती हौं रघुनाथ कछू दिन तें इंहिं छैलता मे लसती हौ। सांची कहो तुम्है मेरिये सों तुम कौन की आखिन मे बसती हौ। २८०।

आई हौ पाँयँ दिवाय महावर कुंजन तें करि के सुखसेनी। सांवरे आज सवांर्यो है अंजन नैनन कों लखि लाजती येनी॥ बात के बूझत हीं मतिराम कहा करती अब भौंह तनेनी। मूंदी न राखति प्रीति अली. यह गूंदी गोपाल के हाथ की बेनी॥ २८१॥

बातैं बनावती क्यौं इतनी हमहूं सों छप्यो नांहि आज रहाहै। मोहन की बनमाल को दाग देखाय रह्यो उर तेरे अहा है॥ तूं डरपै करै सौंहैं सुमेरहरी सुनु सांच कों आंच कहा है। अंक लगी तौ कलंक लग्यो जो न अंक लगी तौ कलंक कहाहै॥ २८२॥

अतिराते सुहाते दिगंतन मै कछु आरसी की रुचि राखि चली। इहिँ भाय सुधा मधु पाइ किते अभिलाष पयोनिधि नाखि चली॥ द्विजदेव जू आज प्रभात समै बन कौन के नाहिं भाषि चली। मुखसों मुखलाय अघाय किते रस कौने रसाल को चाखि चली॥ २८३॥

आई हौ भोर भली बनी देव बसंत निसा बसि बीच बगीचैं। सूहे की सारी सलौट लसै मुख

चंद हंसे मुसुक्यानि मरीचें ।। पाई सुहाग की लूट तहां छिन आंखिन प्रेम सुधा रस सीचें। रोरी सी रेखी जु देखी परे सु छिपावती क्यां कुच कंचुकी बीचें ॥ २८४ ॥

ऐसी न चाहिये बातें अरी मनहीं मन मे घुरि के गढती हो। ईस सनेह री कुंज की देहरी भोरीसि ह्वै चुरिकै चढती हो ॥ बूझति ताको न ऊतर देति कछू को कछू मरिके पढती हो। कोन सयानप तेरो अरी सखियान हूं मों दुरिके कढती हो ॥ २८५ ॥

प्रात विकास लहैं सब पंकज कोरिक की गति दीह दहे हैं। आनंद के मकरंद भेर रचि रूप परागन पूरि रहे हैं ॥ काहें दुरावति है सजनी रतिनायक सायक एही कहे हैं। नंदकुमार के लोचन बान री जानतिहों उर तेरे बहे हैं।२८६।

नील औ पीत भले पलटे पट देखिये वीर रचाव प्रचंडल। छूटे तिलौंछे सुगंधित बार न बांध्यो अलीन अलौकिक मंडल ॥ वा सुख के लखिबे तें सखी चख सेख बतावत भेद अखंडल। ह्वै रह्यो भोर के चंदसो या मुख नें रह्यो कान्ह के कान को कुंडल ॥ २८७ ॥

तुम कान्ह को नेह छपावती हौ हित सौं करि राखती अंदर मै ।.चुपरी सी कहौ कोउ ऊपरी सौं यह चूपरी बात पुरंदर मै ॥ उर अंतर को अनुराग सुतो झलकै द्दग कोर के कंदर मै । जिमि बारिध मै कहूं बूडे जहाज कढै हुगली बर बंदर मै ॥ २८८ ॥

यह भीगि गई धौं किते अँगिया छतिया धौं किते यहि रंग रंगी । उबटेहू न छूटत दाग अजू कब की हौं छुडावती ठाढी ठगी ॥ सुनि बात इती मुख नाइनि के अति सूधी सयानप तें सो पगी । मुखमोरि उतै मुसुकानी तिया इत नाइनिहूं मुसुकान लगी ॥ २८९ ॥

लख्यो अपनी अँखियांन सों मै जमुनातट आजु अन्हात मै भोर । लगे द्दग रावरे सों उनके लगे रावरे के उनके मुख ओर ॥ दुरावति हौ सहबासिनि सों रघुनाथ वृथा बतियान के जोर । सुनो जग मै उपखान प्रसिद्ध है चोरन की मति जानत्त चोर ॥ २९० ॥

मोर सुमंजुल मौलि बनो दुति कानन कुंडल की मकरारी । गुंज हरा के छरा उर मै पट पीत

पितंबर की छवि न्यारी ॥ बेनु बजावत सेवक स्याम सुकाम के मंत्रन की गतिहारी । रावरी नोखी न चाल-भटू ब्रजबाल सबै नँदलाल पैं वारी ॥ २९१ ॥

रूपवती औ प्रवीन लखी .तुमसी नहिं पूरित मे परमासे । हौं सहबासिनी यातें कहौं न डरौं तुमरे रिसि के कलमासे ॥ हेरती हौ का दुरे हीं दुरे हनुमान रहौ कछु घोस छमासे । जानती हौं तुम सों उनसों दिन चारि मे ह्वैहैं तमाम तमासे॥ २९२॥

पापर बेलन कों कहती हम पापर पापर हापर धानी। आप तिरीक्षन तीक्षन नेन निरीक्षन ईक्षन सीक्षन दानी ॥ सो सरदार सबै समुझी हम चारु बिचार उचार कहानी । बैस उठानि इठानि भले तुम तो न जुठानि जिठानि कुठानी ॥ २९३ ॥

सासु सुपास लये ननदी नित आंगन माझ रहे अलसानी । ऊपर आप अटा पर प्रीतम जागत जात सबै निसि जानी ॥ बूझत का घर की सरदार भई दिलदारक आप दिमानी । नेबर पाय उतारि धरे रहे देवर संग मे देवर रानी ॥२९४॥

आजु सखी रसखान के ख्याल मे मालती माल

उतारि लईरी । मेरियो जानके सुंघी सबै चुप ह्वै गई काहूं न कीन खईरी ॥ भावते स्वेद की बास लखें ननदी पहिचान प्रचंड भईरी । मैं लखिवे रस की आखियां मुसक्याइ नचाइ लचाइ लईरी।२९५।

खेलन को रस छाडि दियो दिन ह्वैकते राति कहा बसती हो । मंडन अंग सम्हारन कों नित चंदन केसर लै घसती हो॥ छाती बिहारि निहारि कछू अपनी अंगिया की तनी कसती हो । तो तन कौ अँचरा उघरो कहो मो तन ताकि कहा हँसती हो ॥ २९६ ॥

सोर करें जुग सो जुग मारि सहेली को हाथ हथेली सों ठेले । मंडन आनके पासे परे तो बिरानी लै सार कहू धरि मेले॥ औरन सों लडवाउ रहो बिन दाउ परे सबरी न सकेलैं। मोहन को चित चोरि हितै सु उतै चितवैं इत चोपर खेलें ॥ २९७ ॥

जब बांसुरी की धुनि कान परै अंगराइ के अंग उमेठती हो । जनु जाननीए न कहू ए छपावत थे निजपोर मे पैठती हो ॥ कहिए जो कछू तो चवाइन हूजिय यो इठलाइ के ऐंठती हो । हांसि वाहिर

बाते करो हरि सो घर आइ के लाज के बैठती हो ॥ २९८ ॥

तू इत जोबन रूप भरी उतहू मन लाल को लाल चहा है। तैंऊ कछू बिनती सी करी उनहूं बड़ी बेर लों खाई हहा है ॥ देखि दुहूं को दुहूं पर प्यार भयो जिय में सुख मोंहि महा है। प्रीति बढै दिनहीं दिन दून दुरावती काहे को होत कहा है ॥ २९९ ॥

तुम जानती हौ की अजान सबै करि आगि को उत्तर धावती हौ। बतराती कछू की कछू हित सों अनुराग की आँखें छपावती हौ ॥ हमै काह परी जो मने करिबें कवि बोधा कहें दुख पावती हौ। बदनामी की गैलें बचायें चलौ कुलै काहें कलंक लगावती हौ ॥ ३०० ॥

धनि हौ व्रजबालन मे तुमहीं तुम तौ हम कों भल भावती हौं। करती हौ दुराव की बातें कहा हमहूँ सों न प्रीति लगावती हौ ॥ हनुमान चवाव चलैं तौ चलौ हक नाहक ही तन्न तावती हौ। हित मानती हौ तुम राधिका को नँदलालै सनेह सिखावती हौ ॥ ३०१ ॥

तोहि बिलोकत आवै इतै मन भावनी साँवरी सूरति सोहै। तूँहूँ निहारै लजोंहीं कै जाति पै नेकहू चाहति नाहिं बिछोहै ॥ जानति है तौ बताव अली यह को हनुमान भरो अति मोहै। भौंहैं मरोरि सिकोरि कै नाक कही अनखाय को जानियै कोहै ॥ ३०२ ॥

भोरहीं आवती हौ कित तें कुलकानि कहा तुम दीन्ही बिसार सी। मोहन रूप महा मद पान कै ए अँखियाँ बिलसैं सर सार सी ॥ कंचुकी हू दरकी कुच पैं हनुमान रही यह प्रीति पसार सी। तूँ हीं लखै किन एरी अली अब हाथ के कंकन को कहा आरसी ॥ ३०३ ॥

ग्वाल गुपाल के प्रेम पगी दिन दूध दधी ब्रज बेचन आवै। झूठ इतै उत डोल फिरै हरि कों पिछवार ते बोल सुनावै ॥ नोलबधू अतिबाल बय-क्रम स्याम के आवत नैन दुरावै। गोरस बेच चलै घर कों डग चार चलै बहुरो फिरि आवै ॥३०४॥

आगे तो कीन्ही लगा लगी लोयन कैसें छपै अजहूँ जो छपावति। तूँ अनुराग को सोध कियो ब्रज की बनिता सब यों ठहरावति ॥ कौन सकोच

रह्यो है नेवाज जो तूँ तरसै उनहूँ तरसावति। बावरी जो पै कलंक लग्यो तो निसंक ह्वै काहे न अंक लगावति ॥ ३०५ ॥

भाई भुजा अरु गोल कलाई सु कंचुकी छोटी लसै कुच छोटैं। टेढिये भौंहैं बडी बडी आँखिन तें जु तिरीछे लगावति खोटैं ॥ लागत लोटहीं पोट सु होत बचै नहीं कोटिक वोटन कोटैं। नई कमनैत नई ये कमान नये नये बान नई नई चोटैं ॥३०६॥

एकन सों मिलिबे कों सहेट बद्यो एक सों हित हेत निहोरति। एकन सों चितवै चित दै तिय एकनि सों मुरि भौंह मरोरति ॥ भोर तें साम लौं काम यहै रघुनाथ अनेकन के मन चोरति। छोरति एकन के चित कों हित एक सों तोरति एक सों जोरति ॥ ३०७ ॥

यों अलबेली अकेली कहूँ सुकुमार सिंगारन कै चलै कै चलै। त्यों पदमाकर एकन के उर मे रस बीजनि बै चलै बै चलै ॥ एकनि सों बतराति कछू छिन एकनि को मन लै चलै लै चलै। एकनि कौं तकि घूंघुट मे मुख मोरि कनैखिनै दै चलै दै चलै ॥ ३०८ ॥

अंजन दै निकसै नित नैननि मंजन कै अति अंग सँवारे। रूप गुमान भरी मग मै पग ही के अँगूठा अनोट सुधारे॥ जोबन के मद सों मतिराम भई मतवारिन लोग निहारै। जाति चली एहिं भाँति गली बिथुरी अलकैं अँचरा न सँभारे॥३०९॥

काहू सों नैननहीं मुसुकात है काहु सों कौनो लगावति घातें। काहु सों भाव सों भौंह चढाय के बैन सुनावति मीठे सुधा तें॥ जानि न जाति है जाति कहाँ छिन मे फिरि आवति है धौं कहाँ तें। तोहि परी यह बानि कहा सिगरे दिन येही सुहाति हैं बातें॥ ३१०॥

बार के लागि किवारन सों रहै वार न गौनी लखै मग पी को। भौंहनि मै हँसि सैनानि बोलति आरसी देखि बनावति टीको॥ होंहिं सबै रसिया कलि मै कबिराज यहै अभिलाष है जीको। बाम कों और न काम कछू एक काम है काम की बातन ही को॥ ३११॥

घूंघुट खींचे रहै अलबेलो दृगंचल चंचल है चपला तें। सुन्दर नैन की सैननि ही मै अनेकन भाँति की आनति बातें॥ बैठि झरोखन मै अँगरे

झमके दुति के मुरि के मुसकातें। तौही लौं जीकों परै कल जौलौं चलै कछु काम कलोल की बातें ॥ ३१२ ॥

जमुनातट कुंज कदंब के पुंज तरें तिनके नव नीर झिरें। लपटी लतिका तरु जालनि सों कुसुमावली तें मकरन्द गिरें ॥ बन बागन बेस बहार नई कबहूँ तिन कों न हिये सुमिरें। चहुंओरन तें गन भौंरन के एक मालती पें मेडरात फिरें ॥३१३॥

सरदार कहो केहि के दृग मे द्रिग दै अपने मृग वारती हो। मुसकाइ मनोहर मंजु महा केहि के घर पै पवि पारती हो ॥ धनधो केहि के धन के धन हो धन धन्य धनी प्रतचारती हो। बस काके भये अम रूप रचे हस काके हरा हिय धारती हो ॥ ३१४ ॥

गैल में छैलन आवत जानि के झांकि झरोखन रीझ रिझावै। चंचल अंचल डारे रहै अंगिराय अनूप सरूप दिखावै ॥ मोहति है मुरि के मुसकान में कोयल ज्यों कल बैन सुनावै। लाइ कै ललचाय चितै अटकी नट की गति मैन चलावै ॥ ३१५ ॥

आंगी कसै उकसे कुच ऊंचे हंसै हुलसै फुफु-
तीन की फूंदै। चंदन चोट करै पिय जोट पै
अंचल ओट दृगंचल मूंदै॥ देव जू कुंकुम केसर
कामक बारिज बीच बिराजति बूंदै। बाढो बिनोद
गुलाल लै गोदन मोद भरी चहुं कोदन कूदै॥३१६॥

जोबन के मदमाती है ऐंडि के सुन्दर बेसर
टीको बनाए। चूंदरियां चटकीली छबीली की बेस-
रियां चित लेत चुराए॥ ठाढे पयोधर जेहर
गाढी हंसे हरि हेर घनी छबि पाए। नैन नचाये
चले नटुआ से अंगूठन ऐंठ अनौठ उठाए॥३१७॥

कोमल कंज से पायन जावक अंग घनो घन-
सार लगावै। हाथन में मेहंदी मुख पान लिलार
में आड महा मन भावै॥ अच्छन अंजन चीर
प्रवीन चितै चहुंओर खरे मग धावै। या छबि
सों निकरै तरुनी सबरे निज गांव के छैल
रिझावै॥ ३१८॥

बारही गोरस बेचरी आज तूँ माय के मूड चढै
कित मौंडी। आवत जात लौं होयगी साँझ भटू
जमुना भतरौंड लौं औंडी॥ ऐसे मे भेटत हौं
रसखान है हैं अँखियाँ बिन काज कनौंडी। एरी

बलाय ल्यों जायगी बाज अबै ब्रजराज सनेह की डोंडी ॥ ३१९ ॥

ये अँखियाँ बिन काजर कारी अन्यारी चितै चित मै चपटै सी । मीठी लगै जिहिं फीकि हू बात सुनै सब सौतिन मै दपटै सी ॥ प्यारी तिहारियै एडी लसैं बिनु पावक जावक की लपटै सी । अंगनि तें बिनहीं अँगराग सुगंध झकोरन की झपटै सी ॥ ३२० ॥

मंजन कै दृग अंजन दै मृग खंजन की गति देखत भूली । बेनीप्रवीन अभूषन अंबर औरऊ अंगन कै अनुकूली ॥ राधे कों आज सिंगार्‌यो सखीन तिलोक की कोऊ तिया समतूली । सोने कि बेली सुगंध समूह मनो मुकता मनि फूलन फूली ॥ ३२१ ॥

माग सँवारि सिहारि सुबारनि बेनी गुही जु छवानि लों छावै । त्यौं पदमाकर या बिधि और हू साजे सिंगार जु स्याम कों भावै ॥ रीझैं सखी लखि राधिका को रँग जा अँग जो गहनो पहिरावै । होत यों भूषित भूषन गात ज्यों डाँक मै जोति जवाहिर पावै ॥ ३२२ ॥

प्यारे को जानि मिलाप सखी सब सौरभ लै उबटे सुख देनी। केसरि के जल सों अन्हवाय करी छबि छाय हियो हरि लेनी॥ भूषन सों सब भूषित कै रघुनाथ दे अंजन आँखिन पेनी। रीझ की बात सुनावति जाति रिझावति रीझि बनावति बेनी॥ ३२३॥

भूषन जेब जरायन के बर सुंदरि के सब अँग सँवारे। दीरघ स्याम महा सुकुमार से बार से बार बनाय सुधारे॥ कुंकुम सों रचि कंत के दन्तनि नोल कपोलनि ही मे निनारे। दर्पन देखतही सखि के कुच कुंभ दोऊ जलजात सों मारे॥ ३२४॥

बैठे कहैं तब बैठियो पास कहैं उठि जान तो जाइयो नीके। सोय रहो रघुनाथ कहैं सँग सोइयो लाय कै हीय सो हीके॥ पाँय पलोटियो कीजियो बाय सुभाय सों दीजो मिलाय कै जीके। पैहो महा सुख सीख सुनो यह या बिधि सों करियो बस पीके॥ ३२५॥

बैठहुगी गुरु लोगन के ढिग बात समै की बिचारि कहोगी। पीतम के मन की करिहो तब तो धन मै धनि होय रहोगी॥ गोकुलनाथ कीं

हाथ मे राखियो तौ सब सौतिन मै निबहौगी। हौ गरुई गरुवे गुन की गरुवापन सों सनमान लहौगी ॥ ३२६ ॥

कुल लाज गवाँय के हाय बलाय ल्यों पाय व्यथा कौ चितारहुगी। वह नीकी कहै ती सुमेर हरी तब तो यह नीति निकारहुगी ॥ अब तो इहिं जोबन जोग मै जालिम कान्ह के साथ सिधारहुगी। दिन बीते कछूक हमारी भटू ये हमारिये बातें बिचारहुगी ॥ ३२७ ॥

बैठो तहाँ न अजौं तजि भूलति हौं सुनि आई कहा न अनूठी । वे घरहाँई घने घर घालतीं सालतीं मेरे हिये सल झूठी ॥ बेनीप्रबीन क्यौं बेर करावतीं पावतीं हैं कछू हाथ ना मूठी। बीर की सों बिगरैगी घनी बनी जो भटू नाहक नाह सों रूठी ॥ ३२८ ॥

बारिही बैस बडी चतुरी हौ बडे गुन देव बडीयै बनाई । सुंदरि हौ सुघरी हौ सलोनी हौ सील भरी रस रूप सनाई ॥ राजबहू बलि राजकुमार अहौ सुकुमारिन मानो मनाई । नेसुक नाह के नेह बिना चक चूरि ह्वै जैहै सबै चिकनाई ॥३२९॥

है न समौ यह रूसिबे को सुनो भूल भरी सी कछू मति आमे। आवत मेघ मघा के मडे उमडे ये कहा करिहैं रतिया मे ॥ गोकुलनाथ के साथ बिना कटि है कहौ काम की कोक तिया मे। दूरि करौ रिस की बतियाँ बलि जाय छपौ पिय की छतिया मे ॥ ३३० ॥

जल बुंद बडी बडी साँवर से घन नैन बियोगी कों दूसत है । मिलि फूल अनेकनि सों बलकै तनपौन फूकार कै झूसत है ॥ रघुनाथ सहाय बिना लखिकै अरु मैन ढुक्यो मन मूसत है । पिय प्यारे सों प्यार की बातैं बिसारि कै ऐसी समै कोऊ रूसत है ॥ ३३१ ॥

हारि गईं सिगरी कहि कै हम रावरे की जे हितू सखियाँ हैं। भावन भौन सों रूसि गयो अब आनदहू के जमी पखियाँ हैं ॥ गोकुल माह मे मान करैं ते भई तिय बारि बिना झखियाँ हैं। दोष बिलोकिबे कों पिय के बिधि कीनी मनो ये बडी अँखियाँ हैं ॥ ३३२ ॥

बैठे रहे पलिका के तरे दृग बारि भरे हियरे दुचिताई। भूलि गये सुधि सोयबे की दुख दीह

भावे मुख बीरी न खाई । गोकुलनाथ सों ऐसी इहा तुम्हें लायक ही करिबो निठुराई ॥ प्रीतम कों इनको कलपाय कहा फल पाय के हाति बिताई ॥ ३३३ ॥

स्याम हीं नैन के बानन मार्‍यो मर्‍यो सो पर्‍यो मग मे पियरातु है । ऐसी कोऊ सों कोऊ ना करै जस कीनी की धीरज ना नियरातु है ॥ सेवक तैसइ हेरिकै फेरि हने तो बनै तब ज्यौ जियरातु है । लोक मैं है कहनावति या जरो आग को आगिही सों सियरातु है ॥ ३३४ ॥

यों कछु कीनी अचानक चोट जो ओट सखी के सकी न दुकूल है । देह कँपै मुख पीरी परी सु कह्यो नहीं जाय जु कै गयो सूल है ॥ माहिं उरोज मे आनि लग्यो अँगिरात जहीं उचक्यो भुज मूल है । कौन है ख्याल खिलार अनोखे निसंक कै ऐसें चलैयतु फूल है ॥ ३३५ ॥

मै गई माइके कालि कहाँ तें कढी सखियाँ सँग लै बरजोरी । कीरति जो सुनि पावै कहूं तो करै नहीं रावरी कीरति थोरी ॥ कौल से कोमल गात मनोहर बेनीप्रवीन सो बालन भोरी । ऐसी

ने बूझिये नौलकिसोर जो बीच गली बहियाँ झकझोरी ॥ ३३६ ॥

चलि के द्यौस मनै सुकविन्द असीसन आहि सुहाग लुगाई । नाइन पाइन जावक देत करीं परिहास की यों चतुराई ॥ लाल के कौंमन के मुकताहल लाल भए रहैं या अरुनाई । प्यारी लजाय रही मुख फेर दियो हँसि हेरि सखीन की धाँई ॥ ३३७ ॥

गौने के द्यौस सिंगार सिंगारि असीसतीं भाग सोहाग घनेरी । नाइन पाँइन जावक देत चढी परिहास की खास पहेरी ॥ बाजिहै कंत के कंध चढी सुनु बाल लजी सजनी हँसि हेरी । सौतिन कौं करि डारिहै कूंजरी ऊजरी गूंजरी गूजरी तेरी ॥ ३३८ ॥

मोरपखान को मौर धर्‌यो सिर ओढ लियो पटपीत नवीनो । कौंधर को करि स्वांग सखी परिहास यों प्रानपियारी सों कीनो ॥ गाढे गहे कुच दोऊ अचानक दूर कियो उर तें पटु झीनो । तीवी के भाव सों भौंहें चढाय मलैजु भलैन्काहि के हँसि दीनो ॥ ३३९ ॥

साँवरे गोरे की ओर तें संग लगी मिलि दामिनी कों घन नीको। नील निचोल मे गोरे से गात निसा अँधियारी मे रूप ससी को ॥ हौ तुम गोरी भलो मिल्यो संग त्यों साँवरो अंग है मोहन पी को। यों सुनि बेनी जु ओठनि ऐंठि हँसि भुज मूल उमेठि सखी को ॥ ३४० ॥

भेंट भई हरि भाँवती सों एक ऐसे मे आलि कह्यो बिहँसाय कै। कीजे लला रसकेलि अकेलियै केलि के भौन नवेली कों पाय कै ॥ भौंहैं अमाय कछू इतराय कछूक रिसाय कछू मुसुकाय कै। खैंचि खरी दई दौरि सखी के उरोजन बीच सरोज फिराय कै ॥ ३४१ ॥

री ललिता वह कौन सी पाहुनि आई तिहारई न्योति बुलाए। छोटी सी छाती छपानि लों बेनी नरोत्तम रूप की लूटि सी पाए ॥ सारी हरी अंगिया घन बेलि की घूमत सो लहंगा थिरकाए। कंज सो आनन खंज से नैननि एडिन ईंगुर सो लपटाए ॥ ३४२ ॥

झाँकति है का झरोखे लगी लग लागिबे की इहाँ झेल नहीं फिर। त्यों पदमाकर तीखे कटा-

छन की सरि कों सर सेल नहीं फिर ॥ नैननहीं की घलाघलि के घने घायन कों कहूँ तेल नहीं फिर । प्रीत पयोनिधि मे धसि के हँसि के कढिबो हँसी खेल नहीं फिर ॥ ३४३ ॥

जित स्याम सखान लिये तितहीं भरि लोचन चेत चेतावती हो । बडरी अँखियाँन चितौ तित हीं पर के उर सूल सलावती हो ॥ छितिपालनि छैल छली छलिकै छिटकाय महा सुख पावती हो । इन बातन तें बदनामि न हो हकनाहक बैर बढावती हो ॥ ३४४ ॥

नाहि ने नंद को मंदिर ह्याँ वृखभान को भौन कहा जकती हो । होंहीं अकेली तुहीं कविदेवजू घूँघुट के किन कों तकती हो ॥ भेंटती मोहि भटू केहि कारन कौनकी धौं छवि सों छकती हो । काह भयो है कहा कहो कैसी हो कान्ह कहाँ हैं कहा बकती हो ॥ ३४५ ॥

कान्ह भई वृषभानसुता भई प्रीति नई बहये चित जैसी । जांनै को देव बिकानी सी डोलै लगी गुरुलोगनि देखि अनेसी ॥ ज्यों ज्यों सखी बहरावति बातनि त्यौं त्यौं बकै वह बावरी ऐसी ।

राधिका प्यारी हमारी सों तू कहि काल्हि की बेनु बजाई मैं कैसी ॥ ३४६ ॥

आपने ओर की चाहे लिख्यो लिखि जात कथा उत मोहन ओर की। प्यारी वृथा करि बेगि मिलो सहि जाति व्यथा नहिं मैन मरोर की॥ आपुही बाँचि लगावति अंग अहो किन आनी चिठी चितचोर की। राधिके राधे रही जकि मोर लों ह्वै गई मूरति नंदकिसोर की ॥३४७॥

क्यों कलकंठ जित्यो इहिं कों जिहिं तें अति ही यह रोस भरी है। प्रानपियारे तिहारी त्रिया हमैं आनि कै बेमीप्रबीन अरी है ॥ एती कहै किन जाय कोऊ अब मोसों कछूक न चूकपरी है। बैर तिहारे हमारे हिये इहिं कोकिल कूक कै हूकभरी है ॥ ३४८ ॥

बोल न बोले हँसाए हँसै नहिं रूसि रहो तौ न फेरि मनावै। कुंजकुटी कल बाग तडागन ठाढी ठगी सी कहे न कहावै॥ तोसों कहौं हित मानि भटू इत प्रेम के कंदम को मुरझावै। मोहन संग रहै निसबासर हाथ पसारो तो हाथ न आवै ॥ ३४९ ॥

आधे बिलोकि बिलोयन कोयन फेर जकी

भपकी कहि दीबो । आधो चलइबो चंचल सो मन फेर तहाँ को तहाँ नहिं दीबो ॥ अधिक सोह पूरे निज पानिसों पान जहाँ को तहाँ रहि दीबो ॥ ऐसी दशा बिरही जिय देखि भली मन भाँवतें सों कहि दीबो ॥ ३५० ॥

लटकी पगियां लपटीजुलफैं सिर गीरज रेख सँवारि दई । मकराकृत कुण्डल गोल कपोल हिये लटकी बनमाल नई ॥ गहि डार कदंब की झूमत हे इन भौंयन बेनी जुहीं चितई । सुबिसारेतें क्यों बिसरे निसरै जिय तें वह मूरति मैन मई ॥ ३५१ ॥

देव में सीस बसायो सनेह कै भाल मृगंमद बिंदु कै भाख्यो । कंचुकी सों चुपर्यो करि चोवा लगाय लयो उर सों अभिलाख्यो ॥ कै मखतूल गुहे गहने रस मूरतिवंत सिंगार के चाख्यो । साँवरे लाल को साँवरो रूप मैं नैनन को कजरा करि राख्यो ॥ ३५२ ॥

केसहूं कोऊ करो उपहास हों नीकेहीं नाचति नेह नटू हों । फेगुन होउ किधों गुन देव करी गुन जाल लपेटि लटू हों ॥ चातक लों घनस्याम को रूप अघाति नहीं दिनराति रटू हों । दूसरो काज

न लोक की लाज भई ब्रजराज की भाट भटू हों ॥ ३५३ ॥

मोरपखा मतिराम किरीट मे कण्ठ बनी बनमाल सुहाई। मोहन की मुसुकानि मनोहर कुंडल डोलनि मे छबिछाई ॥ लोचन लोल बिसाल बिलोकनि को न बिलोकि भयो बस आई। वा सुख की मधुराई कहा कहौं मीठी लगै अंखियानि लुनाई ॥ ३५४ ॥

मैन मसालसी चंपक माल सी बाल रसाल दिवाल दुरी सी। ठाढीभई छिन एक गवाछन छायरही छबि पुंज पुरी सी। देखै अचानक बान-कहै गई दीठि कछू घनसार घुरी सी। याही अठा महिं या खिरकी महिं बारक कौंध गई बिजुरी सी ॥ ३५५ ॥

बार लगै न लगै उर मै चलिपै गति मंद महा गज मोहै। सीतल हीतल देत कियें पै लगै वह पावक सी लपको है ॥ सीधी सदां हमै बेनी प्रबीन पै टेढी चितौनि किये कहौं सोहै। मानु कै कै कबहूं न तनीपै समान है वाकी कमान की भौंहै ॥ ३५६ ॥

चोरन गोरिन मैं मिलिके इत आइहि हाऊ गुवालि कहांकी । जाकी न को अवलोकि रह्यो पदमाकर वा अवलोकनि बांकी ॥ धीर अबीर की धूंधुर मैं कछु फेर सो कै मुख फेर कै झांकी । कै गई काटि करेजन के कतरे कतरे पतरे करि हांकी ॥ ३५७ ॥

मेरो सिंगार करो सिगरो चहिये मनि मैं गाहिनो पहिरायो । सोंधे सनो पियरो पट ल्याय जो है उन के मन माह सुहायो ॥ गोकुलनाथ की मूरति ध्यान मै देखि कहे बिरहा भ्रम छायो । सेज सजे सजनी रति भौन मै बैठी कहा मन भावन आयो ॥ ३५८ ॥

जांछिन तें मतिराम कहै मुसकात कहूं निरख्यो नँदलालहिं । ताछिन तें छिनहीं छिन छीन व्यथा बहु बाढी बियोग की बालहिं ॥ पोंछति है कर सों किसलै गहि बूझति स्याम सरूप गुपालहिं । भोरी भई है मयंकमुखी भुज भेंटति हैं भरि अंक तमालहिं ॥ ३५९ ॥

आजु भले गहि पायो गोपाल गुहों गहि लाल तुम्हें गुनजालहिं । होन न देहुँ कहूँ चलचाल सुराखैं हिये पैं मिलाये के मालहिं ॥ बोलत काहे

बैन रसालहौ जानत भाग भरे निजभालहिं। सींचि कै नैन बिसालन के जल बाल सु भेंटति बाल तमालहि ॥ ३६० ॥

कान्ह भई भई कौलमुखी जु कही कुलटानि रही कुलरीतिन । देव सु देह सनेह सों भींजि बिदेह की आँचन देह की रीतिन । हेरे हरी जब तें हरी कुंज में और की हेरति हेर हरीतिन ॥ अंचर हार न बार समेंटति भेंटति है घर बार की भीतिन ॥ ३६१ ॥

मोहनलाल लखे कहूँ बाल बियोग की ज्वालनि सों तन डाढति। लागि गई अँखियाँ चितचोरनि भागि गई गुरु लोग की गाढति ॥ और की ओर कहै सुनै देव महादुचिताई सखीन के बाढति । नावँ लिये मुख ओर चितै रहै सोचि घरीक मैं घूंघुट काढति ॥ ३६२ ॥

आपु चले जब सों मथुरा तब सों यह तौ तन ताप सों छीजै । आए कृपा करि गोकुलनाथ लगो हिय सों अधरा मधु पीजै ॥ ध्यान की मूरति जान प्रतच्छ कहै पुलकै भरि नैन पसीजै । आजु बडे मुकतान की माल हमै घनस्याम इनाम मैं दीजै ॥ ३६३ ॥

आपुही आपु पै रूसिरहै कबहूं पुनि आपुही आपु मनावै। त्यों पद्माकर ताकि तमालनि भेंटिवे क्रों कबहूं उठि धावै। जो हरि रावरो चित्र लखै तौ कहूं कबहूं हँसि हेरि बुलावै। ब्याकुल बाल सुआलिन मैं कह्यो चाहै कछू तौ कछू कहि आवै॥ ३६४॥

जब तें निरखे हरि कुंजन में तब तें रस पुंज छकी बिहरै। छिन गाय उठे छिन धाय उठे छिन गोठ तें गैयन लै डगरै॥ कबि बेनी धरै छबि मोहन की मनमोहनी मोहियै स्याल करै। परै पायन मानिनी कै ललिता लता कै बनिता हँसि अंक भरै॥ ३६५॥

मोरकिरीट छुटी जुलफैं मुख चंद अमी मुसक्यानि महा है। गुंजहरा मखतूल छरा बनमाल त्रिभंग कै अंग रहा है॥ गोकुल गोरज साँवरो रंग रही पट पीट की पूरि प्रभा है। मोही सों राधा कहै सजनी न बिलोकति मोहि भई तू कहा है॥ ३६६॥

मोहि कहौ संग गोधन लै वृषभानपुरा को चलो छकती हौ॥ गुंजहरा मुरली पियसे पट

मोरकिरीट कहा तकती हो। गोकुल साँकरो है गई हो कहा साँकरो जो न कहै झकती हो॥ कान्ह कहाँ नंदगाँव कहाँ तुम कैसी भईहो कहा बकती हो॥ ३६७॥

केसव चौंकति सी चितवै छतियाँ धरकै तरकै तकि छाहीं। बूझिये और कहैं कछु औरही और की और भई पल माहीं॥ डीठिलगी किधौं प्रेत लग्यो मन भूलि पर्यो की कहो कछु कांहीं। घूंघट की घट की पटकी हरि आज कछु सुधि राधिकै नाहीं॥ ३६८॥

न्यौते गए घर के सिगरे सो बेरामी की ब्याज कै आजु रही मैं। ठाकुर है बाहिरी एक दासी सो राखी बरोठे बिचारि कै जी मे॥ आये भले खिरकी मग ह्वै यह आइबो चाहतिही हुती ही मैं। आजु निसा भरि प्यारे निसा भरि कीजिए लालन केलि खुसी मे॥ ३६९॥

लोग बरात गए सिगरे तुम राति जगे कों चली सब कोऊ। सुंदर मंदिर सूनो इहां अब को रखवार है ताहि न जोऊ॥ सासु कही तब हीं लखि यों लहुरी दुलहि घरहीं रहि सोऊ।

फूलि गए सुनि साजन गात समात न कंचुकी में कुच दोऊ ॥ ३७० ॥

सासु बचै ननदी लखिबो करैं या कों तौ ख्याल यहै दिनराति है । सूनो निकेत जु नेकहू पावै खरी तब रीझि भरी ललचाति है ॥ नीरें अटा पर पीतमैं पेखि तिया अतिहीं अँगिराति जम्हाति है । यों कछू आँनद होत हिए अँगिया फटि कोटिक टूक ह्वै जाति है ॥ ३७१ ॥

ग्रीषम की निसि फूलन को परवीन तिया परजंक बिछायो । चंदन चारु उसीर के नीरन चाउरी चौक सबै छिरकायो ॥ आइ कहूँ तें सयानी सखी निरसंक ह्वै जो परजंक उठायो । मोहन फेर तरेर सुनैन सखी तन हेर हिये सुख पायो ॥३७२ ॥

सोधि धरी मनि मंदिर में रंग रावटी दीप अनूप बनाई । चित्र बिचित्र लिखे बहु भाँतिन देखि लगै सब भांति सुहाई ॥ द्वार निहार पछित की भीत मे टेरि सखी मुख बात सुनाई । कौतुक फूल छिपे मह रास चितेरनि चौगुनी रीझ दिखाई ॥ ३७३ ॥

सूनो भयो खरिका भई साँझ सखी संग सो सब जानमे वाके। आइ गये इतने में तहाँ हरि कामकलानिधि चेरो है जाके॥ चाही भई अनचाहे अचानक सों मनमोद भयो उर ताके। मोती हरा के उठे सब हालि भये अँगिया की तनी के तराके॥ ३७४॥

सासुरे आई सरोजमुखी बिरुखी रुख माइके को अँग धाके। पास परोस के बाग के कोन लखी खिरकी निज भौन के नाके॥ ब्योंत बन्यो हित को चितचाय चल्यो मन आनद दृन्द के चाके। फूलि उठे कुच कंचुकी मे जुग गे बँद टूटि तराक तराके॥ ३७५॥

आरस सों रस सों अँगिराति दसों अँगुरी करि अंजुली काढी। त्योंरनि त्योंरी मरोरति भौंहनि मोरति नाक व्यथा मनो बाढी॥ नीवी को नाघ न राखति सूधे कसे उकसेई करै फिरि गाढी। घूंघुट टारि उघारि भुजंचल कंचुकी के बँद बाँधती ठाढी॥ ३७६॥

मोहन सों कछु घोसनि तें मतिराम बढ्यो अनुराग सुहायो। बैठी हुती तिय माइके में ससु-

यार को काहू सनेस सुनायो ॥ नाह के ब्याह की चाह सुनी हिय माहँ उछाह छबीली के छ्योम चौंकि रही पट ओढि अठा दुख को मिस कै सुख बाल छिपायो ॥ ३७७ ॥

गाँव के ठाकुर को है बुलाव सुनावै धन्यो सब ही को जु आयो । नंद गये औ गयो सिगरो ब्रज क्यों परसाद जू जात गनायो ॥ जाइबे कों तुमहूं कों उतै यों परोसी सों टेरि कै कान्ह सुनायो । सूख धन्यो सो परोसी पन्यो पै परे सो कछूक परोसिनी पायो ॥ ३७८ ॥

सासु गई चली पीहर कों पति लाद कै माल कहूं कों सिधायो । संग रहीं सजनी सो सहेट की साथिनी जौनकरै मन भायो ॥ गोकुल भाग भरी तिय के हिय काम कलोल को चौचँद छायो । फूलि पसीजि उठी सुनतै घर मीत परोस को पीतम आयो ॥ ३७९ ॥

है दिन के पंथ तीरथ न्हान कों लोग चले मिलि कै सिगरोई । सासु बहू सों कह्योकि रहौ तुम और रहैं वहि राखत जोई ॥ सुन्दरि आनँद सों उमगी हिय चाहत ही सो भयो अब सोई ।

प्रेम सों पूरन दोऊ जने घर आय रही की रह्यो ननदोई ॥ ३८० ॥

लै अनुसासन बासव को सु उठे नभ मंडल मेघ अपारन । छ्वै छितिछोरन कों धुरवा करि बारि भई धरनी जलधारनं ॥ पीतम संग परी अकुलात हिये हहराति सुहात अगारन । बोरि सबै बन कों बन त्यों उमगी सरिता छितिछोर करारन ॥ ३८१ ॥

जाय जहाँ रतिरंग मचाय करै मनभावन की चित चोरी । हावन भावन सों सिगरी निसि बीततहीं जहाँ आनद बोरी ॥ गोकुल ह्वै गई ब्याकुल सी तिय के तन मे तलबेली सी दौरी । बूडि गयो जल सों सिगरो सुनि कालिंदी कूल कों कुंज किसोरी ॥ ३८२ ॥

रितु आई सुहाई नई बरखा बढ्यो मोद मयूरन के हिय को । हरिआई चहूं दिसि फैलरही अनुराग जगावत है जिय को ॥ चढि ऊंचे अटान बिलोकै घटा कर कंज सों हाथ गहे पिय को । लखि कंजकलीन तडागन में मुख मंजु मलीन भयो तिय को ॥ ३८३ ॥

काहू सों काहू कही लखि यों यह जो रघुनाथ महीपति आयो। पाटि के नारे नदीतट के बन काटि कै चाहत घाट बनायो॥ कान मैं कामिनी के यह आनि कै बोल पर्‌यो मनो बज्र सो नायो। सूखि गयो अँग पीरो भयो रँग स्वेद कपोलन के सँग छायो॥ ३८४॥

नीचिये नारि किये रहै नारि मुरारि के प्रेम पगी कछु ऐसें। काहू की बात सुनै समझै नहीं बोलत बोल बराय हरे सें॥ खेत कट्यो सुनिकै बिलखी अवाचित्र लिखी लखिये भई जैसें। ऊख मे जो रस पावतही अब सो रस कों तिय पायहैं कैसे॥ ३८५॥

बोयो सुबीज सुखेत सवाँरि कै बेस सुधारि कै साजि कियारी। जामे भई हरियारी रहै नित द्यौसहू में निसि की अंधियारी॥ अंग को ताप हरै तहाँ जात सुकाटत है जहाँ लोग अनारी। तूरत देखत दूखत गात है ज्वारि के सूखत सूखत प्यारी॥ ३८६॥

पैहो न होम उदास बलायल्यों हैं हमहीं सी परोसीनि पीके। सासुरे जात मैं सोच कछू न करो

जिय में समुझाइये नीके ॥ मै रघुनाथ की सौंह किये कहों ऐसई बाग घने सबही के । याइके मे मनभावतो जैसोई है बन तैसोई कूल नदी के ॥ ३८७ ॥

बेलिन सों लपटाय रही हैं तमालन की अवली अतिकारी । कोकिल केकी कपोतन के कुल केलि करैं अति आनदबारी ॥ सोच करै जनि होहु सुखी मतिराम प्रबीन सबै नर नारी । मंजुल बंजुल कुंजन के घन पुंज सखी ससुरारि तिहारी ॥ ३८८ ॥

छाय रही बहु फूलन के रज मानो मनोज बितान तने हैं । सीरे समीरे सुधाहु तें सौगुने डोलत मंद सुगंध सने हैं ॥ गुंजत पुंज है भौंरैंन के तहाँ होत कपोत के घोस घने हैं । सोच कहा जो न ज्वार जमी ये तमाल के कुंज तौ वेई बने हैं ॥ ३८९ ॥

आछी अटारी चौबारे को बैठका मंदिर सूने अनेक नजीके । खेलन कों तुम कों घने ठौर हैं जाउ उतै सुख पायहो नीके ॥ हैं मनिमंदिर लोग उजागर नागर प्रीति पगे पर तीके । त्यों इहाँ

त्यौं ससुरार तिहारेहु बाग बडे ढिग हैं खिरकी के ॥ ३९० ॥

लालन को पिंजरा कर लाल लियें प्रति कुंजन कुंजन ज्वै रहे । सेवती सोनजुही के प्रसून खरे खुर से तिहिं ऊपर कै रहे ॥ देखतही नवला तिहिं कों जसवंत लगे अंलगे पल द्वै रहे । च्वै रहे चंचल बाल बिसाल के दीरघ जो दृग कानन छ्वै रहे ॥ ३९१ ॥

चारिहूं ओर तें पौन झकोर झकोरन घोर घटा घहरानी । ऐसी समै पद्माकर कान्ह के आवत पीत पटी फहरानी ॥ गुंज की माल गोपाल गरें ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी । नीरज तें कढि नीर नदी छबि छीजत छीरधि पैं छहरानी ॥ ३९२ ॥

कानन तीखिये तान सुनै निसि द्यौस सुहात न नेकु निवासु री । खेद करै अतिही तन मै छिनहीं छिन छेदत भेदत पाँसुरी ॥ काम सों मोहनी मंत्र पढी अलि कैसे बने इहिं ठौर सुपासु री । मोहन के अधरान धरी हठि बैरि परी यह बैरनि बाँसुरी ॥ ३९३ ॥

यह ऐसो अदाव भयो या घरी घर हाँइन के परि पुंजन में। मिस कोऊ न आय चढे चित पैं इन की बतियाँन की गुंजन में ॥ कबिराम कहै भई ऐसी दसा गिरिलंघन की जिमि लुंजन में । किमि हौं अब जाय सकौं हे दई बजी बैरिन बाँसुरी कुंजन में ॥ ३९४ ॥

सुनतै धुनि धीर छुटै छन मै फिरि नेकहू राखै सचेती नहीं । गुरुलोगन के परी फंद जऊ कुलकानि तऊ रहै देती नहीं ॥ बलि कासों कहौं मैं दसा अपनी हनुमान कहै कोऊ हेती नहीं । यह बैर परी कस बाँसुरिया बजि कै फिरि हा सुधि लेती नहीं ॥ ३९५ ॥

एक समै एक गोपबधू भई बावरी नेकु न अंग सम्हारै । माय सुधाय कै टोनां सो ढूंढति सासु सयानी सयानी पुकारै ॥ यों रसखान कहै सिगरे ब्रज आन को आन उपाय बिचारै । कोऊ न मोहन के कर तें यह बैरिन बाँसुरिया गहि डारै ॥ ३९६ ॥

ताप चढी सी रहै तन मै सुख सोयबो भूलि गई दिन राति है । साथ सखी के निकुंजन लौं

चलि व्याकुलकै इस बारि सों न्हाति है ॥ गोकुल भोजन की कहै कौन सो पानी न पीवति बीरी न खाति है । जा दिन तें मथुरा कों चले हरि ता दिन तें पियरी परी जाति है ॥ ३९७ ॥

रूप निधान सुजान लखे बिन आँखिन दीठि ही पीठ दई है । ऊखर ज्यों खरकै पुतरीन मे सूल की मूल सलाक भई है ॥ ठौर कहूं न लहै ठहरान को मूंदे महाअकुलान मई है । बूडत ज्यों घनआनद सोच दई विधि ब्याधि अरुचि नई है ॥ ३९८ ॥

दूती सकेत गई बन को बदि प्यारी पगी हरि के गुन गाथ मे। गाय दुहावन कों कहि संभु खरी खरीकान सखी न के साथ मे ॥ केलिं के कुंज बजी मुरली बुधि गोपबधू की बँधी ब्रजनाथ मे । दोहनी हाथ की हाथै रही न रह्यो मन-मोहनी को मन हाथ मे ॥ ३९९ ॥

भूषन हार सिंगार सबै अंग पूजन हेत चली सखी साँवरी । कांमकला सी लसै बिलसै हुलसै मनमोहन को सुने नाँवरी ॥ केलि के कुंज बजी मुरली कबिदत्त गई ठगि सी वोहि ठाँवरी ।

साँवरी सूरति सों अटकी भटकी सी वधू बटकी भरे भाँवरी ॥ ४०० ॥

कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है । मुरली कर में अधरा मुसकानि तरंग महा छबि छाजति है ॥ रसखान लखें तन पीत पटा सत दामिनी की द्युति लाजति है। वह बांसुरी की धुनि कान परें कुलकानि हियो तजि भाजति है ॥ ४०१ ॥

सुनती हो कहा भजिजाहु घरे बिधिजाहुगी मैन के बानन में । यह बंसी नेवाज भरी बिष सों बिष सों बगरावति प्रानन में ॥ अबहीं सुधि भूलि हो मेरी भटू भभरो जनि मीठी सी तानन में । कुलकाँनि जो आपनी राखी चहो दे रहो अँगुरी दोऊ कानन में ॥ ४०२ ॥

फूँकि के आई सबै बन कों हिय फूँकि कै मैन की आगि जगावति । तूँ तो रसातल बेधिगई उर बेधत और दया नहीं लावति ॥ आपु गई अरु औरन खोवति सौति कें काम भली बिधि आवति । ज्यों बडे बंस तें छूटी है त्यों बडे बंस तें औरन हूँ कों छडावति ॥ ४०३ ॥

जो सिगरी ब्रजनारिन कों रघुराज छिनौ छिन देति हुलासु री। पीवत हीं जेहिं होति भई बिरहागि व्यथा को बिसेष बिनासु री॥ पूरि भई यह सौति हमारी करै नित लालन के मुख बासुरी। पान करै हरि को अधरामृत कौन कियो तप बाँस की बाँसुरी॥ ४०४॥

जो सुनि कै धुनि ऐसी भई है तौ तूँ काहे कों और उपाव कों धावै। मै कहौं सो करु तूँ रघुनाथ की सोंह जियै वह तूँ जस पावै॥ साँप डसे पर फेरि डसे उतरै बिष प्रान सरीर मे आवै। तातें सखी कहु मोहन तें ओहि टेर सों बाँसुरी फेरि बजावै॥ ४०५॥

सखि जाको है जैसो सुभाव सुनो वह कोटि उपाव करो न हिलै। कहूँ कूर बसै सतसंगति जाय तौ कूरता वाकी न नेकु छिलै॥ कवि गोकुल जारति है तन कों सिगरे ब्रज के मन माहँ खिलै। सो सुधानिधि से मुख सो लगि कै बिख व्यालिनी बाँसुरिया उगिलै॥ ४०६॥

देह धरी पर काज ही कों जगमाझ है तोहि तुही सब लायक। दौरें थकी अँग स्वेद भरी

समुझी सखी क्यौं न मिल्यो सुखदायक ॥ मोही सों प्यार जनायो भली बिधि जानी जु जानी हितून की नायक । साँच की मूरति सील की सूरति मंद किये जिन काम के सायक ॥ ४०७ ॥

मो उपकार बडोई बिचार गई तूँ बोलावन छैलै छमासे । एती अबार लौं क्यौं तू रही दुख केतो सह्यो ओहि बेसरमासे ॥ क्यों अनखाति कहा तो भयो हनुमान न भेट भई बलमासे । ऐसेही आवत जात भटू दिन चारि मे ह्वैहैं तमाम तमासे ॥ ४०८ ॥

उत्तम प्रीत प्रतीत भर्‌यो रस रासि महा मिठ बोलो कन्हाई । जो कोइ वाहि बुलावन जात खवावत वाहि बिरी बरिआई ॥ पूस निसा की जडोही बयारि बिचारि कै आपनी साल उढाई । तोसों कहा यह मोही सों प्यार जनायो है जानि हमारी पठाई ॥ ४०९ ॥

गुन एक अपूरब मै तो लख्यो तिहिं सीखिबे की अभिलाष करों । कमलापति तोसी हितू है तुही लखि कै सब भाँति अनंद भरों ॥ इहिं हेतु कहौं यह बात बलाय ल्यों दूजी उपाय चित्त

धरों। चित और को हाथ मे लीवो बताय दै पाहुनी पायन तेरे परों ॥ ४१० ॥

देखि परोसिनि कों पाहिरे अपने पिय को तिय मान अनैसो । हे रघुनाथ कह्यो हँसि कै इमि कै अति आदर चाहिये जैसो ॥ मोती को हार बिहार करै कुचऊपर रावरे के यह जैसो । खोयो गयो अबही दिन द्वै भये रावरे देवर को रह्यो ऐसो॥४११॥

मोहि मनावन जो पठई कहि सो तुम सों रघुनाथ हँसे हैं । ब्याह को दोस हमै औ उन्है वेतो रावरे के अनुराग गसे हैं ॥काहे कों आप कह्यो इतनी रितु सूखे मे वे नहीं सोच ससे हैं । पावस माँहि सतावैगो मैन क्यों नाह तो बाँह तिहारी बसे हें ॥ ४१२ ॥

आवत मोहि बिलोकि बलाय ल्यों छोडि सखीन सों बात सोहाती।ओठ अमेठि नचाइ कै लोचन भौंह चढाइ क्यों होति हौ ताती ॥ जानि परी रघुनाथहि सों सब जो वह आजु गई कहि घाती । लीजिये थाती है सोहन की उन के करकंज लिखी यहपाती ॥ ४१३ ॥

छाइ रहे छद छाती कपोलनि आनन ऊपर

ओप चढाई । छूटे बँधे कच कामिनि के कबिराज सुजात छपै न छपाई ॥ नाहिं कह्यो परै बैननि मोद सु नैननि मै झलकै छबि छाई । का सों कहौं यह कौतुक दूती गई ही अधीर पै धीर ह्वै आई ॥४१४॥

देहँ कटीली कंपै अजहूंलगी सीखन दूतपने के सुभाइनि । न्हाय सी आई हौ जाय कहूं तैं बनाय कहौ कछु मेरी गुसाँइनि ॥ मै तो पठायो चहौं तुमहीं तुम पै नहीं चूकति आपने दाइनि । भेद कहै सब ह्वां को तिहारे लग्यो यह केसरि को रँग पाइनि ॥ ४१५ ॥

देव पुरैनि के पातनि जानत है जुग चक्र सचान गहेरी । चीते के चंगुल मै परि कै कर सायल घायल ह्वै निवहेरी ॥ मीजि कै मंजु दली कदली लरि के हरि कुंजर लुंज रहेरी । हेरी सिकार रहेरी कहूं ब्रजनाथ अहेरी ह्वै आज रहेरी ॥ ४१६ ॥

कीर सुबिंब बिचारि कै ओठ दए छत सो सहिरी धनियामै । नारँगी नीबू उरोजनि जानि दये नख बानर चौतनियामै ॥ स्वेद सुकंप रुमंच बढ्यो तन सेवक स्याम डरै जनि यामै ।

तोहि पठाई सु भूलिगई भई बावरी बावरी के पनियामै ॥ ४१७ ॥

बीति गयो हिमहार बसंत सुसंतत ग्रीषम देत दरेरी। दीरघ देखि परैं दिननाथ छपाकर सो छबि छीन परेरी॥ देन लगी सरदार बयार हुतासन सी फिरही फिर फेरी। सूख गई सरिता सर रूप सु ऊख पिरी न परोसिनि तेरी॥४१८॥

दै लिखि बाहन मे ब्रजराज सु गोल कपोलन कुंजबिहारी। त्यौं पदमाकर या हिय मे हरि मोसे गोबिंद गरें गिरिधारी॥ या बिधि ते नख ते सिख लों लिख कंत को नाम इकंत हो प्यारी। सामरे को अँग गोद दै गातन ए गोदनान की गोदनहारी॥ ४१९॥

आन भरे अमनेक अमान गुमान मृगीन के जीति लिये हैं। ओज मनोज भरे जिन के सु सरोज न रोजन छोर छए हैं॥ सालत साल से सौतिन कों तिन की चितचाए बियोग हये हैं। देखि अपूरब नोखे वए मनरंजन खंजन मीन भए हैं॥ ४२०॥

तार किनारिन की झलकै पलका पै मनोजन

ओज जभांत है। चूर चुरी वो चुनोती के ढेरन बीरी बनाकर को इतखात है॥ श्रीधर मो अबसोस महा यह रोस कछूक सु जानो न जात है। रात को यों उतपातन कै मेरे लाल को आन छला छलि जात है॥ ४२१॥

हेरे हंसे नहिं औरन को अरु चौगुनो चित्त बढावत मेरो। नाहक तू बदनाम करै वृज की बनितान करै घर घेरो॥ दोस न दीजिये येरी भटू परनारिन को सपनो नहिं हेरो। मारिबो पी को न सालत है अब सालत सौत बचायबो तेरो॥ ४२२॥

गई सांझसमै की बदी बदि के बड़ी बेर भई निसा जान लगी। कवि मन्य जू जानी दगैलन छैलन छैल की छाती निदान लगी॥ अब कौन को कीजे भरोसो भटू निज बारिये खेतियें खान लगी। अति सूधे बोलायबे की बतियां नहिं जमनिये काधों बतान लगी॥ ४२३॥

चंदन की चरचा न रही न रही अरी आड जो भाल दई ही। मोतिन की लरकी लर हैं दरकी अँगिया पहिरी जो नई ही॥ आयो न

आयो बलाय ल्यों तेरी तु काहे लरी लरिबे कों गई ही। छीकत हा पठई जुहती सुतो तैन सुनी सुनि हौंहीं लई ही ॥ ४२४ ॥

अगँना मै बुलाय घनी अगँना कँगना प्रहिनाय दै जोसिनी कों। दखिना दिल खोलि कै दीजे अली सु बधाई सुनाव सु तोखनी कों ॥ कबि सेवक पाँव परों सब के बिधि दाहिनो आजु अदोसिनी कों। तजि औषधि मै तो अराम भई पति आइगो मेरी परोसिनी को ॥ ४२५ ॥

तूँ तो गई ही बुलावन लालहि मो सों कहै कत बात बिगार सी। कंचुकी ढीली परी यह तेरी सु मो हियरें उपजावति झार सी ॥ तोहि कहा डर है हनुमान भये मनमोहन तेरे सिपारसी। तूँ हीं बिचारि लखै न अरी अब हाथ के कंकन कों कहा आरसी ॥ ४२६ ॥

निसि आजु की जाइयो फेरि सखी तुम्हरे पट भूखन जो बदले। ईंहि मै हनुमान है दोस कहा कत बोलती हौ भला रूंधे गले ॥ हम सों तुम सों कछू भेद नहीं यह जानि अरी न तहाँ तें चले। अति छोहन तें तुमहीं सों मिले मनमोहन मीत हमारे भले ॥ ४२७ ॥

चंदमयूषनि दूषित अंग अनंग महा सर तीक्षन साधे। त्यौं अलि कोकिल के कुल कैरवं क्यौं बचि हैं दुख सिंधु अगाधे ॥ बारि बयारिन हारि थकी सब सेखर प्रानप्रिया रट नाधे। बीथिन में बगरी धुनिहा मम जीवन मूरि सिरोमनि राधे ॥ ४२८ ॥

कुंज गुलाल के पुंजन सों अलि गुंजन सों तरु ताल लतारी। प्रेमभरी ब्रज की बनितान की तान की मान की गान की गारी ॥ तेरे लिये तजि ताकि रहे तकि हेत किंये बलबीर बिहारी। ये बडे नैन दिखाइ दे नेकु तू ये घर-घालनि घूंघटवारी ॥ ४२९ ॥

प्यारे के प्यार सों पैये सोहाग सुन्यारी भये नित नेह निहोरिये। जा सुख संग कों अंग सिंगारति तासों बिगारि कै क्यों दुख भोरिये ॥ जासों बँध्यो तन जोवन जीवन देवत हीं चित दै हित जोरिये। तेरेही गोहन लाग्यो फिरै मन मोहन सों भटू भौंह न मोरिये ॥ ४३० ॥

कौन दई यह सीख तुम्हे तुम जो इतनो हठु आज गहा है। ऐतेहू पै न प्रतीति करौ बहुरो

दिव देव को चित्त चहा है ॥ झूँठि को बोलि तजै धरमै रघुनाथ कहै अस कौन बहा है। तो कुच संभु की सौंह किये जब हे तब संभु की सौंहैं कहा है ॥ ४३१ ॥

हरी कंजप्रभा पदपंकज तें गति देखि कै तेरी लजानो करी। करी चंदहू की गति मंद अली मुख चंद उघारति ताही घरी ॥ घरी है बिधना बडे भागिनी तू नित सौतिन के उर साल अरी। अरी जा पर वारत प्रान सबै सो बिकानो तो सूरत देखि हरी ॥ ४३२ ॥

आनन की धुनिये सुनिये श्रुति कूकनि कोयल की धँसती हैं। स्वास को चारु प्रकास बयारिन मंद सुगंध हियो मसती हैं ॥ दंतन की दुति ये रघुनाथ कलान कलानिधि की गँसती हैं। देखि भरी रिसि प्यारी तुम्हैं ये दसोंदिसि आपुस मै हँसती हैं ॥ ४३३ ॥

बने पंकज से पग पानि मनोहर कानन लों दृग धावतु है। रघुनाथ लसैं लगि एडिन लौं कच चंद सो आनन भावतु है ॥ बिधि ऐसो अपूरब रूप रच्यो जिहिं तें धन आपु कहावतु

है । जुपै देखती हौ न मुक्किर की ओर तौ काम कहौ केहि आवतु है ॥ ४३४ ॥

कछु देखि कै लच्छन छोटो बडो सम बात चलैं कहि आवतु है । इतने के लिये करिये इतनी रिसि को सुनि कै सुखपावतु है ॥ कहती हौ कि चाँदनी देखि रहैं जो कहीं रघुनाथ बुलावतु है । तुमहीं करो न्याव लखे बिन तोहि लला कों कलानिधि भावतु है ॥ ४३५ ॥

यह रूप है चारि दिना को महेस रहैगी नहीं छबि रोजही की । बलि भूलति है इतने पै कहा सदा नोक रहैगी उरोजही की ॥ उठ लाय हिये हरि कों हित सों न करो हठ आनन ओजही की । अस तौ फिरि कालि रहैगी नहीं या हनोज है मौज मनोज ही की ॥ ४३६ ॥

तुमरे बिन बावरे से वे भए तऊ बातें करो तुम सोजही की । नहिं मानती हो मैं मनाय थकी कहा रीति सिखी मन मोजही की ॥ उर राखु दया कमलापति की चरचा न तजौ रस चोजही की । कुच कोरन तें मसको न उन्हे तौ हनोज है मौज मनोजही की ॥ ४३७ ॥

ए घनघोर उठे चहुंओर इन्हें लखि का करिहैं रिसि ह्वै तू। सौतिं पै जायहैं जौ कमलापति पायहैं छाँह छनेकन छ्वै तू॥ जानि लई अबही सिगरी कलपैहै सु हाथ के हीर को ख्वै तू। पाँय परेहू न मानती री अब जा जिनि ऐसी मिजाजिनी ह्वै तू॥ ४३८॥

घेरे रहै घरहाँई घनी फिरि बीते न फागु कछू कहि जायगी। लाल गुलाल की धूंधुर मै मुख चन्द की जोति कहूं लहि जायगी॥ प्रेम पगी बतियान तें री छतियान की लाज सबै बहि जायगी। जो न मिलि मनमोहनै तो मन की मन ही मन मे रहि जायगी॥ ४३९॥

माधवी मंडप मंडित कै महकै मधु यों मधु पान करै री। रातीलतान बितानन तानि मनोज हू साजि रह्यो सरसै री॥ धीर रसाल के बौरन बैठि पुकारत कोकिल डौंडिन दै री। भूलि हू कंत सों ठान बीमान सो जानबी बीर बसन्त को बैरी॥ ४४०॥

बलि कंज सों कोमल अंग गोपाल को सोऊ सबै तुम जानती हो। वह नेक रुखाई धरें

कुम्हिलात इतो हठ कौन पै ठानती हो ॥ कवि ठाकुर यों करजोरि कहै इतने पै बिनै नहिं मानती हो। दृग बान औ भौंहैं कमान सुतो तुम कान लों कौन पैं तानती हो ॥ ४४१ ॥

तन को तरसायबो कौन बद्यो मन तो मिलयो पय मैं जल जैसो। कौन दुराव रह्यो उनसों जिनके तन मे मिलयो मन ऐसो ॥ ठाकुर की बिनती सुन लीजिये कौन सुभाव या सीख्यो अनैसो। प्रानपियारी प्रबीन तिया चित मैं बसि घूँघुट घालिबो कैसो ॥ ४४२ ॥

यह चारिहूँ ओर उदो मुख चंद को चाँदनी चारु निहारि लैरी ॥ बलि तो पैं अधीन भयो पिय प्यारो तूँ एतो बिचारि बिचारि लैरी। कहि ठाकुर चूकि गयो जो गोपाल तौ तूँ बिगरे को सुधारि लैरी ॥ फिरि रैहै न रैहै यहै समयो बहती नदी पाँव पखारी लैरी ॥ ४४३ ॥

रूप अनूप दई दयो तोहि तौ मान किये न सयान कहावे। और सुनो यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरलै कोऊ पावे॥ ठाकुर सूम के जात न कोऊ उदार सुने सबही उठि धावे। दीजिये ताहि

दिखाय दयाकरि जो चलि दूर तें देखिबे आवै ॥ ४४४ ॥

और सो केतऊ बोलें हंसें पर पीतम की तू पियारी है प्रान की। केतो चुनै चिनगी को चकोर पै चोप है केवल चंद छटान की ॥ जौलों नहीं तुम तौलों अली गति दास के ईस पै और तियान की। भास तरैयन मों तब लों जब लों प्रगटै न प्रभा जग भान की ॥ ४४५ ॥

मानी न मानवती भयो भोर सु सोच तें सोय गए मनभावन। तेह तें सासु कही दुलही भई बार कुमार को जाव जगावन ॥ मान को रोस जगैबे की लाज लगी पग नूपुर पाटी बजावन। सो छबि हेरि हेराय रहे हरि कौन को रूसिबो काको मनावन ॥ ४४६ ॥

अपनो हित मानि सुजान सुनो धरि काननि दान तें ऊकिये ना। निज प्रेम के पोषनहार बिसारि अनीति झरोखन ढूकिये ना ॥ हिय अंदर रावरो मंदिर है तेहि यों बिरहानल लूकिये ना। हम जो हित हीन हैं दीन हैं तौ तुम प्रेम प्रबीन है चूकिये ना ॥ ४४७ ॥

बतियाँन सुनाइके सौतिन की छतियानि में साल सलाय लै री। सपनेहूँ न कीजिये मानि अये अपने जोबना की बलाय लै री॥ परमेस जू रूप तरंगन सों अँग अँगन रूप रलाय लै री। दिन चारिक तूँ पिय प्यारे के प्यार सों चाम कै दाम चलाय लै री॥ ४४८॥

मान की औध है आधि घरीलों री जो रस-खान डरै हित के डर। की हठ कीजे कि छाँडिए पापरौ ऐसे कटाक्ष महा हियरा हर॥ लाल गोपाल को हाल बिलोकिये नेक छुबो किन दै कर सों कर। नाकरिबे पर बारिये प्रान कहा अब आरिए हा करिबे पर॥ ४४९॥

ठिग बैठहू पौढ रहे उर मे धरकै खरकै दुख दोहतु है। द्रिग आगे ते बैरी टरै न कहू जग जोहन अंतर जोहतु है॥ घनआनंद मीत सुजान मिले बस बीच तऊ मति मोहतु है। यह कैसो संजोग न बूझि परै जो बियोगिन हूं को बिछोहतु है॥ ४५१॥

मानवती वृषभानकुमारि लता मनुहार करै रस डोरो। श्रीपति कोटिक भांति मनाइ रहे नहि

पाय पै मान न छोरो ॥ छाके हियें उपचार बिचार
निहार तऊ नहिं उतर भोरो। खंडित कौल को लै
दल कामिनी बंधुक के दल सो गहि जोरो॥४५१॥

आरसी लाइ सँभारो सु भौन तहाँ तिय रेन के
दीपक बारे। मान के मेन रही चलदेउ गए चलि
लाल मनावन हारे ॥ चारहू ओर चितै चकवाइ कै
भूलि गए जु बिचार बिचारे। पाय परे प्रतिबिंब
के जाय के प्यारी तबै बिछिया झनकारे ॥४५२॥

घोर घटा उनई चहुओर सो ऐसे मैं मान न कीजे
अयानी। क्यौंरी बिलंवत है बिनु काज बडे बडे बुंद
न आवत पानी ॥ सेष कहैं चल लालन पै सुनु
के सब रैन कहे सु कहानी। देखि तुही ललिता
सु लतान को तेऊँ तमालव सो लपटानी ॥४५३॥

बाहन ओट दुराइ दुहूँ कुच बैठ रही है दुहूँ
कर नीबी। गंग कहे जु इहाँ तो यहै वा उहा
अति देत गुबिंद गरीबी ॥ आन भई हो नई
नवला परजंकन पारबि अंक न लीबी। बातन
नैन नदी करि देत हे और कहा तुम पूजको
कीबी ॥ ४५४ ॥

मैन मयंक समीर सनी निसि कोक-पुकारत

आरत बानी। गंग कहै सखियानि वही कहि दंपति कीरति केलि कहानी ॥ हाथन जोरि निहोरि हहा-कर पापर कान्ह कही सनमानी। मेलि गरें पट देत गरीब गरो भरि नारि गरे लपटानी ॥४५५॥

चैत को चंद ओ मंद बयारि बहै अति सीत सुगंध सुभाइन। जापै घनी ललचात है बाल सो लाल सलोनी परो तब पाइन ॥ जोबन के दिन पाहुन है पछताउगी पीछे ते मेरी गुसाँइन। केलि करो मिलि मोहन सो कहा ठीक न ठानती है ठकुराइन ॥ ४५६ ॥

तेरी री प्यारो सुहाग तिहारोई तूतो प्रबीन हिये मे दरी है। सोवत जागत बासर सें न बिना तब ध्यान न एक घरी है ॥ धोखही काहू को नाम लियो पिय ता हित तू इतनी अकरी है। आली कहे नल भीजो है कौन अंगार कहे कहू जीभ जरी है ॥ ४५७ ॥

द्वार के द्वारिया पौर के पौरिया पाहरु वा घर के घनस्याम हैं। दासी के दास सखीन के सेवक पार परोसिन के धन धाम है ॥ श्रीधर कान्ह भरे इहि भाइन मान करै इतने पर बाम

है। एक कहें बिसराम थली बृषभानलली की गली के गुलाम है ॥ ४५८ ॥

है यह नायक दच्छिन छैल सुतो अनकूल कियो चित चोर है। है अभिमानी सु आपन रूप को दीन हो तोसों रहो निस भोर है ॥ है तन स्यामरो गोरो रगो मन तेरेई प्रेम परो झकझोर है। है सुखदायक नैनन नागर है ब्रजचंद पै तेरो चकोर है ॥ ४५९ ॥

मोहि तुम्हे इन्हे जानो उन्हे मन मोहती वा न मनावन ऐहै। त्यौं पदमाकर मोरन को सुनि सोर कहो नहि को अकुलै है ॥ धीर धरो किन किन मेरे गुबिंद घरीक हू मे जो घटा घहरै है। आपहूं ते तजि मान भले हरुये हरुये गरुये लगि जैहै ॥ ४६० ॥

लघु बैस की ऐस छिनो छिन की भरी भेदन मै जे न ठानती हैं। तिनके गुन रूप लोनाई ब्रिमोहनी भावन कों धिक मानती हैं ॥ सुख ऐसो न दूसरो सेवक जानैं हितू तुम यातें बखानती हैं। न हिलैं मिलै पितम सों निज वै हम जानती हैं की अजानती हैं ॥ ४६१ ॥

सुनु नीको न नेह लगावनो है फिर जो पैं लगै तो निबाहनो है । अति ओखी है प्रीति की रीति सखी नहिं रोस को जोस सुहावनो है ॥ चलि चंदमुखी बृजचंद मिलो तुम कों हमै का समुझावनो है । दिनचारि को रूप या पाहुनो है फिर तो पैं रहैगो उराहनो है ॥ ४६२ ॥

बंकबिलोकनि दीठि चलाय री नेह लगाय के पीठि न दीजै । बौरी न हूजिये मान कह्यो अब पीतम को अपनाय के लीजै ॥ मोहन रूप की वैसही पाइ कै को नहिं जोवन के मद भीजै । ऊजरी जो पै करी करतार तो गूजरी एतो गरूर न कीजै ॥ ४६३ ॥

ऐहै न फेर गई जो निसा तन जोबन है घन की परछाहीं । त्यों पदुमाकर क्यौंन मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदाँहीं ॥ कौन सयान जो कान्ह सुजान सों ठान गुमान रही मन माँहीं । एक जो कंज कली न खिली तो कहा कहूँ भौंर को ठोर है नाहीं ॥ ४६४ ॥

रूप की चास अनूप चढी यह प्रेम मिठास पगाय लै जी को । नैनन सैन सलोनी भली मुख

बैन रसाल कढे अति नीको ॥ तेरे अधीन भयो रसिया बिधि क्यौंन बनाय रिझाय लै पी को । साजि कै ऊँची दुकान अरी फिरि राख्यो कहा पकवान कै फीको ॥ ४६५ ॥

लागरी नाइन वातन तैं हरि आये हैं जान बड़े निसि भागरी । भागरी बैरिन की चरचा तें तजे गुरु मान पिया रस पागरी ॥ पागरी सोहै न पाँय न पैं कँबि पारस है तु तो बुद्धि की आगरी । आगरी लागै तिहारे हठैं मन मोहन के उठि कंठ सों लागरी ॥४६६॥

ग़ही जो हठ टेक न सो सपनेहूँ तजी सखि तैं सुतो नाधे रही । नहिँ केहूँ सिखाये सो मानति है तन तेरे मं तो यह बाधे रही ॥ मिलि तौ उठि सूधे सुभाइन हीँ पिय के हिये आस अगाधे रही । रिस मैं रस मैं हँसी हौंस मैं तेरी तौ सुधी चितौन की साधै रही ॥ ४६७ ॥

रूसन हारी घनेरी हुँतीं पैं कहाँ लगि रावरी कीजै बडाई । रूसे समै पिय के जिय की तिय काहू ने या बिधि पीर ना पाई ॥ रीझी हौं तेरी या बूझनि ऊपर तेरी सौं तैं बहुतै हौं रिझाई ।

भ[illegible]तो भोर को भूखो हुतो तैं भली करी नेंकु हहा तो खवाई ॥ ४६८ ॥

तोहि न रूसिबे जोग बलायल्यों घेर किये मति काहू के लागहिं। आपु न पौ पाहिले तूँ बिचार हैं को रघुनाथ कहा उर पागहिं ॥ तोसी बहू बडभागिनि को जिहिं की सब सौति लियें अनुरागहिं। देखि सरूप सनेह सराहतीं प्यारे के भागहि तेरे सुहागहिं ॥ ४६९ ॥

मानो मढी दिसि रूपे के पत्र सों सोहति यों दुति द्योस को दूसें। सीतल मंद सुगंध बयारि बहै धन बेली नवेली को मूसें ॥ कोइलि कूकति है रघुनाथ जहाँ तहाँ बाल रसाल को चूसें। ऐसे समाज की चैत की जोन्ह मै कौन कहैगो भली तुमै रूसें ॥ ४७० ॥

जल बूंद बडी बडी सों बरसैं घन नैन बियोगी को दूसत है। मिलि फूल अनेकन सों बलकै तन पौन फुकार कै झूँसत है ॥ रघुनाथ सहाय बिना लखि कै अरु मैन ढुक्यो मन मूसत है। पिय प्यारे सों प्यार की बातैं बिसारि कै ऐसी समै कोऊ रूसत है ॥ ४७१ ॥

आनन की धुनिये सुनिये स्रुति कूकन कोयल की धसती हैं । स्वास को चारु प्रकास बयारिन मंद सुगंध हिये मसती हैं ॥ दंतन की दुति ए रघुनाथ कलान कलानिधि की गसती हैं । देखि भरी रिस प्यारी तुम्हे ए दसों दिसि आपुस मै हँसती हैं ॥ ४७२ ॥

बारुनी ओर की बायु बहै यह सीत की ईति है बीस बिसा मै । राति बडी जुग सी न सिराति रह्यो हिम पूरि दिसा बिदिसा मै ॥ गोकुल डारि है मैन मरोरि कहो व कहा कहें मान किसा मै । कौन की छाँह छिपौगी छिया छतियाँ तजि नाह की माह निसा मै ॥ ४७३ ॥

हारि गई सिगरी कहि कै हम रावरे की जे हितू सखियाँ हैं । भावन भौनतें रूसि गयो अब आँनद हू के जमी पखियाँ हैं ॥ गोकुल माह मै मान करेंते भई तिय बारि बिना झखियाँ हैं । दोख बिलोकिबे कों पिय के बिधि कीनी मनो ये बडी अँखियाँ हैं ॥ ४७४ ॥

उन हाहा करोरिन कै पठई तुम तौ रिस ही सरसावती हो । मनु हारि करी हमहूँ पै तऊ मुख

नेकहू ना दरसावती हौ॥ हनुमान मसूसि रहीहो कहा मिलि मोद न क्यों बरसावती हौ। यह चैत की चांदनी माहिं दैया मनमोहने क्यों तरसावती हौ ॥ ४७५ ॥

मै तौ न तोहि मनावती हौं मन मोहने तूं कबहूँ जनि जोहै। सौतिपें जैहैं तौ जाँहिं भले औ कहा भयो तोसों न राखिहैं छोहै॥ पै हनुमान कहौं सो करै कछू तेरो तौ कोह न मोपैं भरोहै। नेकु तौ घूँघुट खोलि लखै या करै बिनै ठाढो को जानियै कोहै ॥ ४७६ ॥

अति खीन मृनाल के तारहु तें तेहिं ऊपर पांव दै आवनो है। सुई वेह लौं बेह्र सकी न तहाँ परतीति को टाडाँ लदावनो है। कवि बोधा अनी घनी नेजहु की चढि तापें न चित्त डगावनो है। यह प्रेम को पंथ करार है री तरवार की धार को धावनो है ॥ ४७७ ॥

न्हान जो जाऊँ तो संग सखी पग पाँवडे पाँमरी के करिबो करैं। केसर आड बनाय के आऊँ निहोरि कै नेह नहीं नहिबो करैं॥ जो ससि नाथ न दीठि परौं कुलकानि भऱ्यो जियरा

डरिबो करै । यों निसिबासर साँवरिया बरही नित भौंवरिया भरिबो करै ॥ ४७८ ॥

केती न गोपबधून के अंगनि रूप सुधा सरसानो रहै री । पै यह लाल की चाल परी चित मेरेहि प्रेम समानो रहै री ॥ अंतर बाहिर साँझ सँवारे बिलोकन बीच बिकानो रहै री । मो मुख मो है महा मनमोहन मारग मैं मेडरानो रहै री ॥४७९॥

न्हान समै जब मेरी लखैं तब साज लै बैठत आय अगाऊँ । नायक हौ जू न रावरे लायक यों कहि के कितनो समझाऊं ॥ दास कहा कहौं पै निज हाथही देतन हौं हूं सवारन पाऊं । मोहि तो साध महाउर है री महाउर नाइन तो सों दिवाऊं ॥ ४८० ॥

आजु तें बीरी बयार तजौंगी महावरो दैव दियो पग दू मे । कासो कहौं सुख आपनो री मैं भई लघु सेवक दासिन हू मे ॥ बीजन बारी हुती ढिंगजे अबै रीझ ना लै के बहु पर झूमे । मेरेहि देखत मेरी भटू लै दोऊ कर नायिन के पिय चूमे ॥ ४८१ ॥

सखि कंत भले तिन के तिय बे नित भूषन जे पहिरेही रहैं । तन अंतर सों उतरावन कों

पिय मेरे के नैन अरेई रहैं ॥ मनि मानिक लाल अमोलनि सों सुकबिंद मसूस भरेई रहैं। गहने पहिने नहिं पावति हौं गहने गहने से परेई रहैं ॥४८२॥

आँखिन मे पुतरी ह्वै रहैं हियरा मैं हरा ह्वै सबै रस लूटैं। अंगन संग बसैं अँगराग ह्वै जीवतें जीवनमूरिन टूटैं ॥ देव जू प्यारे के न्यारे सबै गुन मो मन मानिक तें नहीं छूटैं। और तियानि तें तौ बतिया करैं मो छतिया तें छिनौ जब छूटैं ॥ ४८३ ॥

हौं गई भेट भई न सहेट मैं तातें रुखाइट मो मन छायगो। कालिंदी के तट झाँवत पाँय हौं आयो तहाँ लखि रूखे सुभायगो ॥ भीर मै बीर न बोलन को समै न्हैवे बहानहि तीरहिं आयगो। मो पगे कै सिर छाँह घरीक लौं मूदे सु मोहन मोहि मनायगो ॥ ४८४ ॥

आपनें हाथन सों चुनि लै ललचाइ लला नित लालन लागे। जोर के जोर सुजोर सबै अनओर निहार निकालन लागे ॥ का कहिए सरदार हमैं सब केर बसाइ कसालन लागे। कारज छोडि सबै घर के पिय काहे कबूतर पालन लागे ॥ ४८५ ॥

मान जथारथ स्वारथ को बिनती जुदे देवन जाइ करी है। सो सुनि कें हिमवान हिए निज आँनँद की उघरी सुघरी है ॥ बूझति हों तुम को मृगलोचनि रीत नई यह जान परी है। जार सनेह सदासिव नेक हजार सिवा अरधंग धरी है ॥ ४८६ ॥

मोहि बढावै खरी हटकै नहिं जाहु रहै मन में अनखानी। याहीते सास उदास रहै उपहाँस करै मिलि नंद जिठानी ॥ मौन गहो मन माहि रहो निज प्रीतम की कहो कौन कहानी। जाइबो बेगि लिवाइबो मोहि सोहात नहीं परभात को पानी ॥ ४८७ ॥

मनरंजन मंजन कै तन मे अंगराग रचे सत अंगन में। कहिए कहा कौन सों कौन सुनैं सों परो परै प्रेम प्रसंगन में ॥ जुहि के सिगरे निज काज करें गुरुलोगन के सत अंगन में। धन वे धन है जिनके लहिने पहिरे गहिनें नित अंगन में ॥ ४८८ ॥

बैठति है मिलि संग सखी सुमुखी सब भाँति सुखी अति यातें। आवती हैं इत मेरे लियें इन

के पिय धन्य सबै बतियां तें ॥ मेरे तो बेनीप्रबीन पिया दिनहूं में कियेई रहैं रतियाँ तें । कासों कहौं दुख मेरी भटू नहिं छूटन देत छिनौ छतियाँ तें ॥ ४८९ ॥

मो बिन माई न खाई कछू पदमाकर त्यों भई भाभी अचेत हैं। बीर न आये लिवाइबे कों तिन की मृदुबानि हुँ मानि न लेत हैं ॥ पीतम कों समुझावती क्यों नहीं ये सखी तूँ जुपै राखति हेत हैं। और तो मोहि सबै सुख री दुख री यहै मायके जान न देत हैं ॥ ४९० ॥

हौं अलि आजु बडे तर कै भरिकै घट गोरस को पग धारो। त्यों कबको धौं खरोइ हुतो पदु-माकर मोहत मोहनी वारो ॥ साँकरी खोरि में कांकरी की करि चोट चल्यो फिरि लौट निहाऱ्यो। ता खिन ते इन आँखिन ते न टऱ्यो वह माखन चाखन हारो ॥ ४९१ ॥

जीवहि जीव समान गनै कल कोकिल बोल बखान अमीके। केहरि सों करि सों करि प्रीति कुरंगन को कुलकाढत टीके॥ ए तुव अंगन के उपमान लखे हरखें हरि सेखर नीके। बाल

कही बतियाँ सुनिकै दृग लाल भये वृषभान-लली के ॥ ४९२ ॥

मंजुल मौलसिरी मोगरा मधुमालती के गजरा गुहि राखैं। चंदन पंक लगाइ लै अंक मयंकमुखी करि कै अभिलाखैं ॥ जेब जवाहिर के गहने तन में पहिने इनतें छबि लाखैं। तो अंग लायक ऐते सबै सुनि बाल की लाल भई लखि आखैं ॥ ४९३ ॥

सोय रही रति अंत रसीली अनंद बढ़ाय अनंग तरंगिनि। केसरि खौर करी तिय के तन प्रीतम कै यों सुबास के संगनि ॥ जागि परी मतिराम सरूप गुमान जनावति भौंह के भंगनि। लाल सों बोलति नाहिं नैं बाल सुपोंछति आँखि अँगोछति अंगनि ॥ ४९४ ॥

सागरजात सराहत है श्रुति सूरहितू हित कै सरसावै। श्री को सहोदर सीरो सुभाव सदा रघुनाथ कहै कबि गावै। साथ सभा सुर की लहिये अरु अंसुनि औनि अकासहि छावै ॥ ऐसो जऊ ससि प्यारो तऊ तुव आनन आगे न आदर पावै ॥ ४९५ ॥

कीजिये दूर मै मागति हौं अपने मन में तें उदास को होनो। रावरे रूप सो रूप बिरंचि बनाइ सक्यो न रह्यो गहि कोनो ॥ जो रति की समता रघुनाथ दई तुम कों मति को अति लोनो। तौलें तुला धरि होत कहा बलि गुंज सो गुंज औ सोनो सो सोनो ॥ ४९६ ॥

मनरंजन खंजन की अवली नित आँगन आय न डोलती हैं। चकवादि चकोरी परी पिंजरा दिन राति म नेक कलोलती हैं ॥ ननदी अरु सासुहि बूझिये जो उरअंतर की नहीं खोलती हैं। केहिं कारन बैर परी हमरे सुक सारिका बोल न बोलती हैं ॥ ४९७ ॥

बाग मे ठाढी सुभाग भरी अनुराग सों स्याम करें चहुंफेरे। मालिनी मालदई गुंधिहाल बढी छबि यों गरमे गहि गेरे ॥ सेवक दोस लगाइ रिसाइ कह्यो फिरि ल्याई जथा रुचि तेरे। दीन्ही जुहीकी हमै कहि कै सबै सोनजुही की कह्यो उर मेरे ॥ ४९८ ॥

सेवक जाके निदेस सों मोहि गई दै प्रफुल्लित कंज कमाय री। उतरु कौन सो दैहौं कहा मै

गँवारता कैसी रही ठहराय री ॥ तेज लग्यो न तुषार लग्यो न हमै हरि रूठि रहे अनखाय री। मालिन सों. मै लये अबहीं करके करही मैं गये सकुचाय री ॥ ४९९ ॥

देखे सुगंधित मोतिय देत भये कर लेत जपागुल ऐसे । त्यों डरि डारे परे पग पीठि धरे रग सोनजुही महँ जैसे ॥ सेवकहौंमीलगी उलझारि निहारि परें न लखौ सब लैसे । टोने करे नये लोने अबेरी दये इहिं मालिन फूल धौं कैसे ॥ ५०० ॥

खेलन तो कहती हौ सही चलि नित्यही मोहि बबा जु के बागें । पै रघुनाथ की सौंह सुनो मन यातें न खेलिबे में अनुरागें ॥ मेरों स्वरूप नहीं यह व्याधि है पूरवली अँग के सँग जागे । का मै कहौं घर बाहिर होतिही लागति दीठि बिलंब ना लागे ॥ ५०१ ॥

काहे कों मोहि सिखावति हौ यह मोहनमंत्र न जीभ गहैहौं । श्रीरघुनाथ की सौंह करौं बिधि मोहि करी भरी रूप महैहौं ॥ गौने भये इतनी सुनि लीजिये सौति को मान गुमान बहैहौं ।

कै बस प्यारे कों और कहा कहौं मे सब की सिर-
मौर कहैहौं ॥ ५०२ ॥

है बंडरी अनियारी अनूपम पानिप रूप भरीं
कहा कैहौं । मीन दले अँग मान मले न भले
लगैं भौर भोराई न लैहौं ॥ भोर तैं आज सरा-
हत हौ सुअनाहक ही ब्रज मे बिषबैहौ । लाखन
बार तुमै बरजे पिय काहू कि आँखिन दीठि लगै
हौं ॥ ५०३ ॥

देव सुरासुर सिद्धबधून कै जेतो न गर्ब तितो
यह तीको । आपने जोबन के गुन के अभिमान
सबै जग जानत फीको ॥ काम की ओर सिको-
रति नाक न लागत नायकनाक को नीको ।
गोरी गुमानिनि ग्वालि गँवारि गनै नहीं रूप
रतीक रतीको ॥ ५०४ ॥

सीतल मंद सुगंध समीर अमीर कही गुन
कौन तिहारे । ए सरदार उदार बडे सासि आवत
जात रहै मति वारे ॥ मान समै मनभावन संग
रहो मिलि मोहि मनोज मुनारे । कोइल कूक
कुरूपिन हाय परी बर बैरिन बैर हमारे ।५०५॥

कान्ह के बांकी चितौन खुभी झुक काल्ह की

ग्वालिन झाकि गवाछन। देखि अनोखी सी चोखी सी कोरि अनोखी परें जितही तित जाछम॥ मारेंई जात निहारे ममारख ए सहजें कजरारे मृगाछम। काजर दै री न एरी सुहागिनी आगुरी तेरी कटेगी कटाछन॥ ५०६॥

न्हातई न्हात तिहारई स्याम कालिन्दियौ स्याम भई बहुतैहै। धोखेहू धोयहीं यामे कहूं तो यहै रंग सारिन में सरसैहैं॥ सांवरे अंग को रंग कहूं यह मेरे सुअंगन में लगि जैहैं। छैल छबीले छुओगे जो मोहिं तो गातन मेरे गोराई न रैहैं॥ ५०७॥

चित चीन सरोज समीप रहें बर भौंरन भाखत भेद खरे। सरदार सुचार बिचारन तें नित खेलत खंजन ख्याल भरे॥ बरु मान रहो कर क्यों सजनी रजनी न बिचारत चारु अरे। कलहंसन के बचवा बिचही बरियांई हमारई बैर परे॥ ५०८॥

है नहिं मायको मेरी भटू यह सासुरो है सब की सहिबो करो। त्यों पदुमाकर पाय सुहाग सदाँ सखियान हूँ कों चहिबो करो॥ नेह भरी

बतियाँ कहि के नित सौतिन की छतियाँ दहिबो करो। चंदमुखी कहैं होतीं दुखी तो न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करो ॥ ५०९ ॥

वे पति मोहि पतिब्रत है रघुनाथ सदाँ प्रगटै लहती हौ। वे प्रभु हैं अपने मन के उन के मत के तुम क्यों बहती हौ॥ त्रास करो परलोकहु कों तुम तो तिय मैं मति मे महती हौ। मो मुख की अनुहार कलानिधि वोहू कहैं तुमहूँ कहती हौ॥ ५१० ॥

न सरोजन की कली चाहौ अली तौ कहौं तेहि मे मन दै चलो री। फिर दैहौं कलंक बृथा ही सबै इहिं तें पहिलेही बचै चलो री॥ तुम और कहूं जो कहोगी चलै चलिहौं हनुमान अबै चलो री। मनभाये न फूल मिलैंगे तुमै न सरोवर पै हमै लै चलो री॥ ५११ ॥

हौं जब लौं तब लौं सिगरो दिन मै गुडियान सों खेलि बितैहों। धाय सिखाय मरै कितनी गुन सीखिबे के मै नजीक न जैहौं॥ पै इतनी कहे राखति हौं धनि सौतिन मे रघुनाथ कहैहौं। गौनेहिं जाय कै ऐरी भटू सुनि मायके फेरि न आवन पैहौं॥ ५१२ ॥

मै न सकी कहि लाज तें आजु लौं पै अब औसर है कहि आवै। मो सों कहो नित हो न पढी कछू हौं न पढी सो सुनो एहि दावै॥ और तो बात कहा मै कहौं रघुनाथ की सौंहैं लखौ भरि चावै। को तिय है जग मे जिहिं को पिय को करिबो बस सौतिन भावै॥ ५१३॥

मनभावन पूस मै रूस चल्यो चित बीच बिचार बिदेस कियो। सुनि कै सब सौतिन की सिगरी सुधि जाति रही अरु काँप्यो हियो॥ सकि है सरि को करि है रघुनाथ उठाय कै हाथ मै बीन लियो। कछु गाय कै मेघ अकास मै छाय कै मै तबहीं बरसाय दियो॥ ५१४॥

बंसी बजावत आनि कढे बनिता घनी देखन मे अनुरागी। हौंहूँ अभाग भरी डगरी मगरी गिरे चौकि सबै डरि भागी॥ लागै कलंक न सेवक सों इन्है फोरि हौं सौति सुभाव लै जागी। हाय हमारी जरी अँखियाँबिसु बान ह्वै मोहन के उर लागी॥ ५१५॥

तरिहौं दृगनीरहि जाइ हौं तीर मिलै न मिलै हरि नावटी ऊ। घसिहौं घनसार पटीर मिलै

मिलै बात कहीं न बनावटी ऊ ॥ यह बेनीप्रबीन है भोरी महान कही बिरहानल आवटी ऊ। लगै सीर समीर लला करि जाइये एक उसीर की रावटी ऊ ॥ ५१६ ॥

बीसों बिसै ब्रषभानसुता पर जानत काँध कर्‍यो कछू टोना। काहू कह्यो बरसाने तें री नँद-गाँव चल्यौ घनस्याम सलोना ॥ खेलत ही की अचानक चौंकि चितै चहुँ देव दए दृग कोना। सूल उठ्यौ तन हूल गयो मन भूल गये सब खेल खेलौना ॥ ५१७ ॥

पौढे हे पीउ पिया पलगाँ चलिबे की करी चरचा पिय तोलै। बेनी रही छतियाँ लगि लाडिली लाड अनेक करेऊ न बोलै ॥ मै करी हाँसी हहा रहि री पी कहा भई पीरी यों बात न छोलै। घूंघुट मै सुसकै भरै साँसैं ससै मुख नाह के सौंहैं न खोलै ॥ ५१८ ॥

चोप भई दिन चारिही तें लगे लागन पी के बिलास सुधा से। ऐसेही मे चलिबे कों बिदेस कहूं मुह ते पिय बैन निकासे ॥ चंदमुखी सुन तै बिलखी उलहे बिरहानल के अँकुरा से। आँसू

गिरे दृग कोरन तें भुव मोरन के मुह तें मुकता से ॥ ५१९ ॥

आए हौ बूझन मो सों कृपा करि आप हौ जीते महा मनसेस को । मैं किहिं भाँति मने कै सकौं रघुनाथ मै जानेहौं नेह नरेस को ॥ पै बिनती यह एक हमारी है मानो तो मानो है कारन बेस को । होरी के बासर गोरी की बैस बिचारि कै कीजो बिचार बिदेस को ॥ ५२० ॥

रावरे जो चलिबे कों बिदेस कों बिप्रन बूझि बिचार कियो है । कीजिये सो सुभ कारज कों मन मै पन जो रघुनाथ लियो है ॥ मोहि न और अंदेसो सुनो सुन एतिक काँपत मेरो हियो है । बाम बियोगिनि के बध कीबे कों काम बसन्तही पान दियो है ॥ ५२१ ॥

देव जो बाहिरही बिहरै तौ समीर अमी रस बिंदु लैजैहै । भीतर भौन बसै बसुधा है सुधा मुख सूंघि फनिन्द लैजैहे ॥ जैये कहूं इहिं राखि गुबिन्द के इन्दुमुखी लखि इन्दु लैजैहे । राखिहौ जौ अरबिन्द हू मैं मकरन्द मिलै तौ मलिन्द लैजैहे ॥ ५२२ ॥

नन्दघरें ब्रषभौन के भौन तें जान कह्यौ हरि देव सुहासनि। ताही घरी तें घिरीं पल लाज धरी कै घरी उघरी बतियाँ सुनि॥ प्रात अरंभ की खंभलगी निरदंभ निरंभ सँभार नसाँ सुनि। ठाढि बडे खनकी बरसै बडरी अँखियानि बडे बडे आँसुनि॥ ५२३॥

दधि आछत आछत भाल में देखि गए अंग के रंग छीन से ह्वै। दुख औंचक वारो कहे न बनै बिधि सेवक सोहे अरीन से ह्वै॥ मृगराज के दाबे बिधे बनसी के बिराजे भले मृग मीन से ह्वै। हरि आए बिदा कों भटू के तहीं भरि आए दोऊ दृग दीन से ह्वै॥ ५२४॥

जाके बिलोकि बिलास हुलास के फाँस परे तें उदासन हींको। नेकहू दूर भयो ना कबौं कितहूं नितहूं सुठिमाल सो हीको॥ औंचकही बिजयानद पी के पयान समै लखि टीको दहीको। पीर गँभीर उठी हियमैं वह तीर सो तीखो लग्यो दुलहीकों॥ ५२५॥

प्रीतम माग्यो बिदेस निदेस सुने तिय के बिरहागिनी जागी। नैननि में अंसुवा झलके तिय

के हिय तें सिगरी सुधिभागी ॥ सुन्दरि सीस नवाय रही सु भई मति है अतिही दुखपागी । यों निरख्यो मनो जीव सों पीय के संग सिधारिबो बूझन लागी ॥ ५२६ ॥

भोर भए मथुरा कों चलैंगे यों बात चली हरि नन्दलला की । बोलि सकी न सकोचन तें सुनि पीरी भई मुखजोति तिया की ॥ हाथ लगाय लिलाट सों बैठी यहै उपमा कविसुन्दरता की । देखै मनो कर आयु के आखर और रही है कछु बचि बाकी ॥ ५२७ ॥

सूखे अजौंन ते औधि के द्यौसगने जे परे अँगुरीन मे छाले । मैन के बानन के अति गाढे बने घने घाय अजों उर आले ॥ आए सुने की सुन्यो चलिबो सु हिये लगि दूर किये ना कसाले । आँखैं लजीलीं कै यों कहि राधिका राखति गोकुल चंद के चाले ॥ ५२८ ॥

रावरे जान की कान परी धुनि ता छिन तें छबि यों उनमानो । छूटि परे कर ते कसे कंकन मूंदरी छीन लई थिर थानो ॥ भूषन भोजन भावत मौज न भूलि फिरै भभरी पहिचानो । नाथ जू जात

बिदेस भले तुम प्रान पियारी के साथ ही जानो॥५२९॥

प्रीतम गौन सुन्यो गजगौनी को भोजन भौन सबै बिसरो है। अंग परी तलबेली महा कवि-राज तहाँ भरिआयो गरो है॥ नैनन तें धरि धार धऱ्यो जल अंजन सों उर आय परो है। चीरिबे कों तिय को हियरा बिरहा बढई मनो सूत धरो है॥ ५३० ॥

केलि कै रात प्रभात चलै मो पिया धृति पाठ पढावन लागे। सो सुनि सेवक राधे बेचैन सो बैन करेजो कढावन लागे॥ प्रेम पयोनिधि सों कुच पै घन से दृग आँसु बढावन लागे। मानो मुरारि न जाहिं बिचारि पुरारि पै बारि चढावन लागे॥ ५३१ ॥

मिसही मिस जान की बात कही जु सुने न बिथा सहि जाति भई। उर लाडिली के बिर-हागि जगी सुधि औ बुधि हू दहि जाति भई॥ ठगे से रहे सेवक स्याम लखे रसना गति की गहि जाति भई। इमि नैन तें नोखी नदी प्रगटी बलिहारी बिदा बहि जाति भई॥ ५३२ ॥

बाल सों लाल बिदेस के हेत हरें हँसि कै

बतियाँ कछू कीनी। सो सुनि बाल गिरी मुरझाय धरी हरि धाय गरे गहि लीनी॥ मोहन प्रेम पयोधि भयो जुरि दीठि दुहूं की गई रस भीनी। मागै बिदा को बिदा को करै मिलि दोऊ बिदा कों बिदा करि दीनी॥ ५३३॥

जो उरझार नहीं झुरसी मृदुमालती मालव है मग नाखै। नेहवती जुबती पदमाकर पानी न पान कछू अभिलाखै॥ झाँकि झरोखे रही कब की दबकी दबकी सुमनै मन भाखै। कोऊ न ऐसो हितू हमरो सु परोसिनि के पिय कों गहि राखै॥ ५३४॥

पन्नग सीस पै पाँय धरे तजी लोक की लीक सराहिये है। नीति निवासी अनीति गही तऊ नीति अजों अवगाहिये है॥ तो हित कोटि कलेस सहे सो बिदेस चलो तो निबाहिये है। नाथ तिहारेई साथ रमैं इहिं जीव अनाथ को चाहिये है॥ ५३५॥

आँखिन के अँसुवान ही सों निज धामहीं धाम धरा भरि जैहै। त्यों पदमाकर धीर समीरन धीर धनी कहुं क्यों धरि जैहै॥ जो तजि मोहि चलोगे कहूं तौ इति बिरहागिनिया अरि जैहैं। जैहै कहा

कछू रावरे को हमरे हिय को तो हरा जरि जैहैं। ५३६॥

परदेस तुम्हें चलिबो अबहीं बिरहागिनि जागी हमारे हिये। कहौ क्यौं हमसों रहि जैहै बिना इन आँखिन रावरो रूप पिये॥ कितो हीरन हीं के हरा सुख पैहौं कितो मुकतान की माल दिये। पिये दीजिये ऐसी निसानी कछू जो तिहारे बिछोह में जोहि जिये॥ ५३७॥

गमना भए चार दिना न भए नए चार बिचार न चाह गुने। तब लो परदेस के पानन के पिय के मुख ते बल बोल सुने॥ सरदार रही मन मे मुरझाइ उपाय न एक उचार सुने। सिर टो कर के पिय को सु प्रिया बहुरो सिर आपन आयु धुने॥ ५३८॥

कोऊ कितेक कहे न सुनै गुन धो कह चित्त महा मुरझावत। आँखिन नीर भरे सरदार बिचार बिचार महा चित चावत॥ मोल दै दून दुका करके बर औरन के दधि देखि गिरावत। छीर लये दलगीर गुवारिन दौर के नंद की पौर पै आवत॥ ५३९॥

प्रानन के पहरू सरदार बने करबी कबहू सुधि

नीकी । जो तुहरो चित चाहत चाल सु हाल कहें हमहू न नबी की ॥ पै इक पूजन पूजन काज सु साज सुनी सब ते जग जीकी । जो हित हेर स्वयंभु के ऊपर लाल चढाइए मालजुही की ॥ ५४० ॥

तब तो छबि पीवत जीवत हे अब सोचन लोचन जातजरे । हिय तोख के पोख जे प्रान पले बिललात सु तो दुख दोषभरे ॥ घनआनद मीत सुजान बिना सबही सुख साज समाज जरे । तब हार पहार से लागत हे अब बीचन आइ पहार परे ॥ ५४१ ॥

मीत सुजान अनीत करो जिनि हाहा न हूजिए मो· हिअ मोही । डीठ को ओर कहा तेहि ठौर फिरे द्रिग रावरी रूप की दोही ॥ एक बिसास की आस गहे लगि आस रहे बसि आन बटोही । ही घनआनद जीवनमूल दई कत प्यासन मारत मोही ॥ ५४२ ॥

पी चलिबे की चली चरचा सुनि चंदमुखी चितई द्रिगकोरन । पीरी परी तुरिते मुख पै बिलखी अति ब्याकुल मैन सकोरन ॥ को बरजै अलि का सो कहै मन झूलत नेह ज्यों लाज

झकोरन। मोती से पोइ रहे 'अंसुवान गिरे न फिरे बरुनीन के कोरन ॥ ५४३ ॥

कान्ह चले कहि आयो कछू न कपी कदली दल ज्यों थहरानी। सोचत ही सब द्यौस गयो पुनि रात पुकारत राधिका रानी ॥ आई न बास को ज्योंनित आवत आंखिन मे परि पैरि परानी। गंग सु तो फिरि फेर फिरी नहीं बूडन के डर नींद डरानी ॥ ५४४ ॥

मे सुधि पाई जनावन आई सनेह ते हाथ को ढील चलैगो। चाह कह्यौ सु अबे कहि ले बहुरे कहि है सखि म हि न लैगो ॥ ब्रह्म भनै बिरहातुर है सबही दुख के फल फैल फलैगो। राख परे री तो राख हियो मन भावि तो भामिन भोर चलैगो ॥ ५४५ ॥

सीत समै परदेस पिया जु पयान सुनो बहरावन लागी। या रितु मे हरि केहू रहे बरदेवता पूजि मनावन लागी ॥ ओर उपाय न कीन कछू तब साज के बीन बजावन लागी। प्यारी प्रवीन भरी सुर मेघ मलार अलापन गावन लागी ॥५४६॥

फटि है तो नही लटि है तो नही घटि है तो

नही के तही दहिहै। जब चाहहिगे तब चाह नही अब चाहति है कह का चहिहै ॥ लखि ब्रह्म भने हरि वेहैं सिधारत हो सु कहाें अरु कौ कहि है। सुनिरी छतिया तुहि बूझति हौं पिय के बिछुरे बिछुरो सहिहै ॥ ५४७ ॥

रूप लुभाइ लगी तब तो अबलौं गति हीत सुभाइ निमेखो। जो रसरंग अभंग लह्यौ सु रहो अवलेखिये लाखन लेखो ॥ हो घनआनद एहो सुजान तऊ अब दाह उछाह परेखो। आँखिन आपनी आँखिन देखो कियो अपनो सपनो जिन देखो ॥ ५४८ ॥

संग रह्यो सुख संग लह्यो कबहूँ न भयो कसुके पल न्यारो। छोडिके ताहि चल्यो पिय चाहत कैसे बनै बलि कोऊ बिचारो ॥ पीतम को अरु प्रानन को हठ देखिबे है अब होत सवारो। केधौं चलैगो अगार सखी यह देह तें प्रान की गेह तें प्यारो ॥ ५४९ ॥

बात कही सो कही चलिबे की न यों कबहूँ बहुरो उर आनबी। आँसूँ चले सो चलेही चले द्रिग नींद औ भूख गई पहिचानबी ॥ जो तुम जान

कहोगे अचानक देव जू यों निहिचै करि मानबी। ढूँढि हौ प्यारे कपूर लौं प्रान सु या तन तें उडि-जात न जानबी ॥ ५५० ॥

ज्याल तें जोर जुन्हाई कै डारि है चारों दिसा बिख सो वरसैहै । देखत हीं दृग देहैं अचानक आँच तें कोटिक नाच नचैहै ॥ मो मुह की कबहू तुम सों समताई न पाई रह्यो रिसकैहै । प्रानपियारे तिहारे चले अबहीं यह चंद जवाल ह्वै जैहै ॥ ५५१ ॥

बात चली चलिबे की जँही फिर बात सुहानी न गात सुहानो । भूषन साज सकै कहि को मह-राज गयो छुटि लाज को बानो ॥ यों कर मीडति है बनिता सुनि पीतम को परभात पयानो । आपने जीवन को लखि अंत सु आयु की रेख मिटावति मानो ॥ ५५२ ॥

गो गृह काज गुवालन के कहें देखिबे कों कहूँ दूरि को खेरो । मागि बिदा चले मोहनी सों पद-माकर मोहन होत सबेरो ॥ फेंट गही न गही बहियाँ न गरो गहि गोविंदे गौन तें फेरो । गोरी गुलाब के फूलन को गजरा लै गोपाल की गैल मे गेरो ॥ ५५३ ॥

बहुभाँति हँसाय मनाय कही प्रिय मोंकहू दीजे बिदेस बिदाई । सो सुनि बाल बिहाल भई लई ऊँची उमास महा दुखदाई ॥ साले नरायन जो उमडे बडे नैनन तें अँसुवा झरलाई । हाइ ना जाइ बिथा कहि बाल की आहिं के धाइ गरे लपटाई ॥ ५५४ ॥

बात चली यह है जबतें तबतें चले काम के तीर हजारन । भूख औ प्यास चली मनतें अँसुवा चले नैनन तें सजि धारन ॥ दास चली कर तें बलया रसना चली लंक तें लागी अबारन । प्रान के नाथ चले अनतें तनतें नहिं प्रान चलें किहिं कारन ॥ ५५५ ॥

जैयत पीतम प्यारे बिदेस कों मोहिं कहा उपदेस बतैयत । तैयत हैं छतियाँ जो कहो बतियाँ चलिबे की सुने बिलखैयत ॥ खैयत रावरे पायँ की सोंहे अलीमन याकी उपाय ना पैयत । पैयत औधि के औसरे जो बिछुरे तें जियें यह लाज लजैयत ॥ ५५६ ॥

मेलि गरे मृदु बेली सी बाहन कौन सी चाँहँन छाँहन डोलिहौं । कासों सहास बिलास ममारख

हीके हुलासन सों हँसि बोलिहौं ॥ श्रौनन प्याइहौं कौन सुधारस कासों ब्यथा की कथा गढि छोलिहौं। प्यारे बिना हौं कहा लखिहौं सखियाँ दुखियाँ अँखियाँ जब खोलिहौं ॥ ५५७ ॥

सखि जा दिन तें परदेस गये पिय ता दिन तें तन छीजतु है। निस बासर मौन सुहात नहीं सुधि आये उसासन लीजतु है॥ अब और बनाव बनै न कछू अनुभौ इतनो सुख कीजतु है। उन की अनुहार निहारि सखी ननदीमुख देखि के जीजतु है ॥ ५५८ ॥

बरुनी न के नैन झिकैं झिझिकैं मनो खंजन मीन पैं जाले परे। दिन औधि के कैसे गनो सजनी अँगुरीन के पोरन छाले परे ॥ कहि ठाकुर कासों कहा कहिये हमै प्रीति करे के कसाले परे। जिन लालन चाह करी इतनी तिन्हे देखिबे के अब लाले परे ॥ ५५९ ॥

हीतौ बिथा बहुतै पै भई अब चौगुनी चन्दन की चरचाही। योंहीं दवासे लगेई हुते अब चाँदनी आय दसों दिसि दाही ॥ औधि लौं जीवन औधि बदे सखि तू कहि तेरे कहा मन माहीं। चाहति

यों कह्यो प्यारी सखी सों पै लाजन तें कहि आवति नाहीं ॥ ५६० ॥

तीखन बानन सों मन बेधत काम भले नित देह दहै री । भावत ना घर आँगन नेक सोहाय नहीं बन बाग उतै री ॥ सुंदरि गुंजत भौंरन को लखि देखत चन्दहि कों डरपै री । काहू सों जो कहिबे को करै कछु आवत कंठहिं लौं सकुचै री ॥ ५६१ ॥

सेवक बालै बिलोकै नहीं न सुनै हलराय झुलाय कै टोकै । पानी औ पान छुटे सिगरे झगरे परे लाज औ काम दुवो के ॥ कंत कों काहू के जुदे न करौ हरि अन्त को प्रान रुकैं नहिं रोकै । औरई सी भई औरई देखत बौरई सी भई बौर बिलोकै ॥ ५६२ ॥

आजही प्यारो चल्यो यह आजही आय दबाय व्यथा तन जीति है । पैंडो निहारति आइबे को कछु आजही औरै भई पर कीति है ॥ कंठ लै प्रान रहे अबहीं अब औधि के पैबे की कौन प्रतीति है । द्यौस तौ बीत्यौ मरू करिकै अब आई है राति सो कैसे धौं बीति है ॥ ५६३ ॥

बैठी बिसूरतही पिय आगम एते में कोइल की सुनि बानी। जागि उठी बिरहागि महा लखि मै रघुनाथ की सौंह सकानी ॥ चन्दन लाय मिलाय कपूर निसा भरि सींचि गुलाब के पानी। कौन कहै बतियाँ निसि की न तिया की तऊ छतियाँ सियरानी ॥ ५६४ ॥

सुख सेज सुगन्ध सुधाकर सीत समीर सुहात नहीं सखियो। कबिराज कहै इन भाँतिन कैसे बिना जगजीवन जाय जियो ॥ कबहूं बिरहागिन मैं पजर्यो कबहूं धरि नीर में बोरि दियो। पिय के बिछुरे हियरा यह काम लोहार के हाथ को लोहो कियो ॥ ५६५ ॥

भरी अंग अनंग की दीह ब्यथा सों खरीही अटा पै अलीन घिरी। मग जोवतही मनभावन को धरि ध्यान मे पाय सरोज सिरी ॥ कबि गोकुल बोले कलापी इतै में चितै चहुँघाँ अकुलाय थिरी। कहि हाय गए परि ढीले से गात अराय तिया थहराय गिरी ॥ ५६६ ॥

छिति मंडल कै नभमंडल मेघ उमंडि दसों दिसि धाय रहे। कबि चन्दन चाव सों चातक

मोर हरे बने सोर मचाय रहे ॥ पिय पावस मे बिछुरे बनितानि सों आवनहार सो आय रहे । किहिं कारन हाय बिहाय हमै हरि जाय बिदेस मे छाय रहे ॥ ५६७ ॥

कैसेहुं सीत के द्यौस टरे बहुरे सुधि कीने सुध्यौ बिसरैगी । ग्रीषम मे बहराय के राखी इतो कोऊ धीरज और धरैगी ॥ आए न लाल अजौं कबि बीर सु याकी उपाय कहा धों करैगी । खाय दरार रही छतियाँ अब पानी परे अरराय परैगी ॥५६८॥

कछु और उपाय करो मति री इतने दुख सों मरिबोई भलो । निज देखि अबीर की धूंधरि कों जिनं बीर बृथा अब हाथ मलो ॥ यह अन्तक सो बिनु कन्त एकन्त बसन्त सु तन्तही आवै चलो । चढि नारि परास की डारिन मै निरधूम अँगारन क्यों ना जलो ॥ ५६९ ॥

फूलन दै इन टेसू कदंबनि आमन बौरन छावन दै री । री मतिमन्द मधु व्रत पुंजन कुंजन सोर मचावन दै री ॥ को सहिहै सुकुमारि किसोर अली कल कोकिल गावन दै री । आवतही बनि है घर कन्तहि बीर बसन्तहि आवन दै री ॥५७०॥

आगे तो आपु अकेलो रह्यो अब साज समाज घनो सँग छायो । बैर वहै निज बूझत है मिळि कूजत है कलकंठ मे भायो ॥ औधि की आस बची अबलों अब चाहत है रघुनाथ सतायो । ऊधो मिलें मधुसूदन सों कहियो व्रज मे बहुरो मधु आयो ॥ ५७१ ॥

फैलि परी घर अंबर पूरि मरीचिन बीचिन संग हिलोरति । भौंर भरी उफनाति खरी सु उपाव के लाव तरेरनि तोरति ॥ क्यों बचिये भजिहू घनआनद बैठि रहें घर पैठि ढँढोरति । जोन्ह प्रलै के पयोनिधि लों बढि बैरिनि आजु बियोगिनि बोरति ॥ ५७२ ॥

पावक पुंज न खाय अघाय घने घने घायन अंग सँवारत । ऐसेही दीन मलीन हुतो मन मेरो भयो अब तो अति आरत ॥ ए मनमोहन मीत मनोज दया दृग तें किन नेकु निहारत । जानत पीर जरे की तऊ अबला जिय जान कहा अब जारत ॥ ५७३ ॥

उन को नहीं दोस परोस तज्यो कहि का फरफंद पराए परै । अपसोस यहै कहि बेनीप्रवीन

जौ औरन के तू अराएं अरे ॥ सखियान की सीख बिहाय वृथा अँखियान के हाय हराए हरे । मन नीच निदान तू निन्दबे जोग मनोज जरे के जराए जरे ॥ ५७४ ॥

मिलि संग सखीन के बैठे कछू नहिं खेल कहानि रुंरोचत सी । परि पीरी गई कहि बेनी-प्रबीन रहै निसि बासर दोचत सी ॥ जब तें पर-देस सिधारे पिया अँसुवा अँखियानि बिमोचत सी । वह सोनजुही सम मौन भई लुकि भौन के कोन मै सोचत सी ॥ ५७५ ॥

नैनन में भरि आवत नीर पै बाहिर जाहिर होत न आयहे । बोल्यो चहै तौ गरो भरि आवै सखीनहूं मे रहि जाति लजाय है ॥ और बियो-गिनी हैं पै अनोखी लगी कछु याहि बियोग बलाय है । आजही के बिछुरे यह हाल तौ औधी लो कैसे कै को पहुंचाय है ॥ ५७६ ॥

बालम के बिछुरे ब्रजबाल को हाल कह्यो न परे कछु ह्याँही । चूँ सी भई दिन तीनहीं मैं तब औधि लौं क्यों छजि है छबि छाँहीं ॥ तीर सो धीर समीर लगै पदमाकर बूझेहूं बोलति नाहीं

चन्द उदो लखि चन्दमुखी मुख मंद ह्वै पैठति मन्दिर माहीं ॥ ५७७ ॥

बार कितेक सहेलिन के कहें कैसेहूं लेति न बीरी सँवारी । राखति रोकि कहै मतिराम चलैं अँसुवा अँखियांन तें भारी ॥ प्रानपियारो चल्यो जबतें तबतें कछु औरही रीति निहारी । पीर जनावति अंगन मे कहि पीर जनावति काहे न प्यारी ॥ ५७८ ॥

खेल्यो करै सँग सेवक मेरे नहीं पलओट ह्वै देति अनन्दहि । जाग्यो न जोबन को रसहू अनुराग्यो नहीं हिय काम के फन्दहि ॥ हाय तैं कीन्ही कहा करुना न बिचारति दूसरे के दुखदन्दहि । प्रान तजौंगी अरी बलिजाऊँ बिदा न करै अबै मेरी ननन्दहि ॥ ५७९ ॥

निज कन्त बियोग सो बैठि इकन्त नवाय कै सीस रही घरी द्वै । कुच ऊपर आनि परे दुख सों जे चले अँसुवा मुख ऊपर ह्वै ॥ लखि संकर ज्यों ललना की प्रभा त्यों सकै समता कहो और की छ्वै । मनो रूद्रन की बिष आदि की आँच सों चन्द सुधारस कों चल्यो च्वै ॥ ५८० ॥

लिखि लाख उपाय न आखर द्वै पठई धरि धीरज रंग रची । गुरु सौं दुरि दुतिन दासी के हाथ दई तिय कों पिय प्रेम पची ॥ कवि देव जू बाँचत आयो गरोभरि हाथ की हाथही जात तची । दिन बीसक लौं पति की पतिया की बियोगिन पैं बतियाँ न बची ॥ ५८१ ॥

पिय साखि दे चैत के चन्दहि जीत्यो सहा मै लगी अति नेरे रही । पुनि सेवक सों करि सेवक सारदी हारदी मोको उजेरे रही ॥ तन बूड्यो अबे श्रम पानिप सों पुलकावलि हू को तरेरे रही । बलि द्वैज के कौन से जीतबे काज उए अथये लगि हेरे रही ॥ ५८२ ॥

जाहि दवानल पान किये तें बढी हिय में सरदी सरदे सों । दास अघासुर जोर हर्‍यो जो लर्‍यो बतसासुर से बरदे सों ॥ बूडत राखि लियो गिरि लै ब्रज देस पुरंदर बेदरदे सों । ईस हमैं परदे परदे सो मिलों उडि ता हरि सों परदे सों ॥५८३॥

मधु मास में दास जू बीस बिसे मनमोहन आय हैं आय हैं आय हैं । उजरे इन भौनन को सजनी सुख पुंजन छाय हैं छाय हैं छाय हैं ॥

अब तेरी सों मेरी न संक इकंक व्यथा सब जाय हैं जाय हैं जाय हैं । अवलोकि गोपालहिं दास जू ये अँखियां सुख पाय हैं पाय हैं पाय हैं ॥५८४॥

मनमोहन मेरे गए जबतें तबतें ना कहूं कल पावनो है । हम कासों कहें दिल की बतियां छतियां वही छैल पै तावनो है ॥ सु दमोदर जू निसबासरही उनहीं के सु ध्यान में धावनो है । धन देवे धनी घनो आवै जबै कोऊ भाँति बसंत बितावनो है ॥ ५८५ ॥

अब ह्वैहै कहा अरबिंद सो आनन इंदु के हाथ हवाले पर्‍यो । एक मीन बिचारो बिध्यो बनसी पुनि जाल के जाय दुमाले पर्‍यो ॥ पदुमाकर भाखै न भाखें बनै जिय कैसो कछूक कसाले पर्‍यो । मन तो मनमोहन के संग गो तन लाज मनोज के पाले पर्‍यो ।' ५८६ ॥

पति प्रीति के भारन जाती उनै मति सो दुख भारन सालै परी । मुख सासतें होती मलीन सदाँ सोई मूरति पौन के पाले परी ॥ द्विजदेव अहो करतार कछू करतूति न रावरी आले परी । वह नाहक गोरी गुलाबकली सी मनोज के हाथ हवाले परी ॥ ५८७ ॥

साँझ के ऐबे की औधि दै आए बितावन चाहत बाहू बिहानहिं । कान्ह जू कैसे दया के निधान हौ जानो न काहू के प्रेम प्रमानहिं ॥ दास बडोई बिछोह कै मानती जात समीप के घाट नहानहिं। कोस के बीच कियो तुम डेरो तौ को सकै राखि पियारी के प्रानहिं ॥ ५८८ ॥

बालम के बिछुरे ब्रजबाल को ब्याकुलता बिरहा दुखदानि तें । चौपरि आनि रची नृपसंभु सहेलिनि साहिबिनी सुखदानि तें ॥ तूँ जुग फूटै न मेरी भटू यह काहू कह्यो सखियाँ सखियांनि तें । कंज से पानि सें पासे गिरे अँसुवा गिरें खंजन सी अँखियानि तें ॥ ५८९ ॥

सँगवारी सुनो सब कानन दै बिरहागि को हौं तो मरी सुख मैं । करि चेटक चन्दन बन्दन रीति निहारि यो भावते के रुख में ॥ सुधि लेहिंगे सेवक जातहीं मेरी पठाइहैं धावन को दुख मैं । तजि आगि सुधा गुने पीतम की धरि दीजियो पाती मेरे मुख मैं ॥ ५९० ॥

अब कौन भरोसो करैं इन को लटी दीठि कै कोऊ चिते गई री । हँसिबो अरु बोलिबो लाइबो

दूरि उसास लों जाकी रितै गई री ॥ नई नोखी बियोगिनी हैं ये अबै नहिं सेवक औधि बितै गई री । टक लागी हलै न चलै पुतरी तजि नैन कों नींद कितै गई री ॥ ५९१ ॥

पूरन आप पुरान सुनो यह संवत संमत बेद बखानो । जो परकाज करें तिनको कहि जात नहीं अति पुन्य प्रवानो ॥ तो हित हो सरदार न जो भल भूषन भोजन भावित बानो । को कित बात सुने किहि की अब मो चित में ब्रत आन समानो ॥ ५९२ ॥

कास प्रकास हुलास भरे गन रास चले ससि के समुहाई । ओ सरदार लखो सर में अवली कल-हंसन के ध्रुव धाई ॥ हाइ हमारे अभागन ते बिधि आप कछू रितु आन बनाई । रंजन जो द्रिग के सजनी सिर कंजन खंजन देत दिखाई ॥५९३॥

कान्ह बिदेस ते आए नरोतम यों कहिहै व्रज को जन कोऊ । भेंटहुगी पग छ्वै छतिया पुनि छाडिहे नाह घरीक मे ओऊ ॥ बैठहुँगी गुरलोगन मे कर घूंघट नैन नवा कर दोऊ । बोलिहै सासु तबै दुलही कहु ह्वैहै सखी कबहू दिन सोऊ ॥५९४॥

प्यारे सुजान के पान के मंडन खेद अंखडन भेद कलाको । ज्यौं रस तेज वही दरसै बरसै घनआनद नेह झला को ॥ सूच्छम सो पै भऱ्यो अतलो सुख रंक बिभो जुग नैन पला को । प्रीतम लौं हिय राखत हाथ बिछोह में ज्यावत मोह छला को ॥ ५९५ ॥

आवतही मन जान सजीवन ऐसे गए जो कसे नहि लोटन । अंग भये पियरे पटलो मुरझे बिरहानल ढंग सरोटन ॥ और सोहात कछू न सखी भरी नैन विहाय न हाय करोटन । हो सुचचेत घनानद पै हमै मारत हैं बिरहागिन चोटन ॥५९६॥

बालबियोगिनी लाल बिना कुंभिलाय गई मनो पल्लव साखैं । बोलै न डोलै न खोलै हियो ससिनाथ घरी की गनावति लाखैं ॥ जीव मैं मैंन मरूर उठें उडि पीय पै जैबे कों चाहत पाँखैं । द्वार पै ठाढी किवार की ओट बडे बडे बार बडी बडी आँखैं ॥ ५९७ ॥

मनहीं मन भीतर सोचि रहौं अपने नाहिं दुःख कहौं परसों । कब होय घरी कबि राम भली

जब जादिन जाय पिया परसों ॥ अब कासों कहौं कब आवैंगे मोहन आज की काल किधौं परसों। मन ऐसो करै उडि जाय मिलौं कहु कैसे उडौंरी बिना परसों ॥ ५९८ ॥

गोकुलनाथ चले जबसों , तबसों बिरहानल ताप तईसी । भोजन भूषन पानि औ पान की जानि परै सुधि भूल गईसी ॥ केलि के कुंजन साथ सखीन के जाइबे की नित बानि लईसी । भेंटति है हिय लाय तमालन लालन बावरी बाल भईसी ॥ ५९९ ॥

न्यौते गये नँदलाल कहूं सुनि बाल बिहाल बियोग की घेरी । ऊतर कौनहूं के पदमाकर दै फिरै कुंज गलीन मै फेरी ॥ पावै न चैन सुमैन के बाननि होति छिनै छिन छीन घनेरी । बूझै जु कन्त कहै तौ यहै तिय पीय पिरात है पाँसुरी मेरी ॥ ६०० ॥

जब ते तुम आवन आस दई तबते तरसों कब आयहौ जू । मन आतुरता मनही मै लखौं मन-भावन जानि सुनायहौ जू ॥ बिधि द्यौस लौं औधि बढी दिनहीं दिन जानि बियोग बितायहौ जू ।

रस सों घनआनँद वा रस कुंज रसारस सों कब छायहौ जू ॥ ६०१ ॥

मीत सुजान अनीति करो जिनि हाहा न हूजिये मो हिअ मोही। दीठि कों और कहीं नहीं ठौर फिरी दृग रावरे रूप की दोही ॥ एक बिसास की टेक गहे लगि आस रहे बसि प्रान बटोही। है घनआनँद जीवनमूरि दई कत प्यासन मारत मोही ॥६०२ ॥

जा मुख हाँसी लसी घनआनँद कैसे सुहात बसी तहाँ नासी। जाइ हितै हातिये न हितू हँसि बोलन की कत कीजत हाँसी ॥ पोखि रसै जिय सोखत क्यों गुन बाँधिहू डारत दोस की फाँसी। हाहा सुजान अचंभो अयान जू बेधि कै गाँसहि बेधत गाँसी ॥ ६०३ ॥

घनआनँद जीवन रूप सुजान है पीवत क्यों दृग प्यास नहीं। फबि फूलि रहे कुसुमाकर से सुकहूं पहिचान की बास नहीं ॥ रसिकाई भरे अपने मन मै सु कहूं रस आसहू पास नहीं। पचि कौने बिरंचि रचे हौ कहौ जू हितू न हतो हिय त्रास नहीं ॥ ६०४ ॥

मोतिन की पहिरै न भटू किन नाक नथूनी ॥६११॥

चंदन पंक गुलाब के नीर सरोज की सेज बिछाइ मरोरी । तूल भयो तन जात जरो यह बैरी दुकूल उतार धरोरी ॥ देवजू झूठे सबै उपचार यही मे तुसार के भार भरोरी । लाज के ऊपर गाज परै ब्रजराज मिलै सु इलाज करोरी ॥६१२॥

नागरनारि को पीय बिदेस लग्यो मकरध्वज यों तन तावै । कंचुकी खोलि धरी यह जानि सु बैरी निहार नजीक न आवै ॥ बेनी भुजंग रचे रिप के रिप सीतल मंद सुगंध न भावै । सिंह सवार लिये पसु को पति कै पटओट कि मध्य दुरावै ॥ ६१३ ॥

दिन रैन न चैन परै पलको कल कोकिल के कल छीजतु है । जगता मद मार मनोरथ को पन साधकहू मन लीजतु है ॥ बिरहानल ताप के त्रासन ते भर अंकन ओसन पीजतु है । उन प्यारे पिया की उनार सखी ननदी मुख देखि कै जीजतु है ॥ ६१४ ॥

चंदन पंक लगाइ कें अंक जगावत आग सखी बरजोरे । तापर दास सुबासन घोरि कैं

देतु है बारि बयारि झकोरें ॥ पापी पपीहान जी हाथ कैतुव पी पी पुकारि उठै कर भोरें । देत कहा है दहे पर दाह गई करि जाउ दई के निहोरे ॥ ६१५ ॥

जान पखानन की सुधि हेत मयूर न देती भगाय भगांय । मने के दियो पियरे पहिराउ सुगांउ मे प्यादे लगाय लगाय ॥ भुलावती वाके हिये ते हरी सुकथान मे दास पगाय पगाय । कहा कहिये यह पापी पपीहा बिथा हिय देतु जगाय जगाय ॥ ६१६ ॥

लीलहि लेत निसाचर से मुख प्राची दिसा की पिसाच की दारा । काहू प्रियान की प्रान पयान पिकी पिकरोर कृपान की धारा ॥ गंग बसंत की अंतक सीत समीर कि तीर तरन्य कि तारा । जोन्ह की ज्वाल मृनाल की ब्याल सबी घनसार कि सार कि आरा ॥ ६१७ ॥

सुख सेज सुगंध सुधाकर सीत समीप सुहात नही सखियों । कबिराज कहे इन भातन कैसें बिना जगजीवन जाइ जियों ॥ कबहूं बिरहागिनि मे जपस्यो कबहूं धर नीर में बोर दियो । पिय

के बिछुरे हियरा इहि काम'लुहार के हाथ को लोह कियो ॥ ६१८ ॥

ओधि टरी हरी आवन को मनभावन ही की लगी जक वाकें। काम को पीर बढी अभिमन्य धरै नही धीर धकाधकी वाकें ॥ कहै बिधि सो तिय दें बिध पांख मिलो उडि जाइ रहो उर का के। जो पर आँखिन पीउ मिलै सखी पाख जुहै चकई चकवा के ॥ ६१९ ॥

कूबरी कूर कुचील बुरी कुबजा संग भोग न को लहिये। नव बैस प्रबीन नरोतम जू ब्रज-बाल बियोगिनि सों दहिये ॥ अब और कहा कहों ऊधव जू कहनावत यों हरि सो कहिये। तजिये बल प्रान सुजान के साथ सुं कूर तें दूर सदा रहिये ॥ ६२० ॥

नये नये नागर राजकुमार मिले संग राजत राजस राते। नई नई नागरि नारिन प्रीत नई नगरी मे बसे रस माते ॥ नाउँ न लीजत है ब्रज को ब्रजबासी किये मन ते सब ह्राते। मोहन जाइ किये मथुरा मे नए नए नेह नए नए नाते ॥६२१॥

सीरी बीयार मे अंग संभारिहों कोइल की

कुहुँके सुनिलैहों। मंडन मोरन की धुनि के पन पाउड डारन देखि डरैहों ॥ नेकहू जो ब्रजराज को माई कहू इन आँखिन देखन पैहों । नाही तो आज की जोन्ह की मार मे जीपर जोहँर कै मरिजैहों ॥ ६२२ ॥

परदेस गए पहिलेंई पिया तिय अंग अनंग तरंग न ताए । सीरी हो जाइ तचै लच्छीराम थके उपचार जिते सब लाए ॥ ईठि न धाइ खवासिनहूँ मुरझाइ रही न भए मन भाए । ऐसे कहे तें जिये तो जिये कहो गाँउ ते भाउ ते मोहन आए ॥ ६२३ ॥

काल के कान गए मथुरे मनो बीत गए जुग बासर सै । बिरहागिनि काम लगाइ दई है दसो दिस देखि वही दरसै ॥ कबि ब्रह्म भनै मोहि जान जडै सखि स्याम घटानल सो परसै । बिरही बर बारही बार उठै द्रिग नीर किधो घन धो बरसै ॥ ६२४ ॥

जा थल कीन्हे बिहार अनेकन ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं । जा रसना तें करी वहुबातन ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं ॥ आलम जौन

से कुंजन के करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करैं । नैनन मे जे सदाँ रहते तिन की अब कौंन कहानी सुन्यो करैं ॥ ६२५ ॥

ह्याँ मिलि मोहन सों मतिराम सु केलि करी अति आनंद बारी । तेई लता द्रुम देखत दुःख चलैं अँसुवा अँखियान तें भारी ॥ आवति हौं जमुनातट कों नहिं जानि परैं बिछुरे गिरधारी । जानति हौं सखि आवन चाहत कुंजन तें कढि कुंजबिहारी ॥ ६२६ ॥

कहिबे की कछू न कहा कहिये मग जोवत जोवत ज्वै गयो री । उन तोरत बार न लाई कछू तन तें वृथा जोबन ख्वै गयो री ॥ कबि ठाकुर कूबरी के बस ह्वै रस मे बिसासी बिस ब्वै गयो री । मनमोहन को हिलिबो मिलिबो दिना चारि को चाँदनो ह्वै गयो री ॥ ६२७ ॥

लावन चंदन ऐहैं तिया कुल के जे पिया करिहैं घर आवन । आवन ह्वैहै सुहावन लोग कहैंगे ममारख आये रि भावन ॥ भावन भौन लगैंगे तबै ब्रजनाथ फिरैंगे जो आपने पावन । पावन ह्वैहौं तबै सजनी रजनी भरि कंठ जो पाइहौं लावन ॥ ६२८ ॥

सारी सुरंग रँगै अपनी बलि तैसियै प्यारे जुपाग बनैये । चोवा सों कंचुकी बोरियै आपनी तैसी झगा की या चोली रचैये ॥ बेनी चवाइन मै बसि कै नए जो करि ब्यौंत सखी कहुँ पैये । भीजत एक छता तर मै गलबाँही दै दोऊ मलारन गैये ॥ ६२९ ॥

वैहर बीर बरी सी बसंत की बारति है यह कौन बराय है । कूकति कैलिया हूकति सी इहिं को मुख मूँदि कै दूरि दुराय है ॥ गोकुलनाथ सों मेरी व्यथा कहि कै कब तूं अँखियाँ डबराय है । बीति है जो पिय संग अरी सजनी रजनी बहुरो कब आय है ॥ ६३० ॥

मन पारद कूप लौं रूप चहै उमहै सुर है नहीं जेतो गहौं । गुन गाडन जाय परै अकुलाय मनोज के ओज न सूल सहौं ॥ घनआँनद चेटक धूम मै प्रान छुटै न छुटै गति कासों कहौं । उर आवत यों छबि छाँह ज्यौं हौं व्रज छैल की गैल सदाँही रहौं ॥ ६३१ ॥

कौन को लाल सलोनी सखी वह जाकी बडी अँखियाँ रतनारी । हेरनि बंक बिसाल के बानन

बेधत है घट तीखन भारी ॥ यौं रसखान सँभारी परै नहीं चोट सु कोटि करौ सुखकारी । भाल लिख्यो बिधि हेत को बंधन खोलि सकै अस को हितकारी ॥ ६३२ ॥

जमुनातट बीर गई जब तें तब तें जग के मन माझन हौं । ब्रजमोहन गोहन लागि भटू हौं लटू भई लूटि सी लाख लहौं ॥ रसखान लला ललचाय रहे गति आपनी हौं कहि कासों कहौं । जिय आवत यौं अब तो सब भाँति निसंक ह्वै अंक लगाए रहौं ॥ ६३३ ॥

जीवत एकही आस लिये है निरास भये पल एक न जीजि है । सोभ कहूं बँसुरी बट मै बँसुरीधर की रसतान सुनीजि है ॥ ए अँखियाँ दुखियाँ कबलारी चकोरी भई बिरहानल सीजि है । का दिन वा ब्रजचंद चकोर चितै मुखचंद सुधारस भीजि है ॥ ६३४ ॥

कौन धों सीखी रही भई है इन नैन अनोखियै नेह की नाधनि । प्यारे सों पुन्यनि भेंट भई यह लोक की लाज बडी अपराधनि ॥ ओट किये रहते न बनै कहते न बनै बिरहानल दाधनि ।

स्याम सुधानिधि आनन के मरिये सखि सूधी चितैबे कि साधनि ॥ ६३५ ॥

पहिले सतराइ रिसाइ सखी ब्रजराइयै पाइ गहाइयैतो । भरि भेंट भटू भरि अंक निसंक बडे खन लौं उर लाइयैतौ ॥ अपनो दुख औरनि को उपहास सबै कबि देव बताइयैतो । घन-स्यामहिं नेकहु एक घरी कों इहाँ लगि जो करि पाइयैतौ ॥ ६३६ ॥

कोऊ न आयो उहाँ तें सखी री जहाँ मुरली-धर प्रानपियारे । याही अँदेसे मे बैठी हुती उहि देस के धावन पौरि पुकारे ॥ पाती दई धरि छाती लई दरकी अँगिया उर आनद भारे । पूछन कों पिय की कुसलात मनो हिय द्वार किवार उघारे ॥ ६३७ ॥

जाम भरे दिन है चलिबो सुनि प्यारी निसा सब रोवत खोई । हौं कह्यौ रोये न जैये घरें यह रोइबो तौ सुनि है सब कोई ॥ सोई निवाज सदाँ सुधि सालति साःहस कै कै चली पग दोई । आधिक दूरिलौं जाय चितै फिरि आय गरें लप-टाय कै रोई ॥ ६३८ ॥

साहस कै हँसि कै रस के मिसि मागी बिदेस बिदा मृदुबानि सों। सो सुनि बाल गई मुरझाय दही बर बेलि ज्यों धीर दवानि सों ॥ नैन गरो हियरो भरि आयो पै बोलि न आयो कछू वा सुजानि सों। सालैं अजौं उर माझ गडी वे बडी अखियाँ उमडी अँसुवानि सों ॥ ६३९ ॥

वह मान दसा चित चातुरी चाह हरें हरें नाहिं कहै हँस कै। झिझिकारनि पानि निवारनि वा मुसिकानि रही हिय मै बस कै ॥ मुखचुंबन हेत दुरावन की भनै प्रेम हियें लगिबो गस कै। रति के रस के कुच के मसके जे लई सिसिकै ते अजौं कस कै ॥ ६४० ॥

वाको बिलोकिये जो मुख इंदु कहूँ यह इंदु लगै लवलेस मै। बेनीप्रबीन महा सरसै छबि जो परसै कहूँ स्यामल केस मै ॥ सो मन सोच उसास लै लै निसि वासर है परो मैन कलेस मै। प्रानपियारी बिहाय कै हाय अनाहँक आनि परे परदेस मै ॥ ६४१ ॥

भीतर तें उठि आवत देखि कबै वह बाल भुजा भरि लैहैं। सेखर कंठ लगाय कै पीछे तें

आँनद के अँसुवाँनि अन्हैहैं ॥ कंत भले भले बोल के साँचे कह्यो तुम हो हम वा दिन ऐहैं। औधि गए यों भिया घर जाय कबै हम हाय ओराहने पैहैं ॥ ६४२ ॥

लहि सूनो सकेत अलिंगन के मदनागिनी की व्यथा खोती रही। मुसुकानि भरि बलि बोलनि तें श्रुति माहिं पियूष निचोती रही ॥ द्विज प्रान-प्रिया मो सनेह सनी छतियाँ तें लगी सदाँ सोती रही। तजि ताहि बिदेस बसे तिय जो कबहूं पल ओट न होती रही ॥ ६४३ ॥

दृग लाल बिसाल उनींदे कछू गरबीले लजीले से पेखहिंगे। कब धों बिथुरी सुथरी अलकें झपकी पलकें अवरेखहिंगे॥ कवि संभु सुधारति भूषन भेष बिलोकनि यों जग लेखहिंगे। अँगिराति उठी रतिमंदिर तें कबधों वह भाँवती देखहिंगे ॥६४४॥

लाल प्रबाल से ओठ रसाल अमी रस पान को ताप बुझैहैं। श्रीफल से बरजोर कठोर उरोज की कोरन काम जगैहैं ॥ कुन्दन काँति से लोल कपोल अमोलन चूमि के काम बढैहैं। फूलन की परजंक पै पौढि मयंकमुखी कब अंक लगैहैं ॥६४५॥

पीरोइ रूप कियो अपनो मम तीय सरूपहिं याद करावति । काम की लाय लगाय हिये तन ताय कै मोहि बियोग जगावति ॥ कौन लई यह रीति नई बिपरीत मई बिरहीन सतावति । मै डर सों कर सों पर सों नहीं तूं सर सों सर सोंहैं चलावति ॥ ६४६ ॥

वे बँगले पै बिसाल उसीर की चाह भरी टटी चाँप चमोटे । वे चित चाहि चहूँघा चलाकिन चंदमुखी सजनीहँ जमोटे ॥ सालत है सरदार फुहार हजारन बार बिहाल सँजोटे । बैन हरे लहरे वे समीर की बेग हरे गुन तान की चोटे ॥६४७॥

काहू की भूल न भूलत हौ झुकि झूलत हौ परि प्रेम के झूलहि । प्रीति हिये पहिचानत हौ नहिं जानत हौ बिरहा तन सूलहि ॥ मोद भरे मन माहि मलिन्द रहौ अनकूल सुखी सुख मूलहि । को तुम सो कहिये जग में नित सेवत हौ इक सेवती फूलहि ॥ ६४८ ॥

मुख भावन भूखित जाको बिलोकि न चंद की ओर चितैबो भलो । अधरम्मृत पान कै सेवक जाके पियूष सों कौन हितबो भलो ॥ जिहिं लायकै

अंक निसंक दई न परीन को रंक मितैबो भलो। धिक ताके बिना पल कों तजि कै न बियोग मैं बैस बितैबो भलो ॥ ६४९ ॥

निज देह कै सेवक संभु धरी सुभ जानि प्रिया के अराधन तें। उर माँहि रमाई रमा को रमापति जासु की संक अगाधन तें ॥ अरधंगनी बाल कों बेद बद्यो बल पायो नहीं तुव साधन तें। तजि मान मुधा न सुधा तेंहि भेट्यो मर्‍यो जो बियोग की बाधन तें ॥ ६५० ॥

लखि लीजिये साँच न क्यौं मोहि बौरि भई सुनि संक जोरागिनि है। न छुवै जमत्रासनि तें जरिबे के बढै तब आयु अभागिनि है ॥ कछु को कछु गायो पुराननि मैं जो कहौं सोइ बात अदागिनि है। गर बाँधि कै सेवक बूड्यो बियोगी न बारिधि मै बड़वागिनि है ॥ ६५१ ॥

सोवति नौलतिया सपने पिय आइ छुई छतियाँ भय भारी। चौंकि परी चित चेती चितै चहुँ आँसू उसासनि सौं न सम्हारी ॥ कोहै कहा है कहै न कहा भयो यों कहि देव सहेली पुकारी। नीबी दुहूं कर दाबि रही सु गही उठि पायँ पलोटन हारी ॥६५२॥

सोवत मैं सखि जान्यो नहीं वह सोवत तें घर आयो हमारे। पीत पटी लपटी कटि मैं अरु साँवरो सुंदर रूप सँवारे॥ देव अबै लगि आँखिन तें वह बांकी चितौनि टरै नहीं टारे। चोरि लियो चित मो सपने वहिं चोरही मोरपखौवनवारे॥६५३॥

ह्वै सपनो पिय को पिय आय दई कर लाय बनाय बिरी त्यों। चूमतही चख चौंकि चितै चकि सेज तें भूमि मैं घूमि गिरी त्यों॥ देव जू द्वार किवारनहू झझरीन झरोखनि झाँकि फिरी त्यों। दीन ह्वै मीन जरा की भई सु फिरै फरकी पिंजरा की चिरी त्यों॥ ६५४॥

बितान तने जहाँ फूलन के दुति सारद जोन्ह सी जोति अमन्द। प्रिया सपने मैं लखी कबि देव सुजानी भले मिटि है दुखदन्द॥ अति सौंधे सुवास सुगंध सने तबहीं कोऊ कूकि उठ्यो मति-मन्द। खुली अँखियाँ तो न चन्दमुखी न चँदो-वान चाँदनी चंदन चन्द॥ ६५५॥

सोवतही सपनो लख्यो लाडिली घूमत घोर घने बदरान कों। ता समै प्यारे कह्यो ललिता सों बुलाय हहा कै बडे अदरान कों॥ ऐसे में

लाव मिलाव वही जेहिं ओछे उरोज लगे गद-रान कों। यों सुनि चादर मूड तें ओढि सुदंतनिं दाबि रही अधरान कों ॥ ६५६ ॥

साँझ समै रितु साँवन की अबला अतिही अनुराग उचाटी। सोवत स्याम मिले सपने सब जागत रैन कथा कहि काटी ॥ बान कहै जौं बिलास की बेलि की बात सबै मिलि दोउ न ठाटी। चौंकि परे घन के गरजे सु रही गहि अंक प्रजंक की पाटी ॥ ६५७ ॥

बालम आये बिदेस तें रात सनेह भरे गरे लाय लई री। सोय रही हौं लला के लगे हिय काम कला के अनंद मई री ॥ सौंतुक को सपने मे भयो सुख जागतहीं बिपरीत भई री। आवन लौं मन-भावन के अलि ऐसेही नींद दई न दई री ॥६५८॥

सोवत आजु सखी सपने द्विजदेव जू आय मिले बनमाली। जौंलौं उठी मिलिबे कहँ धाय सो हाय भुजान भुजान पैं घाली ॥ बोलि उठे ए पपी गन तौ लगि पीव कहाँ कहि कूर कुचाली। संपत्ति सी सपने की भई मिलिबो ब्रजराज को आज को आली ॥ ६५९ ॥

आवत मे हरि कों सपने लखि नेसुक बाट सकोच न छोडी। आगे ह्वै आडे भये मतिराम चली सुचितै चख लालच ओडी॥ ओठन के रस लेन कों मोहन मेरी गही कर कंपत ठोडी। और भटू न भई कछू बात गई इतनेहीं मे नींद निगोडी॥ ६६० ॥

मोहन आये इहाँ सपने मुसुकात औ खात बिनोद सों बीरो। बैठी हुती परजंक मै हौंहूँ उठी मिलिबे कहँ कै मन धीरो॥ ऐसे मे दास बिसासिनी दासी जगाई डुलाय किवाँर जजीरो। झूठो भयो मिलिबो ब्रजराज को येरी गयो गिरि हाथ को हीरो॥ ६६१ ॥

भेटत ही सपने मै भटू चख चंचल चारु अरे के अरे रहे। त्यों हँसि कै अधरान हू पैं अधरान धरे ते धरे के धरे रहे॥ चौंकी नबीन चकी उझकी मुख स्वेद के बुंद ढरे के ढरे रहे। हाय खुली पलकैं पलमै दिल मै अभिलाख भरे के भरे रहे॥ ६६२ ॥

सपने मै गई सखि देखन हौं सुन्यो नाचत नंद जसोमति को नट। वा मुसिकाइ कै भाव

बताइ के मेरोहि ऐंचि खरो पकऱ्यो पट ॥ तौ लगि गाय भँभाय उठी कबि देव बधून मथ्यो दधि को मट । जागि परी तौन कान्ह कहूँ न कदंब को कुंजन कालिंदी को तट ॥ ६६३ ॥

धाय के अंक मै सोई निसंक सु पंकज सी अँखियान झकाझकी । यों सपने मे मिली अपने पिय प्रेमपने छबि ही की छकाछकी ॥ ठाढे ही ठाढे गही भुज गाढे सु बाढी बधू के हिये मै सकासकी । देव जगी रतियाँ हूँ गई न तिया की गई छतियाँ की धकाधकी ॥ ६६४ ॥

औंचक आनि गह्यो अँचरा त्यों नहीं नहीं जीभ लगी जपने मै । हाथनि सों झिझिकारो कियो परी हौं कछु ऐसी अयानपने मै ॥ वैतौ कितेकौ कियो अनुराग अभाग कहाँ लौं कहौं अपने मै । जाहि बखानतहीं निसि द्यौस सो साँवरो आजु मिल्यो सपने मै ॥ ६६५ ॥

संग सखीन के सोय गई पट दे कर पोढे जँजीरन जोहै । आय गयो कित ह्वैकै कोऊ करि कोटि कलानि दिखाय कै छोहै ॥ सेवक जो बरजोरी करी झकझोरी न सो दुख जात कहो है ।

नैन गये खुलि नींद के साथ गयो भजि एरी न जानिये को है ॥ ६६६ ॥

सोवत नींद मे मोहि मिल्यो छबि कोरि अनंग की सूरति सोहै । अंक लई भरि कै सजनी रस रंग तरंगन सों करि छोहै ॥ जागि परी इतने मे तउ कबि कालिका आँखिन आगे खरो है । पूछन भेद न पायो कछू रजनी गई बीति को जानियै को है ॥ ६६७ ॥

जब तें सुने देखे बसे मन मे तब तें फिरि भेट भई नहीं री । जल हीन सी मीन दुखी अँखियाँ तलफैं दिन रैन बिथा मई री ॥ बिधि सों अबै सोवत हीं सपने मैं गह्यो कर मैं हूँ उठी दई री । मनमानी भई नहीं सेवक सों तजि नैन को नींद किते गई री ॥ ६६८ ॥

राधिका सों कहि आई जो तू सखि साँवरे की मृदु मूरति जैसी । ता छिन तें पदमाकर ताहि सोहात कछू न बिसूरति वैसी ॥ मानहुँ नीर भरी घन की घटा आँखिन मे रही आनि उनैसी । ऐसी भई सुनि कान्ह कथा जो बिलोकहिगी तब होयगी कैसी ॥ ६६९ ॥

हौं लखि आई अरी तबहीं यह साँवरो नंदलला बडभागी। सो बरन्यो नखते सिखलों सुनतै इन की मति यों अनुरागी ॥ सेवक बोलै न खोलै दगै अँग डोलै न ऐसी मसंद मे लागी। पेखन के सब लेखन छोडि निमेखन मूँदि कै देखन लागी ॥ ६७० ॥

साँवरो सुन्दर रूप अनूप रसाल बिसाल बडे बडे नैन री। या बन आवत गैयन लै नित देव देखैयन कों सुखदैन री ॥ मेहूं सुनी सु कहा कहौं लाज की बात कहौं सखि तू कहियैन री। वा जग बंचक देखे बिना दुखियाँ अँखियाँनिन रंचक चैन री ॥ ६७१ ॥

कान्हर की नित संभु कथा सुनि कै इमि कामिनी कौतुक पागी। सोवत जागतहू जो मनै मन मै मनमोहन के रँग रागी ॥ दंत को दाग दियो पिय ध्यान मे ध्यानहीं तें तब सोवत जागी। आपु दिया ढिग आरसी लै अधरा अधरातक देखन लागी ॥ ६७२ ॥

मूरति मोहनी मोहन की लिखि धारी जहाँ सखियाँन की भीरें। बेनीप्रबीन बिलोकति राधिका

चित्र लिखी सी भई तिहिं तीरें ॥ जोरी किसोरी किसोर की रीझ सराहि रही हैं गुवालि गँभीरें। चित्त चितेरी रही चकि सी जकि एक तें ह्वै गई द्वै तसबीरें ॥ ६७३ ॥

नर की रचना मै इतो ढँगु है मन काम की पूरति सी ह्वै गई। कस होयँगो साँचो सरूप जहाँ बिधि की बेसहूरति सी ह्वै गई ॥ यह बात बिचारत सेवक ह्वै हियरे मे कछू रति सी ह्वै गई। लखि राधिका की रंग मूरति कों हरि मूरति मूरति सी ह्वै गई ॥ ६७४ ॥

चित्र के मंदिर तें एक सुंदरी क्यों निकसै जिन्है नेह नसा है। त्यों पद्माकर खोलि रही दृग बोलै न बोल अडोल दसा है ॥ भृङ्गी प्रसंग तें भृङ्गिही होत जुपै जग मै जड कीट महा है। मोहन मित्र को चित्र लखें भई चित्रही सी तौ बिचित्र कहा है ॥ ६७५ ॥

न्यौते गई ब्रषभानलली ललिता के जहाँ पति प्रीति पढी है। भीतमै पीतमै देखि लिखे नवला के हिये नवलाज बढी है ॥ आँखिन भींजि सी अंग पसीजि सी छोभन छीजि सी मोह मढी है।

चौंकी चकी ससकीन सकी चितै मित्र की मूरत चित्त चढी है ॥ ६७६ ॥

केसरिया पट केसर खौर हिये बन्यो गुंज को हार ढुरारो । ठाढे अहो कब के हरिकेस खरे अँगना तुम डीठि न टारो ॥ आपुन को हौ जू जा छबि सों बनि ठाढे बिकाउ से रोकि दुवारो । हौं तौ बिकाउँ जो लेते बनै हँसि बोल तिहारोई मोल हमारो ॥ ६७७ ॥

आनि कढ्यौ यहि गैल भटू ब्रजमंडल मै अमनैकन ओरु है । देखत रीझ रहीं सिगरी मुख माधुरी को कछू नाहिन छोरु है ॥ बेनीप्रबीन बिसाल बिलोचन बाँकीचितौन चलाँकी को जोरु है । साँची कहैं ब्रज की जुबती यह नंदलडैतो बडो चितचोरु ॥ ६७८ ॥

बाँसुरी कुण्डल मोरपखा मधुरी मुसक्यान भरी मुख हैये । बेनी पितंबर हार हरो भरो रूप समुद्र को पारु ना पैये ॥ जाय अजान लखै सो लखै हम जानि कै वाहि कितीक बरैये । वा दिन हेरि दियो मनि मानिक दैहैं कहा फिरि हेरि कन्हैये ॥६७९॥

गुच्छन के अवतंस लसैं सिर पच्छनि अच्छ

किरीट बनायो । पल्लव लाल समेत छरी करपल्लव सो मतिराम सुहायो ॥ गुंजन को उर मंजुलहार निकुंजन तें कढि बाहिर आयो । आज को रूप लखें ब्रजराज को आजुही आँखिन को फल पायो ॥६८०॥

देखि सराहैं सबै मुखखोल अमोल महा छबि सी उलही है । बेनीप्रबीन जू पूरन पुन्य तें ऐसी तिया तब तो सु लही है ॥ कौन गनै नर भेवन की बरु ऐसी न देवन के कुलही है । जैसो हुतो घनस्याम हो दूलह तैसियै राधा मिली दुलही है ॥ ६८१ ॥

एडिन जोति जगै कहँ ईंगुर तामै लगैन नगै औ चुनीना । बेनीप्रबीन सबै तन की सुठि सुन्द-रता सकै सेस गुनीना ॥ का कुरविंद मरिंद सो इन्दु प्रभा मुख ओठ समान दुनीना । ऐसी लही दुलही है लला तुम ऐसी तो काहू की देखी सुनीना ॥ ६८२ ॥

ब्याह के द्यौसही तें दिनहीं दिन प्रेम दुहूं के हिये सरसात हैं । गौनो भयो भये दोऊ निहाल दुहूं कों दुहूंन के बैन सुहात हैं ॥ बैठक एकही ठौर किये सु दुहूं कों दुहूं छिन छोडे न जात हैं।

रातौ दिना दोऊ देखैं दुहूं पै तऊ न दुहूंन के नैन अघात हैं ॥ ६८३ ॥

मंडपहीं मै फिरै मेडरात न जात कहूं लखि नेह को औनो । त्यों पदमाकर तोहि सराहत बात चलै जो कहूं कछु कौनो ॥ ए बडभागिनि तोसी तुही बलि जो लखिं रावरो रूप सलौनो । ब्याह हीतें भए नाह लटू तब ह्वैहै कहा जब होयगो गौनो ॥ ६८४ ॥

तन को तनको उघरे पट औंचक संभु कछू परो पावत से । दिनमे हूं लगेई पगेई रहैं भरे नैन कुहूलों जगावत से ॥ वह लाडिली लाजन जात गडी ये रहैं अँखियानि गडावत से । बरु गौनो ले आए लला जब तें तबतें रहैं सोनो गढावत से ॥ ६८५ ॥

आसन एक पै आँनद सों पियैं आपुस मै रस रूप बिलास को । मै रघुनाथ गई तिहिं औसर डाल लिये कर फूल की माल को ॥ रीझ रही दुति देख दुहूं की औ कौतुक एक भटू इहिं हाल को । अंग के रंग तें अंग को रंग भो गोरी को सॉवरो गोरी गोपाल को ॥ ६८६ ॥

पांव धरे दुलही जिहि ठौर रहै मतिराम तहां दृग दीने। छोर्‌यो सखान के साथ को खेलिबो बैठि रहे घरही रस भीने॥ सांझहि तें ललकैं मनही मन लालन यों रस सों बस कीने। लोनी सलोनी के अंगन माह सु गौने की चूनरी टोने से कीने॥ ६८७॥

लैकर कॉंगही लाय फुलेल गुहैं गुन लाल सों बेनी बनावत। दै उरजेब जवाहिर की चुनि चोप सों चूंदरी लै पहिरावत॥ देखी हैं और सोहागिनि केतिकौ भाग की बात कही नहीं आवत। राखति जा मग राधिका पाँयँ तहाँ हरि आगे है फूल बिछावत॥ ६८८॥

केहूं नहीं बिसरै निसिबासर मंद हँसी मुखचंद उज्यारी। त्यों ही दिपै अति नेह सों देह की दीप कली सम दीपति न्यारी॥ तेरियै जोति जगै हिय भीतर आवत और न राति अँध्यारी। नैननहूं अरु बैननहूं तनहूं मनहूं कों तुही अति प्यारी॥ ६८९॥

एकही सेज पै सोवत हैं पदमाकर दोऊ महा सुख साने। सापने मै तिय मान कियो यह देखि

पिया अलिही अकुलाने ॥ जागि परे पै तऊ यह जानत पौढि रही हम सों रिस ठाने । प्रानपियारी के पाँपरि कै करि सोंह गरे की गरे लपटाने ॥६९०॥

नारि पराई तें बोलिबो को कहै क्योंहूं न काहू को भूलहू हेरे । मेरो लखै मन वेई औ मैंहूं लियो उन को लिखि चित्र हियेरे ॥ बांधि सकै उन को मन को बंध्यो रैन दिना रहै मेरई नेरे । लेस नहीं उन मे अपराध को मान की हौंसे रही मन मेरे ॥ ६९१ ॥

डोलत हैं इक संग खरे इक संगही बोलत हैं मन भायक । दूसरी बात न जानत ए निसबासर संग रहैं सुख दायक ॥ कौन समान करै इन की गति ये इनहीं को सदा खग नायक । देखि परे खग राजन मे इक सारस सांचे सिपारस लायक ॥६९२॥

मनमोहन के गरे हार चमेली को बालन बेलिन सो चितयो । कवि बेनी सुगंध सरूप भरो सबहीन को प्रान लटू ह्वै गयो ॥ एक बार कह्यो सबही मिलि देहु जू नेंह नयो हरि ब्यौंत ठयो । चहुँ ओर की झोरि मे झारि पितंबर डोर हूं कर तोर दयो ॥ ६९३ ॥

साँझ समै ललना मिलि आई खरो जहाँ नन्द-लला अलबेलो। खेलन कों निसि चाँदनी माँह बनै न मतो मतिराम सुहेलो॥ आपनी आपनी पौरि बताय कै बोलि कह्यौ सिगरीन नवेलो। त्यौं हँसि कै व्रजराज कह्यो अब आज हमारिही पौरि मैं खेलो॥ ६९४॥

सुर सुच्छ उचार बिचार महाहित पावन पालन पूरन के। सरदार उठे तन रोमति से जल जोग भए रति पूरन के॥ चित चाह भरे चमकै अति से रन काज जिसे सुचि सूरन के। परखे घन के मन को करखें हरखे गन मंजु मयूरन के॥६९५॥

वहि अंतर गूढ अगूढ निरंतर काम कला कहि कोन गने। कहि केशव हास विलास सबै प्रति द्योस बढे रस रीत सने॥ जिन को जिय मेरेई जीव जिये सखि काइ मनो वच प्रेम घने। तिन को कहे आन वधू के अधीन सुसा परतीत कियो सपने॥ ६९६॥

ठानै मजा अपने मन को डर आनै न रोसहू दोस दिये को। त्यौं पदमाकर जोबन के मद पै मद है मद पान पिये को॥ राति कहूं रमि आयो घरे डर

मानै नहीं अपराध किये को। गारि दै मारि दै ठराति भाँवती माँवतो होत है हार हिये को ॥६९७॥

मार्यो है फूल की मालन सों कर बाँधि के त्यों फिरि चौगुने चाइन। सुंदर वासों कितो खिझिये न तजे तऊ आपने सील सुभाइ न ॥ बाहिरे काढि दियो दै कपाट हों पौढि रही पटतानि गुसाँइन। जो पल मे पल खोलि कै देखों तो पाँय तें बैठ्यो पलोटत पाँइन ॥ ६९८ ॥

काढि दिये घर तें त्यों घरीही मे पाँयन देखे परे हहाखात हैं। फूल की माल सों बाँधे तऊ मुसक्याय तकैं तन को न सकात हैं ॥ बातन तें डरपैये कहा झकझोरतहू न अरी अरसात हैं। लाज को लेस नहीं मन मे नित मारेहू जात तऊ न लजात हैं ॥ ६९९ ॥

अरुनाई दुवो द्रिग मे भरि के घर आवत हाइ चितैबो करो। सरदार अमोलन बोलन ते रुख राखत रूखी बतैवो करो ॥ करजोरि निहोरत प्रान-प्रिया पर के बरनामन लैबोकरो। रिसहाइ नसीबन के ठनके धन रैवोकरो मन लैबोकरो ॥ ७०० ॥

रुचि पंकज चंदन कंचन चंपक रंचन रोवनहू

की रची । कहिये केहि कारन को इते लाइक कापर भामिन भौह नची ॥ अनुमानत हो अँखिया लखि लाल ए नाहिने राति के रोस रची ॥ तन तेरो बियोग तप्यो तरुनी नहि मानहु मो हिय माह नची ॥ ७०१ ॥

ऋतुराज के आगम लोग सबै सु गुनै गरुवे बड भागन में । इन के मत लै के मलिन्द सदा नित आय के गुंजत आंगन में ॥ जिन के सुचि सुन्दर बोल सुने मन होहि नहीं अनुरागन में । कत कोकिल कूर किये बिधना सखि बोले सदा बन बागन में ॥ ७०२ ॥

करि कंद कों मंद दुचंद भई फिर दाखन के उर दागती हैं । पदमाकर स्वाद सुधा तें सिरे मधु तें महा माधुरी जागती हैं ॥ गिनती कहा एरी अनारन की ए अँगूरन तें अति पागती हैं । तुम बातें न सीठी कहो रिस मे मिसरी तें मिठी हमे लागती हैं ॥ ७०३ ॥

पाप पुराकृत को प्रगट्यो बिछुर्‌यो तेहिं राति भयो सुख घात है । जीवन मेरो अधीन है तेरेहि जीवन मीन कों कौन सी बात है ॥ तोख हिये

भरु मैन व्यथा हरु नातो प्रिया मन मे पछितात है । जो तुम ठानती मान अयान तो प्रान पयान किये अब जात है ॥ ७०४ ॥

बेनी गुही लर मोतिन की भरी ईंगुर माग सनेहनि भोरी । हार मनोहर ही पहिराय रचे कर कंकन जेवर जोरी ॥ या विधि रीति सों प्रीति बढाय बढाय प्रतीति धरी चित चोरी । धारतही रसना कटि बीच मुदी फुफुंदी की फुँदी गहि छोरी ॥ ७०५ ॥

परजंक परी निरसंक कहू भरि अंकन आप सकेलती हो । तिरछी तकि मेन मई बरछी करछी कर ठीक न ठेलती हो ॥ सरदार सु लालई लोद लिये उर औरन के उर मेलती हो । नख तीन बिचार करो बखती झखती अखती नित खेलती हो ॥ ७०६ ॥

लखि संकर घाघरो घेरि घरीक लों घूंमि के घूंघुर घेरो फिरै । तर नाभि रोमावली पैं चढि कै कुचसृंग के बीच दरेरो फिरै ॥ चलिगो मुख चाड मे ठोढी कि गाड मे बूडि सुधारस हेरो फिरै । लटको नव बेसरि झूलै जहाँ अटको मन मेरो न फेरो फिरै ॥ ७०७ ॥

लोक की संक ससंकित लोचन वे दुखमोचन कोरन ढारिबो। किंकिनी की धुनि धीर सुनै अन-धीर ह्वै हाथन ताहि सुधारिबो ॥ नूपुर के घुंघुं-रून की घोरन होरनि मै चित की गति पारिबो। है जगजीवन को फल जीवन ऐसी नवेली को नित्त बिहारिबो ॥ ७०८ ॥

गति मेरी यही निसिवासर है नित तेरी गलीन को गाहिबो है। चित्त कीन्हो कठोर कहा इतनो प्रिया तोहि नहीं यह चाहिबो है ॥ कहि ठाकुर नेकु नहीं दरसो कपटीन को काह सराहिबो है। मन भावै तिहारे सोइ करिये हमै नेह को नातो निबाहिबो है ॥ ७०९ ॥

भौंर भयो भरमै मद अंध सुगंध झकोरन की झकझोर मै। मानो सुधा के समुद्र पर्‌यो अँक-वार समै सिसकीन के सोर मै ॥ भूलि रह्यो लखि भौंह के भाय रह्यो ठहराय उरोज के ठौर मै। बारवधू के बिलास बँध्यो सु कहो मन कैसे लगै तिय और मै ॥ ७१० ॥

कुन्दन सो तन चंद सों आनन कानन मै मुकतान की बारी। देखत आरसी पान न खात

भुजा मनो सुन्दर ढार तें ढारी ॥ पैंठी सी आँख अमेठी सी भौंहनि पैने कटाच्छ लटैं सटकारी । बारबधू यों बिलोकत प्यारे जु देन कों मोती की माल उतारी ॥ ७११ ॥

छोरतही जु छरा के छिनौ छिन छाए तरंग उमंग अदा के । त्यौं पद्माकर जे खिसकीन के सोर घने मुख मोरि मजा के ॥ दे धन धाम धनी अब ते मनहीं मन मानि समान सुधा के । बार-बिलासिनी ती के जपै अखरा अखरा नखरा अखरा के ॥ ७१२ ॥

निज बाल मे सेवक सूधियै चाल न ख्याल यों मीनधजा के करै । परनारि सों कौन रहै मनमारि चुके परसंग सजा के करै ॥ गनिका धनि हैं जो नचैं रचैं राग बिहाग में रंग रजा के करै । जुत हावन भावन तें अँग अँग तरंग अनंग मजा के करै ॥ ७१३ ॥

कानन तान तरंगन में रम होय गए सब भाति अयाने । जा उर पै दृग बानन के न लगे रुचि राखन हेत निसाने ॥ औ सरदार सुने सिसिकी रति में बिन मोल न आप बिकाने । क्यों

करतार किये तिन को जिन बारबधू के बिलास न जाने ॥ ७१४ ॥

साँझ गए उठि आवत भोरहौ जानति हौं तुमहूं भए भान हौ। जाहि ब्यथा सो कह्योई चहै तुम देत नहीं इन बातन कान हौ ॥ रूठि कै पीठि दै बैठि रहे हिय वाके जगावत कोप क्रिसान हौ। चाहिये वाहि की मान करै उलटे तुमहीं अब ठानत मान हौ ॥ ७१५ ॥

दीजिये दोस कहा कहि कै वह जाय परी पहिले कर चींठी। ही जो लिखी उन लोयन की मसि लागति लाल तुम्है वह सीठी ॥ औ उलटे तुमही पुनि रूठत कान करैं कहिं भाँति बसीठी। जा उर पित्तप्रकोप भयो मुख लागत दाख दिनेस ना मीठी ॥ ७१६ ॥

रोष रच्यो तिय दोष तिहारेई प्यारे करो रस राखि परेखो। पाँयनहू परि प्यारी मनाइये प्रीति की रीति है बंक बिसेखो ॥ नेक तिहारे निहारे बिना कलपै जिय क्यों पल धीरज लेखो। नीरज-नैनी के नीर भरे किन नीरद से दृग नीरज देखो ॥ ७१७ ॥

बाल बिहाल परी कब की दबकी यह प्रीति की-रीति निहारो। त्यों पदमाकर है न तुम्हैं सुधि बैरी बसंत जो कीन्ह बगारो॥ तातें मिलो मन भौंवती सों चलि ह्यांतें हहा बच मान हमारो। कोकिल की कलबानि सुने पुनि मान रहैगो न कान्ह तिहारो॥ ७१८॥

बातहि बात दै पीठि पिया पटिया लगि मान जनावन लाग्यो। ज्यौं ज्यौं करै मनुहारि तिया रुख तोख सु त्यौं त्यौं रुखावन लाग्यो॥ चूकपरी सो परी बकसो यह प्रान है रावरे पांयन लाग्यो। लीजिये मोहि उठाय हिये बिच भांवन जोर जडावन लाग्यो॥ ७१९॥

कोमल कंजन की कलिका अलि काहे न चित तहां तू लगायो। मंजरी मंजु रसालन की तिनको रस क्यों नाहिं तो मन भायो॥ फूली सु औरै अनेक लता हरिदास जू पायो बसंत सुहायो। छोड गुलाबन के बन तू कटसैरुवा पै किहि कारन आयो॥ ७२०॥

केघरो केतकी औ करना नव कंज पराग के रस की है। खूझो गुलाब नेवारी जुही अरु बेला

सुबास दिना दस की है ॥ चंदन चूर मृगम्मद धूर कपूर की पांडरी के खस की है। माथुर प्यारे सुगंधन में सब तें खूसबू ये सिरे जस की है ॥७२१॥

सोर मचे अति मोरन के सब ओरन झींगुर झांपत झांजें। झूकन सीर समीरन की ततबीरन कामकला कल काजें ॥ यों सरदार सजी सरिता सुख सिंधु सम्हारन हेतु समाजें। ए घनस्याम घटान के ऊपर देखो न छूटी छटा छबि छाजें ॥ ७२२ ॥

दाऊ न नंदबबा न जसोमति न्यौते गए कहूं लै संग भारी। हौंहूं इतै पदमाकर पौरि मै सूनीपरी बखरी निसिकारी॥ देखै न क्यों कढि तेरे सुखेत मै धाय गई छुटि गाय हमारी। ग्वाल सों बोलि गुपाल कह्यौ सो गुवालिनि पैं मनो मूठि सी डारी ॥ ७२३ ॥

आए न आज लो नंदबवा बल बीरन जानत जो कसरी है। गायन गोठ गये सिगरे सु निहान सुजान भई रसरी है ॥ तोहि गुआलिन साख लिए सरदार बोलावत जो जसरी है। हेर हमाई मंडफ ऊपर बेलि परोसिन की पसरी है ॥७२४॥

उठि भोरहीं आवती हौ तित ह्वै जित घौसहू मै तमछाय रह्यो । संग काहू तो लेहु लगाय अहो कहिये कहा मानती हौ न कह्यो ।। कहौ को सुनि लैहै पुकारिबो काहू अचानक जो ठग आय गह्यो । तुम सूने तमाल की कुंज की गैल अकेलिही बेचन जांत दह्यो ॥ ७२५ ॥

देखे बिना वृषभानदुलारि कों भावै हरी कों घरीकु घरौना । काम चढे कबिराज कछू व्रजराज समाज मे आए डरौना ॥ राधे बिलोकि सखीन मै स्याम सुभौंहनि मै कहि ऐसी करौना । प्यारे गही बनमाल गरें तर प्यारी गह्यौ कर कान तर्‍यौना ॥ ७२६ ॥

एक समै दिन माझ अलीन मै सुन्दर बैठी ही राधिका रानी । आए तहां पिय सैन दई चलि प्यारी चितौनि मै चातुरी ठानी ॥ तेह असेत कटाच्छ करे तिन मै सम जोन्ह की भांति है आनी । जानि गए हरि औधि बताई है नैननहीं मे निसा की निसानी ॥ ७२७ ॥

बैठीहुती गुरु लोगनि मै तहां संग सखी लिये स्याम सिधार्‍यो । अंगही अंग अनंग तरंग तरंग

ही मै एक रंग बिचार्‍यौ ॥ तोरि लयो करतें कर श्रीफल या मृगलोचनी आगे उछार्‍यो । फूल्यो सरोज सरोजमुखी मलिका करकै कलिका करि डार्‍यो ॥ ७२८ ॥

नँदलाल गए तितहीं चलिकै जित खेलति बाल सखी गन मै । तहां आपुही मूँदे सलोनी के लोचन चोर मिहींचनी खेलन मै ॥ दुरिबे कों गई सिगरी सखियां मतिराम कहै इतने छनमै । मुसुकाय के राधिकै कंठ लगाय छप्यो कहूं जाय निकुंजन मे ॥ ७२९ ॥

इत नाइन की घरहाइन ह्वैके लोगाइन मै चलि जायो करैं । उबटैं कसि अंग अनंग सों सेवक तेल फुलेल लगायो करैं ॥ कहूं औसर पाय लजीलिन कों रतिरंग के संग सतायो करैं । हरि ऐसे अनोखे नए रसिया मन भायो करैं बचि आयो करैं ॥ ७३० ॥

होरी के औसर गोरी सबै मिलि दोरीं लखै जब कान्हर आयो । ह्यां इन में निज भावती देख भयो मनभावन को मन भायो ॥ हाथ पसारे न सूझ परे तहं यों कछु लाल गुलालउड़ायो । बाहन

उडायो । बाहन बांधि हिये लगि के हरि राधिका के मुख सो मुख छ्वायो ॥ ७३१ ॥

केसरिया पट केसर खौर हिये बन्यो गुंज को हार ढुरारो । ठाढे अहो कबके हरिकेस खरे अंगना तुम डीठि न ढारो ॥ आपुन को हो जू जा छबि सों बनि ठाढे बिकाउ से रोकि दुवारो । हौंतो बिकाउं जो लेते बनै हंसि बोल तिहारोई मोल हमारो ॥ ७३२ ॥

नवला को बिलोकि रहै मुख चंद बन्यो जो बिभूषन सों भलहै । कर कंज कमाल सनाल दोऊ सों चप्यो भुजमूलन को तल है ॥ कुच तुंग सों बेध सहै उर को सुनै माधुरे बैननि को छल है । नबिराम गहै पल सेवकराम इतो जगजीवन को फलहै ॥ ७३३ ॥

गुरुलोगन की लगी त्रास घनी सँगहीमे चवाइन को गनहै । इत मैन सों चैन मिलै न घरी बल सैन के प्रान गहे तन है ॥ कछु सेवक कासों कहा कहिये कहा कीजिये भो जुग ज्यों छन है । मिलिबे की नहीं बनि आवति रामभयो चहै बावरो सो मन है ॥ ७३४ ॥

जुरि दीठि चलै तो यही सों रमै हमै इठ करै तो यही हिय सों। कहि सेवक बोल्यो चहै तो यही हम बोलैं कछू तो नहीं बिय सों ॥ जिय-जैयो जोपै तो यही मै रह्यो विधि द्वैयो जोपै तो यही जिय सों। मम अंक लगै तो यही तिय राम कलंक लगै तो यही तिय सों ॥ ७३५ ॥

हम को कित कैसे कहाँ न लखैं नित ऐसी व्यथा जिय जागती हैं। न गनाय गुनाय मनाय जनाय बनाय वही रँग रागती हैं। कस कैं न सकैं कढि कैसेहूं सेवक सोंहँन पैं दिल दागती हैं। परतीन की सैन सुधा सों भरी बरछीन तें सौगुनी लागती हैं ॥ ७३६ ॥

छपि कै छपा माँहि सहेट में जा अधरा रस लोनो लयो जो नहीं। जिनके लखि हावन भावन कों न लखें बिरहा सों छयो जो नहीं ॥ रिसि मै लखि कै हनुमान कहे परिपाँवँन पैं बिनयो जो नहीं। पन तीन मै कौन कियो सुख सो परतीन मै लीन भयो जो नहीं ॥ ७३७ ॥

जिनके मुख इंदु बिलोकन कों दिन रैन गलीन मै फेरो कियो। जिन के लियें पावन पैं परिकैं

सखी दूतिन को रुख हेरो कियो ॥ हनुमान दियो सुख तौ सिगरो परकीयन को जुपै चेरो कियो। बिधि की बिपरीत कहौं मै कहा अपनो दिन हाय न मेरो कियो ॥ ७३८ ॥

बानी मे बीन की बान सबै पगपान मनो मति बारिज गोती। ऐसी लगी सबिलासन में रतिहूँ मे न रूप की रामन ओती ॥ आइ करी दिन मे जेहि जो न कहै हरिनाम अरी वह कोती। बार बडे बडे नैननि राजत राजत नाक बडे बडे मोती ॥ ७३९ ॥

पूख की ऊख हि दूखन सो लगो सोतो पयूष के सिंधु भरी सी। लोइन सोइन होड करी सुतो खंजन की छवि छीन लई सी ॥ झाँकी मे झाँकी किवारी को खोलि चतुर्भुज है रति जाकी सखी सी। चित्त बसी मनमोहनी सी निकसी करसी सरसीरुह कैसी ॥ ७४० ॥

चूनरि चार चुई सी परै चटकीली नई अँगिया छबि छावै। जोबन भार सों जात नई उनई खिरकी मे नई छबि छावै ॥ ऊंचे अटा चढि चंद-मुखी कबि संभु कहै इम पीक चलावै। दै बिधि

सो बिध बीच मनो बिधना रँगरेज कुसुभ चुवावै ॥ ७४१ ॥

बैनन सैनन मैन मई अति कोककला रति सो दरसी सी। लोयन लोल अमोल अडोल बसी रहे भौंह कपोल कसी सी ॥ केहर जोहत ही मन मोहत सोहत हेमलता बिकसी सी। झाँकि झरोखा रही जो अटा सु घटा फट चंद छटा निकसी सी ॥ ७४२ ॥

आछे किये कुच कंचुकी मे घट मे नट कैसें बटा करिबे कों। मो दृग दूपैं किये पदुमाकर तो दृग छूटि छटा करिबे कों ॥ कीजे कहा बिधि की बिधि कों दियो दाव न लोट पटा करिबे कों। मेरो हियो कटिबे कों कियो तिय तेरे कटाच्छ कटा करिबे कों ॥ ७४३ ॥

जाइ न जंत्र तें मंत्र तें मूरि तें जाति कहीं नहीं होत तथा है। सूख्यो करै तन भूल्यो फिरै मन देखि कहैं जन बौरो जथा है ॥ हाय दई जनि काहू के होय कहै रघुनाथ भयेंही मथा है। बूझै कहा अनबूझी भली यह प्रेम ब्यथा की कथा अकथा है ॥ ७४४ ॥

गति मेरी यही निसिबासर है नित तेरी गलीन कों गाहिबो है। चित कीन्हो कठोर कहा इतनो अब तोहि नहीं यह चाहिबो है॥ कबि ठाकुर नेकु नहीं दरसै कपटीन कों काह सराहिबो है। मन भावै तिहारे सोई करियै हमै नेह को नातो निबाहिबो है॥ ७४५॥

यह प्रेम कथा कहिबे की नहीं कहिबेई करो कोउ मानत है। पुनि उपरी धीर धरायो चहै तन रोग नहीं पहिचानत है॥ कबि ठाकुर जाहि लगी कसकै नहीं सो कसकै उर आनत है। बिन आपने पाँय बेवाई गए कोउ पीर पराई का जानत है॥ ७४६॥

वा निरमोहिनी रूप की रासि जो ऊपर के उर आनति ह्वैहै। बारहूँ बार बिलोकि घरी घरी सूरति तो पहिचानति ह्वैहै॥ ठाकुर या मन की परतीति है जोपै सनेह न मानति ह्वैहै। आवत हैं नित मेरे लिए इतनो तौ बिसेखहू जानति ह्वैहै॥ ७४७॥

लगी अंदर की करै बाहिर कौ बिन जाहिर का कोउ मानत है। सुख औ दुख हानि बा

लाभ जिती घर की कोउ बाहिर भानत है। कबि ठाकुर आपनी चातुरी सों सबही सब भाँति बखानत है। पर बीर मिले बिछुरे की व्यथा मिलि कै बिछुरे सोई जानत है ॥ ७४८ ॥

कौन से केलि के मंदिर तें उसनीदे भरे उठि जात प्रभाते। हैं अदले बदले पट भूषन दोऊ सराहत सोंहँ सिहाते ॥ ठाकुर तें हती ताखिन ता थल मोहि बताव भटू चरचाते। गोकुल गैल मे आँनद फैल मे गोपी गोपाल बतात कहाते ॥७४९॥

एकही सों चित चाहिये ओर लों बीच दगा को परै नहीं डाँको। मानिक सो मन बेंचि दयो अब फेरि कहा परखाइबो ताको ॥ ठाकुर काम नहीं उनको यहाँ लाखन में परबीन है जाको। प्रीति किए में कछू न लगै करि कै एक ओर निबाहिवो बाँको ॥ ७५० ॥

बिन आदर पाय कै बैठि ढिगाँ अपनो रुख दै रुख लीजतु हैं। अपमान औ मान परेखो कहा अपनी मति में चित दीजतु हैं ॥ कबि ठाकुर काम निकारिबे के लिएँ कोटि उपाय करीजतु हैं। अपने उरझे सुरझाइबे कों सबही की खुसामद कीजतु हैं ॥ ७५१ ॥

पिय मोहन को वह मोहनी रूप निहारे बिना नहिं जीजतु है । तिहि तें जु लटी भली या जग में सिख मानि सबै सुनि लीजतु है ॥ कहि ठाकुर लाल के देखिबे के लियें ज्वाबन काहु वै दीजतु है । सखि का कहिये अपने अरुझें सबही की खुसामद कीजतु है ॥ ७५२ ॥

दिल साँचो लगै जिहि को जिहिं सों तिहिं कों तितकों पहुंचावतु है। बलि हंस चुनै मुकताहल कों अरु चातक स्वाति कों पावतु है ॥ कबि ठाकुर यों निज भेद सुनो अरुझावत सो सरुझावतु है । परमेश्वर की परतीति यही मिलो चाहिये ताहि मिलावतु है ॥ ७५३ ॥

सुनि कै धुनि चाह भई हिय में तहां जैये कछू सुख पावने री । ढिग जाय सबै समुझी उन की कहूं ताल कहूं सुर गावने री ॥ कबि ठाकुर कूर समाज जहाँ तिनतें कहा नेह लगावने री । चलि देखि भटू हों वृथा अटकी सुने दूर के ढोल सोहाबने री ॥ ७५४ ॥

इतै राखी चहैं कुल की कुलकानि उतै नँदनंदने ध्यावती हैं । निज गैल मे आनि कढै जो

कहूँ न झरोखन झाँकन पावती हैं ॥ कवि ठाकुर है न बनाव कछू दुविधा मिलि साँच सचावती हैं। चहैं आसिकी औ डरमामन को कहो द्वै द्वै कहाँ बनि आवती हैं ॥ ७५५ ॥

कैसे सुचित्त भए निकसो दै हँसो बिलसो सब सों गलबाँहीं। वे छल छिद्रम के छलता छलि ताकती हैं सब की परछाँहीं ॥ ठाकुर सो मिलि एक भईं रचिहैं परपंच कछू ब्रजमाँहीं। हाल चवाइन को दहचाल सो लाल तुम्हैं है दिखात की नाहीं ॥ ७५६ ॥

कहिबे सुनिबे की कछू न इहाँ न लटी भली को दुख पावनो है। उनकी तौ सबै मरजी करि कै अपने मन कों समुझावनो है ॥ कवि ठाकुर काम निकासिबे कों अब मंत्र यही ठहरावनो है। इन चौचँद हाइन मे परिकै समयो यह बीर बरावनो है ॥ ७५७ ॥

कहिबे की वृथा सुनिबे की हँसी को दया करिकै उर आनत है। उर पीर बडी तजि धीर सखी कहि को नहिं कासों बखानत है ॥ कबि बोधा कहे मे सवाद कहा को हमारी कही पुनि

मानत है। हमै पूरी लगी की अधूरी लगी यह जीव हमारोई जानत है॥ ७५८॥

अबहीं मिलिबो अबहीं मिलिबो यह धीरजही मे धिरैबो करै। उर तें उठि आवे गरे तें फिरै चित की चितही मे थिरैबो करै॥ कबि बोधा न चाँड सऱ्यो कतहूं नितहीं हर बासी हरैबो करै। सहतेही बनै कहते न बनै मनहीं मन पीर पिरैबो करै॥ ७५९॥

आवत है इतै बोले बिना सो तज्यो हम कों उतै जैबे परो। गुन रावरे के बलदेव जिते प्रन कै अब सो सब गैबे परो॥ गति देखि के हाल न जानो कछू तजि लाज समाज बतैबे परो। सहजै न प्रतीति परैगी तुम्है अब काढि करेजो दिखैबे परो॥ ७६०॥

तन तें मन तें रमिकै अनतै हमै बातन हीं बहराइये जू। तरसैं अखियाँ दरसे बिन ए इन्है रूप सुधारस प्याइये जू॥ कबि नौनिधि कीबे जो ऐसिही तौ कहा लौन जरे पै लगाइये जू। कबहूँ तौ हमारे गरे लगि कै यह ताप हियें की बुझाइये जू॥ ७६१॥

यह प्रीति की बेलि लगाई जुहै तेहिं सींचि भले सरसाइये जू। नित साँझ सकारे कृपा करि कै पग धारि सुधा बरसाइये जू॥ कबि कालिका यों करजोरि कहै मति देखिबे कों तरसाइये जू। इन आँखैं हमारी कुमोदिनी कों मुख इंदु लला दरसाइये जू॥ ७६२॥

पहिले सुखदैन करी बतियाँ बहकाय वृथा मन मेरो ठगा। करजोरि कहौं नहिं जोर कछू चित चोरि कै प्यारे न दीजे दगा॥ तुलसी निज बोल की याद करो सुनु लाल मनोज की दाह भगा। अपनो करिकै कर छोरिये ना जनि तोरिये नेह को काँचो तगा॥ ७६३॥

पठवाय संदेस हमेस हमै सु लियो अपने रँग मै उमगा। बिसवास दै कीजै निरास कहा चरचा यह पाई सगा असगा॥ कुलटा कुल लोग्र लगे कहिबे नहीं अंक लगी औ कलंक लगा। तुलसी तुमहीं चित चेत करो जनि तोरिये नेह को काँचो तगा॥ ७६४॥

गुन रूप कहा हम माँहि रह्यो जिहिं के बस है हठि प्रीति पगा। अब नून कहा सु कह्यो

सरूपा किमि चित्त कों लीन्ही उँदासी लगा ॥ तुलसी जू प्रबीन कहावत हौ मम प्यारे तौ ज्वाव की राखो जगा । मनभौंवते भौंवती बाल चलो जनि तोरिये नेह को काँचो तगा ॥७६५॥

मो जुग नैन चकोरन कों यह रावरो रूप सुधाही को नैबो । कीजै कहा कुलकानि तें आनि पर्‍यो अब आपनो प्रेम छिपैबो ॥ कुंजन में मतिराम कहूं निसद्यौस हूँ घात परें मिलि जैबो । लाल सयानी अलीन के बीच निवारिए ह्यां की गलीन को ऐबो ॥ ७६६ ॥

अजू नंद के नंदन सोंहं किए कहौं मैनन रावरी हौस रहे । सँग छाँहँ ज्यों सासु फिरै अनखौंनि जिठानी ढुकाढुकी सौसर है ॥ कबि नाथ जू जानत हौ हिय में बय बीति गए कहा मौस रहे । पर कीजै कहा यह गाँव के लोग गुहैं चरचान को चौसर है ॥ ७६७ ॥

हौंहूँ समै लखि के उत आय कह्यो करिहौं सब रावरे जीको । बारहींबार न ऐयै इतै यह मेरो कछू है परोस न नीको ॥ चाह भरे घसि कुंकुम लावत हार बनावत मौलसिरी को । कोऊ

कहूँ यह जानि जो आय तौ होय कला मोहि कील को टीको ॥ ७६८ ॥

सिव ठौर कुठौर कछू न गनो जितहीं तितहीं हँसि बोलत हौ। हम घात परे मिलिजैबो कहूँ यह प्रेम दुरो कत खोलत हौ ॥ चरचोई करैं चहुंओरन तें न चवाँइन के चित तौलत हौ। हरि नाहीं भली यह बात करो परछाहीं भए संग डोलत हौ ॥ ७६९ ॥

मोलिये मोहन जेठ की धूप मै आए उबाने परे पग छाले। बेनी खरे मगद्वार बिलोकत बैठे न सोए चलेऊ न हाले ॥ कीजै कहा हरि हाय बलायल्यों जारिबे जोग हमारेई ताले! देखतहौ घर कौन बचे घर को न गए घरहाइँनि घाले ॥७७०॥

ताकि त्रिषारत मो मन कों नवनेह पयोनिधि के लसिबे है। चाह भरे चख चंचल ये इनकी नित दीनदसा नसिबे है। सेखर लोग चवैयन की चरचा चित दै न कहूं फँसिबे हैं॥ मीत न जाहिर प्रीति करो ब्रज गाँव गँवारन में बसिबे हैं ॥ ७७१ ॥

आय अपीत पछीत के जो मिल ठेरत मोहि

सनेह की कूकन । जानत हैं की न जामत कौऊ अरैं नर मारि सरोस भभूकन । ठाकुर की बिनती इतनी अरी तू कहियो यह बात अचूकन । देखि उन्हें न दिखात कछू ब्रज पूरि रह्यो चहुं ओर चहूकन ॥ ७७२ ॥

चौचँदहाँई लगीं चहूंओर लख्यो करैं नैननिमें ओर तुम्हारे । ऐसे सुभायन सों निरखो कि उन्हें लगो रूखे हमै रसवारे ॥ कीजियै कैसी दई निदई न दई है दई कर मीत हमारे। देखे बिनाहूं रह्यो नहीं जात कह्यो नहीं जात न आइ-ये प्यारे ॥ ७७३ ॥

मंदिर मंदिर चोजनवारी सरोजमुखी लसें रूप नवीनो । गावती तामनि काम बिधानमिं पानन दै रिझवै परवीनो ॥ हासबिलास हुलास हरें चितबास निबास सुगंध नवीनो । जानों न प्रीतम प्यारे मे काहे तें आपनो हीरा री मोंकर दीनो ॥ ७७४ ॥

आपुही पान खवावति आय सहेली न आवन पावति नेरे । भूषन अंबर ल्यावत आप रहैं पहिरावन को मुख हेरे ॥ तोपिय सों रिस कैसें

कहं मतिराम-कहै सिखए सखि तेरे। पूरि रहे मनभावन के गुन मान कों ठौर नही मन मेरे ॥ ७७५ ॥

सुनि चीर सुगंधित कै कै नये अपनें करतें पहिरावतु हैं । नित मेरे लिये पिय सोनन के गहने हूं नवीन गढावतु हैं ॥ पिक केकीन कोकिल बैन दिवाकर नेकु नहीं जिय ल्यावतु हैं। जिनके चख चारु चकोर सखी मुख मेरो मयंक हि भावतु हैं ॥ ७७६ ॥

सीचत है रस सो रुचि देखि अलेखन भांति सुभाव सिहारै। जो बली आन कहू परसै तेहि हाव दवानलही बिन जारै ॥ ओ दिन रैनन बैन कहू सरदार बिचारन ही बुधि धारै। हाइ इते पर हेल बिसासिन ना इतनी तन बेलि बिचारै ॥ ७७७ ॥

मन में नित मोहनी मंत्र जपै तपतें तन कों तरसोई करै । चित चाहन के तरु पै चढ कें फल बुद्धिन के बरसोई करै ॥ सरदार बुरे खुले अंगन के परसंग सबै धरसोई करै। रुख मावरो रावरो प्रानप्रिया परखोई करै हरषोई करै ॥७७८॥

तरुनी तन ताक तकै न कहूं-जक जानत जा बरुनी न टरै। नित नृत्तत नेह निवाहन कों अनचाहन तें चितरी न चरै ॥ सरदार सदा चुन चाहन तें चप आपन ही चुमकी न भरै। गुनरास प्रकास बिलास कबूतर की करनी बरनी न परै ॥ ७७९ ॥

नाम सुनें सुचि सारिका को सनमान बिचार रहे धर माथें। हों अपने हिय हारि रही सरदार कहां कितने गुन गाथें॥ माधव संगिनि कों नित पूज प्रमोद रखे भर भावन साथे। लाल सिखा न लखे कबहूं रहे लाल के पिंजर लाल के हाथें ॥७८०॥

सोवत प्रात जगाई तिया पहिली रतिया पति के सुख ख्यालहि। बाँधि दई अंगिया की तनी चुनि नीबी दई चुनि आवे न बालहि ॥ वा नित आन अरै अब ए करें आरन टार नई नवलालहि। बाँधे बनै अंगिया की तनी नितहीं नित नीबी चुने बनें बालहि ॥ ७८१ ॥

घुरि घाघरो घेर घिरो उघरो पुनि नीबी चुनावत के मध गो। उरझो सुरझो त्रिबली की बली पुनि नाभि की सुंदरता धधगो ॥ कवि

ठाकुर छूटि चलो उनते कुच की गिरि कंदर मे फँदिगो। छतिया में छप्पो मन छाँड दै री अंगि-या बंदबांधत मे बँधगो ॥ ७८२ ॥

सुधि तेरी लगी निसि बासरहू जिनकीमे खरे हिय हाइल से। इत तूं मुसिक्यात लखेउ तमि मनो बान हने करसाइल से॥ सुनि के कहूं काहू पै आइबो तेरो चले उतही वे उताइल से। झुक झूम के भूमि पै घूमे घने घनस्याम घरी घरी घाइल से॥ ७८३ ॥

अंगुरीन लो जाइ भुलाइ तही फिरि आइ लुभाइ रहो तरवा। चप चाइन चाइ हो एडिन ह्वै धपधाय छको छबि छाइ छवा॥ घनआँनद यों रस झीनि भिजो कबहू बिसरा मन लौ कन-वा। अलवेली सुजान के पाइन पाइ परो न टरै मन मेरो झवा॥ ७८४ ॥

रति सांचे ढरी अछिवाइ भरी परवीन गुराई पै पेखि पगे। छबि घूम घरै न मुरै मुरवान सौं लोभी खरै रस झूम उगै॥ घनआनँद एडिन आन मडे तरवान तरेते भगै न उगै। मन मेरो घने डरवाइ नचै तुव पाइन लागन हाथ लगै॥७८५॥

पलके कलपै कलपै पलकै सम होत संजोग बिजोग दुहूं। बिपरीत भई हित रीत खरीतखरी समुझी न परै किछहूं॥ घनआनँद जान सजीवन सों कहिए तो समे लहिए न सहूं। तिन हेरे अँधेरे ही दीसै सबै बिन सूझें ते पूने अबूझे कहूं॥ ७८६॥

तीछन ईछन बानन पान सों पैनें दसान सौं सान चढावत। प्रानन प्यासे भरे अति पानिष माइल घाइल चोप चढावत॥ यो घनआनँद छावत भाइ न जान सजीवन ओर न आवत। लोग कहें ए कवित्त बनावत मोहि तो मेरे कवित्त बनावत॥ ७८७॥

प्रीत सुजान मिले को महा सुख अंगन भाइ सभोइ रह्यो है। स्वाद जगे रस रंग पगे अति आनन्द बेई न जाति कह्यो है। दो उर एक भए घुरके घनआनँद सुख्य समीप लह्यो है। रूप अनूप तरंगिन चाह तउ चित चाह प्रवाह बह्यो है॥ ७८८॥

अंजन तोरही ताको करै नित पान लखै सुख लौं रस चायन। औरे सिंगार सदा घनआनँद

चाहै उमाह सो आपन दायन ॥ तू अलबेली सरूप की रास सुजान बिराजत सुद्ध सुभायन । आपन नाच के साइ कछू जो लटू भयो लागो फिरै तुव पायन ॥ ७८९ ॥

जिनही बरुनीन सों बांधी हियो तिनही दृग हाथ सिचावत है । बिस बोये कटाच्छन सों हँसि के जो सुजान सुधाहू पिवावत है ॥ अनबोले रहैं जो अनोखे अज्यौं रस मे अवरोस दिवावत है । घनआनँद चूको न दाउ कहू फिरि मारत चाव दिवावत है ॥ ७९० ॥

लै परजंक धरे भरअंक निसंक हो स्वावते प्रेम उपाइन । चोक परे ते परें उर लाग हिये सो हियो अनुराग सुभाइन ॥ लाजन हों लरजो गहि री बरजो गहि री कहरी कह दाइन । जागत जानि कहानी कहें अरु सोवत जानि पलोटत पाइन ॥ ७९१ ॥

छाक छकी छतिया धरकै दरकै अँगिया उचकै कुच नीके । त्यों पदमाकर छूटत बारहू टूटत हार सिंगार जे हीके ॥ संग तिहारे न झूलहुँगी फिर रंग हिंडोर सुजीवन जीके । ये मिचकीं मचकै

न हहा लचिके करि हा मचके मचकीके ॥७९२॥

प्यारो मनावत प्यारी न मानत बैठि रही करि प्रीत की टूटन। कारी घटा घहरान लगी सु उठी तब चौंकि चितै चहुंखूटन॥ धाइ डराइ लगी पिय के हिय सो कबि देव सुनो सुख लूटन। मान तो छूटो मरू करि के मन ते नहीं छूटत मान की छूटन॥ ७९३॥

मन पारद कूप लों रूप चहै उमहै सु महै नहीं जेतो गहै। गुन गाढ न जाइ परै अकुलाइ मनोज के ओज न सूल सहै॥ घनआनँद घाँघरे बैठक धूम मे प्रान छुटे गत कासो कहै। उर आवत या छबि छाजत ज्यो ब्रज छैल की गैल सदा हो रहै॥ ७९४॥

गुन बाँधि लियो हिय हेरतही फिरि खेल कियो अतिही उरझै। गहि गो सक प्रीत के फंदन मे घनआनँद छंदन क्यौं सरुझै॥ सुधि लेतहू भूलि न ताकी सुजान सुजान परै न कितै गरझै। अब याही परेखो उदेग भरो दुख जाल परै दुरझै उरझै॥ ७९५॥

चाह बढो चित चाक चढो सु फिरै तितही

इत नेक न धीजे। नैन थके छबि पा जु छके घनआनँद लाज ते रीझत भीजे॥ मोहू मे आव रहै बुधि बा नरी सीख सुनेवइसा दुख दीजे। देह दहै न रहै सुधि देह की भूलहू नेह को नाम न लीजे॥ ७९६ ॥

साँच के सान धरे सुर बान पै छूटें बिनाही कमान सो जोटें। दीसे जहीं के तहीं सब लै अति घूमत है मति पावक ओटें॥ घाउ को चाउ बढ़े घनआनँद चाइन लै उर आइन ओटें। प्रान सुजान के गान बिधे पट लोटे परे लग तान की चोटें॥७९७॥

देखि सुजान छये घनआनँद दीठ भये सुनि नीठ सकोचत। चाह के दाह भरे कितें तें नित पार अधीर ह्वै नीरद मोचत॥ लोभी तऊ अकुलाइ के पासन रूप के पानिप ले सके लोचन। नेन असोसन की गनि हेरत बीतत री निसिबासर सोचत॥ ७९८ ॥

तेरे बिनाही बनावत बानिक जीते सची रति रूप नलाइन। को कर सों छबि कों बरने रचि राखत अंग सिंगार कलाइन॥ कान हो दान के रूप दिखावत जान कछू जब लागे अलाइन।

नाचत भाव के भेद बतावत ए घनआनँद भौर चलाइन ॥ ७९९ ॥

जान सजीवन प्रान लखे बिन आतुर आँखिन आवत आधे । लोग चवाइ भरे निदरे अति बान सो बेन अपान सों साधे ॥ को समुझै मन की गति आनँद ओरई बेद सु चोरई नाधे । पीर मरें नहि धीर धरें कहु कैसें रहें जल जाल के बाँधे ॥ ८०० ॥

कौन बडाई करै जिन की सु बिकास भयें छबि होति है दून की । जाहिर जोर प्रभा दरसै सरसै जिन ते छबि काम की तून की ॥ हे बडभागिनी एक महा हम देखी सुनी नहीं एती कहून की । तापन मे इक बान परी जु करी बिधने जग रीत प्रसून की ॥ ८०१ ॥

पाले भले दिन के हित सो पिंजरान ते कोकिल कीर उडावत । जो मन रंजन खंजन ओर कपोत के खोत नहीं मन लावत ॥ जो बरजो तो न माने कहू मन आपन लाजत मोहि लजावत । कौन सुभाव परो पिय को नित मोरन छोड चकोर चुनावत ॥ ८०२ ॥

कबहूं फिरि पायन देहौं इहां भजि जैहौं तहां जहां सूधी सहो। पदमाकर देहरी द्वार किवार लगे ललचैहो न ऐसी चहो॥ बहिंयां की कहा छहिंयां न कहूं छुवै पावहुगे लटू लाज लहो। चित चाही कहूं न कहो बतियां उतहीं रहो हाहा हमै न गहो॥ ८०३॥

सतरैबो करो बतरैबो करो इतरैबो करो करो जोई चहो। पदमाकर आनँद दीबो करो रस लीबो करो सुख सों उमहो॥ कछू अंतर राखो न राखो चहो पर या बिनती एक मेरी गहो। अब ज्यों हिय मे नित बैठी रहो त्यों दया करि कै ढिग बैठी रहो॥ ८०४॥

सोवत लेति करोट नवोढ की नीचे लटै पलिका तें परी हैं। देखि तहां हरि सुन्दर दौरि कै जाइ कै नागिन सी पकरी हैं॥ लै दुपटा अपनो अपने कर पोंछि कै सेजहि माझ धरी हैं। प्यारे को प्यार निहारि यों रीझि भई चकचूर सखी सिगरी हैं॥ ८०५॥

ना कटि छीन प्रवीन ना बात न पीन कठोर नहीं कुच मेरे। बांकी बडाई बडी अँखियान

घनी बरुनी कर नीति निबेरे ॥ नागन की गति रूप की संपति राजे नहीं रति "कीरति नेरे"। जानो नहीं सखि कारन एरी पै काहे तें पीतम ह्वै रहे चेरे ॥ ८०६ ॥

आपने हाथ सों देत महावर आपुही बार सिंगारत नीके। आपुनहीं पहिरावत आनि कै हार सँवारि कै मौलसिरी के ॥ हौं सखी लाजनि जाति गडी मतिराम सुभाइ कहा कहौं पीके। लोग मिले घर घेर करैं अबहीं ते ए चेरे भए दुलही के ॥ ८०७ ॥

मुसक्यान भरे अखरान मै बेनी या डारी ठगोरी है मोहन मै । छिनकौ बिछुरै न छमै छकि छल छपाय रह्यो छबि छोहन मै ॥ पिय प्यारे के प्यार को चौंचंद यों सकुची सुनी सुन्दरि गोहन मै। मुख मोरि अली पै नई सरमाय गई अठिलाय सी भौंहनि मै ॥ ८०८ ॥

तेरियै कीरति कान सुनै अरु तेरोई रूप सदा द्दग देखैं । तेरियै बात कहैं रसना करि भूलिहूं और की ओर ना पेखैं॥ तू जिय मै हिय मै पिय के पिय तो बिन जात घरी जुग लेखैं ।

जानि दिनेस किये बस तैं को भए हरि आपुही हाथ की रेखैं ॥ ८०९ ॥

ताछिन तें रहे औरनि भूलि सु भूली कदंबन की परछाँही । त्यौं पदमाकर संग सखान को भूल भूलाय कला अवगाही ॥ जाछिन तें तू बसीकर मंत्र सी मेली सु कान्ह के कानन माहीं । दै गल बांही जु नाहीं करी वह नाहीं गोपाल कों भूलति नाहीं ॥ ८१० ॥

सीधी बिलोकनि सीधिये चाल कहा लखि लाल भयो बस लोनो । लोग कहें यह आए अपूरब पूरुब को पढि आगम कोनो ॥ काहे लजात नहीं तुम तो मोहि लाये रहौ हिय सूम ज्यों सोनो । हौं पिय लाजनि जाति गडी सिगरो ब्रज मौहि लगावत टोनो ॥ ८११ ॥

चोवा मिलै मृग मेद घसैं घनसार सों केसर गारत डोलैं । देव जू फूल फुलेलन की घर बाहिर बास लगावत डोलैं ॥ भूषन भेख बनाय नए पहिराय पुराने उतारत डोलैं । राधे के अंगन हीं सिगरो दिन संगही संग सिंगारत डोलैं ॥ ८१२ ॥

सीस सुधारि धरैं सिर फूल सुतौ सरसै रवि

की छबि जीतै । आपुही देत महावर पांयन लाजतें होत कछू ना सभीतै ॥ देख्यो तबै ढिग बैठ्यो रहै सपनेहूं न और तिया चित चीतै । प्यारे कों प्यारी तिया के सिंगार सिंगारत ही सिगरो दिन बीतै ॥ ८१३ ॥

बारिद बार सही रघुनाथ कहै जिन चारु किये द्रग मोर हैं । ईछन कंज सही सुथरे जिन लोचन भौंर किये बरजोर हैं ॥ बोलनि जो सो सही मुकता जिन आंखिन कों किये हंस किसोर हैं । प्यारी को आननइन्दु सही जेहिं कीन्हें गोबिन्द के नैन चकोर हैं ॥ ८१४ ॥

लालन मै रतिनायक तें सुभ सुन्दरता रुचि पुंजनि पेखी । बाल मै त्यो मतिराम कहै रति तें अति रूप कला अवरेखी ॥ सामुहें बैठ लखें एक सेज मै बोली अली सुख प्रीति बिसेखी । भाल मै तेरे लिखी बिधि सो यह लाल की मूरति लाल मै देखी ॥ ८१५ ॥

हैं दुलही सब दूलह पै भई या दुलही येई दूल्ह नोखे । बेनी छिनौ न कहूं संग छौंडत आए अटा धरैं ध्यान झरोखे ॥ बासर मै मिलि

जात लजात न जात के गेह के मानुख ओखे। चँदमुखी तन सोनो सो सौंपि करे मनमोहन सेवक चोखे ॥ ८१६ ॥

पाँव झँवावतिही नदनंद पै ऐंठति ओठन रीझ भरीसी। चारु महा कवि की कविता सी लसै दुलही रस मै उलहीसी ॥ सीबी करै तरवान के झाँवत देह दिपै भरी नेह ज्यों सीसी। दंतन की दुति बाहिर ह्वैकर जाहिर होति जवाहिर कीसी ॥ ८१७ ॥

जाल की चूनरी चीकनो गात चकोर थके मुखचन्द के धोखे। लामी लटैं लटकैं कटि खीन पयोधर है मनमोहन षोखे॥ बेधे मुबारक के उर में सर एको परै ना कटाच्छ के ओखे। बाकी न राखी कजाकी कछू जब बांकी चितौन तें झांकी झरोखे ॥८१८॥

जाति हुती निज गोकुल कों हरि आयो तहाँ लखि कै मग सूना। तासों कह्यो पदमाकर हौं अरे साँवरे बावरे तैं हमै छूना ॥ आजु धौं कैसी भई सजनी उत वा बिधि बोल कढोई कहूं ना। आनि लगायो हिये सों हियो भरि आयो गरो कहि आयो कछूना ॥ ८१९ ॥

जात कहूं तें कहूं कों चल्यो सुरटीपम लागति तान धरे की। आखर सो समुझे न परैं मिलि ग्राम रहे जति जील परे की॥ जागी हौ कै रस पागी हौ मादक हेरि कहौ रघुनाथ हरे की। गाइन आवति बूझति हैं यह आजु भई गति कैसी गरे की॥ ८२० ॥

कौन सो मंत्र पढे हौ हहा वह बाल तौ हाल अचानक चाही। ता छिन तें कछु ऐसी दसा भई गोकुलनाथ न जाति सराही॥ आए कहा करि सो कहिये घरी एक लौं तौ तुम्है देखि कराही। बोल कढै न गरो गहिगो कहौ रावरी दीठि मै नूठी कहाही॥ ८२१ ॥

ताहि लै आई अली रति मंदिर जाकी लगै रतिहू परछाँहीं। आइ गयो मतिराम तहीं जेहि कोटिक कामकला अवगाही॥ देखतहीं सगरी डगरी पकरी हँसिकै तिय की पिय बाँहीं। लाज नई सुर भंग भई सु, कढी मुख मंद मरूं करि नाहीं॥ ८२२ ॥

बैठे अकेले रहे रंग रावटी प्यारी पठाई गई तहां नाइन। देखत हीं रहे रीझि लला अति

वाके सरूप सु सील निकाइन ॥ कै बिनती उलटो हीं भई सुगही उन बांह परी तब पाइन। एजू अजू अजू ऐसी न कीजिये हाहा हमै खिझि हैं ठकुराइन ॥ ८२३ ॥

गेहके लोग गए कढि बाहेर सूने सकेत कै भांवती पाई। बेनी पिछोंहे ह्वै आनि गह्यो तिरछोंहें चितै रद आंगुरी नाई ॥ हाहा तजो कोउ आनि परैगो जू छोडि दई करिकै मनभाई। चंचल अंचल सों मुख पोंछि अंगोछति अंगन आंगँन आई ॥ ८२४ ॥

हेरि इतै मुसुकाय चितै करि चोप सों भावी को सेज बिछैबो। लाज बडी गुरुलोगन को पग चांपि कै केलि के मंदिर जैबो ॥ वा सुखरासि समै मतिराम हरैं रसना घुँघुँरू को बजैबो। माइ के मे मनभावन को मिलिबो सखी सांच अमी को अंचैबो ॥ ८२५ ॥

सोए अकेले रहैं दिन मे ससुरारि मे काहुवै नांहि सकात हैं। भोजन काज जगाए नेवाज उठे रति केलि थके अलसात हैं ॥ सारी निसा के जगे ढिग सासु के ज्यों ज्यों लला अंगिरात जम्हात

हैं। त्यों त्यों इतै लखि लाडिली के बडे लोचन लाजन हीं गडे जात हैं ॥ ८२६ ॥

खारकखार खरो कहि खीर खुबानियो खात न खूब खिसावै। आम अनार अमोल अंजीर अंगूर सरे सरदार बनावै ॥ आज कहा गति देवर की सजनी कहिके किन मोहि जतावै। बानी जिठानी की जान बिजच्छन देवररानी न द्वारपै आवै ॥८२७॥

बैठी सलोनी सोहाग भरी सुकुमारि सखीन समाज मढी सी। देवजू सेज सों आये लला मुख पें सुखमा ऊमडी घुमडी सी ॥ प्यारी की पीकें कपोलन पीके बिलोकि सखीन हँसी उमडी सी। सोचन मोंहें न लोचन होत सकोचन लाडिली जाति गडी सी ॥ ८२८ ॥

अलसात जम्हांत अटा पर तें उतरे निसि मे करि केलि बडी। इहिं भांति हिं रावरो रूप लखे उर आनँद रासि हिए उमडी ॥ नृपसंभु जू केसरिया दुपटा सो तौ मागति है अंगना मे अडी। इतै हांसी जेठानी ललं सों करै उतैं लाडिली लाजन जाति गडी ॥ ८२९ ॥

छाप छला नवला को गिरें तौ उठाय लला

धरि राखत जीके । धोखेहूं पाय धरापै धरै अज-
वेस सरोखें सहेलिन ठीकें ॥ कानन हूँ न सुनी
अब लों सो सखी लखी नैनन ऐसी अलीकें ।
लागै धुवां अलबेली के आंखिन धोवें लला के
ललाई की लीकें ॥ ८३० ।'

कोऊ कहै जपा जावक रंग की कोऊ कहै
अरुनाई सहाब की । कोऊ कहै गुललाला गुलाल
की कोऊ कहै रँग रोरी के आब की ॥ प्यारी के
के पायन की उपमा द्विज कों सब जान परी
जिमि खाब की । पंकज पात की बात कहा जिन
कोमलता लई जीति गुलाब की ॥ ८३१ ॥

ए उन की उन मै अनुहाऱ्यो न हाऱ्यो त्र मान
हिये सरमात हैं । पंक के बीच परे सर मै बडे
बेसरमै ए फुलावत गात हैं ॥ भेंट नहीं कहूं
या छबि सों रबि सों करजोरे खरे हहा खात हैं।
राधे जु धोवत पाँव तिहारे हों कौल धों काहे कों
ऐंठे से जात हैं ॥ ८३२ ॥

सीसजटा धरि नन्दन मै मुनि बृन्दन में बहु
काल बिताए । बल्कल चीर लपेटि सरीर महा
सुर तीरथ नीर नहाए ॥ आठहूं जाम सही हिम

धाम पुरंदर धामहूं काम बढाए । त्यौं कल्पद्रुम कोटि उपाय किये तुव पाँय से पातन पाए ॥८३३॥

जिन सोंहैं कहा चली पंकज की जो सकै समकै कहूं खाब में है । जब चन्द नखावली देखि चप्यौ तब जोति किती महताब में है ॥ कमलापति प्यारि के पायन की समता कों नहीं कछु ज्वाब में है । तहँ आब गुलाब की कौन कहै न रही लखि ताब सहाब में है ॥ ८३४ ॥

चम्पकली दलहू तें भली पद अंगुली बाल की रूप रसे हैं । सुभ्र सुबेस लसैं नख यौं जनु पीतम के दृग देव बसे हैं ॥ बाँके अनौट बनी बिछियान बिभूषित जोति जराव गसे हैं । केसव सोम सरोजनि ऊपर कोपि मनोतन बान कसे हैं ॥ ८३५ ॥

राधे के पायन की अंगुरी मेहँदी सों रँगी सो भए नवरात हैं । कै नृपसंभु जू इंदवधू जुरि बैठी मिहीं जे सरोज के पात हैं ॥ कै बट के टटके बर पान पैं आरे के फाँरे प्रवाल सुहात हैं । कैधौं चकोरन चोंच चप्यो चिनगारी के धोखे चुनीन चबात हैं ॥ ८३६ ॥

केसी सुढार गढी है सुनार सु कोर दबाय दई चहुंघाँ की। प्यारी के कोमल पाँयन की अँगुरी न रही ढरि रंचक बाँकी॥ कंजन की पँखुरी न चढी जुही फूलि रही है मनो सुखमा की। सान सयान सबै चुटकीन उडावति है चुटकी ललनों की॥ ८३७॥

गोरी गुलारी सुढार सी साँचे की देखत देहिन कोमल काकी। रंभ कुसुंभ किधौं है किधौं छबि छीनत कंचन के कलिका की॥ काम गढ्यो बडही है किधौं रति के रति कीबे कों पापलिका की। तोष बिलोकि बिलोचन मैन बस्यो बलि पींडुरी या मलिका की॥ ८३८॥

बर गोल सुडौल बने हैं अमोल ढरे मनो साँचे सुभायन मे। अस को जग है जिन कों लखिके नहिं होत मनोज के चायन मे॥ कमलापति काम चितेरहू तौ न सकै लिखि केहूं उपायन में। अस पेखत प्यारी के गुल्फन कों लगै कुल्फन कौन के पायन मे॥ ८३९॥

जान किधौं है रती रतिनाथ को सोन के त्रोन रच्यो पचबानु है। बानु है फावत आन के मान

है की कदली बिपरीत उठानु है ॥ ठानु हैं ऐसे नहीं करि केकर तोष चितै जेहिं कान्ह बिकानु है । कानु करैं यह सौतिन के पर प्रान से प्यारी सुजान की जानु है ॥ ८४० ॥

कै बिधि कंचन गार सिंगार कै दीन्हे बनाय अनूपम रंग के । कै कदली उलटे ह्वै बिराजत कै करि सुंड दिखात उमंग के ॥ ऐसी लसै उपमा तिन की द्विज भाखत है इमि पाय प्रसंग के । प्रानप्रिया के सु राजत ए दोउ जंघ किधौं हैं निखंग अनंग के ॥ ८४१ ॥

लाडिली के बरनै को नितंबन हारि रही रसना कबि जन के । कै नृपसंभु जू मेरु की भूमि में रेत के कूरा भये नदी सेत के ॥ कैधौं तमूरन के तबला रँगि औंधे धरे करि रंभा के लेत के । कंचन कीच के पाथे मनोहर कै भरना है मनोज के खेत के ॥ ८४२ ॥

त्रिबली तटिनी तट की पुलिनाई कोऊ बहि जाइ कबौं फबि मे । जनु चक्र कुँभार जुवाकै थली छिपे घाघरी बीच परे दबि मे ॥ गति मंद कै पीड्यौ चहै रिस लै हरि सेवक मीड्यौ चहै नबि

मे । सुघराई सुकाम बिरंचि की है तिय तेरे नितंबनि की छबि मे ॥८४३॥

रंचक दीठि के भार लहे बहु बार बिलोकनि ईठि अनैसी । टूटि है लागि है लोक अलोकत वै हठ छूटि है जूटि है कैसी ॥ पौन बहै ब्रज देह मै लागति देखि परै नहीं आँखिन जैसी । तैसी है सूच्छम छामोदरी कटि केहरि की हरि लंक ना ऐसी ॥ ८४४ ॥

सिंह भ्रमै बन भाँवरी देत औ साँवरी भृङ्गी भई करि खेदै । संभु भनै चसमा चख दै कै बिरंची रची बिसराइ कै बेदै ॥ राधिका लंक की संक करौ जनि संकर हो नहीं जानत भेदै । जो मन है परिमान समान निगोडी तऊ तिहिं मे करै छेदै ॥ ८४५ ॥

है तनहीं मे लखाति नहीं बर बूझिये जाय तौ हैं सब साखी । मानि लई सबही अनुमान कै पेखी न काहू पसारि कै आँखी ॥ जानत साँची कै यातें जहाँन जो आगे तें बेद पुराननि भाखी । ब्रह्म लौं सूच्छम है कटि राधे कि देखी न काहू सुनी सुन राखी ॥ ८४६ ॥

जो कहिये बिधिनाहीं रची सिख तें धरक्यौं पग को सँग लीन्हो। जो कहिये कि बिरंचि रची है तौ देखी न जाति कितो दग दीन्हो ॥ कीन्हें बिचार न आवै मनै नृपसंभु भनै तब मो मति चीन्हो। जो चित चोर को चित्त चुरावत राधे के लंक लो कंजन कीन्हो ॥ ८४७ ॥

प्यारी के गात बनाइबे कों बिधि माँगि लई दुति देवन अंग की। आनन मे ससि राखि दियो हरि बास कियो रचि भौंहनि भंग की ॥ आपने आसन नैन रचे नृपसंभु जू बैन सुधा सब संग की। भाग सुरेस उरोज महेस बलाहक केसनि लंक अनंग की ॥ ८४८ ॥

रूप धरे धुनि लौ घनआनँद सूझत बूझ की दीठ सुलानौ। लोयन लेत लगाय कै संग अनंग अचंभे की मूरति मानौ ॥ है किधौं नाहीं लगी अंलगी सी लखी न परै कहि क्यों हो प्रमानो। तौ कटिभेदहिं किंकिनी जानत तेरी सौं एरी सुजान हौ जानौ ॥ ८४९ ॥

दास प्रदीप सिखा उलटी की पतंग भई अवलोकति दीठि है। मंगल मूरति कंचन पत्र की

मैन रची मञ्ज आवत नीठि है ॥ काटि किधौं कदली दल गोभ कों दीन्हो जमाय निहारि अगीठि है। काँधतें चाकरी पातरी लंकलौं सोभित मानौ सलोनी कि पीठी है ॥ ८५० ॥

सोभा सुमेरु की संधितटी किधौं मैन मवास गढीस की घाटी। कै रसराज प्रवाह को मारग बेनी प्रवाह सी यों दृग ठाटी ॥ कामकला धरि ओप दई किधौं पीतम प्यारे मढावन पाटी। जानकी पीठि लखैं घनआँनद आनन आन कै होति उचाटी ॥ ८५१ ॥

मानो मनोज की पाटी लिखी हित मंत्रन की परिपाटी बसीठि है। जाति उनै उनै काँति के भारनि जाति दुनै दुनै जो परै दीठि है ॥ गोकुल बाल के अंग बिलोकिहो औरन की तब प्रीति उबीठि है। कंचन के कदली दल ऊपर सोवति साँपिनि बेनी न पीठि है ॥ ८५२ ॥

प्यारी कि नाभि हीं सो बरनै जो लडायो है गौरी के लाडिले लाड कै। रूप को कूप सरोवर सी उपमा कबि लोग पुकारत डाड कैं ॥ रोमलता को कहैं दहला नृपसंभु एहो बरमी नहीं चाव कैं।

धूरि को कीट मनो भो अनंग रह्यो. गाढ़ि कंचन रेत मे गाड के ॥ ८५३ ॥

रूप को कूप बखानत हैं कबि कोऊ तलाव सुधाही के संग को। कोऊ तुफंग मो हारि कहै दहला कलपद्रुम भाखत अंग को ॥ बारही बार बिचार कियो नृपसंभु न या मत मो मति संग को। सीसी उरोजन तें मद्धार रूमावली नाभीन प्याला अनंग को ॥ ८५४ ॥

क्यों मन मूढ छबीली के अंगनि जाय पर्‌यो रे ससा जिमि भीर मै। ठानी अठान अयान जो आपु तौ ताही कों आनि सके पुनि नीर मे ॥ जोबन पूर बिलास तरंग उठै मनमोद उमंग सरीर मे। सैल उरोज कै कूदि पर्‌यो मन नाभी प्रभानद भौंर गँभीर मे ॥ ८५५ ॥

प्यारी के अंग बनावतही नृपसंभु जू देख भये अनमेखे। कंज के कंटक साल जम्यो भयो चंद मलीन अजौं लगि देखै ॥ लाजमई सुरबाम भई पछितान्यौ स्वंभू महामन सेखै। दूसरी और बनाइबे कों त्रिबली खैंची तीन तिलाक की रेखै ॥ ८५६ ॥

एकै कहैं सुखमा लहरैं मन के चढिबे की सिढी एक पेखैं। कान्ह को टोनो कह्यो कछु काम कबीश्वर एक यहै अवरेखैं ॥ राधिका के त्रिबली को बनाव बिचारि बिचारि यहै हम लेखैं। ऐसी न औरन औरन और है तीन खँचाय दई बिधि रेखैं ॥ ८५७ ॥

उसरें पट देखि परें त्रिबली गुनै सेवक स्याम हुलास धरें। तिय की सम दूजो नहीं सुखसोई त्रिरेख लिख्यो बिधि बास धरें ॥ तिरै बीचियै रूप नदी की सु जोर सबै सत्रई को बिलास धरें। हरनैन सों भीत मनोज मनो सर तीनि सुगेह के पास धरें ॥ ८५८ ॥

नैन बिसासिन के सँग गो सुखमा लखिबे तिय के अँग अँग मै। ताही समै पट नाभि तटी को गयो उडि सेवक पौन प्रसंग मै ॥ हौस रही मन की मन मै तित जाइ पर्‍यो मद के उतमंग मै। बूडि गयो मन मेरो भटू त्रिबली बलि रूप नदी की तरंग मै ॥ ८५९ ॥

जोबन बाहर आयो नहीं तन भीतरही बढी आभा अपार सी। ज्यों नृपसंभु जू काँच के कुंभ

धरी कछु चीज लखी परै बार सी ॥ आमिल मानो उरोज कढ्यो चहै सायत काम धरै सुभसार सी। ऐसी रूमावली देखी परै ज्यों घरी परै अंजन रेत की धार सी ॥ ८६० ॥

के निधि छीर के बीच मे जाय कलिंदी को नीर नयो झरको। नृपसंभु जू कैधौं मराल की माल के बीच भुजंग लग्यो सरको ॥ बडे मोती को हार लसै कुच दूपै रुमावली तें तरकौं लरको। किधौं गंग के संग सुमेरु सिला बहि पातरो लाग्यो जटा हर को ॥ ८६१ ॥

कनकाचल कंदर अंदर तें निरबात सिंगार लता लटकी। तिय रुमावली किधौं संकर ह्वै लखि बाल भुजंगिनी है ठठकी ॥ चकवा तकि कै कवि लाल मुकुंद जू मीर सिकार दई फटकी। किधौं मैन मलंग चढ्यो थलि तुंग जँजीर अरीन परै झटकी ॥ ८६२ ॥

पारसी पाँति की पीपर पत्र लिख्यो किधौं मोहिनी मंत्र सुहावली। तोख किधौं अधरारस को चली नाभी थली तें पिपीलिका आवली ॥ कोउक काम किसान बई सो जमी किधौं बेलि

सिंगार की साँकली । हावली बावली सौतें भई लखि री लडवावली तेरी रुमावली ॥ ८६३ ॥

जो रतिनायक कोह भरो हठि नैन हुतासन जोति जरायो । सो तुव नाभी सुधासर में निज अंग अँगारन आय बुझायो ॥ ता मधि तें मृग-लोचनि मेचक धूम समूह उठ्यौ मन भायो । सोई रुमावली को छलपाय दुवो कुच कुंभन के बिच आयो ॥ ८६४ ॥

रूप के रासि की रूप रूमावली जंत्र के मंत्र के तंत्र के तारसी । प्रेमज प्रान तें प्यारी लगी अँधियारी लगी अँखियान कों आरसी ॥ माल बनी नवली अवली पिक बेनी त्रिबेनीं के बेनी के वारसी । कंचन के गिरि कंचन भूमि पैं धूमरी धूमरी धूम की वार सी ॥ ८६५ ॥

जोबन फूल्यो बसन्त लसै तेहिं अंग लता लपटी अलि सेनी । नाभी बिलोकत जात सुधा कों थकी मुख देखत नागिनी बेनी ॥ राजत रोमन की तन राजिव है रस बीज नदी सुख देनी । आगे भई प्रतिबिम्बित पाछे बिलम्बित जो मृग-नैनी कि बेनी ॥ ८६६ ॥

सोने के चूरन में चमके किरचैं-सी उठें छवि पुंज झवा के। हाथन लेत बिरी लटके मखतूल के फूलन जोर जवा के॥ गंग बडे बडे मोतिन के सँग सोहत थोरे थोरे कुच वाके। अंडनि के मनो मंडल मध्य तें ह्वै निकसे चकुला चकवाके॥ ८६७॥

उर मे उलहे मुलहे ह्वै उरोज सरोज करैं गुनदा सब के। नृपसंभु जू कुंभी के कुंभ कहा सम कीजे बँधे रहैं पासत्र के॥ फल श्रीफल के कहैं आवति लाज कहा गिरि सृंग हैं बासव के। सुमनो छबि अंग अनङ्ग धरे उलटाय पिआले है आसव के॥ ८६८॥

कंचुकी माह कसे उकसे परैं कामिनी ऊँचे उरोज तिहारे। दत्त कहे जनु बिश्वबिजै करि मैंन धरे उलटे कै नगारे॥ जोबन जोर कढे हिय फोर के औरही तें एक ठोर निहारे। गेंद के गुंमज के गिरि कै गज कुंभ के गर्ब गिरावनहारे॥ ८६९॥

श्रीफल कंजकली से बिराजत कै बिबि मौनी बसे ढिग गंग के। कै गिरि हेम के संपुट सोनैं

कै राजत संभु मनों रस रंग के ॥ कै जुग कोक कै सोक बिमोचन कैधौं सिलीमुख मैन निखंग के। कैधों रसाल के ताल फले कुच दोऊ महाल जगीर अनंग के ॥ ८७० ॥

कंज के संपुट हैं पै खरे हिय मै गडिजात ज्यौं कुंतल कोर हैं । मेरु हैं पै हरि हाथ ना आवत चक्रवती पै बडेई कठोर हैं ॥ भाँवती तेरे उरोजन मै गुन दास लखे सब और ही और हैं । संभु हैं पै उपजावैं मनोज सुव्रत हैं पै पर चित्त के चोर हैं ॥ ८७१ ॥

वे धरें अंग भुजंग के भूखन यह भुजंग रहैं हिय धारे । वे धरैं चंद सँवारि के भाल मै येऊ नखच्छत चंद सँवारे ॥ संभु कीओ कुच की समता कबि कोबिद भेद इतोई बिचारे । संभु [illegible] कोप कै जान्यौ मनोज उरोज म[illegible] [illegible]नहार ॥८७२॥

जौबन छत्रपती के मनो [illegible] कंचन छत्र सों आनि छए हैं । काम के त्राम मनो सिव के सिर कामिनी सुंदर बुंद दए हैं ॥ श्रीफल मै मनो कोऊ बिहंगम कौलन के दल तोरि गए हैं । लाली अली कुच अग्रन की लखि नूर सु लालन चूर भए हैं ॥८७३॥

लाडिली के कुच देखतही सिर नाय सरोज लजाय बिसूरत। दाडिम को हियरो फटिजात जबै कहूं कंचुकी ओर कों घूरत॥ संभु सतावत हैं जग कों हैं कठोर महा सब को मद तूरत। कूह कैकै कर मारैं मही लखि कुंभन बारन छारन पूरत॥८७४॥

रूप अनूप बनी सखी आज सुताव्रषभान की पान सी भूपर। पूरनभाग महामनि कंठ सो वारी कहा इन मोहनी जू पर॥ रीझि रंग्यो अंचरा कुसुमीं इमि डोलत बातलगें कुच ऊपर। लाल धुजामकरध्वज की फहराति मनो गजराज के ऊपर॥ ८७५॥

मधु रा.क कि राति सखी जुरि राधिके उज्जल-भूखित नूपुर लौं। अवली सवरी चक फेरी फिरैं न परै डिग पाइतसूपरलौं॥ अंगिया झुनकारी खरी सितजारी की सेदकनी कुच दूपर लौं। मनो सिंधु मथे सुधा फेन बढ्यौ सो चढौ गिरिसृंगनि ऊपर लौं॥ ८७६॥

जीतिबे कों रति केलि हरौल से आए मनोज महीपति के हैं। देखत बाढे कठोर महा जिन्हें कातरताई कहूं न गई छ्वै॥ बीच हरामनि की

किरनै न हथ्यारन की सनि जोति रही च्वै। जाली कि आंगी कसी यों उरोजनि मानो सिपाही सिलाह किये है ॥ ८७७ ॥

लोचन नीरज देखि नए छबि दन्तन दामिनि को दफनी। बेंनी बनी सो मनो मनिकाज पन्यो ससि पैं फनफाट फनी ॥ पीनपयोधर उपर ह्वै दरकी अंगिया उपमा उफनी। राज सो लूटिकै मैन नरेस महेस कों मानो दई कफनी ॥ ८७८ ॥

असराफ असील खुमानी खरे जिनकों परदे की सदां सरमैं। उबटे चुपरे रंग केसरि के जिनकी समता न चमीकर मे ॥ उर पैं अति खासी खुली अंगिया कबि साहबराम लगे भरमै। मिरजादे मनो खुबसूरत से सिर टोपी दै बैठि रहे घरमै ॥ ८७९ ॥

रजनी मधि प्यारी ने गौन कियो निरखी अँखियाँ पिय रंग भरी। कबि आलम रंभन कों ललक्यो रति लालच ह्वै हिय लाय हरी ॥ खरी खीन हरे रंग की अंगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी। अरुझे जुग जार सिवारन मै चकवान की चोंचें मनो निकरी ॥ ८८० ॥

बाढत है नितहींनित नूतन अंगन ओप भरे तरुनाई । उन्नत पीन उरोज भये मुख कंज विकास महाछवि छाई ॥ लेत थकी सी रुकी तिय स्वास यही रसिकेस सु भेद लखाई । बोझन जोवन सो तिनके हिये आवत रूंधी उसास सदाई ॥८८१॥

आननचन्द बिलोकि इतें उत पंकजनैननि रहैं सकुचाई । बाढत नैन नितंब उरोज प्रकास बिकास भरी तरुनाई ॥ कौतुक है रसिकेस अनूप तिया तन जोबन की अधिकाई । बोझन सों तिनके हिय में अति आवत रूंधी उसास सदाई ॥ ८८२ ॥

पहले पियराई ललाई भई बहुरो मन लाल की जोति जगे । फिर मंजुल बेलि सुपारिय से पकी नारंगी से नव रंग रंगे॥ जिय रीझत देख जंभीरिय से निरखै रसरास किसोर पगै । अब कंज की कोरन की छबि छार के श्रीफल से सरसान लगे ॥ ८८३ ॥

सजनी मिलि द्वै अवलोकि कहैं अतिही हरि राधिका के बसरी । कहि कैसे धौं कुंज बिराजत हैं कबि आलम और कहा रसरी ॥ उर झीनी सी आंगी फुलेल भरी कसकी सब: ठौर कसे कसरी ।

छबि प्रात सुमेर के देस मनो जितही तित ओस पर्‌यौ पसरी ॥ ८८४ ॥

सोई हुती पलंगा पर बाल खुले अंचरा नहिं जानत कोऊ । ऊँचे उरोजन कंचुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ ॥ सो छबि पीतम देखि छके कबि तोख कहै उपमा यह होऊ । मानो मढे सुलतानी बनात में साह मनोज के गुंमज दोऊ ॥ ८८५ ॥

प्रात समै वह गोपलली चली आवति ही जमुना जल न्हायें । नीर सों चीर लग्यो सब देह मै दूनी दिपै छबि ओप चढायें ॥ दरियाई कि कंचुकी मै कुच की छबि यों छलकै कवि देत बतायें । बाज के त्रास मनो चकवा जलजात के पात मे गात छिपायें ॥ ८८६ ॥

जग जीवन को फल जानि पर्‌यौ धनि नैननि कों ठहरैयत है । पदुमाकर ह्यो हुलसै पुलकै तन सिंधु सुधा के अन्हैयत है ॥ मन पैरत सो रसके नद मै अति आनँद मै मिलि जैयत है । अब ऊँचे ऊरोज लखें तियके सुरराज के राज सो पैयत है ॥ ८८७ ॥

कोऊ कहै कुच कंचन कुंभ सुधारस सों भरि राखै है ओऊ। श्रीफल संभु सुमेर समान मनोज्ञ के गेंद कहै कबि कोऊ ॥ मो मन मै उपमा असि आवति भाखत हो पुनि होउ ना होऊ । जीति सबै जग औंधि धरे है मनोज महीप के दुंदुभी दोऊ ॥ ८८८ ॥

ठाढे रहैं दृग आसन कै कुटी कंचुकी के पट खोलत ना। माल सुगंगप्रवाह बहै तिहिं मे उठि नेकु कलोलत ना ॥ कारे भये करि कृष्ण को ध्यान डुलाये तें काहूके डोलत ना । ए तपसी द्वै गरुर भरे दुनियां तें दयानिधि बोलत ना ॥८८९॥

कानन लौं अंखियाँ हैं तिहारी हथेली हमारी कहां लगि फैलिहैं । मूँदेहुतें तुम देखती हौ यह कोर तिहारी कहां लों सकेलि हैं ॥ कान्हर हूं कहं ख्याल यहै तिन कों हम हाथन ही पर झेलि हैं। राधे जू मानो भलो की बुरो अंखमूदनो संग तिहारे न खेलि हैं ॥ ८९० ॥

आई हौं देखि सराहे न जातहैं या बिधि घूंघुट मे फरके है। मै तौ यों जानी मिले दोऊ पीछे ह्वै कान लख्यो की उन्है हरके हैं ॥ रंगन

तें रुचितें रघुनाथ वे चारु करे करता करके हैं। अंजनवारे सही दृग प्यारी के खंजन प्यारे बिना परके हैं ॥ ८९१ ॥

कंज सकोचे गडे रहैं कीचन मीनन बोरि दयो दह नीरन। दास कहै मृग हूं कों उदास कै बास दियो है अरन्य गँभीरन ॥ आपुस में उपमा उपमेय ह्वै नैन ये नींदत हैं कबि धीरन। खंजन हूं कों उडाय दये हलके कर दीन्हे अनंग के तीरन ॥ ८९२ ॥

अंग पराये सबही अब तो न बनै उन सों मुख मोड़े। कैसहु मान मैं ठानों हिये दहैं सामुहें होत न रञ्चहु ओड़े॥ चेत अचेत रहै न कछू रसिकेस कोऊ निज बानि न छोड़े। हौं कसकै रिस कै करौं नैन दुहूं निसखे हंसि देत निगोड़े॥८९३॥

पीर हिये की हिये मैं पिराय लखाय न रञ्चहु जानै न कोऊ। हाय बिहाय सुहाय न और उपाय करोर तें जाय न सोऊ॥ हौं तौ कहौं रसिकेस अली यह काहुहिं भूलि व्यथा जनि होऊ। लोचन बाननि को बिष ऐसी लगै इक घायल होत हैं दोऊ ॥ ८९४ ॥

ज्यों वित होत धनी ढिग त्यौं अतिहीं जिय लालच लागत है। रसिकेस उमंग बढ़ें रति ज्यों तहं दूनी अनंग सु जागत है॥ नख ते सिख रूप भरे हैं खरे बहुज्यों मुसकानि की मांगत हैं। लख लोचन लालची ये अजहूं ललचोहीं सुबानि न त्यागत हैं॥ ८९५॥

दुहूं नैन न मानहिं नेकहु सीख किती समुझाय कहों इन सों। टुक हेरत धाय कै आय मिलैं पुनि क्योंहु न धीर धरैं छिन सों॥ अपनी दिसि ते हम प्रान औ अंग निछावरि कीने घनें दिन सों। तन औ मन हारेहु रूसे रहैं रसिकेस बसाय कहा तिन सों॥ ८९६॥

जबहीं जब वे सुधि कीजत हैं तबहीं सबही सुधि जाति सही। गति और भई मति और भई सबही अंग औरही बानि गही॥ यह रीत अनीत नई है छई निरखेही बनै सो परै न कही। रसिकेस लगी रहैं आंखिन्ह आंखि सु आंखें जु लागति रंच नहीं॥ ८९७॥

रीत नई सब अंगन ते इन कौन सी चूक करी अति भारी। देखतहीं न बनै टुक देखते

देखे बिना अकुलाति हैं न्यारी ॥ काह कहौं रसि-केस बिधातही धौं किहि हेत कठोरता धारी । रंचकहू सिरज्योई नहीं सुख ये अंखियां दुखियांनि बिचारी ॥ ८९८ ॥

हौं अति हारी सिखाय सखी सिख रंचहु मान न मान न मान री । ये रिझवार बडी अंखियां रसिकेस सुजान न जान न जान री ॥ और कछु चरचा दुखिहाइन है नहिं आनन आन न आन री । लागी रहैं नित ढूंका दिये उतहीं किये कानन कानन कान री ॥ ८९९ ॥

मो बस को न रहो सजनी मनमोहन के बस है मन मेरो । प्रानहू छूटे न छूटहि प्रीत कहैं रसिकेस कहा बहुतेरो ॥ नैन लगे जिहि प्रीतम सों तिहि पै तन प्रान निछावरि फेरो । सौकि सयान सिखावै बृथा सखि काम न आवत एकहु तेरो ॥ ९०० ॥

मैन महामुनि नैननि कों दृढ कै यह जोग की जुक्ति सिखाई । द्वैत बिसिष्ट बिहाय दुहूं रसिकेस अनन्य सु एक लखाई ॥ नाक निवास कछू न भलो संग मुक्तिनि के अति है कठिनाई । पीब

अद्वैतता चाहिये हेत मनों द्रग कानन सेवत जाई ॥ ९०१ ॥

बिधिहू मिलै बारक पूछियो तौ अतिही तृन सो सिर राखि बिसेखी । लोक तिहूं बिच हेरि चहूं नर नारि अनूप अपार अलेखी ॥ या रस रीत नई छबि है कबहूं कितहूं न सुखी नहिं पेखी । सांची कहो रसिकेस अजौं तुम आंखिन्ह आंखि कहूं अस देखी ॥ ९०२ ॥

जानि परै न निरंजन से मनरंजन दोउ रचे कहूं को ने । दीने लुकंजनहू न दुरै दरसैं रसिकेस भले सरसोने ॥ कंजन के मद भंजन देन किये रसराज सुमंजन लोने । सोहत अंजन रंजनहूं बिन खंजन गंजन नैन सलोने ॥ ९०३ ॥

को गुरु ऐसो प्रबीन मिलो जिन तोहि दई सिगरी निपुनाई। बरी विना धनु तीर अधीर करै इहि बैस इती बरिआई ॥ बेधति है चल चित्त न चूकति बंक बिलोकनि बान चलाई । सांची कहै रसिकेस तिया यह तू कमनैती कहा पढिआई ॥ ९०४॥

कंजन खंजन गंजन हैं अलि अंजनहूं मद-भंजनवारे । ए कजरारे ढरारे पियारे निसारे न

जात बिसारे बिसारे ।' अंचल ओट अखारे मैं खेलत तारे निहारे हैं चंचल तारे । सोम सुधासर के मधि डोलत मानहुं मीन भए मतवारे ॥१०५॥

लसैं बीरैं चकासी चलैं श्रुति मै भृकुटी जुवा रूप रही छवि छ्वै । अलकावलि डोरी कसी नृप-संभु जू सूत अनंग दई छरी छ्वै ॥ तम साँवरे रंगहि जानत हैं हठि पीछू परे हैं चलैं जित द्वै । कर छालत आवत नैन किधों ए सुधाकर के रथ के मृग द्वै ॥ १०६ ॥

चंचल चोखे से चीकने से चटकारे से चौगुने रूपभिराम के । सान सगे से बिखान लगे से सयान पगे से रँग से ललाम के ॥ माजे ममारख दे बिष अंजन सीधे से बीधे हदै घनस्याम के । बान चितैं दृग तेरे पियारी रहे सर काम के एकौ न काम के ॥ १०७ ॥

प्रानपियारी सिंगार सँवारि लिये कर आरसी रूप निहारे । चंद से आनन की दुति देखति पूरि रह्यो उर आनँद भारे ॥ अंजन लै नख सों रमनी दृग अंजित यों उपमा न बिचारे । चीर के चोंच चकोरन की मनो चोप तें चंद चुगावत चारे ॥१०८॥

पंकज के दल द्वै पर द्वै भँवरी रस लालच हेत लगी हैं। हैं नटनी सुरनायक की निरतैं कलं हाव सों भाव पगी हैं॥ बाल के नैन की पूतरियाँ निसिबासर लाल के ही मे खगी हैं। कंचन की झख रूप डबीन मै खोल धरी मनो नील नगी हैं॥ १०९॥

सुंदरी साज सिंगार सुधारति सौति के गर्वहि गंजन कों। गंग लिये कर सारसुता मनमोहन के मनरंजन कों॥ कज्जल चारु दिये अँगुरी तिहि मे मेंहदी रंग अंजन कों। ऐसी जची हिय मै उपमा मनो गुंज चुंगावत खंजन कों॥ ११०॥

मनमोहनी सूरति राधिका की लखि मोहन के मन प्रेम पग्यो। चहुंओर तें फैली है चंद्रक सी मुख की छबि नंदकुमार रग्यो॥ दुहुं नैनन बीच मे काजररेख बिराजत रूप अनूप जग्यो। रबि कों तजि चंद सों नेह कियो अरबिंदन मानो कलंक लग्यो॥ १११॥

झूमें झूकें उझकैं फिरि झूमे महामद माते खरेई रहैं। टारे टरैं न मदांध भये फिरि ठौरही ठौर अरेई रहैं॥ कुंजर से दृग: तेरे सखी गुन के

गुनमाल गरेई रहें । खून करे सब आलम को फिरि लाज के आंदू परेई रहे ॥ ९१२ ॥

भौंर सरोजे तें रोज जुरे न चकोरन हूं मद-मोद परी है । प्यो मनरंजन अंजन हूं बिन खंजन कों तको खीन करी है ॥ काहू कहा के हिये केहि भांतन येति अनूपम ओप भरी है। जानत हौं बिधि लै सब देस की आंखन हीं छबि आनि धरी है ॥ ९१३ ॥

चख चंचल यों चमके तिय के दृग अंचल मैं न रहे हटके । पुनि सैननि चित्त चुरावत स्याम को बाम को ये टुटिकावट के॥ अति लोल कपोल न डोलत है ढपना पट घूंघट मैं सटके । चट यों पट भेद दिखावत है जैसे भाव चले गुटका नटके ॥ ९१४ ॥

रैन जगी रति प्रेम पगी उरही सों लगी बिधि की अवरेखी । लाज लजीली कटाच्छ कटीली रसाल रसीली बिसाल बिसेखी ॥ खंजन मीन मृगीन लजावन पीत सरोज समान कलेखी । कान्हर की सों री तेरी सों राधिके तेरी सी आंखिन आंखन देखी ॥ ९१५ ॥

रूप सने बहु रूप दिखावत, देखे बने दृग सील सचो है । जोति धरे मुकता से ढरेखे सुरंग सरोज से रंग रचो है ॥ खंजन मीन मधुव्रत से सो कुरंगनु रंग से मान मचो है । स्याम सुधानिधि पानन चाहत होत है चार चकोरन निचो है ॥ ११६ ॥

कान्ह को बांकी चितौन चुभी चित काल्हरी झांकी तूं ग्वारि गवाछिन । देखी मै नोखी सो चोखी सी कोरन वोखी परै उबरै चित जाछिन ॥ मोरे है जारि निहारे मवारख है सहजैं कजरारी मृगाछिन । काजर दैनरी मेरी सुहागल आँगुरी तेरी कटैगी कटाछिन ॥ ११७ ॥

कोरन लौं दृग काजर देत है कारी घटा उमडी घन घोरन। घोरन आलीचढी मनो सुंदरि बाग नही कहूं देत है मोरन ॥ मोरन की धुनि बाढति है अरु यों बरजों बरजों बरजोरन । जोरन देव सखी पलकें अंगुरी कटि जैहै कटाच्छ की कोरन ॥ ११८ ॥

बेनी फुलेल चुचात खरी पट भीजत सीस तें रूप अन्हैयत । आनन बीर गरे छर पोत सो या

छबि की ललसों ललचैयत ॥ ब्रह्म कहै सब छोडि कै काहे न प्यारे के रूप को देखन जैयत । कानन से तो कै:ाच्छ लगे कलधौत कटोरन दूध अचैयत ॥ ९१९ ॥

ओप अनूप है आनन की अँखियाँ बिन काजरहूं कजरारी । रैन दिना बिसरै सी रहै बिसरो करिये बिसरै न बिसारी ॥ नैनन जो निरखै अबला निकसै उर बेधि अनी अनयारी । भागिनी की भरनींद भरी बरनी न परै बरुनी झपकारी ॥९२०॥

मीन कमीन करै छिन मे सुकुरंगनि के उर बान सौ खोह्यौ । चंचलता की कमी न रहै कछु खंजन तै अखियाँ जुग सोह्यौ ॥ रूप इते पर क्यों इतराइ न कौतुक सौ अपने चित टोह्यौ । खंजन गंज बिचारे कहा भटू अंजन देख निरंजन मोह्यो ॥ ९२१ ॥

रात रची रतिरंग पिया संग अंग लसै अतिही अलसानों । सोहत आनन यों श्रमबिंदु ज्यों इन्दु अमीकन सों सरसानौं ॥ लाल कछूक खुली अँखियांन मे तारन की छबि कैसे बखानौं । साँझ समै के समीप सरोज के मांझ रहे थिर ह्वै अलि मानौं ॥ ९२२ ॥

ये वृषभानुसुता भृकुटी तब ताकि तिहूंपुर तें करि न्यारी। का छितिपाल कमान कृपान कहै बर बाँक बिलोकि बिचारी॥ वै जगजीवन मारन जोग सु ये जगराखन साखन धारी। सोहन कोहन जोहन में मनमोहन को मनमोहन हारी॥ ९२३॥

का रसना जुग सेस असेस सदाँ बिष की सज संगिनि जाने। काम किसान रचे रुचि बीज सिंगार के अंकुर बंकुर बाने॥ जे छितिपालक के तरु पल्लव ते जड जंगल जीवन ठाने। हे तरुनी तकि तो बरुनी बरजे बरने बरने बरमाने॥९२४॥

बाँके बिचित्र बने धरि अंजन गंजन मीन महामृगनाके। जोट बरौनिन के करि कोट खडे बर वोट चुटैल चलाँके॥ ओ छितिपालक जे पुतरी सुथरी उपमा करिकै कबि थाके। नैन सिपाहिन ने सिर पैं मनों टोप दिये मनि मेचक ताके॥ ९२५॥

बेधनहार जहाँ जितने तितने सब त्रासनहार त्रसाये। काम कमान चले पर बान नहीं छितिपाल समान गनाये॥ रच्छनहार नहीं जग में जनमे

सब दृच्छ सुस्वच्छ उपाये। चूकत लच्छन गच्छत आपु कहो किन अच्छन अच्छ सिखाये ॥१२६॥

गोरी किसोरी सुहोरी सी देह तें दामिनी की दुति देति बिदारें। नारि नवें सब नारिनि की जब प्यारी को रूप अनूप निहारें॥ भौंर सी भौंहन सोहि रही मुरकी उर तें न टरे पल टारें। भीजे मनो मुख अंबुज के रस भौंर सुखावत पंख पसारे ॥ १२७ ॥

नासिका ऊपर भौंहन के मधि कुंकुमाबिंदु मृगंमद को कनु। पूछ तें पंख पसारि उड्यो मुख ओर खगा लखि मोतिन को गनु॥ देव के नैन तुलान पला धरि भाग सुहाग के ताल तटी तनु। नारि हियें त्रिपुरारि बँध्यो लखि हारि कै मैन उतारि धर्‍यो धनु ॥ १२८ ॥

लाल लखे तें सिरोमन आप लखाय फिरी जस जान न पावै। पाछे परे तब वाही घरी चित चोरि चली फिरि कौन छुडावै॥ लागे कटाच्छ गिरे हरि घायल घूमत नेक सँभार न आवै। ऐसे दई मुरि कै दृग कोर ज्यों चोर चपै पर चोट चलावै ॥ १२९ ॥

बंसी बजावत आनि कढ्यो री गली मैं छली कछु जादू सों डारे। नेकु चितै तिरछी करि दीठि चल्यो गयो मोहन मूठ सी मारि॥ ता घरी तें धरी सी परी सेज पैं प्यारी न बोलति प्रान के वारे। जागिहै जीहै तौ जीहैं सबै न तौ पीहैं हलाहल नंद के द्वारे॥ ९३० ॥

नैन के बान चलाय कै स्याम गिरावत हौ ब्रजबाम घनीन कों। आजु कलंक लग्यो तिहिं कों अरु नंदहु कों नँद की घरनीन कों॥ चेतै न जो वृषभानुसुता दुख ह्वैहै बडो इहिं की सजनीन कों। जाय के खाय परैंगी सबै वा अहीर के द्वार पैं हीरकनीन कों॥ ९३१ ॥

आज गुपाल लखी वह बाल प्रभा की मसाल सी काम गढी है। अंचल खोलै न कंचुकी अंग सों संभु कहै दुति दूनी चढी है॥ मोती के हार लसैं कुच बीच रोमावली ते मिलि जोति बढी है। मानो सुमेरहि भंग कै गंग लै भानुतनूजा कों संग कढी है॥ ९३२ ॥

दाने मनोहर सान धरे बहु दीपति ताकी कहा कहै बारिकी। संभु जू मंजु गुहे गुन सों उर

लसत औरे बढी दुति नारि की ॥ लाल के हार लसैं उर यों के रूमावली बेलि लखी है उजारि की । मानो सुमेर के सृंगन तें उतरी दरी आवति पाँति दवारि की ॥ ९३३ ॥

कंबु बिलोकतही जिहिं कों दुन्यो जाय के दूर कहूं को उताल हे । सौतें बिलोकि भई हैं बिहाल कपोतन के को कहे जस हाल है ॥ जानि परी द्विज कों उपमा तिहिं भाखतही मन होत निहाल है । पान की पीक लसै तियकंठ मनो पोखराज सिसी रँगलाल है ॥ ९३४ ॥

लखि कै वहि प्रानपियारी के कंठ कों कंबु लई सुधि तालन की । तिहुंलोक की सुन्दरता लै त्रिरेख दई बिधि जोति के जालन की ॥ कमलापति कौन बखानि सकै छबि छीनत मानिकमालन की । इमि गोरे गरे लसै पीक मनो दुति लाल गुलूबंद लालन की ॥ ९३५ ॥

किधौं रूप सरोवर मे तें कढ्यो लसै कंबु भन्यो सुर सात को है । किधौं सांवरे जू गुन गावरे के या कपोत फंद्यो बडी जात को हैं ॥ सुमेरसजू कीधौं सु कोकिला को सुर साधि धन्यो बिधि हात

को है। बर कंठ मै गोरी के कंठा लसै सुकताइन बोस्न काँति को है ॥ १३६ ॥

राधिका रूप निधान के पानिनि आनि सबै छिति की छवि छाई । दीह अदीहनि सूछम थूल गहे दृग गोरी की दौरि गोराई ॥ मेहँदी लसैं बुंद घने तिन मे मोहन के मन मोहनी लाई। इन्दबधू अरबिंद के मंदिर इंदिरा कों मनो पूजन आई ॥ १३७ ॥

बैठी मथै दधि राधा उतै कहुं डोलत नंदलला चित चायकै । बंकबिलोकनि झांकति त्यों कोउ जानत नावँ धरै ना बनायकै ॥ काढत माखन तारन मै मेहँदी कर बुन्द रही छबि छाय के । छीरसमुद्र मैं डोलै ममारख इन्दबधू ज्यों सुधा सों अन्हाय कै ॥ १३८ ॥

करतार करे इहिं कामिनी के कर कोमलता कलतालुनि कै । लघु दीरघ पातरी थूली तहीं सुसमाधि टरै सुनि कै मुनि कै ॥ तिनमें मेहँदीन के बुन्द घने यह तोख कहै उपमा गुनिकै । सखि मानो सरोज के पात मनोज बिसाती बिछाई चुनी चुनिकै ॥ १३९ ॥

लाडिली के कर की मेहँदी छबि जात कही नहीं संभुहू जू पर । भूलिहूं जाहि बिलोकतही गड़ि गाढे रहे अतिही दृग दूपर ॥ इन्दबधू बट के टटके दल बैठी बिछाइ ज्यों कंचन भूपर । बांधी मनो रंगरेज मनोज सु चूनरी नीरजपात के ऊपर ॥ ९४० ॥

चुरियानहूं मे चपि चूर भयो दबि छंद पछेलिन घांई कहूं । मनु मैन कुंभार सु कंचन की मृतिका लै सुमंत्रि बनाई कहूं ॥ हरिसेवके ज्यायो चहै तौ सुनै जदि सोंधी सुधा जिय ज्याई कहूं । लखि पाई कलाई तेरी जब तें तब तें उन कों न कलाई कहूं ॥ ९४१ ॥

दीठि परी नँदलालै कहूं ब्रषभानलली की सु एक कलाई । ता छिन तें तजि खान औ पान सुहाय री हाय यहे जकिलाई ॥ ऐसी दसा लखि के उन्ह की समुझायो रसीले तबो ना कलाई । घूमत हैं ब्रजबीथिन मे रट लाय रहे हैं कलाई कलाई ॥ ९४२ ॥

सुन्दर सूधी सुगोल रची बिधि कोमलता अति ही सरसात है । त्यों हरिऔध जराव जरे खरे

कंकन कंचन के दरसात हैं ॥ चूरी हरी बिलसैं जिहि मे तिहि देखि हियो सब को हुलसात है। ऐसी कलाइ लखें बिकलाई भई कल आइ नहीं दिन रात है ॥ ९४३ ॥

गिरिराज उरोजन की सरहद्द बिराजत कंचन की भुवभासी । हार हमेल तरंगन संग सुमेल सुधारस की सरितासी ॥ गोरी सुभाय ही भाय उतारी सरूप महाठग की जुग फांसी । काम महीप धुजा की भुजा तुव कोमल बाल मृनाल-लतासी ॥ ९४४ ॥

दूरि ते दीपति देखत ही प्रतिपच्छ बधून के होत रुजा है । बार पयोधि घटान के बीच जुरी बिजुरी की मनो तनुजा है ॥ या छबि सों सरसात मनोहर राधिका की अंगिराति भुजा है । कान्ह के कान अलंकित अंकित मैन की मानो बिजे की धुजा है ॥ ९४५ ॥

भोर हि भोर हि श्रीवृषभान के आय अकेलहि केलि भुलानो । देव जू सोवत ही उत भावती झीनो महा झलि कै पटतानो ॥ आरस लै उघरी इक बांह सो वा छबि देखि हरी अकुलानो।

मीडत हाथ फिरै उमह्यो सो मड्यौ उहि बीच फिरै मडरानो ॥ ९४६ ॥

दृग भौंर सै, ह्वैके चकोर भए जेहिं ठौर पै पायो बडो सुख है। लहरैं उठै सौरभ की सुखदा मच्यौ पून्यो प्रकास चहूं रुख है ॥ ठगि से रहे सेवक स्याम लखे सपनो है किधौं यह सौंतुख हैं। बन अंबर मे अरबिंद किधौं सुचि इंदु के राधिका को मुख है ॥ ९४७ ॥

दिन रैनि मे भावन के रचै गोत उदोत मई नित जान्यो परै। हर के ढिग अंग अनंग मढै सुख संग पै कोक मै सान्यो परै ॥ हरिसेवक भांवती को मुख यों श्रुतिवंत ह्वै चोर पिछान्यो परै। भो सुधा छबि सिंधु तें सो अँरबिंद सो इंदु सो कैसे बखान्यो परै ॥ ९४८ ॥

सूर सों मांगि प्रभा प्रति पून्यो कि छीरसमुद्र मे जाइ अन्हात है। उज्जल कै करनी अपनी रघुनाथ किये रंगलाल बिभात है ॥ रोज की हारि चितैं ससि प्यारी सों जीतिबे कों कितनो ललचात है। कौन कथा कहिये मुख देखत न्याय सों चंद सुपेद ह्वै जात है ॥ ९४९ ॥

फूले इ फूलन कों तुम मोहि पठावती फूले जिते सतपात हैं। फूल सी जाति है होंहूं तिते कर तोरत फूलन मेरे अघात हैं॥ राधे जू ताको कहा हों करों इन सोचन मेरो तो कांपत गात हैं। फूले इ फूल हों लवती हों मुख रावरो देखि कली भये जात हैं॥ ९५० ॥

पन प्रेम की फांसी सी हांसी हंसी सी दुरी दुरी दौर दृगंचला सी। मनमोहनी सी मन को कछू कीनी है कीने है अंचल अंचला सी॥ बन बीन की बानिक बानक सी मन मानक ही से हिमंचला सी। चलि चन्दन सी अरबिन्दन मे मनो चन्द में चंचल चुंचला सी॥ ९५१ ॥

मीठी अनूठी कढें बतियां सुनि सौतिन की छतियां दरकी परे। कोकिल कूकनि की का चली कलहंसन हूं के हियें धरकी परे॥ प्यारी के आनन तेरो कढे तिहिं की उपमा द्विज कों फरकी परे। धार सुधार सुधाधर तें सु मनो बसुधा में सुधा ढरकी परे॥ ९५२ ॥

फूलन सी झरि सूल हरे हरिजीवन मूल है श्रौन के ईठी। दूरि लौं दौरत दंतन की दुति

ज्यों अधरा उघरै अति नीठी। तोख भरी मुसका-
हट मोद सुहोत है सौति सबै लखि सीठी।
ऊख पियूख मयूख की भूख मिटै वा तिया बतियां
सुनी मीठी ॥ ९५३ ॥

आजु लखी ललना पढिबे मे कहा कहौं मैं हूं
भयो अनुरागी। बारक तो पहिले सुन लेति है
सुंदर बोल गुरू तें सभागी ॥ अच्छर द्वै मुंह तें
सुनिये उचरै फिरि बोल सुधारस पागी। सोहत
यों सु पढावन हार कों आपु ही मानो पढावन
लागी ॥ ९५४ ॥

दाडिम देखि तपोबन सेवत मानिक सिंधु
समाय गए हैं। मंगल के कुल के मनो बालक नूर
कहै ए अकास छए हैं ॥ तू तरूनी रँग दंतन तें
सु मुनीनहूं के मन मोल लए हैं। लाल कहा उपमा
बरनौ रद लाल लखें रदलाल भए हैं ॥९५५॥

पाँयँ धुवावतही नँदलाल सों ऐंठि अमेठन
रँग भरी सी। चारू महा कवि की कविता सी
लसै रस मै दुलही उमही सी ॥ सीवी करै सो
झवान के झांवत देहँ दिपै दिन नेह ज्यौं सीसी।
दंतन की दुति बाहिर कै कर जाहिर होति जवा-
हिर की सी ॥ ९५६ ॥

घुंघुट झीने दुकूल की झूलैं झूकें दृग बंकित कानन द्वै । जुग भौंहन बीच भुक्यो मन गोहन ओठन लाल रह्यो रंग च्वै ॥ मंद हँसे रुख नागरि को मुख चोपन की उपमा तब ह्वै । तिमिरावली सांवरे दंतन के हित मैन धरे मनो दीपक द्वै ॥ ९५७ ॥

को बरनै उपमा कबि गंग सु तोही मे हैं गुन ऊरबसी के । जा दिन तें दरसे मुसुकानि सों कान्ह भए बस तेरी हँसी के ॥ चंद से आनन मै छबि छाजत ऐसे बिराजत दंत मिसी के । फूलन की फूलवारिन मै मनो खेलत हैं लरिका हबसी के ॥ ९५८ ॥

बारिज मै बिलसै अलिपांत किधौं अलि अच्छर मंत्र बसी के । मैन महीप सिंगारपुरी निज बांह बसाई है मध्य ससी के ॥ आंनँद सों दरसी दसनावलि स्याम मिसी मिलि ऐसी लसी के । फूलन की फुलवारिन मैं मनु खेलत हैं लरिका हबसी के ॥ ९५९ ॥

अलि कामकला करि काहू के संग तें कामिनि भोर उठी मल कै । छबि सों अरसाय ऐंडाय

चलै लटि कै सुखदायक हीं अलकै ॥ जमुहात हिं दंतन सोने की सेख मयूखन सों मुख मै झलकै । सु प्रभाकर देखि प्रफुल्लित ह्वै निकसी मनो कंजकली जल कै ॥ ९६० ॥

मंजुल रेखन वारैं चढ्यौ रतिराज करै जल-केलि महा है । सीतलता सरसान सुगंधता सो इक साथ सोहात सदा है ॥ लाल कहा कहिये सबही गुन जानत जो जन देख पगा है । ये रदनच्छद बीच कितीक सुधारस की गहरी सरिता है ॥ ९६१ ॥

लालन के मन तें जिन को छिन एक न नेकु छुट्यो बिसराम है । बिद्रुम से तिन ओठन जो बरनै रसराज सुतो मति छाम है । मो मति सानि सुधाजल तें हरि को अनुराग महा रुचि धाम है । ढारि कै द्वैज सुधाधर सांचे रच्यो बिधि नै अधरा अभिराम है ॥ ९६२ ॥

बैठि बिचारी बिरंचि कियो रचि अंग सुढंग सबै उपमान को । हेरत हीं बिरहानल ब्यापि है को पुनि थापि है प्रान प्रमान को ॥ है बसुधा मै न औषधि आन सुमेरहरी सुभर्यौ सुखदान को ।

चन्द चहेटि समेटि . सुधारस कीन्हों तबै प्रिय के अधरान को ॥ ९६३ ॥

बर बिद्रुम मै कहां लाली इती कहां कोमलता जपा ऐसी गहै । कहां लाल मै लाल प्रकास इतो समता कहां बापुरो बिंब लहै ॥ कहां ऊख मयूख मै एती मिठास पियूखहू ना हरिऔध कहै । जिती चारुता कोमलता सुकुमारता माधुरता अधरा मैं अहै ॥ ९६४ ॥

अधरान अनूपम की जो प्रभा उपमा बर ईंगुर-हूँ की दई । कोउ बूझि कहै दुति जावक की अरु फूल जपा को प्रसिद्धि कई ॥ कुरबिंद प्रबाल कहैं केतने कोउ बंदनहूँ हिय बीच ठई । छितिपाल छपाकर मंडल में छितिपुत्र मनों छबि छाप छई ॥ ९६५ ॥

आरसी अंकुर नोक सिंगार सी बीच रही परकार निसानी । कै बिरहीन के हाय को दाग अहै बरु नील कनी अनुमानी ॥ बीज के बृन्द मे है तम छंद कलिंदजा बुंद लसै दरसानी ॥ नेह मई तिल ठोढी कि गाड मै पेरि दई मन प्रेम की बानी ॥ ९६६ ॥

ग्यात भयो जब तें तब तें तिय एक लखी मनि आप अतूल मे । दामिनि ज्यौं जमुना प्रति बिंबित यों झलकै तन नील दुकूल मे ॥ देखत ही सुख देखे बिना दुख जाय परी कित तें उत भूल मे । ठोडी पैं स्यामल बिंदु गुपाल मनो अलि बाल गुलाब के फूल मे ॥ ९६७ ॥

प्यारी कि ठोढी को बिंदु दिनेस किधौं बिसराम गुबिंद के जी को । चारु चुभ्यो कनिकामनि नील को कैधौं जमाव जम्यो रजनी को ॥ कैधौं अनंग सिंगार को रंग लिख्यो बर मंत्र बसीकर पी को। फूले सरोज मे भौंरी बसी किधौं फूल ससी में लग्यो अरसी को ॥ ९६८ ॥

नहिं नेकु तुनीर लहे समता जग आकहँ राखत पीठि धरे। केहि भांति कहों सरि कीरन की बिधि सील बिहीन सुभाव करे॥ तिल फूल लखे तिलहू न लहे बिछुवान रहें तिय पायँ परे । छितिपाल मनोहर नासिका तें सुखमा सर काम तरंग तरे ॥ ९६९ ॥

बनबासी किये सुक पीठि निवासी तुनीर जो बरि बिलासिका है। तिल सून प्रसून हू खेत मिले

गुहा सेवक सिद्ध निवासिका है ॥ भुक्तिग मुनैन के बान लिये मति बेसरि की सँग पासिका है। बहुभावनि की परकासिका है तुव नासिका धीर बिनासिका है ॥ ९७० ॥

मदमाती मनोज के आसव सों अँग जासु मनो रंग केसरि को। सहजै नथ नाक तें खोलि धरी कन्यो कौनधौं फंद या सेसरि को ॥ कमला-पति हेरि हेराय रहे लख्यो और नहीं इहिं की सरि को। करि कौन उपाय बचौं हे दई मोहि बेधत बेध या बेसरि को ॥ ९७१ ॥

कुंडल रूप अनूप बिराजत ता बिच मोती की जोति प्रकासी । सो जगदीस बिलोकत आनि गडी हिय में नहीं जाति निकासी ॥ जाहि लखे तें फंसे मुनि कौसिक एक बच्यो जो रह्यो अबि-नासी। राजति प्यारी की नासिका में यह नथ्थ किधौं मनमथ्थ की फांसी ॥ ९७२ ॥

नहिं जानिये कौने बिरंचि रचे समता कहां माखन गोलन की। किमि काम के दर्पन की हों कहीं सुखमा इनके संग तोलन की ॥ कमलापति देखि छके से रहे सुधि नेकु रही नहिं बोलन की।

तब कैसे के भाखि सकैं उपमा अनमोल ये गोल कपोलन की ॥ ९७३ ॥

केसरि के सने चंद के बीच रचे मनो लाल गुलाल चुनी गभे । यों उजराई पिराई ललाई मलाई हू के न मुलाइमी है तन ॥ लोने सलोने से सोने से सोभित होने न ऐसे बिधातहु के धन। बोलत नाहिनै डोलत लाल सुगोल कपोलन मोल लयो मन ॥ ९७४ ॥

नैन गडैं तो गडैं उन मे छबि मैन के बानन की सरसाति हैं। जो कुच कोर कठोर गडैं तो गडो वह तो कठिनै दिन राति हैं ॥ वे अलबेले तुहुं अलबेली जिन्है मुखमोर इतै मुसकाति है। कौन अचंभो कहौं यह ताके कपोल की गाड हिये गडि जाति है ॥ ९७५ ॥

कोरैं हियें दृग कोर ही रावरी कासों कहौं कोउ होत न आडैं । खेल खरीहु मै टेढिये भौंहैं रहैं हम से नित रारि सी माडैं ॥ काहे कों काहू कों दीजे उराहनो आवें इहां हम आपनी चाडैं । पैपल मै मुसकान समै हमै लेती हैं मोल कपोल की गाडैं ॥ ९७६ ॥

रूप की रासि मे कै रतिराज को अंकुर आनि कढ्यो सुभ होना। कै ससि नै तप्प्रयास कियो तिहिं को रह्यो सेस दिखात सो कोना॥ प्यारी के गोल कपोलन पैं द्विज राजि रह्यो तिल स्याम-सलोना। कै मधुपान पर्‍यो अलमस्त किधौं अरबिंद मलिंद को छौना॥ १७७॥

लखी आज अचानक इंदुमुखी चली सामुहैं आवतही कढिकै। उघर्‍यौ पट घूंघुट पौन प्रसंग गे नैन चकोर तहां मढिकै॥ कमलापतिषों तिल सोभित होत हैं गोल कपोल हि पैं चढि कै। जनु सुन्दरि को मुख इंदु लसै तिल एक मयंक हू तें बढि कै॥ १७८॥

तीय नदी जल सुंदरता कुच कोक सुबार सिवार लसै। दृग कंज तरंगबली रस रोस करारे लखें सुधि सातौं नसै॥ लटकी लटबेसरि के बनसी मुकुता मनि कंठ सुचारो फँसैं। मनमोहन को मन मीन बिधाय कै रीझि कै मानो मनोज हँसै॥ १७९॥

हैं कचस्याम सोई तनयारबि तेज कढी एक सौति नवीन है। कै मधुपांवली मंजु मनोहर

बैठि रही हिग कंज अधीन है ॥ बंक परी लट एक दृगंतर सी छबि देखत प्यारे प्रबीन है। रूप प्रवाह नदी तट खेलत मैन सिकारी बझा-वत मीन है ॥ ९८० ॥

कन ऐन सुरा बिंदुली दिवे भाल सो नेकन मो मन तें टहलै। मनु इंदु के बीच मे कीच अमी आलि बालक आय पर्‍यो चहलै ॥ कबि ब्रह्म भनै घुंघुरी अलकें अपने बल काढन कों कहलै। जुरि बैठे मयंक के कूल दुहूं दिसि कोऊ न पैठी सकै पहलै ॥ ९८१ ॥

रैनि उनींदी प्रिया पलिका पर सोभा समूह इकैठ रही है। सो छबि प्यारे प्रबीन विलोकत आनँद सों हिय पैठि रही है ॥ गोल कपोल परी लट एक सनेह सनी कछू ऐंठि रही है। हेतु अमी निसिपाल के ऊपर व्यालबधू मनो बैठि रही है ॥ ९८२ ॥

श्रीनंदलाल गोपाल के कारन कीन्हो सिंगार जु राधे बनाई। कुंकुम आड सु कंचन देह दिपै मुक्ताहल की झलकाई ॥ सीस तें एक छूटी लट सुंदर आनि कें यों कुच पैं लपटाई। गर्भ

कहै मनो चंद के बीच ह्वै संभु कों पूजन नागिनि आई ॥ ९८३ ॥

रीत रची बिपरीत दुहूं सु अनङ्ग उमङ्ग भरे सुख पैया । ढीली छबीली की बेनी परी सब अंग छके रति की सरसैया ॥ छूटतहीं मुख पै लटके दुति बाढी इती मिलि कै कुटिलैया । येकहि बंक बकारी दिये रसिकेस ज्यौं होत हैं दाम रुपया ॥९८४॥

पंकज चंपक बेलि गुलाब की माल बनावत आनँद पावै । आछे अंगोछे से अंग अंगौछि गुलाब फुलेलरु सोधो लगावै ॥ भूषन बास सम्हारि दमोदर आछे से केस में फूल भरावै । मिसही पिय को मग जोवति है हठि द्वार त्यौं चित्र अली को दिखावै ॥ ९८५ ॥

कीधौं सुधाधर जू दुहुं ओर सुधार धरे सुसुधा के द्विदोन हैं । कीधौं निसान ए लोचन बान के भौंह कमान के काम के त्रोन हैं ॥ कोन है जो नहिं मोहही देखि किधौं सर्वज्ञ हैं तौ नहीं मौन हैं । भौन हैं ज्ञान के मान के दोन है श्रौन हैं तीय के जीय के रौन हैं ॥ ९८६ ॥

दास मनोहर आनन बाल को दीपति जाकी

दिपै सब दीपैं। औन सुहावे बिराजि रहे मुक्ता-हल संजुत ताहि समीपैं ।। सारी महीन सो लीन बिलोकि बिचारत हैं कबि के अवनीपैं। सो दर-जानि ससी ही मिली सुत संग लिये मनो सिंधु मे सीपें ॥ ९८७ ॥

हेम सो अंग हियो हुलसै हरिनाछी सुनेह नयो मन बंधे। ठौरही ठौर जगी मदनदुति ताहिर प्रेम के सायक संधे ॥ वीरी न होइ बिराजत कानन जानन को मन लावत धंधे। लैकर झांझ बजावन को सु चढ्यो मनो चंद सुमेर के कंधे ॥ ९८८ ॥

बसि वर्ष हजार पयोनिधि मे बहुभांति न सीत की भीत सही । कबि देव जू त्यौं चित चाह घनी सुचि संगति मुक्तनहूं की गही ॥ इहिं भांतिन कीनो सबै तपजाल सुरीत कछूक न बाकी रही । अजहूं न इते पर सीप सबै इन कानन की समता न लही ॥ ९८९ ॥

बहुकाल पयोनिधि में करि बास हुतासन बाडव तेज तई। अरु स्वांति के बुंदन घाउ घने बहु भौंतिन सों तन छाप छई ॥ छितिपाल किधौ तप भौंति अनेक सु संगति वारिजहूँ की लई।

हिय सीप न सोच गयौ न तऊ समता इत कानन की न भई ॥ ९९० ॥

कीधौं सिंगार के बारिज को दल नूतन रूपवती सरसी को। कीधौं अनंग को आसन लै दमकै छबि कंचन जोति लसी को ॥ पारस नेक बिलोकत ही बस कै मन लेत है कान्ह रसी को। बाल को भाल बन्यो अति सुंदर भाग भर्‌यो मनो भाग ससी को ॥ ९९१ ॥

भाग को भौन सुहाग को चौंतरो सुंदरता को सिंघासन सोई। सागर है रस को पुल प्रेम को लोचन पंथिन को सुख होई ॥ नूर कहै न सुनै लडबावरी चंदहि दोख कछू न भलोई। होत नहीं सरि तेरे लिलाट की तौ ससि चौथ को देखै न कोई ॥ ९९२ ॥

सोहत अंग सुभाय के भूखन भौंर के भाय लसैं लटछूटी। लोचन लोल अमोल बिलोकत तीय तिहूंपुर की छबि लूटी ॥ नाथ लट्टू भये लालन जू लखि भांमिंनी भाल की बंदन बूटी। चोप सों चारु सुधारस लोभ बिधी बिधु मैं मनो चंद बधूटी ॥ ९९३ ॥

एके समै वृखभानुसुता परभातही काम की केलि बनाई । नैनन की लखि आराति कीरति कीरति मोतिन लाल सुहाई ।। बेंदी जराव लिलाट दिये गहि डोरी दोऊ पटिया पहिराई । भ्रम भमे रिपु जानि गह्यो रबि की मुसकें जनु राहु चढाई ॥ ९९४ ॥

बाल के भाल में लाल अनूपम रोरी की बेंदी बिसाल लसी है । ता बिच आखत सोहत है अति आनन की सुखमा सरसी है ॥ सो छबि हेरतहीं रसिकेस भली नव उक्ति हिये हुलसी है। राहु की भीति मनो भजि के यह इन्दुकला कुज मांहि बसी है ॥ ९९५ ॥

भाखत हैं सब कोऊ सही एक बिंदु ते होत है अंक दहाई । आवै नहीं हिय में सु प्रतीत कहूं कछु रीत अनूप लखाई ।। नौलबधू मुख देखतहीं रसिकेस सुदेस सुबेस सुहाई । बेंदी लिलार दिये तिय की छबि छावै अपार उदोत बढाई ॥ ९९६ ॥

तिय की मुख चन्द भलो सजनी लखि कै अति बाढै बिनोद हिये । रसिकेस सबै सुखमा

सहजे पुनि दूनी भई है सिंगार किये ॥ छबि छाय रही बहु हीरा जरी बर बेंद्रा बिसाल जु भाल दिये । यह मानों सनेह सन्यौं सुत के बिधु पूरन हैं बुध गोद लिये ॥ ९९७ ॥

चीकनी चारु सनेह सनी चिलकै दुति मेचक-ताई अपार सों । जीतलिये मखतूल के तार तमी सम तार द्विरेफकुमार सों ॥ पाटी दुहूं बिच मांग की लाली बिराजि रहो यौं प्रभा बिसतार सों । मानो सिंगार की टाटी मनोभव सींचत है अनुराग की धार सों ॥ ९९८ ॥

मंजन के तिय बैठी अवास मै पास खवासिनि हैं सब ठाढ़ी । सारी सुगंध सचिक्कन कै सुभ बेनी बनाय गुही अति गाढी ॥ पाटिन बिच सिंदूर की रेख पुखी लखि यों उपमा अति बाढी । चंद के लीलन कों झुकि राहु मनो रसना मुख बाहिर काढी ॥ ९९९ ॥

सोवत बाल गोपाल लखी मुख अंचर टारि कै मोद भरे उर । कों कबि जू छबि भाखि सकै अप भूरिरहे मन पूरि सुरासुर ॥ मांग मै सेंदुर सोहि रह्यो गिरधारन है उपमा न तिहूं पुर । मानो

मनोज की लगी. कृपान पर्‍यो कटि बीच तें राहु-बहादुर ॥ १००० ॥

बैठी सिंगार सिंगार कै बाल दयो मृगबिंदु अनूपम भाल पैं । का कहियै उपमा तिहिं की घुंघुवारी लुरें अलकैं दोऊ गाल पैं ॥ पाटिन बीच सिंदूर की लीक बिराजति है द्विज ऐसे सुहाल पैं । मैन महीप मनो जग जीति कै खून भरी बरछी धरी ढाल पैं ॥ १००१ ॥

मृगनैनी की पीठ पै बेनी लसै अति सोंधे सुगंध समोयरही । कच चिक्कन स्याम चुभे चित मैं सु सुकेसी सुकेसन जोय रही ॥ उपमा कविदत्त कहा कहिये रबि की तनया तन तोय रही । मनो कंचन के कदली दल ऊपर सांवरी सांपिनी सोय रही ॥ १००२ ॥

राख्यो मयंक के पाछे फनी फन रूप बखानत याको हितू पर । नेह सनी बनी बेनी गुलाब निसेनी कोऊ सुख की नहीं दूपर ॥ पीठि मैं काहू कि दीठि धसै न उपाय बिलोकिये या ब्रज भूपर । अमृत पीवत पूंछ डुलै मनो कंचन के कदली दल ऊपर ॥ १००३ ॥

कै मधुपावली मंजु लसै अरबिंद लगी मकरंद हि पोहे। कै रजनी मनि कंठ रिझाय कै पाछे कों गौन कियो अरि सोहे ॥ बेनी किधौं या कलंक चुवै किधौं रूप मसाल को धूम करो है। कंचन खंभ के कंध चढी थकि चंद गहे मुख सांपिनी सो है ॥ १००४ ॥

सेज तें ठाढी भई उठि बाल लई उलटी अंगिराय जह्माई। रोम की राजी बिराजी बिसाल मिटी त्रिबली अरु पीठि खिलाई ॥ बेनी परी पग ऊपर पाछे तें ब्रह्म यहै उपमा उर आई। लोक त्रिलोक के जीतिबे कारन सोने कि काम कमान चढाई ॥ १००५ ॥

बाल चलै अलबेली सी चाल कछू कबि ब्रह्म कहै ना कहावै। लाज भरे ब्रजराजकुमार की भाजि चली भजि जान न पावै ॥ दौरि गही मृगनैनी की बेनी सुप्यारी को यो लचक्यो तन आवै। भौंरन की परतंच किये तमक्यो मनो काम कमान चढावै ॥ १००६ ॥

हठि मांगत बाट किधौं लछिमी की सरोज सों आनि सिवार अरे। किधौं आरसी के घर तें

उत संभु समूह फनी छबि सों बगरे॥ कसि राधिका के मुख के चहुंओर बिराजत बार महा सुथरे॥ भजि चंद चल्यो बिचल्यो रन तें तम बृंद मनो जुरि पाछे परे ॥ १००७ ॥

कैसी छबीली की छाय रही छबि छूटि रहे कच कुंचित कारे। कौन कुहूघन कौन कितीक करै तिन सों तमक्यौं समतारे ॥ सोहत आनन ऊपर यों अलि बारिज बीच महा मतवारे । कै बिधु ऊपर हेतु अबै अहि के मिस के सब सीस सुधारे ॥ १००८ ॥

जनु इन्द उयो अवनीतल तें चहुंओर छटा छवि की छहरी। तहां देखत संभु गोपाल प्यारे तिय के मुख की सुखमा सिगरी॥ बढि एडिन लौं उमडे बड बार भई तट राधिका न्हाय खरी। जनु सोत समेत धरे तन दिव्य मनो जल तें जमुना निकरी ॥ १००९ ॥

मंजन कै तिय बैठी अगार बगार दुयें जनु मार कुमार हैं। कोऊ कहै तमतोम की धार कोऊ मखतूल के तार सिवार हैं ॥ कौन कहै उपमा तिन की द्विज केस सु केसी के डारत छार हैं।

सार हैं पीतम के द्ग के बिथुरे सुथरे अलबेली की बार हैं ॥ १०१० ॥

हैं अबिबेक अनेक भरे करिकै कबिता छिति-में छहरैहैं। दादुर कीच से नीच तहां उपमा वह बेनि तृबेनी की देहैं ॥ भोई समोई सुगंधन सों समता बिख मीनी भुअंगिनि कैहैं । ऐसे कुतर्कन तें छितिपाल कबीसन के उपहांस करै हैं ॥ १०११ ॥

राधिका रूप निधान की मांग संभारिकै सेंदुर रेख भराई। ताहि निहारतहीं छितिपाल गोपाल गये बिनु मोल बिकाई ॥ देन लगे उपमा बहु भांति समात न एकजमाति जगाई। मानहुँ श्रीजमु-नाजलरंजन माहँ निरंजन जोति जगाई ॥१०१२॥

भाग सोहाग भरी तिय मांग सो बूझि बिचारि बिरंचि संवारी। भारती भांति अनेकन सों जग में समता टकटोरत हारी ॥ जद्यपि है लघुता छितिपाल परंतु कहौं कछु बुद्ध बिचारी। सूछम बातुकी गैल किधौं सुखमा बर बारिप्रबाह पनारी ॥ १०१३ ॥

आज भई सिगरी मुदि वैं जे रहीं गूंथि मोतिन

जोतिन जाल में । कंकन किंकिनि छाप छला हरा हेम हमेल परे मते चाल में ॥ टोनो पऱ्यो कछू बेनीप्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में । इन्दु जित्यो अरबिन्द जित्यो तू गोबिन्द जित्यो इक बिन्दु दै भाल में ॥ १०१४ ॥

बाल के भाल बिसाल दये मृग के मद को लसै बिन्दु सलौना । लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील दिठौना ॥ भाखत हैं बिजयानन्द जू अपने मन की चहै होत वा होना । कंज से नैन खिले दुहूं देखिये लालची बीच अऱ्यो अलि छौना ॥ १०१५ ॥

कौतुक एक अपूरब है सजनी लख वा घर के चहुंपासा । जानि परै न सितासित पच्छ सदा परिपूरित स्वच्छ प्रकासा ॥ पत्रहि में तिथि पैयत है बिलगात न मावस दूज सुपासा ॥ पूरन पून्यो रहै नितही रसिकेस सु आनन ओप उजासा ॥ १०१६ ॥

वा दिन रंच उरोज परी जू गयो नहिं सो अजहू लो छरौट री । है सुकुमार घनी नवला निक हीय सुहायन सारी सरौट री ॥ मैं बरजी

तुहि बार किती बलि हौं उत तू जनि लेइ करौट री। पाखुरी ते रसिकेस गुलाब की जैहैं कहुं परि गात खरोंट री॥ १०१७॥

रंच हरें हँसि बोलतहीं श्रमबिंदु घने मुख ऊपर छावत। लंक लचै न कहूं सुकुमारि की या भय बीजन मन्द डुलावत॥ छाले परैं न कहूं सु यही डर ते पग में नहिं हाथ छुआवत। कीनो गुलाब को फूल झमां झझकी ह्वै तऊ तिय पांय झवांवत॥ १०१८॥

लै कर में कच कारे समेटि खये उलटी करि दोऊ भुजा को। टारि दये पट सीस ते सुंदरि दर्पन बंक चितौनि ते ताको॥ अञ्चल ऊंचो भयो उर ते रसिकेस बिलोकत ही छबि छाको। जूरो सु बांधनिहारि भली यह नारि, नई मन बांधे न काको॥ १०१९॥

पति ने रति की बतियां जु कहीं सुनि कै सकुचाय रही सिर नै कै। मुख फेरि कनैखिन तें जु लखी मुसकाय सखी दिसि अंचल दैकै॥ रसिकेस प्रवीन तिया सिगरी उर की गति दम्पति की लखि पै कै। सुख पाय अली जु चली ढिग

तें सब ही मिस तें जु टलाटली कै कै ॥१०२०॥

सुनि कै सखियान पै साँई सवार चले इत पूस की मास जु लाग्गो । रसिकेस रहे सुख होइ महा अब कीजै कहा सु मनोभव जाग्यो ॥ कछु ठानी उपाय दई को मनाय पसारि कै अञ्चल सों बर माँग्यो । गहि कै कर बीन प्रबीन तिया तब-हीं तहं राग मलार सुराग्यो ॥ १०२१ ॥

भेदि कै भीर इती कित ह्वै कै सु आवत जात न रञ्च लखावै । आंख ये आंखन से मिलि कै जन लाखन की चहुं आंख दुरावै ॥ ह्वैहै कहा चतुराई घनी रसिकेस दुहूं मनमोद बढावै । डीठि सों डीठि जुरीही फिरै सब ही की बसीठि लों डीठि बचावै ॥ १०२२ ॥

तो मिलिबे की सुचाह लगी रसिकेसहि हैं अति छैल अनोखे । आज मिलायहौं वाहि तुमैं इमि धीरज दै तिनमैं परितोखे ॥ गोप गये उठि बीर अथाइन गोरज गैल छई बिन धोखे । तू चल री बलि आली भली यह है अभिसार की सैल संझोखे ॥ १०२३ ॥

आये जु आप भली ही करी रसिकेस सुमेटन

मान मरोरहि । पै अविलोकत हीं ढंग रावरे औरहु नोलवधू मुख मोरहि ॥ मानहुं मेरी कही घनस्याम लहो जिहिते अतिहीं सुख सोरहि । देखिहिगी टुक दूर करो हो लला है छला यह छीगुनी छोरहि ॥ १०२४ ॥

आपने ओर की चाहे लिखी लिखि जाति कथा उत मोहन ओर की । प्यारी दयाकरि बेगि मिलो सहि जाति ब्यथा नहीं मैन मरोर की ॥ आपुही बांचि लगावति अंग अहो किन आनी चिठी चित चोर की । राधिके राधे रही जकि भोर लों ह्वैगई मूरति नंदकिसोर की ॥१०२५॥

बातें बनाय बनाय कहो कहिये रघुनाथ की सौंह लरैगी । और न कोऊ बची ब्रज मैं एक तूहीं है नेम निबाह करैगी ॥ आये भये दिन चार इतै अब हीं सबही कों कुनांव धरैगी । तान भटू मनमोहन की वह कान परैगी तो जान परैगी ॥ १०२६ ॥

बहि चौहटे की चपरोट मै आजु अचानक आनि दोऊ भिरिगे । कबि बेनी दुहूंन के लालची लोचन छोडि सकोचन कों घिरिगे ॥ समुहाने

हिये भरि भेटिबे कों त्यों चबैयन के चरचे जिरिगे। फिरिगे कर सों कर हेरत हीं करके मनो मानिक से गिरिगे ॥ १०२७ ॥

गोरे से भाँयें भुजान खुली कुसुँभी अँगिया की रही गडि गोटें। लंक नई सी परे कच भार मनोहर हार परी त्यों बरोटें ॥ बेनी रँगे मेंहदी पग पानि करे अँखियाँन कटाच्छनि चोटें। लोटें न हेरी भटू घर तें कब के लटू कान्ह परे मग लोटें ॥१०२८ ॥

तीर कलिंदी के हों उत संभु सुखावत ही पट धोय बगार्यो। तूँ बतरात हुती सखियान सौं आन कहूं तें उहों पगु धार्यो ॥ औंचक तूँ हँसि आनन फेरी बडे बडे नैननि तानि निहार्यो। कान्ह अचेत पर्यो कहरे सखि वा दिन की मुसुकानि को मार्यो ॥ १०२९ ॥

को हमे रोकि सके धरती में जहाँ चहौं जाय तहाँ छल घोरों। मैं बहुरूपिनी सेवक स्याम सुमोहिनी मंत्रन के सर छोरों ॥ राधिका कों कछु तें कछु के एहि कुंज के केलि तरंग मे बोरों। रावरे

के अनुसासन प्रीति अकासनहू की तिया सन जोरों ॥ १०३० ॥

गोधन साथ बजावत बांसुरी गोरज सों घन सो तन भारो । चंद सो आनन चाव चढो बडेड चख चाहि परे चितहारो ॥ गोकुल या कुल-कानि की आनि को हेरत हेरिबी राखिबो गारो । लौवन के सँग आवत भोर धरे सिरमोर परवोवन वारो ॥ १०३१ ॥

भाग भरी सब भाँतिन सों करौ आज की रैन महा सुख सानी । गोकुलनाथ हौ बैठे कहा गुनों सांची कही सब मेरी कहानी ॥ लाल निहाल करौं तुम कों चलौ कुंज लौं तौ हरि आनँद दानी । चंदमुखी चपला लौं चितौति तुम्है घन स्याम सों राधिका रानी ॥ १०३२ ॥

जोतिखवंत जने नख तें उबटी वती पारस कंचन खानी । दासी महा छबि मोहिनी आदि सुगंध भयो है प्रसेद के पानी ॥ को बरनै जेहिं सेवक स्याम न मोह भरी गुनि बुद्धि औ बानी । बार ने जापै सबै अमरी सो लुटी कमरी पर राधिका रानी ॥ १०३३ ॥

एक तो मान को मेर रह्यो चढि दूजे तुम्हें बिनु साथ निहारें। तीजे हितू इहिं ओर की बूझि के झूंठी महामन बीच बिचारें ॥ रावरे कों रघुनाथ बलाय ल्यों या डर सों हम सासन टारें। प्यारी के ईछन तीछन बान हैं घायल देखत ही करि डारें ॥ १०३४ ॥

काहु के बंक चितैबे कि संक न लागो कलंक बिसे किन बीसों । वा ठकुराइन की अब देव बिरंचि रची रुचि रावरे जीसों ॥ देहों मिलाय तुमे हों तिहारियै आन करों बृषभानलली सों। ब्राह्मन की सौं बबा कि सौं मोहन मोहि गऊ कि सौं गोरस की सौं ॥१०३५॥

मुख चांदनी चारु प्रकासन सों घरमाह उजास मच्योई रहे। तन की मृदु मंजुलता लखि कै भरि भौन बिलास कढ्योई रहे ॥ घनस्याम निकुंजहि ल्यावन कों हिय माहं उछाह बढ्योई रहे। बलि वा अंगना पगना रंग सों अंगना रंग वामै चढ्योई रहे ॥ १०३६ ॥

ज्यौं घन से तुम हो घनस्याम बनी वह बेनीप्रबीन त्यों संपा। ऐसी तनीक सी बातन कों

मन मेरो नहीं कबहूं हरि कंपा ॥ क्यों कर जोरीं निहोरों हहा करौं बीर की सों जबही रबि झंपा । आजुही लै पहिरावन चाहत कंठ मै माल मनोहर चंपा ॥ १०३७ ॥

पन्नग मीन कपोत चकाचकी बालमराल हू केते गहे हैं । बिद्रुम औ मुकता पोखराज बिसाहिबे कों अति नेह नहे हैं ॥ देख्यो तुम्हे जब सों तब सों उन के ढँग ये रघुनाथ लहे हैं । रोज तमासे कों जात तितै जितै ओज सों फूलि सरोज रहे हैं ॥ १०३८ ॥

दासी हौं मैं बलि रावरे की यह मेरी कही है सही मति लूनो । पेखिये आजु कलानिधि कों केहि भाँति कलाधरि कै भयो दूनो ॥ गोकुल कैसी सुधाबरसै सरसै सुखमा लहि सारदी पूनो । देखिये तो चलि भाँवती के मुख तें ससि आज को होत ना ऊनो ॥ १०३९ ॥

केसरि रंग के अंग की बास बसी रहै पाय से पास घनेरी । चित्र मई छिति भीति सबै रघुनाथ लसै प्रतिबिंबनि घेरी ॥ प्यारी के रूप अनूप की और कहालौं कहौं महिमा बहुतेरी । आनन

चंद की फैली अमंद रहै घर में दिन राति उँजेरी ॥ १०४० ॥

जा छन तें मुसुक्याय दई चख चंचल कोर छबीली तिया मैं । छोही छरी सी परी तब तें निबरी सी मनोज खरी कतिया में ॥ बेनी जो जाइबे जैये जरूर तो जांनि जनाई हितू बतिया में । कान्ह मरैगी न जौलों बनी मुसुक्यान अमी की नमी छतिया में ॥ १०४१ ॥

भूमि पै पाँव धरे कबहूं नहिं सूरज देखि सकै नहीं जाकों । मानस की चरचा का चलाइये चंद चितै न सकै पुनिया कों ॥ औंचक झाँकि झरोखन मैं जसवंत बिलोकत ताकी प्रभा कों । लाऊँ कहो केहिं भाँति कन्हाई हवाल हवा लों न जानत जाकों ॥ १०४२ ॥

अबही वृषभान को मान बढ्यो अनुमानहुं सों नहीं जाँचहुँगी । कढि लाडिली देति देखाई नहीं सेवकाई बिना किमि राचहुँगी ॥ बरसान है धीर धरो उरवा पुरवा को सरूप सवाँचहुँगी । घनस्याम तुम्हे बिजुरी सों मिलाय मयूरिनि है करि नाचहुँगी ॥ १०४३ ॥

घेरिही लाई सखीन लै संग पै भूली मनो बगुलीन में हंसी । ता दिन तो कछू घात चली न सु बातन बेनीप्रबीन प्रसंसी ॥ धीर धरो जू गँभीर बडे तुम हौ जदुबंसिन , मैं कोऊ अंसी । लागियै चाहत मीन सी चंचल रावरे की हौं भई हरि बंसी ॥ १०४४ ॥

कर पाँयन की छबि जाकी लखें छबि जाति है कंज अदागन तें । कहि जाति कछू न कलाधर तें मुख पै दुति दूनी सुहागन तें ॥ हंसि मोहै हियो हनुमान लला सुठि सोहै भरी अनुरागन तें । कलना बिधि की सखियां हैं मनो ललना तुम कों मिली भागन तें ॥ १०४५ ॥

आँखिन की पुतरी करे राखति माय बहौ अति लाज लपेटी । बैस नवेली है बेनीप्रबीन न आजु लों मै कहूं पौरि पै भेटी ॥ पैज करूंगी तिहारे लिये सुनो नौलकिसोर हों रावरी चेटी । है कुल की बडे भूप अनूप बडे तें बडे वृषभान की बेटी ॥ १०४६ ॥

बार बडे औ बडी अँखियाँ मुख चंद अमी मुसक्यान सों भारो । पीन उरोज सरोज से पाँय

हैं पातरो लंक नितंब घनारो ॥ गोकुलनाथ बिलोकि हठे मिलिबे कों सुनो यह काम हमारो ॥ जाति हौं मै समुझाय कहौंगी न आय है तो कछू मेरो न चारो ॥ १०४७ ॥

ऐंठी सि जाति तू रूप गरूर मे मूर मे हानि तौ है नहीं तेरे । वेऊ हैं सुंदर साँवरे लाल रहैं ब्रजबाल चहुं दिसि घेरे ॥ बेनी सबै बनि आवति या समै तो मन आवति है यह मेरे । दूनी बढैगी ददा की सों दीपति देंह मे नेसुकही हरि हेरे ॥१०४८

को कहि बाल गुपालहि बोधहि तो दृग बान अमान लगे री । तो हित प्यारी भये बदनाम अराम बिसार दिये घर के री॥ ठाकुर तूं न तऊ पिघली इतने पर लालन बार घनेरी । प्रीतम की सु भई गतिया छतिया कस कीन कसाइन तेरी ॥१०४९॥

मार मरोर सी डारी खरी तेंहि हाँ लगि क्यों न जियावत आनि हौ । वाको तो ज्यों तुमहीं तें बँध्यो तुम पै नहीं छोडत आपनी बानि हौ ॥ मै तो कहोई चहौं समुझाय कहा करिहौ जो कहें बुरो मानि हौ । जानो कहा तुम पीर अहीर बडे कपटी चतुराई की खानि हौ ॥ १०५० ॥

सेज परी है घरी सी भरे तनताप सों जात छुवो न दई है। डोलति बोलति है न कछू दृग खोलिबे की सुधि भूलि गई है॥ गोकुल जाति घुरी अँसुवानि सों लीक लिखी सी बिलोकि लई है। बाल की लाल दसा सुनिये वह बारि बिहीन की मीन भई है॥ १०५१॥

अजू दीजे न क्यों रति दान उन्हें तुम दानी सुने बहु दातन मे। वह मानैगी क्यों रजनीमुखी करो बीस बहाने जो बातनि मै॥ बिन देखे दिनेस तुम्हें हरि वाके बढी बिरहानल गातनि मैं। भई आतप रेत की मीन मनो दिन रैन पुरैनि के पातन मै॥ १०५२॥

प्रथमै बिकसे बन बैरी बसंत के बातन तें मुरझाई हुती। द्विजदेव जू ताहू पैं देह सबै बिरहानल ज्वाल जराई हुती॥ यह सांवरे रावरे नेहन सों अँग प्यारीन जो सरसाई हुती। तोपै दीप सिखासी नई दुलही अबलौं कब कौन बुझाई हुती॥ १०५३॥

दूबरो होबो सो दोस महा जग मै परसिद्ध सो बात रची है। मोहि तो जांनि परै है महा-

गुन मानो हिये यह जानो सची है ॥ रावरे के बिछुरे रघुनाथ बढे बिरहा सों जो देह पची है। हेरेन पावति घेरे हैं आज लों काल के हाथ सों बाल बची है ॥ १०५४ ॥

काहे कों काहू कों आपने स्याम सनेह की ज्वालन मै जरिबे है। पै यह प्रेम को पंथ अपार परे पन्यो मीच बिना मरिबे है॥ सो भजू मोहन मोहन मोहनी मोहि है कान्ह कहा करिबे है। केहूं कृपा के कटाच्छन सों बिरहातुर ताकी व्यथा हरिबे है ॥ १०५५ ॥

आए कहा कहि कै कहिये वृषभानलली तैं लला दृग जोरत। ताछिन तैं अंसुवान के धारनि तोरत जद्यपि लोक निहोरत ॥ बेगि चलौ रस-खान बलाय ल्यों क्यौं अभिमान तें भौंह मरो-रत। प्यारे पुरंदर होहि न प्यारी अबै पल आधिक मै व्रज बोरत ॥ १०५६ ॥

प्रानप्रिया अँसुवान के नीर पनारे भए बहि के भए नारे। नारे भए ते भई नदियाँ नदियाँ नद कै गए काटि करारे ॥ बेगि चलौ जू चलौ ब्रज कों नँदनंदन चाहत चेत हमारे। वै नद चाहत

सिंधु भए अब सिंधु तें ह्वैहें जलाहल सारे ॥१०५७॥

आपुन के बिछुरे मनमोहन बीती अबै घरी एक की द्वै है। ऐसी दसा इतने मैं भई रघुनाथ सुने भय तें मन भ्वैहै ॥ लाडिली के अँसुवानि कों सागर बाढत जात मनो नभ छ्वैहै। बात कहा कहिये ब्रज की अब बूडोई ह्वैहै कि बूडत ह्वैहै ॥ १०५८ ॥

मेघ जहाँ तहाँ दामिनी है अरु दीप जहाँ तहाँ जोति है भातें। केस जहाँ तहाँ मांग सुबेस है है गिरि गेरु तहाँ रँग रातें ॥ मोहन सों मिलिबे कों बलाय ल्यों मैं रघुनाथ कहों हठ यातें। होत नयो नहीं आयो चल्यो रँग साँवरे गोरे कों संग सदाँ तें ॥ १०५९ ॥

वे उत नागर नंदकुमार औ तूहूं इतै ब्रषभानलली है। जोरी बनी है दुहूं की अपूरब पूरब पुन्य की बेलि फली है ॥ जोवत हैं कब के मग ठाढे अकेले जहाँ वह कुंज थली है। बेगि न जात लजात कहा यह जाति जोन्हाई की राति चली है ॥ १०६० ॥

लेहु जू ल्याई सुगेह तिहारे परे जहाँ नेह

सनेह खरे मै। भेंटो भुजा भरि मेटो व्यथानि समेटो जु तो सुभ साध भरे मै।! संभु ज्यों आधेंही अंग लगाओ बसाओ कि श्रीपति ज्यों हियरे मै। दास भरी रस केलि सकेलि ये आनँद बेलि सी मेलि गरे मै ॥ १०६१ ॥

लेहु लली उठि लाई हों लालन लोक की लाजहुँ सों लरि राखो। फेरि इन्हे सपनेहूं न पैयत लै अपने उर मै धरि राखो ॥ देव लला नवला अवला यह चंद्रकला कठुला करि राखो। आठहूं सिद्ध नवो निधि लै घर बाहिर भीतरहू भरि राखो ॥ १०६२ ॥

ताही सों राखत प्यार बडे कछु रावरीयै चरचा जो चलावै। काँपति देहँ कटीली ह्वै आवति कोऊ तिहारो जो नाम सुनावै ॥ रैन दिना हुलसी सी रहै ठकुराइन कों कछू और ना भावै। सोई कथा कहवावति जामें कछू मजकूर तिहारोई आवै ॥ १०६३ ॥

तोहि धौं देखि गये कित ह्वै तब तें उन्ह कों कछू और ना भावत। मो घर आय लटू ह्वै लला सब आपही बैठि कै रँग बनावत ॥ चित्र बिचित्र

...हों देति हौं पै इन के मन एको न भावत । ...दै लेखनी खाय हहा हरि तेरिही सूरत ...पैं लिखावत ॥ १०६४ ॥

मोहि लगो तुम प्यारे महां मैं तुमैं रघुनाथ लखें सुख पाऊं । मेरे पैं कीजै कृपा कछू आज तो आप को मैंहूं हितून में गाऊँ ॥ नांव सुन्यो जिहिं को कहिये पहिले तिहिं को लिखि चित्र लै आऊं । देखि कै रीझो तो औसर पाय कै लाल तुम्हैं वह बाल मिलाऊँ ॥ १०६५ ॥

हार सँवारि अनेक न फूल के आई लै मालिन भौन भरे में । काहू कों स्वेत दियो उहिं काहू कों पीरो दियो रघुनाथ अरे में ॥ नीरज नील को लै कर में कह्यो राधे सों यों चतुराई धरे में । लीजियै हेत तिहारे में ल्याई हों या रंग को लगै प्यारो गरे में ॥ १०६६ ॥

केसरि सों पहिले उबट्यो अँग रंग लस्यो जिमि चंपकली है । फेर गुलाब के नीर न्हवाय पिन्हाई जो सारी सुगंध रली है ॥ नाइन या चतुराइन सों रघुनाथ कसी बस गोपलली है । पारत पाटी कह्यो फिर यों ब्रजराज सों आज मिलौ तौ भली है ॥ १०६७

वे अँगरी के छुए सिसकैं कर बार सी पातरी जो मैं चढाऊँ। दंतन दाबतीं जीभैं उतै इतै प्यारे के नैन रुखाई बचाऊँ॥ देवकीनंदन मोहि बडो दुख कौतुक होय सो काह लखाऊँ। छोडि हौं गांव बबा कि सौं मैं पर चूरीन ह्यां पहिरावन आऊँ॥ १०६८॥

कारे महा अनियारे अमोल हैं कौंल जिन्है लखि लागत फीके। बादिही वाके कहो तुम जाय हमारे तो राखनहार हैं जीके॥ आरसी लै तुम दोऊ एकंत ह्वै देखत क्यों न धों कौन के नीके। ऐसे कहा बडे नैन तिहारे हैं जैसे बडे हैं हमारी सखी के॥ १०६९॥

एक घरी न जुदी ह्वै सकै रघुनाथ घिरी गुरु लोग के फंद सों। आई सो आपने गेह लिवाय तिहारे लिये वस कै बहु छंद सों॥ बैठे कहा इत कीजे बलाय ल्यों वेगि उतै चलि भीजो अनंद सों। प्यारी को आनन पून्यो को चंद बिराजत दोऊ प्रकास अमंद सों॥ १०७०॥

बैठी हुती वृखभानलली घर धाय के छाय रही तरुनाई। गोकुलनाथ अचानक आय भए

अंखियांन के आंनददाई ॥ चाहि रहे ललनाय दोऊ लखि बोलि उठी यों लए निठुराई.। सूनो न छोडिके जाइयो धाम हों न्हाइ के आवत तेरी दोहाई ॥ १०७१ ॥

नैन के कोरन हू मै रुखाई सु भौंह मरोरनि कों लहिबो करे । पांय अंगूठन कों गुल चाइबो ऊंचे उरोजन मै सहिबो करे ॥ आइ कै फेर हहा करि कै कर पंकज सों तरवा महिबो करे । कोटिन काम कथा जसवंत सुपांयं पलोटन मै कहिबो करे ॥ १०७२ ॥

तो गुन देव सुने जब तें तब तें सुधि यों न न उन्हे उर की है । पीर नहीं पहिचानत लोग बखानत बेद बिथा जुर की है ॥ लोम चढी प्रति मोहन की मति मोह महागिरि तें ढुरकी है । थोरियै बैस बिथोरी भटू ब्रज भोरी सी बातन तें भुरकी है ॥ १०७३ ॥

सोनजुही की है जाति है लाल बनाइ कै माल किती पहिराइये । मोती के भूखन भूखिये जे पोखराज के तो सिगरे कहि ग्राइये ॥ जोवन आवत लाली सरीर मे है रघुनाथ ' कहां लों

बताइये । खौरि लगाइयें चंदन की अंग के संग केसरि को रंग पाइये ॥ १०७४ ॥

कातिकी पून्यो कों देखी कलिंदी पै पौन्हिबे कों जब मै पट दीन्हे । घूंघट के उघरे तब चारु प्रकास कलानिधि सो मुख कीन्हे ॥ ता दिन तें कछु ऐसी दसा मग मे रघुनाथ मिले मोहि चीन्हे । नावं तिहारो लै सोंह दिवाय कहैं फिरि ल्याय अन्हैबे के लीन्हे ॥ १०७५ ॥

धीरज नेकू धरो उर मै करिहौं मै सोई मिलिहै वह जातें । हौं तौ सदां संगही मै रहौं कहि देहौं बुझाय सबै कछु तातें ॥ सोय है सेज जबै हरिचंद जू चांपिहौं पांयं लगाय के घातें । आजु हों राति कहानिन के मिसि भाखिहौं रावरे प्रेम की बातें ॥ १०७६ ॥

आदित सोम कहो कबहूं कबहूं कहो मंगल औ बुध हीते । औ गुरु सुक्र सनीचर को कहिबो कबहूं मुख सों नहीं रीते ॥ मोहि न जानि परै रघुनाथ हि भेट को है दिन कौन सो चीते । आवत जात मे हारि परी तुम्है बार बतावत बासर बीते १०७७॥

तुम सों लै चली महकै मग मे हठि बूझ्यो

सुबोध के कारन कों।सु कह्यो उर अंचल राधिका के लिये जाति हौं धोय सुधारन कों ॥ सैन-काने बिकाने सकाने सुने लपटाने लगे निरवारन कों। पट रावरे स्वेद के भीजे भजे हरि लै गे गुलाब उतारन कों ॥ १०७८ ॥

लाई हौं धोय मरूं कै तिहारी सों मोहि मनो तम छाइ गयो है। बाट तें घाट लों कालिंदी के भँवरान को पुंज समाइ गयो हैं॥ हौं डरपौं कँपौं वेनीप्रबीन बिलोकत मो ढिग आइ गयो है। प्यारी दुकूलन को फल रावरे साँवरो एक बताइ गयो है ॥ १०७९ ॥

सिद्धिनि को धरि भेख गई व्रषभान के भौन जहाँ सब गाती। काहू के हाथ दयो तुलसीदल काहू के माथ बिभूति लगाती ॥ पीतम राधिके नीरें बुलाइ कै गोद में राखि करी निज घाती। गोसे कछू कहि बाँधि गई गर जंतर के मिस कान्ह की पाती ॥ १०८० ॥

लोचन लाल किये मृगछाल विभूति बिसाल लसै जटा भूरे। पूछन लागी तपस्विनि जानि गहे पग आनि तिया गन रूरे ॥ बेनीप्रबीन जु

राधिका सों कहो आवै कुटी में जु तूंग ऊधूरे। छैहैं कलेस सबै तन के मन के चहे ह्वैहैं मनोरथ पूरे ॥ १०८१ ॥

मेरी है फेरी गली बरसाने में दूसरे द्यौस को नेम गह्यो है। तातें हों चाहति जान उतै सुभलो यह औसर आजु लह्यो है ॥ ठाढे ह्वै नेकु सुनो मनमोहन बोझ हमै रघुनाथ रह्यो है। जाको कियो तन छाम चितै पल सो वहि बाम प्रनाम कह्यो है ॥ १०८२ ॥

चोप तिहारी हों जानती हौं रघुनाथ चुभी चित बीच सुनी जो। तातें हों देति मिलाय तुम्हे पर मेरी कही में सही मन दीजो ॥ बास परोस बडे बिसवास को जातें कुनाँव कढै सो न कीजो। नारि नबेली है बातन सों बसकै पहिले उनको रस लीजो ॥ १०८३ ॥

न्यौते गई जब तें नदगाँउँ सुनाउँ भयो सब कों रुचती हौ। रूप सुसीलता बेनीप्रबीन सराहि मिली सब सों उचिती हौ ॥ मोहिनी सी तुम डारि परोसिनि आपुन मोहि रही सुचिती हौ। आवति गेह बिदेह भई मनो ऐसी कछू जू कहा दुचिती हौ ॥१०८४॥

आई इतै मुसुक्याय चितै थर मेरो सुधा के समूह समोवति । रावरी बातें जो कोऊ कहै तौ लगाय टकी मुह वाही को जोवति ॥ देखी चहौ तौ रहौ कहूं बैठि सुजागत ही सिगरी निसि खोवति । रोस परोसिनी के पिय सों दिन द्वैक तें संग हमारेई सोवति ॥ १०८५ ॥

रंभा सुकेसी की मेनका की रति की अति रूप धरी रही आगे । बेनीप्रबीन तिलोत्तमा की न रमा की बिलोकि लला अनुरागे ॥ देखत राधिके तो तसवीरहि बीर की सों जनु सोवत जागे । बारहि बार निछावरि ह्वै हरि मेरे दोऊ कर चूमन लागे ॥ १०८६ ॥

पांइ झंवावति फूलन सों रची नासिका मै सिसिकीन की वोजें । सेवक भौंर झुके चहुं ओर चके चकऊ मुदी कंज की फौजें ॥ राधिके सूरति रावरी की लिखि ल्याई सरंग भरी बहु चोजें । तोसों न जानी कहा धौं मिलै मग सांवरे देखि दई मन मोजें ॥ १०८७ ॥

बोलिरी बोलि लगी अबहीं जक पौरिहूं लौं उठि जानना दीन्हे । मेरेहि जांन भई उलटी बस

हैं तुम हीं कहिबे कहूं कीन्हे ॥ जो पै इतो दुख पावती हौ तलफैं दृग मीन मनो जल झीनें। तौ कत छाडति हौ छिन एक रहौं किन चित्र ज्यों हाथ ही लीन्हे ॥ १०८८ ॥

चातुर ह्वै अति आतुर होहु न बात सयान की जात क्यों चूके। ऐसे अठानन ठानत हौ कत धीर धरौ न परौ ढिग ढूके ॥ देखि जियो न छुवो घनआनँद कों बरे अंग सुजान बधू के। चोली चुनावटि चिन्ह चुभैं चपि होत उजागर चिन्ह बुतू के ॥ १०८९ ॥

मेहँदी के मिस गाँव के बाहर मालिन आपने बाग मे ल्याई। गोकुलनाथ जू आय गए चलि देख दुहून महानिधि पाई ॥ या बिधि बोली उठी लखिये यह कैसी बनी है घनी फुलवाई। ल्यावति हौं फल फूल तुम्हे तब लौं करि लेहु जू नेह निकाई ॥ १०९० ॥

पूजन जों हरि बासर चाहती बेनीप्रबीन किये रहौ आसा। आई बतावन हों तुम्हे राधिके लीजिये जानि न कीजिये सासा ॥ साँझही पाइहौ मेरी भटू मिलिहै नहीं जो रबि के परगासा।

कालिंदी के तट ऊँचे कराल करील कदंब तहाँ पिय बासा ॥ १०९१ ॥

मलिका बलिका हम जानै रचै कलिका फल-फूल जुहावती हैं। नख ते सिख लौं उन के गुन की गुनि बैस की बात बतावती हैं ॥ जेहिं रीझ में सेवक राधे इहाँ मनिमाल की मौजनि पावती हैं। गहने तुम्हे मौलसिरी के सुंधे हरि जी के गुंधे पहिरावती हैं ॥ १०९२ ॥

कबहूं सुचि दीप कलीसी लगै कबहूं बर चंपक माल नवीनी। भौंहन मैं सब सौंहैं करै पुनि नैनन कंजन की छबी छीनी ॥ ओठ निछावरि विद्रुम है जु चतुर्भुज या उपमा लखि लीनी। केसरि की रुचि कंचंन रंग सिंगार के रूप की मंजरी कीनी ॥ १०९३ ॥

नंदकुमार गुलाब को फूल दियो मोहिए जू लग्यो निज बागे। प्यारी के रंग मिलै अँग अंग मिलै नहिं प्रेमजू क्यों सम लागे ॥ यों तरुनाई की आनि छई अरुनाई अपूरब जोति के आगे। ताब रही नहीं नेकु दबी है गुलाब की आब गराई के आगे ॥ १०९४ ॥

चौंसर चारु चमेली के फूल को मैं बहु भाँति सँवारि कै आनो। सो पहिर्‍यो गुन गौरि धुरंधर कंचन से तन मैं मन मानो ॥ ह्वै गयो सोन-जुही को सो हार सुअंग के रंग मैं भेद ना जानो। दंतन की दुति के परतै वह फेरि चमेलियै को ठहरानो ॥ १०९५ ॥

बेलि हरी भई फूलनि सों चुरै चारु चमेलिन की छबि वारी। बावरे खंजन कीर कपोत मयूर मलीन ते पंख पसारी ॥ मालिनि की या बिनै गुनि कै लछिराम करो किन आनंद भारी। सींचन वारे सुनो घनस्याम सनेह मई मुरझाति है बारी ॥ १०९६ ॥

एडिन मीडि पखारि दोऊ पग जावक रंग रंगे मनमाने। बेनीप्रवीन रचे सुचि केस सुगंध कपोलन लौं करआने॥ बावरी सी भई रीझि सखी लखि ऐसे कछू चतुरापन ठाने। मेरोई रूप धरो मनमोहन तेरी सों राधिके तूं नहीं जाने ॥ १०९७ ॥

गेल वहे उनहीं की चली बडी बेर लौं बातन हीं बिरमावत । तू धनि है धनि यों कहि कै

गहि के कर मेरे हिये मै लगावत. ।। मेरियै कौंगही मोहि पै लै सिर मेरे ही कैतिको ब्यौंत बतावत । आयो चहौं जबही इतहौं तब बेनी बनावन मोहि सिखावत ॥ १०९८ ॥

मोहन की छबि चातुरी चोप सु नायक री बस बेनी बनावति । गोकुलनाथ के अंग के रंग सों नील निचोल कह्यो पहिरावति ॥ लाल को भाल भरें तौ भली रंग ऐसो कछू अंगुरीन पैं छावति। चोप चढी ठकुराइनि सों कही नाइनि पाइन जावक लावति ।। १०९९ ॥

बारहू तें है मिहीं जसवन्त मिलावटहू पै परैं छबि छूटी । मोहि है मोहन कों कर मै परिपूरन कै करिहै रस लूटी ॥ ऐसिही लागि हैं नीकी बधू बलि जैहें सबै व्रज की ये बधूटी । जैसी सुहावन लागत हेरि हरी चुरियान मै हेम की बूटी ॥ ११०० ॥

तैसिही लाई हरे रंग की अंग की दुति पन्नन की जु हँसैहै । तैसिही ऊदी उदै ह्वै रही बंद बैंगनी मे कहौ कैसें लसै है ॥ बेनीप्रबीन जू तैसी सबै पहिरावंत मे कहि बैन रसै है ।

चूरी ये स्याम सदा पहिरो चुनि जानत हौ मन स्याम बसैहै ॥ ११०१ ॥

रीझि रहौगे लला लखिकै सिगरो तन सूछम तौल छ मासे । नाहीं नहीं नजकै ससकै सुनचै कर देहुं धरे सुखमा से ॥ वे दृगदीरघ दोऊ महा चतुराई निकाई की जोरें जमासे । जात कहे न करै वह प्यारी चुरी पहिरावत जैसे तमासे ॥ ११०२ ॥

आवति हौं नँदगांव तें भोरही सीधी चली मै फिरी चहुं कोद ना। लीजै गोदाय कृपा करिकै द्विज भावै सो दीजै जू खोद बिनोद ना॥ जानति हौं मै अनेकन रंग के को धन जाहि गोदाय प्रमोद ना ॥ पै भुज रावरी गोरी लसै सुभ सुंदर स्याम अपूरब गोदना ॥ ११०३ ॥

पानिप मोती मिलाय गुही गुन पाट पुही सो जुही अभिलाखी । नीके सुभाय के रंग भरी हितजोति जरी न परे कछू भाखी ॥ चाह लै बांधी है प्रीति की गांठि सुहै घनआनँद जीवन साखी । नैननि पानि बिराजत जानी जु रावरे रूप अनूप की राखी ॥ ११०४ ॥

गोरी मिलै तन स्याम सों-तौं अति खूबी बढ़ै-बरसै रस बूंदे । कौन बखान सकै जसवन्त उठै अंग आनंद की अति दूंदे ॥ साखी सबै वृज के यहिं राखी के मोहन कों चित चाय सों गूंदे । पीरियै डोरियै कैसी सुहात है स्यामली सुंदर पाट की फूंदे ॥ ११०५ ॥

मै गथलाय करोरिन गांठि कै कीन्ही बनाय तयार पतीजे । देखि कै रीझिये जौ रिझवारहौ दीजिये साहेब दारिद छीजे ॥ हे रघुनाथ है वादो कछू नहिं चित्त कों नेकु दु चिन्त ना कीजे। चाहत जोई बनाव की सोई घरी पल मै पहुंची अब लीजे ॥ ११०६ ॥

मै गथलाय करोरिन गांठि कै कीनी तयार बनी सुचि सी है । रावरे रेसम की जेहिं भांति की चाहत तैसियै रंग रली है ॥ गोकुल लागत ही कर मे लखि रीझि हौ ऐसी बनी छबि की है । लाल कृपा करिये हमरे वह आय कै लेहु अहो पहुंची है ॥ ११०७ ॥

जो कछु गांठि सुरी की परी सुरझाई भले बिधि सा हरि हांल है । काह बखान करौं अवरे

सम है दुति सुंदर रंग बिसाल है ॥ पुंज प्रभा नख तें सिखलों मन लाय गुहे ओहिं बार रसालि है । पाय हो लाल वही परबाल कों जो मन भावति मंजुल माल है ॥ ११०८ ॥

चुनि जोरि बटोरि धरे सिगरे झिगरे किये भेद बतावती हैं । तुटि तंतु ए भूखन के इन सों बहु सेवक जीव जियावती हैं ॥ चिरुजीजियो राधे इतै उत वै पटहारी जहां सुख पावती हैं । तुव मैल के भीजे सनेह सने हरि कों दै घने धन लावती हैं ॥ ११०९ ॥

सखियां लडबावरी रावरी हैं तिनकी मति मे अति दौरती क्यों । छिन मे कहि बेनीप्रबीन मलीन कै नाहक भौंह मरोरती क्यों ॥ हम जोरती बीर मरूं करिकै फिरि हार कहो झकझोरती क्यों । अति कोमल लाल अमोल अनूप लरी तुमरेसम तोरती क्यों ॥ १११० ॥

पाग है आई अनेक इहां मन मैलो करो कछु ना हम कांधें । साहज है नहीं बेनीप्रबीन लला यह रंग रसाइन नाधे ॥ सांझ समै वा रहे रफ भानु की ता समये की सुखाइबो साधै । आतुर

हूजिये ना बलिजौउं तिहारे लिये हरि बांधनू बांधे ॥ ११११ ॥

देखे अदेखिन के दिल कों तिलबेर बिना घरियारी करौं। मुख सेवक लाली बढै तुमरे रुचवाइनि के करियारी करौं ॥ कहूं और कहूं रंग औरै करै इतनी बल की बरियारी करौं । रुख रावरे को लखि पाऊं कहूं चुनरी मै चुनी हरियारी करौं ॥ ११११२ ॥

मो सों कही ही कृपा करि कै यह सूही बनाय कै ल्याइये प्यारी। आइ गए कित सों कहि कौन की मै सहजेहीं दई कहि थारी ॥ गोकुलनाथ न मानी कही रंग नील सों आपने हाथ संवारी। बिज्जु से औंग पै रीझि करैगी अरी घन की घटा सी यह सारी ॥ १११३ ॥

कारीगरी मै करी बहुतै नजरी गई तौ कछुवै न भलाई। जानत हौ तुम मोहनलाल सुनारि अनारिनि क्यौं ठहराई ॥ रीझ की बेनीप्रबीन भई मन खीझ की बात गई न कन्हाई । लइये हीरा अमोलिकलाल अबै पहुंची तुरतै बनिआई ॥ १११४ ॥

कंठ लगो हरि के तुम यों कहि मै जब कंठ-सिरी पहिराई । देहँ कंपी सिगरी तबही अरु ह्वै जरदी मुख ऊपर आई ॥ नीके मे ह्वै गयो आनि कहा धौं यहै सबही के भई दुचिताई । नोक गडी कहुं मैं हूं यहै कहि प्यारी तिहारी की बात छिपाई ॥ १११५ ॥

जाइ कहै न हमारी दसा, कबहूं तो अरी करि दै मन भायो । यों कहि प्यारे पठाई उतै अरु व्यौंत कछू गहने को बतायो ॥ कान तर्‍यौना लगी पहिरावन त्यौं ढिग जैबे को औंसरु पायो । हांसी की बात कछू कहि नारि सुनारि सनेसो पिया को सुनायो ॥ १११६ ॥

दारि गली है भली विधि सों बहु चाउरहै गो सुगंध भरौ जू । देखि बराबरी रीझि रहौगे सुपापरि पूरी करी न डरौ जू ॥ है तरकारी सवाद भरी बनि गोरस सेवक भूख हरौ जू । सौंधी सलोनी सुधासी रसीली सुकंत एकंत मैं भोग करौ जू ॥ १११७ ॥

बेसनी रावरे सुद्ध सनेह की पूरी पकाय बनाय लखाइहौं । रीझ रहौगे बराबरी देखि कढी रस

वारी तुमै परसाइहौं ॥ धीर धरो न उतावले होउ सुमेरहरी मै नहीं कनखाइहौं। चाहत जोई रसोई मै सोई रसोइन मै रस राखि चखाइहौं ॥ १११८ ॥

पातरी बात नहीं दुनियाँ की सनेहनि दीप दसा सी जरावति। खीलनहीं से चुभै उरबैन रंगीलन की सुनतै बनि आवति ॥ सेवक स्याम सों राधिके तूं सिकवो सुनि ऊतर क्यों न बतावति। बावरे बावरी मोहि कहैं की मसाल कों काहे मसाल दिखावति ॥ १११९ ॥

जानती हों कि अबार भई तम पुंज को कुंज मै फैल्यो प्रभाऊ। रावरे कारजही मै रही द्विज आई बनाय के जाय अगाऊ ॥ भूखित है पट भाँति अनेक सनेह मई तुम कों दरसाऊ। धीरज नेक गहो जो लला तो अबै वह बाल मसाल मै लाऊ ॥ ११२० ॥

देखिये सूधे चुनौतिय मे सुभ राख्यो है मैं केहिं भाँति सँवारे। चारु सुगंध की खानि कथा कहिये रघुनाथ महा गुन धारे ॥ चाहत जैसिये तैसिये लाइहौं स्वच्छ सुप्यारी जु हेत तिहारे।

कीजिये लाल कृपा इतहीं नित लीजिये आय के पान हमारे ॥ ११२१ ॥

केसी कहो मुख मे लगी माधुरी एला लवंग सुवास बसी है । कौने रची रची बेनीप्रबीन यौं मोहि वतावत होत हँसी है ॥ जानि न लीजे सुजान वडी गरें केसी कुसुंभित पीक धँसी है । आजु की बीरी बलाय ल्यों बार लखो अधरान मे कैसी बसी है ॥ ११२२ ॥

नैन बचाइ चवाइन के छन रैन मे ह्वै निकसो यह टोली । लौटि मिलैंगे जबै घर के नहिं भूलिहै सेवक भाँवती भोली ॥ देखि तुम्हे छतिया फरकी त्यों तनी तरकी दरकी कछु चोली । आपने पी की नुहारि निहारि बिचारि के तो सों मरूं करि बेली ॥ ११२३ ॥

माय गई उपनंद के भोन न धाय इहाँ सजनी अपने घर । लेसे को दीप दिनेस न दूसरो सूनो निहारि महा मन मे डर ॥ द्वार मे अंध पऱ्यो दरवान सुनै नहीं कान मऱ्यो जनु भूपर । आइ इतो न पुकारिये कान्ह है आन इहाँ कोऊ देन को ऊतर ॥ ११२४ ॥

हार हिये प्रफुला को लसै बची बेंदी दिये सन की सुकुमारी । पीन पयोधर पातरो लंक करे बडडी अँखियाँ कजरारी ॥ गोकुलनाथ बिलोकि कह्यौ अजू राखती हौ कहा धान की क्यारी । बाल कही मुसकाय घनी घन की घटा सी यह ज्वारी हमारी ॥ ११२५ ॥

ता दिन तें कछू ओर सोहात न ऐसे लटू ह्वै रहे मनभावन । बूझो करैं नित तेरियै बातैं न देत कहूँ कबहूँ इत आवन ॥ मो तन दीठि कियें रिसि की तूँ लगी सिसकीन के सोर मचावन । कान्ह कहूँ दुरे देखत हे हौं लगी जब तोहि चुरी पहिरावन ॥ ११२६ ॥

जाके मिलाप कों सोचत हौ करि मोचत हौ जू अनेक उपावन । ताही के धाम सों हे रघुनाथ हमें एक आई है बाम बुलावन ॥ भेष धरो तिय को हिय साध जो चाहत रूप लख्यो ललचावन । साथ चलो वहि बाल के लाल हौं कालिह चलौंगी चुरी पहिरावन ॥ ११२७ ॥

मै जब तें गोदना गई गोदि अहो ठकुराइन बाँह मे तेरी । ऐसी दसा तब तें यहि गाँव मे

देन न पाँवों गलीन मे फेरी ॥ भेट भई जितहीं रघुनाथ सों सोंह दै कै तितहीं उन घेरी । हाथ सों हाथ गहैं पल द्वै रहैं आँखि सों लाय कै आँगुरी मेरी ॥ ११२८ ॥

जैसो कछू उन को है सरूप सो तैसो कछू तबहीं जू पतीजो । सूने कहेतें बहोत कहा तब हीं कछू भावे तो रीझि कै दीजो ॥ आज ही मोहि मिले रघुनाथ कह्यो है कि रंग तयार तूँ कीजो । तातें रँगावन आवैंगे पाग तूँ झाकि झरोखें उन्हें लखि लीजो ॥ ११२९ ॥

जैसेंहीं पोहि धरे ठकुराइन मोती के ये गजरा चटकीले । तैसेंहीं आय गये रघुनाथ कह्यो हंसि कौन के हैं ये फबीले ॥ नावँ तिहारो दियो कहि मैं तो उठाय लिये सुख पाय द्वै ढीले । आँखि सों लाय रहे पल एक रहे पल छाती सों छाय छबीले ॥ ११३० ॥

कान्ह हीं चेरी बनाय कै संभु गई बृषभान के भौन गोसाइन । या सुनि कै जुरि आईं सबै अरु डारीं सहेलिन राधिका पाँइन ॥ लाय लिलार बिभूति कही इमि हौं रचिबे कछु ऐसी

उपाइन । याहि इकंत लै मंत्र जपै यह होय सबै ब्रज की ठकुराइन ॥ ११३१ ॥

आवतहीं उठि आदर कै सिगरीं मिलीं दौरि की सिद्धिनि आई । काहू के गांत मे हाथ दियो पढि काहू के माथ बिभूति लगाई । बैठि गई मृग-छाला बिछाय कै राधिकै आपने पास बुलाई । श्रौन समीप ह्वै गोद मै राखि गोसाँइन गोसे की बात सुनाई ॥ ११३२ ॥

देती हौ धोइबे कों तबहीं फिरि माँगती हौ करि भौंहँ तनैनी । क्यौं तौ वै बीचहीं लेहिं छुडाय सुगंधन रीझि रहैं मृगनैनी ॥ धोय तौ देहुँ जो धोवन पाऊँ लखी उनकी मै बिलोकनि पैंनी । राखत लै लैं लगाय हियें कबहूँ अँगिया कबहूँ उपरैंनी ॥ ११३३ ॥

मइलो करि डारत पीट पटै घर जान ना पैये बुलावनो धावत । लाल हू मैलो ह्वै जात सदा अरी बारही बार सनेह लगावत ॥ औरन सों बरु लीजे धोवाय हमै नृपसंभु जू धोय ना आवत । तूँ कलपावति साँवरे रंगन साँवरो रंग नहीं कलपावत ॥ ११३४ ॥

आज हौं राखौंगी स्वाय उन्है रघुनाथ कृपा निसि मेरे करोगे । मै उठि जाउँगी छोडि कै पास जगाय कै सेज पैं पाँय धरोगे ॥ धायहौं देति सुभाय कहे कछू भौंह चढाय लखें न डरोगे । लाज भरी है सकैगी न बोलि निसंक नवेली कों अंक भरोगे ॥ ११३५ ॥

एकही सेज पै राधिका माधवै धाइ लै सोई सुभाय सलोने । पारै महा कबि कान्ह कों मध्य में प्यारी कह्यो यह बात न होने ॥ ह्वैहौ न साँवरी साँवरे के संग बावरी तोहि सिखाई है कोने । सोने को रंग कसौटी लगै पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोने ॥ ११३६ ॥

आई है साँझी कों तोरन फूल तोरावति ठाढी सखी छबि रास तें । बेगि उतै चलि देखो बलाय ल्यौं हे रघुनाथ लग्यो मन जास तें ॥ भौंरन की लगि भीर रही अरु भीर चकोरन की जिहिं आस तें । भीतर बाग के सोभित होति है मालती खास तें प्यारी प्रकास तें ॥ ११३७ ॥

फैलो सुगंध रहै चहुँघाँ अलि पुंज घिरी मनि माल जुही सी । फूल भरी अंग पूरो पराग परे

रस रूप की चारु फुही सी ॥ गोकुल ऐसी करी है तयार मै कै चतुरापन चाव छुही सी ।. देखियै तौ चलि बाग मे लालन कैसी लसै वह सोन-जुही सी ॥ ११३८ ॥

आधिक सिद्धि करीही किए ते मै आय गये धौं कहाँ तें कन्हाई । कौन की आंगी है मो तें कही मैं उन्है सहजे हीं तिहारी बताई ।। छीन लई कर तें रघुनाथ मै सोर कियो कितनी अन-खाई । छाती सों लाय वे लै गयेँ वा दिन दे गये आजु तौं सीकै लै आई ॥ ११३९ ॥

आपु दई तनी टाँकिबे कों हरि भोरहीं आय गये धौं कहाँ तें । कौन की आंगी है मोतें कही सुनि रावरे की हठि लीन्ही हहा तें ॥ गोकुल फूलि पसीजि उठे बडी बार लों लाल रहे हिय-रातें । भीजि गईही सुखावत मोहि अबार भई ठकुराइनि यातें ॥ ११४० ॥

आजु कहूँ खिरकी सों सुनो हिर की मुख जोति गलीन मे बाढी । गोकुलनाथ बिलोकि लई छबि ता दिन तें बिरहागिन डाढी ॥ दासी बिचारि कै रावरे की यह मोसों बिनै की परंपरा काढी ।

वाही झरोखे के पास कृपा करि कै कबहूँ फिर होंहिंगी ठाढी.॥ ११४१ ॥

इत फूलन को बिनिबो ठहराय लेवाय लै दूती मिलाय दई । नँदलाल निहारि निहाल भये बर चंपक माल सी बाल नई ॥ कर तें छुटि भागी दुरी पग द्वै बलि पै न चली कछु चातुरई । हरि हेरे न पावत भाँवती संभु कुसुंभ के खेत हेराय गई ॥ ११४२ ॥

राधिका के परषाल से हाथन लाल रही घिरी लाल लुनाई । देखतहीं बनि आवत कान्ह कहा करिये कबि संभु बडाई ॥ लाली लसै अंगुरीन के बीच तहाँ नख चंदन की छबि छाई । कोपन की अरुनाई मे आनि मिली मनो कोचिन बीच जुन्हाई ॥ ११४३ ॥

बायु बहारि बहार रहे छिति बीथी सुगंधन जाती सिंचाई । त्यौं मधु माते मलिंद सबै जय के करखान रहे कछु गाई ॥ मंगल पाठ पढैं द्विज-देव सबै बिधि सों सुखमा उपजाई । साजि रहे सब साज घने बन मै रितुराज की जानि अवाई ॥ ११४४ ॥

जानतही न बसंत को आगम्म बैठीही ध्यान धरें. निज पीको । एते मै कानन ओर सों आय कै कानन मे पऱ्यो बोल पिकी को ॥ हे रघुनाथ कहा कहियै कहि आयो हा आयो गरो भरि ती को। लोचन बारिज सों अँसुवा को अथाह बह्यो परवाह नदी को ॥ ११४५ ॥

कैसे हैं कुंज के सुंदर फूल बिराजत पात जराव जऱ्यो सो । यामे तौ आवत पावत हौ पति की रतिकेलि को रंग धऱ्यो सो ॥ आयो बसंत बयारि बहै अब तो यह देखिये गो उभऱ्यो सो । सोचत ही पुनि पात गिऱ्यो मुख ह्वै गयो प्यारी को पात झऱ्यो सो ॥ ११४६ ॥

कहुँ चैत की चाँदनी मे सतभामा के स्याम सिधारे निहोरन मै । गई आधिक जामिनी बीत तऊ तईमानी न मान मरोरन मै ॥ कबि सोभ जू नैनन नीर बहै कहै बैन मनोरस चोरन मे । कबधौं बन घोरि हैं ए मुरली बरसाने की साँकरी खोरन मै ॥ ११४७ ॥

मिलि माधवी आदिक फूल के ब्याज बिमोद लवा बरसायो करैं । रचि नाच लता गन तानि

बितान सबै बिधि चित्त चुरायो करैं ॥ द्विजदेव जू देखि अनोखी प्रभा अलि चारन कीरति गायो करैं। चिरजीवो बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूनन की झरि लायो करैं ॥ ११४८ ॥

फूले घने घने कुंजन माहँ नए छवि पुंज के बीज वए हैं । त्यों तरु जूहन मे द्विजदेव प्रसूनन एई नए उनए हैं ॥ साँचो किधौं सपनो करतार बिचारत हू नहीं ठीक ठए हैं। संग नए त्यों समाज नए सब साज नए रितुराज नए हैं ॥ ११४९ ॥

सोंधे समीरन को सरदार मलिंदन की मनसा फल दायक। किंसुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालन हूं को मनायक ॥ कंत अनंत अनंत कलीन को दीनन के मन को सुख दायक । साँचो मनोभवराज को साज सु आवत आज इतै रितुनायक ॥११५०॥

फूलि रहे बन बाग सबै लखि फूलनि फूलि गयो मन मेरो । फूलनिही को बिछावनो कै गहनो कियो फूलनिही को घनेरो ॥ लाल पलास नए चहुँओर तें मैन प्रताप कियो घन घेरो । रावें यों फूलैं फैलाय फैलाय कियो रितुराज ने मानहुँ डेरो ॥ ११५१ ॥

सुंदर सोहै सुगंधित अंग अभंग अनंग कला ललिता है। तैसी किसोर सुहात सुजेम्मिनी भोगिनीहू कों मनोहरता है॥ संग अली अवली रबि राजत अंग रसीली बसीकरता है। कोमलता जुत बीर बसन्त की बेहर की बनिता की लता है॥ ११५२॥

सेवती सोनजुही थल पुंज पैं कंजकली अलि गुंज सी माँचै। बैठी कहा भृकुटीन कों ऐंठि कै सोर सुन्यो रितुराज को साँचै॥ फूलन फौज धमार धुकार हकारत कोकिल कीर कुलाँचै। बाचैं न बीर मवासे कहूँ अब नाचे बनैगी बसन्त की पाँचै॥ ११५३॥

फूले अनारनि पाँडर डारनि देखत देव महा डर माँचै। पाखुरी झौंरनि आम के बौरनि भौंरनं के गन मंत्र से बाँचै॥ लाय उठै बिरहागिनी की कचनारन बीच अचानक आँचै। साँचे हँकार पुकारि पिकी कहें नाचे बनैगी बसन्त की पाँचै॥ ११५४॥

फूले रसाल की डारिन बैठि अली कुल झूमि झुकैं मेडरात हैं। बेनी जू कोकिल कूक कपोतन

ए.उरझे लतिकान मे पात हैं ॥ सीतल मंद सुगंध समीरऊ पी मधु चंद अनंद मे गात हैं। याम हिमन्त बसन्त के ए गुन मान किला लख ते छुटि जात हैं ॥ ११५५ ॥

देखतही बन फूले पलास बिलोकतही कछु भौंर की भीरन। बावरी सी मति मेरी भई लखि बावरी कंज खिले घटे नीरन ॥ भाजि गयो कढि ग्यान हिये तें न जानि पय्यो कब छोडि कै धीरन। अंधन कौन के लोचन होंहिं पराग सने सरसात समीरन ॥ ११५६ ॥

अति लाल गुलाल दुकूल ते फूल अली अलि कुन्तल राजत है। मुकता के कदंब सु अंब के मौर सुने सुर कोकिल लाजत है ॥ मखतूल समान के गुंज छरान मे किंसुक की छबि छाजत है। यह आवन प्यारी जु की रसखान बसन्त सी आज बिराजत है ॥ ११५७ ॥

बारन भौंर कुमार भजैं पुहुपावली हास बिलासहि पूजत। पाठ कियो करैं आठहू जाम सु बोलनि सीखन कोकिल कूजत ॥ वै घनआनँद जान छए.तकि यौं छबि आन क्यौं आँखिन

छूजत । एरी बसन्त. नवावत कंत सु जानि कै मान मई कत हूजत ॥ ११५८ ॥

सेवती गंध छके अलि गुंजत कुंजन मै रस पुंज भरैगो । फूलि उठै जक नाहीं परै कल कोकिल को गन कूक करैगो ॥ कोऊ न बीर सहै तन पीर मनोज के तीर सों धीर धरैगो । तोहि बसन्त हसन्त भटू उठि अंतहू कंत बिनान सरैगो ॥ ११५९ ॥

बन्दनवार बंधे सब के सब फूल की माल न छाजि रहे हैं । मैनका गाइ रहीं सब के सुर संकुल ह्वै सब राजि रहे हैं ॥ फूल सबै बरसैं द्विज-देव सबै सुख साज को साजि रहे हैं । यों रितु-राज के आगम मै अमरावती को तरु लाजि रहे हैं ॥ ११६० ॥

नागर से है खडे तरु कोऊ लिये कर पल्लव में फल फूलन । पावडे साजि रहे हैं कोऊ कोऊ बीथिनि बीच पराग दुकूलन ॥ फूल झरैं द्विज-देव को ऊपर काननं माह कलिन्दिजा कूलन । आगम में रितुराज के आज सबै बिधि खोय सबै निज सूलन ॥ ११६१ ॥

डोलि रहें बिकसे तरु एकै सु एकै रहे हैं नवांइ कै सीसहिं । त्यों द्विजदेव मरन्द के ब्याज सो एकै अनन्द के आसू बरीसहिं ॥ कौन कहै उपमा तिनकी जे लहेई सबै बिधि सम्पति दीसहिं । तैसई ह्वै अनुराग भरे कर पल्लव जोरि कै एकै असीसहिं ॥ ११६२ ॥

गूंजैंगे भौंर पराग भरे पर गूंजैंगी कोकिल बेसुर गाय कै । फूलैंगे केसू कुसुंभ जहाँ लगि दौरैगो काम कमान चढाय कै । पौन बहैगी सुगंध ममारख लागैगी हीमै सलाक सी आय कै । मेरो मनायो न मानैगी भाँवती ऐहै बसन्त लै जैहै मनाय कै ॥ ११६३ ॥

आयौ बसन्त तमालन तें नव पल्लव की इमि जोति जगी है । फूलि पलास रहे जितहीं तित पाटल रातेहि रंग रँगी है ॥ मौरि के आँमन सार मई तिहिं ऊपर कोकिल आनि खगी है । भागन भाग बचो बिरही जन बागन बागन आगि लगी है ॥ ११६४ ॥

आम के मौर धरे तुररा रितु किंसुक की अल-फीन सुहायो । धूम परागन की कफनी अलबेलिन

सेलिन सों छबि छायो ॥ कंज सखा करि किस्ति लिये अरु कोकिलें कूक अवाज सुनायो । प्रान की भीख बियोगिनि पैं रितुराज फकीर ह्वै माँगन आयो ॥ ११६५ ॥

आयो बसन्त दुहून्त सखी घर आए न नाह न पाए सँदेसे । कोकिल कूकि उठी चहुं ओर तें हूकि उठी हिय लूक सो लेसे ॥ याही तें जीय डरै मधुसूदन जाति नहीं बन वाही अँदेसे । फूलि पलास रहे जितहीं तित लोहू भरे नख नाहर कैसे ॥ ११६६ ॥

कछु और उपाव करै जनि री इतने दुख सों सुख है मरिबो । फिरि अंतक सो बिन कंत बसंत सु आवत जीवतही जरिबो ॥ बन बौरत बौरी ह्वौ जाउँगी देव सुने धुनि कोकिल की डरिबो । जब डोलिहैं औरै अबीर भरी सु हहा कहि बीर कहा करिबो ॥ ११६७ ॥

फूले गुलाब कियारिन कोरन लोनी लवंग लता उरझाई । वैसे चकोर चहूँ दिसि कोकिल भौंर समूहन गुंज सुनाई ॥ बंदनवार बँधे तरु पुंजन कुंजन फूलन सेज सोहाई । अनंद आन भई सब

के सुनि के रितुराज की आज अवाई ॥११६८॥

डोलें सुगंधित बाय चहूँ बन ये तरु पुंज कुसुंभ बिछावत। वैसे बिहंग उमंग भरे जयपत्र पिकावलि कूकि जतावत ॥ है सरदार मनोभव फौज को साज नये छितिपाल सजावत। बौर रसाल को मौरधरे यह ठाट ठटे रितु ठाकुर आवत ॥११६९॥

कोकिल बोलि उठी एक बारही भौंर समूह लगे मिलि गावन। धीर समीर सुगंध सने बिकसीं लतिका उर मोद बढावन ॥ कीर चकोरन सोर करो छितिपाल अनंग दसा दरसावन। कंज रसाल बिसाल खिले सुनि के हुलसे रितुराज को आवन ॥ ११७० ॥

मन्द दुचन्द भए बुध वैनहिं भाखि सकै कबिहूँ कबितानन। आइ लजाइ चलेई गए गुरु आपनो सो लिए आपनो आनन ॥ कौन प्रभा करतार बखानिहै मंगल खानि बिलोकि कै कानन। सीस हजार हजार करैं पै न पार लहैंगे हजार जु आनन ॥ ११७१ ॥

अति फूले बिसाल रसाल घने तक डाली पलासन आगि लगी। अलि गुंजैं उमंग भरे रस

माते लता चहुँघा बिगसाइ जगी ॥ अरबिंदन तैं मकरंद चुवै छितिपाल अनैग अनी उमगी। अनुसासन पाइ महीपति को मधु लै ब्रजमंडल ठान ठगी ॥ ११७२ ॥

सीतल मंद सुगंध सदाँ सरदार सराहन जोग नवीनौं। चैत निसा चित चेतन चंद चढो चख चारु चकोर नवीनों॥ ठान सयान नहीं सजनी यह जान अयान पनों रँग हीनों। बैठि कहा पछितात अरी जब खेत चिरैयन नें चुनि लीनो ॥११७३॥

चीर चुनो चुरियाँ चटकील चलैं चुप चातुर चाल चयाकें। ऊँचे उरोजन पै अँगिया सरदार हिया बिछिया चमकाकें॥ हार निवारि निवारन काज सु साज सबै सुखमा सरसाकें। पूजन आज कहै गन गौरि को नंद की पौरि घरी घरी आकें॥११७४॥

संग सखी के गई अलबेली महासुख सों बन बाग बिहारन। बाढे बियोग बिलास गए सब देखत ही वे पलास की डारन॥ जानि बसंत औ कंत बिदेस सखी लगी बावरी सी ह्वै पुकारन। च्वै चलिहैं चुरियाँ चलि आवरी आँगुरियाँ जन लाव अँगारन॥ ११७५ ॥

किंसुक झार कुसुंमित डारि दै झार बयार बहै जो गवारन। आग लगी है-कहू बिन काज न मैहूँ सुनी समुझीं रितुराजन॥ तेरी सों तोहि डरौं मै मवारक सीरी करौं सखी दै जलधारन। ह्वै चलिहै चुरियाँ चलि आवरी आँगुरियाँ जन लाव अँगारन॥ ११७६॥

आयो बसंत अली बन तें अलि के गन डोलत डंक पगारन। कामधुजा किसलै उमगी बन कोकिल के गन लागे पुकारन॥ ऐसे मे कैसे बचैगी ममारक आज किये हैं सती के सिंगारन। दौरि पलास की डार चिता चढी झूमि पड़ें निर-धूम अँगारन॥ ११७७॥

भावे भरी रस आवे छकी सु छकावे री नैन सो नैन हिलावे। गावे हिंडोल बजावे मृदंग हँसावे हँसे सुर ताल मिलावे॥ छावे गुलाल रचावहि रंग सखी सुख बीच सुगंधनि लावे। रीझ रिझावे अनंग जगावे बिहारी को प्यारी बसंत खिलावे॥ ११७८॥

गुंजत भृंगनि कुंज के पुंज सरोजन सौरभ की सरसाई। गंगहि प्रानपती को पयान भरों

केहि भाँति बियोग दसाई ॥ बोलत कोकिल बाद बसंत बसंत के बासर सो न बसाई । चैत की चाँदनी के चितये कहु कैसे कै छोडैगो काम कसाई ॥ ११७९ ॥

बीतन लागे बसंत के बासर औध की आस अजौं अभिलाखो । मंडन ए इतने सगराम पियारे की सीखन तीखन नाखो ॥ छीन भई तन भौं तन अंतर दाह निरंतर को न सभाखौं । दाहन भार अगार की आगि रुइ मे लपेट कहाँ लग राखौं ॥ ११८० ॥

फूले घने तरु जाल बिलोकि हुते कछु सूने सुभाय ससेरी । आगि सी लागीं पलासन देखि तऊ भय सों कहूं भागि बचेरी ॥ छूटे सचान से ये अब तौ द्विजदेव चहूंदिसि कोकिल बैरी ॥ कै है कहा सजनी अब धौं बचिहै किहि भांति सों प्रान पखेरी ॥ ११८१ ॥

आहि कै कांपि कराहि उठी दग आसुन मोचि सकोचि धरी है । लै कर कागद कोरी लला लिखिबे कहूं बैठी बियोग कथा स्वै ॥ ऐसे में आनि कहूं द्विजदेव बसंत बयारि कढी तितही

ह्वै। बात की बात में बौरी तिया अरु पीत ह्वै पाती परी कर तें च्वै ॥ ११८२ ॥

बौरे रसालन की चढि डारन कूकति कैलिया मौन गहै ना । ठाकुर कुजन पुंजन गुंजत भौंरन को चै चुपैबो चहै ना ॥ सीतल मंद सुगंधित बीर समीर लगे तन धीर रहै ना। ब्याकुल कीनो बसंत बनायकै जायकै कंत सों कोऊ कहै ना ॥ ११८३ ॥

आयो बसंत दहंत सखी घर आये न कंत न पाये सँदेसन। संभु कहै पथिकाये सबै अब कोऊ बिदेसी रहै न बिदेसन ॥ चंदमुखी दृग तें अंसुवा ढुरि आनि परे कुच याही अंदेसन। मानो मयंक सरोजन तें मुकताहल लै लै चढावै महेसन ॥ ११८४ ॥

ज्यों त्यों रह्यो अब लौं जियतूं अब आयो बसंत कछू न बसैहै । संभु सुगंधित सीतल मंद समीरनि पीर गंभीर उठैहै ॥ क्यों ठहरैगो करैगो कहा जब कोकिला कूकि कै कूकि कूक सुनैहै। औरन तेरो फबैगो कछू बलि संग कुहूके तुहूं कढि जैहै ॥ ११८५ ॥

बैरी बसंतके आवत हीं बनबीच दवागिन सीप जरैंगी । जोगिन सी बनिहै बनमाल बियोगिन कैसें के धीर धरैंगी ॥ गुंजन वै अलि पुंजन की सुनि कुंजन कैलिया कूक करैंगी । सूल से फूले पलासन की डरियाँ डरपावनी दीठि परैंगी ॥ ११८६ ॥

आली सुनो बनमाली बियोग पलास के पुंजन को सुख भागो । पात सुखाय गिरे महि आनि लतान मै स्यामता को रँग रागो ॥ धीर धरे ठहरात न माधव मैन को जालिम जोर है जागो । भामिनी भौंन मे भागि चलो फिरि आगि उठैगी धुँवाँ उठै लागो ॥ ११८७ ॥

झूरि से कौने लये बन बाग ये कौने जु आँवन की हरि आई । कोइल काहें कराहति है बनं कौने चहूँ दिसि धूरि उडाई ॥ कैसी नरेस बयारि बहै यह कौन धौं कौन सो माहुर नाई । हाय न कोऊ तलास करे ए पलासन कौने दवारि लगाई ॥ ११८८ ॥

जब तें रितुराज समाज रच्यो तब तें अवली अलि की चहकी । सरसाय के सोर रसाल की डारिन कोकिल कूकें फिरें बहकी ॥ रसिया बन फूले पलास करील गुलाब की बास महा महकी ।

बिरहीजन के दिल दागिबे कों यह आगि दसों दिसि तें दहकी ॥ ११८९ ॥

ये ब्रजचंद चलो किन वा ब्रज लूकें बसंत की ऊकन लागी। त्यों पदमाकर पेखो पलासन पावक सी मनो फूँकन लागी ॥ वे ब्रजवारी बिचारि बधू बन बावरी लौं हियें हूकन लागी। कारी कुरूप कसाइनै ए सु कुहू कुहू कैलिया कूकन लागीं ॥ ११९० ॥

दे कहि मीरसिकारन कों इहिं बाग न कोइल आवन पावे। मूदि झरोखन मंदिर के मलयानिल आय न छाँवन पावे ॥ आये बिना रघुनाथ बसंत कों ऐबो न कोऊ सुनावन पावे। प्यारी कों चाहे जिआयो धमार तो गाँव मे कोऊ न गावन पावे ॥ ११९१ ॥

धूँधुर सी बन धूँम सी गावन गावन ताँन लगे नर बोरी। बौरीं लता बनिता भई बौरी सु औधि अध्याय रही अब थोरी ॥ बेनी बसंत के आवतहीं बिन कंत अनंत सहे दुख कोरी। ओरी घरें हरि आये न जो पहिलें हों जरों जरिहै फिर होरी ॥ ११९२ ॥

मद माती रसाल की डारिन पैं चढीं आनद सों यों बिराजती हैं ।कुल आनि की क़ानि करैं न कछू मन हाथ परायेहि पारती हैं ॥ कोउ कैसी करै द्विज तूँहीं कहै नहिं नेकौ दया उरधारती हैं । अरी कैलिया कूकि करेजन की किरचैं किरचैं किये डारती हैं ॥ ११९३ ॥

को बचिहै यह बैरी बसंत पैं आवत जो बन आगि लगावत । बौरतही करि डारत बौरी भरे बिष बैरी रसाल कहावत ॥ होत करेजन की किरचैं कवि देव जू कोकिल बैन सुनावत । बीर की सों बलबीर बिना उडि जायँगे प्रान अबीर उडावत ॥ ११९४ ॥

ऐसे विचारत हीं मति मेरी प्रबोधि कहै अखरा मन भाए । ह्वैहै कहा द्विजदेव जु लांहु इतो उर अंतर सोच बढाए ॥ राधिका जू के बिहार के काज सबै बिधि सो सुखमा उपजाए । नितही नितही के ए सघाती बसंत अपूरब बेख बनाय कै आए ॥ ११९५ ॥

चाहि है चित्त चकोर दवा श्रुति आपनो दोष परोसिनि लेहै । ए दृग अंबुज से अकुलाय कला

बिषि बन्धु की हाय अचै है ॥ ऐसी कसाकसी मे द्विजदेव अली अलि के गन गाइ सुने है । ह्वैहै सु कौन दसा तन की जु पै भौन बसंत लों कंत न ऐहै ॥ ११९६ ॥

आहि के कांपि कराहि उठी दृग आँसुन मोचि सकोचि धरी है । लै कर कागद कोरो लला लिखिबे कहं बैठी बियोग कथा स्वै ॥ ऐसे मे आनि कहूं द्विजदेव बसंत बयारि कढी तितही ह्वै । बात की बात मे बोरी तिया अरु पीत ह्वै पाती परी कर ते च्वै ॥ ११९७ ॥

आवतही हहराय हियो सुख अन्त कियोई हिमंत कुचाली । त्यों द्विजदेव या पांचै बसन्त की पीत करो सिगरो तन साली ॥ जारती ज्वालन होरी न क्यों लखि सूनो निकेत बिना बन-माली । सीत के अन्त बसन्त के आगम भावतो जोपै न आवतो आली ॥ ११९८ ॥

खेलत फागु सखीन के संग सों एक बढी फगुवा सुख पागी । मूठी गुलाल लिये रघुनाथ गई हरि पैं हिय मे अनुरागी ॥ प्यारे के हाथन सों छुटि कै पिचकारी की धार त्यों छाती सों लागी । नैन

नचाय चिते तिरछें मुसक्याय. पिछौंडी ह्वै पीछे कों भागी ॥ ११९९ ॥

बरजोरी तिया इहिं गोरी सबै गहि लाई गोबिंदही दोचन सों । वह खेलन फाग चली हँसिके सुख सों नवला दुख मोचन सों ॥ भरि अंजन आँगुरी बेनीप्रबीन किये समलोचन लोचन सों । जकि सी रही सो तकि सोचन सों कर ऊँचो न होत सकोचन सों ॥ १२०० ॥

या अनुराग की फागु लखौ जहँ रागती राग किसोर किसोरी । त्यौं पदमाकर घालि घली फिरि लालही लाल गुलाल की झोरी ॥ जैसी की तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंग मे बोरी । गोरिन के रँग भींजिगो साँवरो साँवरे के रँग भींजिगो गोरी ॥ १२०१ ॥

कल कंजन त्यौं पग ऊपर नूपुर हंसन की धुनि रूदन की । रँग दत्त अबीर की भीर मची सु भई छबि यों मुख मूदन की ॥ छकि होरी के खेलन खेलि थकी झलकै उपमा श्रमबुंदन की । बिलसै मनो रूप सिंगार भरी मुकतान फरी छरी कुंदन की ॥ १२०२ ॥

प्रात झुकाझुकी भेख छपाय के लै गगरी जल कों डगरी ती। जानी गई न किते कऊवार तें आनि जुरे जहां होरी धरी ती ॥ ठाकुर दौरि परे मोहि देखत भागि बची सु कछू सुघरी ती। बीर जो द्वार किवार न देऊंरी तौ हरि हारन हाथ परी ती ॥ १२०३ ॥

ताक छकी छबि सों री चली कहि होरी है पै नसगोरी गोपाल पै। सांवरो छैल छबीलो किसोर रह्यो रुचि सो भुनुनाइ के जाल पै ॥ आली सभी उर मूठ गुलाल की घाली लगी सो जगी पिय-भाल पै। कंचन बेल की लौंद पै लाल सो बैठो मनो उडि मंजु तमाल पै ॥ १२०४ ॥

लिये कर कंजन कंचन थार सजे तिन मैं नव मंगल साज। उडावहिं बीर अबीर गुलाल बिसाल रहे बहु बाजन बाज ॥ जमायो किसोर मनोहर राग भरी अनुराग सवांरि समाज। अली अल-बेली नवेली चली ब्रजराजे बसंत बंधावन आज ॥ १२०५ ॥

फाग के फूल भरे मनमोहन खेलत गोपिन तें रंग रागे। श्री वृषभानकुमारि के सांवरे गारी

दई मुरली सुर पागे ॥ दौरि उठीं बनिता सिगरी तक्लौं न मृदंगन के गन जागे । वै लकुटी लैं लता सी मुरी बहुरो फिर वै डफ बाजन लागे ॥ १२०६ ॥

सजसाज समाज सुहायो किये रहीं राजि मनोहर तामें भली । निकसी निज मंदिर मंदिर तें बिकसी जनु कंचन कंजकली ॥ कलगावें किसोर बहावें सुरंग रमावती गोकुल हू की गली । ब्रज बामें घनी रचना में सनी घनस्यामें बसंत बंधावे चली ॥ १२०७ ॥

खेलिये फाग निसंक है आज मयंकमुखी कहै भाग हमारो । लेहु गुलाल दुहूं कर में पिचकारिन रंग हिये महं मारो ॥ भावै तुमै सो करो मोहि लाल पै पांय परों जिन घूंघट टारो । बीर की सौं हम देखि हैं कैसे अबीर तौ. आखें बचाय कै डारो ॥ १२०८ ॥

कैसी है ठीठि लखो यह गोप की ओप भरी सिगरी ब्रजबाल सों । काहू की कानि न मानति हैं हठि ठानति है चपला पन चाल सों ॥ मारि गई तब की बढ़ि कै रघुनाथ घुमाय कै फूल की माल सों । लाल की फेट सों लैके गुलाल लपेटि गई अब लाल के गाल सों ॥ १२०९ ॥

खेलत होरी किसोरी जहां जिन पै रति रंभा रति गई बारि कै। सोधौं तहां सजिए हरि जाय जहां जनिए कोऊ ग्वारि गंवारि कै॥ संभु सरोज से पानि सुज़ान गहै पिचकारी गुलाल जो गारि कै। सो न खराब करैगी लला कमरी पर केसर को रंग डारि कै॥ १२१० ॥

केसर रंग महावर से सरसै रस रंग अनंग चमूके। धूम धमारन को पदमाकर छायो अकास अबीर के मूके॥ फागु या लाडिलो को तिहि मैं तुहो लाज न लागत गोप कहूं के। छैल भए छतिया छिरकै फिरो कामरी ओढ़े गुलाल के ढूके॥ १२११ ॥

ठाढ़ी रहो न डगौ न भगौं अब देखिहौं जो कछु खेलति ख्यालहिं। गावन दै री बजावन दै साजि आवन दै इतै नन्द के लालहिं॥ ठाकुर हौं रंगि हौं रंग सों अंग ओडिहौं बीर अबीर गुलालहिं। धूंधर मे धधकी मे धमार मे हौं धसि कै धरि लैहौं गुपालहिं॥ १२१२ ॥

ऐसे कढे गन गोपिन के तन मानो मनोभव भाय से काढे। त्यों पद्माकर ग्वालन के डफ

बाजि उठे गल गाजत गाढे ॥ छांक छके छल हाइन मे छिक पावे न छैल छिनो छबि बांढे ॥ केसर लै मुख भीजबे को रस भीजत से कर मीजत ठाढे ॥ १२१३ ॥

आई है खेलन फाग यहां बृषभानपुरा तें सखी संग लीने । त्यों पदमाकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नबीने ॥ कंचन की पिचकी कर मे लिये केसर के रंग सों अंग भीने । छोटी सी छाती छुटी अलकैं अति बैस की छोटी बडी परबीने ॥ १२१४ ॥

केसर रंग रंगी सिर ओढ़नी कानन कीने गुलाब कली हो । भाल गुलाल भऱ्यो पदमाकर अंगन भूखित भांति भली हो ॥ औरन कों छलती छिन में तुम जाति न औरन सों जु छली हो । फागु में मोहन को मन लै फगुआ में कहा अब लेन चली हो ॥ १२१५ ॥

फाग के घोम गोपालन ग्वालिनी कै एक ठानि कियो मिसि काऊ । त्यों पदमाकर झोरी झुमाइ सु दौरी सबै हरि पै इक आऊ ॥ ऐसे समै वह मीत बिनोदी सुने सुक नैन किये डर

पाऊ। लै हरें मूसर ऊसर. ह्वै कहूं आयो तहां बनि के बल दाऊ १२१६ ॥

चन्दकला चुनि चूनरी चारु दई पहिराय सुनाय सुहोरी। बेंदी बिसाखा रची पदमाकर अंजन आंजि समाज करोरी॥ लागी जबै ललिता पहिरावन स्याम को कंचुकी केसर बोरी। हेर हरे मुसक्याइ रही अंचरा मुख दै वृषभान-किसोरी ॥ १२१७ ॥

फाग मची बरसाने के बाग सखी समता कहि जाय न जाकी। रीझि रही लखि हौं रघुनाथ जु देख रही बहुधा चहुंघा की॥ बाल गुपाल पै दौरी गुलाल लै ऐसी लसी भरी रंग प्रभा की। चारु तमाल को संगम कों भई जंम बोलि मनो फल ताकी ॥ १२१८ ॥

फागु मची बरसाने के बाग में पूर रह्यौ थल तान तरंग सों। गोपबधू इत ठाढी गोपाल उतै रघुनाथ बढे सब संग सों॥ घूंघट टारि सखीन की ओट ह्वै प्यारी चलाई जो प्रेम उमंग सों। लागी तो मूठ अबीर की आय पै प्यारो अन्हाय गयो वहि रंग सों॥ १२१९॥

मूठी गुलाल भरे चली लाल के मारिबे कौं मुख पै सुख कौं चहि। गोकुलनाथ खेलार लई तब लोइन हूं भरि केसरि सों लहि ॥ जाय दई पहिले कुच पै पिचकारी की धार निहारि के हो कहि। आँचर ओडि चितै सतराय लजाय सखीन की ओट लई गहि ॥ १२२० ॥

फाग रच्यो नदनंद प्रबीन बजैं बहु बीन मृदंग रबाबैं। खेलतीं वे सुकुमार तिया जेन भूखन हूं की सकैं सहि तावैं ॥ सेत गुलाल की धूंधुर मै झलकैं इमि बालन के मुख आबैं। चाँदनी मै कबि संभु मनो चहुँ ओर बिराजि रहीं महताबैं ॥१२२१॥

फाग रची वृषभान के भौन दै गारिन ग्वारि चहूं दिसि कूकैं। आय जुरी उपजावति जे मन-मोहन के मन मैन की हूकैं ॥ चातुर संभु कहावत वे व्रज सुंदरी सोहि रही ज्यौं भभूकैं। जानी न जाति मसाल औ बाल गोपाल गुलाल चलावत चूकैं ॥ १२२२ ॥

खेलति फाग भरी अनुराग सुहाग सनी सुख की रमकैं। कंजमुखी कर कुंकुम लै पिय के मुख मीडन कों झमकैं ॥ भारी गुलाल की धूंधुर मै

ब्रजबालन के मुख यों दमकैं । साँवन साँझ ललाई के म्याझ मनो चहुँघा चपला चमकैं ॥ १२२३ ॥

दुहुँ ओर सों फाग मडी उमडी जहाँ श्री चढी भीर तें भीर भिरी । धधकी दै गुलाल की धूंधुर मैं धरी गोरी लला मुख मीडि सिरी ॥ कुच कंचुकी कोर छुवें छरकैं पजनेस फँदी फरकै ज्यों चिरी । झरपै झपै कौंधे कढै तरिता तरपै मनो लाल घटा मै घिरी ॥ १२२४ ॥

बिधु कैसी कला बधू गैलनि मै गसी ठाढी गुपाल जहाँ जुरिगो । पजनेस प्रभा भरी भामिन पैं घने फागु के फैलनि सों फुरिगो ॥ मुरकी रुकी बंक बिलोकत लाल गुलाल मैं बेंदा सबै पुरिगो । दिग मै दरस्यो है दिनेस मनो दिग दाह की दीपति मै दुरिगो ॥ १२२५ ॥

बाल झरोखा उघारि निहारि गुलाल लै लालन ऊपर डारें । एक उरोज लख्यो उघऱ्यो पिय तामै दई पिचकारी की धारें ॥ रीझ थकी सब री सजनी उपमा कबिं राम गुपाल बिचारें । मानहुं मैन उछार दियो निबुवा थिरकै अनुराग फुहारें ॥ १२२६ ॥

केसरि के पिचका परिपूरन पूर कपूर गुलाब के दोना । आई सबै ललना ललितादिक खेलन फाग निकुंज के कोना ॥ केसरिया पट में दृग दाबे गुलाल के बासन स्याम सलोना । मानो कहूं बिछुर्यो निज साथ तें सोनजुही में छिप्यो मृगछोना ॥ १२२७ ॥

बैस नई अनुराग मई सु भई फिरै फागुन की मतवारी । कोंवरे पानि रची मेहँदी डफ नीके बजाय हरै हियरारी ॥ साँवरे भौंर के भाय भरी घनआनंद सो न में दीसत न्यारी । कान्हबै पोषत प्रान पिये मुख अंबुज चै मकरंद सी गारी ॥१२२८॥

खेलत फाग गुलाल भरे इत ग्वालि उतै घनस्याम उमंग सों । कंचन की पिचकारिन धार खुली अलकें मुकतावलि अंग सों ॥ भीजि कपोलनि गो लगि अंचल कंचुकी चारु उरोज उतंग सों । केसरि रंग सों अंग रँग्यो की रही रँगि केसरि अंग के रंग सों ॥ १२२९ ॥

फागन के दिन बावरे ए इन मैं न गुसाँइनता निबहै है । काम दुहाई रही फिरि कै अब कोऊन काहू की कूक लहै है ॥ जाय कै रंगन सों भरि है

डरिहै नहीं नागर साँची कहै है। चोरी नहीं बरजोरी नहीं इहि होरी में कौनधौं कोरीरहै है ॥१२३०॥

फागुन में एक प्रेम को राज है काहे बेकाज करो हो चरावर। रूप उपासक थारेहि हैं हम कोऊ किंतेको करो ना सराबर ॥ नागर ने कछु-वेतें कहा जु गिऱ्यो छुटिकै छिति माहिं छराबर। क्यों सतराति हो गोरी किसोरी जु होरी मैं राजा औ रंक बराबर ॥१२३१॥

घेरि लिये घनस्याम चहूंदिसि दामिनि सी मिलि चेटक कै गई। पीत पिछोरी रही कर खैंचि कै बाँसुरिया हँसि छीनि कै लै गई ॥ प्रेम के रंगन सों भरि कै अरु फाग के रंगन मोहनी वै गई। केसरि सों मुख मिडि गोपाल को खंजन से दृग अंजन दै गई ॥ १२३२ ॥

खेलति फाग सुहाग भरी बृषभानलली भली भाँति उमंग सों। घुंघुट ओट किये रघुनाथ गई हरि पै छकि छूटि कै संग सों ॥ चौंकि तिरीछी चितै मुसकाय फिरी पिचकारी लगाय कै अंग सों। रीझि रहे वह भाव चितै अरु भीजि रहे वा रँगीली के रंग सों ॥ १२३३ ॥

होरी को रूप लख्यो ब्रजपौरि किसोरी को चित्त बिछोहन छीन्यो। दौरी फिरै दुरि देखिबे कों न दुरै मनओज मनोज को भीन्यो॥ केसरिया चक चौंधत चीर त्यों केसर नीर सरीर पसीन्यो। लाल के रंग में भीजि रही सु गुलाल के रंग में चाहति भीन्यो॥ १२३४॥

खेलत होरी किसोरी सबै पकरोरी धरोरी है सोर मचायो। मारपरै पिचकारिन की जहाँ लाल गुलाल सों अंबर छायो॥ केसर के घट कों कर लै गिरिधारन कों ललिता नहवायो। मानो महा मनि मर्कत कों पुखराज के संपुट बीच छपायो॥ १२३५॥

सखि होरी के ख्याल मैं गोरी किसोरी कि आज अनूपम रीति लही। पहिले पिय कों रँग बोन्यो तबै छबि साँवरी सूरति औरै गही॥ पुनि अंग गुलाल सों छाय गुपाल कों प्यारी जबै हँसि बातें कही। पहिले तुम लाल हुते कहिबे के पै लाल भए अबहीं हो सही॥ १२३६॥

फागु मैं फेरहू फैले फिरो हो कछू जिय जानत लाज को आयबो। हाहा खवाय नचाय कोछडे

है धन्य तिहारी ये बातें बनाइबो ॥ गावत गारी ठठोली मिलावत नागर क्यों जुवती न दबाइबो । रावरें खेल की जानी कला सब एती लला नहिं जीभ चलाइबो ॥ १२३७ ॥

आवत है नदगाँव गावते संग सखा डफ लीन्हे नवीने । रंगन सों भरिडारे सबै हम हाथ मरोरि कै चंगही छीने ॥ आपहु के कर बाँधि कै हार सों प्यारी के पाँयन पारे अधीने । कालिह की बात न भूलि कै नागर आजहू वेई भले ढँग लीन्हे ॥१२३८ ॥

धूम धमारि मची ब्रज में मिलि फेंकत रंग उडावत रोरी । आनि धऱ्यो बलबीर गुपालहि भामिनि भेख रच्यो बरजोरी ॥ मो बिनती विधि पूरी करो सुतबारी करौ जसुदा जु की छोरी । छोडि दियो छितिपाल ललाजु कों भोरही आइये खेलन होरी ॥ १२३९ ॥

घेरे रहैं घरहाँई घनी फिर बीते न फागु कछू कहि जायगी । लाल गुलाल की धूँधुर मैं मुख चंद की जोति कहूँ लहि जायगी ॥ प्रेम पगी बतियाँ न तें री छतियाँ न की लाज सबै बहि

जायगी । जो न मिली मनमोहनै . तौ मन की मनहीं मन मैं रहि जायगी ॥ १२४० ॥

बडभाग सुहाग भरी पति सों लहि फागु मैं रागन छायो करै । कबि लाल गुलाल की धूँधुर मैं चख चंचल चारु चलायो करै ॥ उझकै झिझिकै झहराय झुकै सखि मंडल को मन भायो करै । छतियाँ पर रंग परे तें तिया रतिरंग तें रंग सवायो करै ॥ १२४१ ॥

खेलत फागु लख्यो पिय प्यारी कों ता सुख की उपमा केहि दीजै । देखत हीं बनिआवै भलें रघुनाथ कहाहै जो बारने कीजै ।। ज्यों ज्यों छबीली कहै पिचकारी लै एक लई यह दूसरी लीजै । त्यों त्यों छबीले छकैं छबि छाक .सों हेरैं हँसै न टरै खरो भीजै ॥ १२४२ ॥

खेलि कै फागु फिरीं जब सों तब सों दृग देखिये मैर मढ्यो सो । आवत है मुख जो सों बकैं कछू खाहिं न पीवहिं भूत चढ्यो सो ॥ ऐसी दसा सब की रघुनाथ रह्यो तपि कै. अंग आगि दढ्यो सो । डारि गयो नंदलाल सखी ब्रजबाल पैं मानो गुलाल पढ्यो सो ॥ १२४३ ॥

लै बलबीर अबीर की मूँठि दई अलबेली ग्लली दृग ढूपर। त्यों "बनमाली" पैं आली चलावति लाली गुलाल की ह्वै रही भूपर॥ लै पिचकारी बिहारी तहाँ अधिकारी करी ब्रजगोपवधू पर। पीन पयोधर तें उचटी सो परी सब केसर लाल के ऊपर॥ १२४४॥

फागु री आयो सखी हम कों बिन पीतम मैन सलाक सी लागु री। लागु री मेरी गुहारि तिया कछु कीजिये बेग उपाय उजागु री॥ जागुरी राग चहूँ दिसि होत हैं काम हियें अति देत है दागु री। दागुरी मेरो तबै मिटिहै जब पीतम के सँग खेलिहौं फागु री॥ १२४५॥

लाल गुलाल बलाहक तें बरसैं झरी झोकन केसरि रंग की। त्योंहीं अनंत छटा छबि की चमकैं चपला त्यों मनोहर अंग की॥ लै गलबाँही अनंद कियो बरनों का दसा वह मैन उमंग की। भूलै नहीं हम कों सजनी वह फागु की खेलन साँवरे संग की॥ १२४६॥

गाय हैं लोग लोगाई सबै जबै आनँद कोटि हिये उपजाइहैं। जाइ हैं खेलन फागु सुहागन

भाग भरी अनुरागन छाइहै ॥ छाइहै बीर अबीर गुलालन दंपति अंगन रंगन नाइहैं। नाइहैं कान्ह जो बेनीप्रबीन तौ जात न प्रान बिलंब लगाइहैं ॥ १२४७ ॥

खेलति फागु सोहाग भरी सुथरी सुरअंगना तें सुकुमारि है। जैये चले अठिलैये उतै इतै कान्ह खडी बृषभानकुमारि है ॥ संभु समूह गुलाब के सीसन ढारि को केसर गारि बिगारि है। पामरी पाँवडे होति जहाँ तहाँ को लला कामरी पैं रँग डारि है ॥ १२४८ ॥

ए नँदगाव तें आये इहाँ उत आई सुता वह कौनहूँ ग्वाल की। त्यों पदमाकर होत जुराजुरी दोउन फागु रची इहिं ख्याल की ॥ दीठि चली उन की इन पै इनकी उन पैं चली मूठी उताल की। दीठि सी दीठि लगी इनके उनके लगी मूठि सी मूठि गुलाल की ॥ १२४९ ॥

भाल मे लाल गुलाल गुलाल सों गेरि गरे गजरा अलबेलो। यों बनि बानक सों पदमाकर आए जु खेलन फागु तौ खेलो ॥ पै एक या छबि देखिबे के लिए मो बिनती करि झोरिन झेलो।

रावरे रंग रँगीं अँखियान में ए बलबीर अबीर नां मेलों ॥ १२५० ॥

फागु के भीर अभीरन तें गहि गोविंदै लै गई भीतर गोरी। भाई करी मन की पदमाकर ऊपर नाई गुलाल की झोरी ॥ छीनि पितंबर कंमर तें सुबिदा दई मीडि कपोलन रोरी। नैन नचाय कह्यो मुसुकाय लला फिरि आइयो खेलन होरी ॥१२५१॥

बातैं लगाय सखान तें न्यारो कै आजु गह्यो बृषभानकिसोरी। केसरि सों तन मंजन कै दियो अंजन आँखिन मैं बरजोरी ॥ हे रघुनाथ कहा कहौं कौतुक प्यारे गोपालै बनाय कै गोरी। छोडि दियो इतनो कहि कै बहुरौं इतं आइयो खेलन होरी ॥ १२५२ ॥

फागुन मास बडो उतपात रहै निस बासर नींद न आवे। आपस माँझ सबै नर नारिं निरंतर चौगुन फाग रचावैं ॥ जो कुलनारि कहूँ सरमाय दुरैं तबहूँ गुरुनारि बतावें। या ब्रज में यह रीति बुरी घर मैं धसि लोग लुगाइन लावैं ॥ १२५३ ॥

ग्वाल छके मद तें सिगरे अगरी डग दै डफ ढोल बजावैं । आन तिया पति आन लगावत

गावत आनन आन लगावैं ॥ ताँ सरदार गुबिंद्र के ऊपर इंदुमुखी रंग की झरळावैं ।· हेरत इंदु अनूपम पै अरबिंद मनो मकरंद चुवावैं ॥१२५४॥

गोरी चलीं कहि होरी सबै तकि स्याम सखान लयो रँग मांगो। दोऊ दुहुँघाँ दबावत गावत नाचत राचत रूप सभागो॥ ताँ सरदार लएँ बलबीर अबीर चलावत हैं अनुरागो। लालन तें जनुजाल बिसाल प्रबालन तें ससि पूजन लागो ॥१२५५॥

लै पिचिकार सजे सरदार चलावत गावत दौर दरेरत। कीरतिजा नँदनंदन संग सजे अँग अंगन ये रँग गेरत॥ छूटत लालन के कर तें लगि कंठ गुलाल महा छबि घेरत। मानहु सीय सवासिन को मुख छोड हुतासन को हरि हेरत ॥१२५६॥

कर लै करबाल गुपाल निहार चलावत चोट सुदेसन तें। मुरकी दुरकी लुरकी न गनैं उर की थुरकी न अँदेसन तें॥ सरदार परै रँगधार घनीं कुच ऊपर आवत केसन तें। परिछै ससि सुच्छ महेस ससी जनु आप असेस फनेसन तें॥१२५७॥

ग्वालिनि ग्वाल रहें रँग ठान न जान परै इत ओ उत बारी। ताँ सरदार बिहारत कान्ह सुआन

जुरी बृषभानदुलारी ॥ दोऊ दुहूँघाँ रहे मुख हेर सकेर महा अति आँनद भारी ॥ मूंठ चलै उन की इन पै न चलै इनकी उन पै पिचिकारी ॥१२५८॥

थोरी सी बैस किसोरी सबै भरि झोरी अबीर उडाउती हैं। करताल दै ढोलन की धँधकी धुनि बांध धमार बजाउती हैं ॥ सरदार लिए मिथिलेस कुमारि उदार ह्वै भाग सराउती हैं। मुसिक्याइ के नैन नचाइ सबै रघुनाथै बसंत बँधाउती हैं ॥१२५९

फागुन में मधुपान समै पदमाकर आइगे स्याम संघाती। अंचल ऐंचो उचाए भुजा भरे मूठी गुलाल की ख्याल सुहाती ॥ झूठिहू दै झझकाई तहां तिय झांकी झुकी झझकी मद माती। रूसि रही घरी अधिक लों तिय झारत अंग निहारत छाती ॥ १२६० ॥

कैसी है ढीठी लखो ब्रज की रघुनाथ कछू गुन जात न गायो। खेलत फाग गली मे अचानक आज गुपालै कहूं गहि पायो ॥ कै सुधि गारी की औ पिचकारी की बैर लियो यहि भांति सोहायो। जो कछु भायो सो भेष बनायो औ जो मन आयो सो नांच नचायो ॥ १२६१ ॥

जाति चली एक गोपलली लखि मोहन औसर बूझि के होली। केसर सों भरि के रघुनाथें छिपाय लई पिचकारी अमोली॥ पाय दबे बढि पीछे तें आगे ह्वै लाय दई एती भांति तें भोली। ऊंचे उरोजन ऊपर धार सराक दै लागी छराक दै बोली॥१२६२॥

वह सांवरि गोरी सी आपुस मै होरी होरी कहे बतरावत हैं। वह कोऊ अबीर की झोरी भरैं कोऊ केसर घोरि मंगावत हैं॥ वह रोरी के लाल कमोरी भरै छिरकै हरि पै छिरकावत हैं। वह स्याम हसंत बसंत रमै नंदलाल गुलाल उडावत हैं॥१२६३॥

जुरि खेलें तिया हरि होरी भले बहु बीन मृदंग बजें रम कैं। कर कुंकुम लै रंग कंजमुखी पिय के मुख लावन को झमकैं॥ तहं लाल गुलाल के धूंघर मे बहु बालन की दुति यों दमकैं। जनु सावन सांझ ललाई के माझ चहूं दिसि तें चपला चमकैं॥ १२६४॥

पिय देखन केधों रमा उझकी मुख कुंकुम मंडित राजत है। निसि ती उर को अनुराग सोहाग छपा बधू को किधों भ्राजत है॥ किधों पूरनचंद सु छन्द उदोत मुकुन्द सबै सुख साजत है। किधों

प्राची दिसा नव बाल के भाल गुलाल के बिन्दु बिराजत हैं ॥ १२६५ ॥

गोरी किसोरी सु होरी सी देह में दामिनी की दुति देति बिदारै । नारि नवै सबनारिन की तब के नभ रूप अनूप निहारे ॥ भौंर सी भौंहन सोहि रही सुर के उर तें न टरै पल टारे । भीजे मनो मुख अंबुज के रस भौंर सुखावत पंख पसारे ॥१२६६॥

फाग मची सिगरे ब्रज मे नभ बादर लाल गुलाल के छाये । नागरि औ मनमोहन नागर सामुहें होत चितै मुसुकाए ॥ मान गयो छुटि मोद भयो मन दोऊ सनेह भरे बतराए । मूठी अबीर भरी मै सुगन्ध लगावन के मिसि सों लपट्टाए ॥१२६७॥

कुंज गलीन अलीगन में चली आवती ती बृषभानदुलारी । ताहि बिलोकि के रंग भरे छल सों छिपके रहे कुंजबिहारी ॥ कुंकुमा घाल्यो उरोजनि को तकि पानि सरोज सो ताहि निवारी । जानिहे बीर दसा उर आनि बजी वह एकही हाथ की तारी ॥ १२६८ ॥

खेलति फागु जो मेरी भटू इन सों बडे चाय तें बावरी तैं है । केसर के रंग की भरि सुन्दरि

डारति कामरी पै पिचकै है ॥ त्यों ब्रजचंद जू सांवरे गातनि नावै सुगन्धन की लवटै हैं ।ए मगुआ दधि माखन के ते कहो कहां तें फगुआ तोहि दैहै ॥ १२६९ ॥

लालहि घेरि रहीं ललना मनो हेम लता लपटानी समालहि । मालहि टूटत जात न जानत लूटत है रस रास रसालहि ॥ सालहि सौतिन के उर में चलरी उठि बेगि दै ताल उतालहि । तालहि देति उठि ततकाल लगाय गुपाल के गाल गुलालहि ॥ १२७० ॥

तालरी बाजत भूरि मृदंग छुटे बहु रंग भयो नभ लालरी । लालरी गुंजन की उर माल अबीर भरी भरि झोरिन सालरी ॥ सालरी होतं बिलोके बिना नंदनन्दन आज रच्यो ब्रज ख्याल री । ख्यालरी लोने कहा बरने मनमोहन नाचत दै कर तालरी ॥ १२७१ ॥

गांस गसीली. ये. बातें छिपाइये इस्क ना गाइये गाइये होलियां । गेंद बहाने नं बीर चलाइये सूधे गुलाल उड़ाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पाय हैं दाबे रहो दिल प्रीति की लोलियां ।

पाय परों ज़ीं डरो टुक नाग़र हाय करो जिन बोलिंयां ठोलिंयां ॥ १२७२ ॥

नीर सों भीजि रहे रंग राय पुरी गली आए गुलाल उलीच में । जाय सके ना इतै ना उतै सुरही घिरि कान्हरे वाल नगीच में ॥ ठाकुर केतो बनाव कियो पर दाव चलै ना सखीन के बीच में । रंग भरी रस माती गुआलि गुपालहि लै गिरी केसर कीच में ॥ १२७३ ॥

केसर रंग तिहारो भटू लखि लालची लाल अबीर लिये पर । कोस गुलाल लसे यहि औसर छाई सुबाल गुलाबन के झर ॥ हाथ गहे पिचका चकि तोहि सो कासी के राज गहो तुमहूं बर । गावत ताल सुराग सखी सब तान तरंगन सी रस को भर ॥ १२७४ ॥

गैल में गाय के गारी दई फिरि तारी दई औ दई पिचकारी । त्यों पदमाकर मेलि उठी इत पाय अकेली करी अधिकारी ॥ सौंहें बबा की करेहूं कहों यहि फागु को लेहुंगी दाव बिहारी । का कबहूं मझि आइहो ना तुम नन्दकिसोर वा खोर हमारी ॥ १२७५ ॥

सारी सुही सुथरी सजि सुन्दरि भूषन अंगन पाछे पेन्है हौं । चूरी जंगाली सुलाली औ कांली हरी दुबिया रंग बन्द लगै हौं ॥ बादला बांक जतूनी गुलाली की डाली भरी बगले लै चलै हौं । होरी की मांगबे को तिहवारी बिहारी तुमैं चुरिहारी बनै हौं ॥ १२७६ ॥

कांरी किनारी की सारी सजाय कै नौरंगिया अंगिया हू पेन्है हौं । कै कच कांगही काजर दै सजि भूषन बेंदी औ बिन्दी लगै हौं ॥ सीस पै गेंडुरी गागर पै लघु गागरी दै नगरी में नचैहौं । देखि हैं गोरी सुहोरी मे आज बिहारी तुमै पनिहारी बनै हौं ॥ १२७७ ॥

बाजूं बर्खा सु हैकल कंठा सुचंपा कली जुगुनूहूं जुरै हौं । चंदरहार गुही दुलरी तिलरी मुगा मोतिन माल गुन्है हौं ॥ पूरित सूत सुरंग सुतार लै रेसम की फ़िरिकी सी फिरैहौं । पाटी संवारि कै पाट पिन्है पटहारी तुमैं पटहारी बनै हौं ॥ १२७८ ॥

हिन्द बिलायत्त की सब चीजैं पेटारी सोहाग भरी सजवै हौं । कंगही दर्पन प्यांली सलाई सु गोली सुई डिबियाहू बिचै हौं ॥ मंजन कै मुख

माहं मिसि मिलि सुमन २ दै कै लोभै हौं। हे हरि होरी में आज देहातिन की सी बिसातिनि तोहि बनै हौं ॥ १२७९ ॥

चादर चूंदरी चोली चढ़ाय चहूं चव फेर फिरि सी फिरै हौं । सुन्दरताई सयानी सुखी सी मै सीवै की बस्तु नफी सी भरै हौं ॥ दीठि सडोर सुई सु अंगूठी हू कांति की कैंची सों काट करै हौं। लै गज लाज हरी अलगर्जिन दर्जिन कै तोहि सीने लगै हौं ॥ १२८० ॥

गरजै डफ झांझ सुझिल्लिन के गन बादर लाल गुलाल की झोरी । बहु बुन्दन की पिचकारिन सों भिजवैं हठि केहरि पीत पिछोरी ॥ कल कूजित कोकिल चातक के गुन गाय रिझावत फाग गनोरी । सजि कुंजन में मनमोहन सो जनु पावस पीतम खेलत होरी ॥ १२८१ ॥

होरी अहीर को सांवरो छैल सुगन्ध लिये वृष-भानुकिसोरी । सो री गयो यहि मारग ह्वै दये झांझ पखावज की घनघोरी ॥ घोरी गुलाल अबीर गुलाब मे बांह गहे औ करे बरजोरी । जोरी निहा-रत बारत प्रानन डारत रंग पुकारत होरी ॥१२८२॥

दई चूनरी रंग भिज़ाय सबै फिरि तापै गुलाल की झोरी करै। न करै गुर लोग की लाज कहूं झझकारेऊ आनि निहोरी करै॥ कहि धीरज भोरी सी जानि हमैं मग में अरिबे की न थोरी करै। इन बंकरी मोरी मरोरी सखी हरि देखिरी होरी में जोरी करै॥ १२८३॥

होरी रची ब्रजलाल लली घट कोटिन रंग अबीर भरोरी। रोरी मली हरि के मुख में धरिके पिचकी मुख वै झकझोरी॥ झोरी अबीर की घोरी गुपाल सुबाल गही झुकि पीत पिछोरी। छोरि तबैं हंसि दीन कही तुम जीति लियो हम हारि सहोरी॥ १२८४॥

फाग मची मे नचावत कान्हरे आपनहूं गति मन्द चलै लगी। नाचती गावती दै चिटुकी चहुं ओर कपोत सी ग्रीव हलै लगी॥ भाव के भेदन हीं सो भुलाय के आंय के कोऊ गुपाल गरै लगी। हाल दै और निहाल ह्वै ग्वालिनी लाल के गाल गुलाल मलै लगी॥ १२८५॥

दृग मूंदि के अंचल सो कहती पिचकारी हमारी लला चहि हो। अब घालि हौ तौ पछतैहो अजू

फिर रीझ कुरीझ कछू कहि हो ॥ कहि ठाकुर जो पै सयान सुजान सु दादि हमारी इती लहि हो । भरि आंखिन बीच गुलाल गयो अब लाल हहा रहि खेलहि हौं ॥ १२८६ ॥

होरी के औसर गोरी सबै मिलि दौरि लख्यो जब कान्हर आयो । ह्यां इनमें निज भावती देखि रह्यो मनभावन को मनभायो ॥ हाथ पसारे न सूझि परे तहं यों कछु लाल गुलाल उड़ायो । बाहन बांधि हिये लगि के हरि राधिका के मुख सों मुख छ्वायो ॥ १२८७ ॥

फागु रची बलबीर के द्वार खरे फगुआर दोऊ दल बारैं । साज सखी नट वा नटनागर बाजे मृदंग रबाब सितारैं ॥ रंग सहाब अबीर भरे छुटे कुंकुमा केसर की पिचकारैं । केसरियां सरियां पहिरैं पर छोहरियां छरियां गहि मारैं ॥ १२८८ ॥

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनि बाढ़ति जाति बियोग की बाधा । त्यों पद्माकर मोहन को तब तें कल है ना कछू पल आधा ॥ लाल गुलाल घलाघल मे दृग ठोकर दै गई रूप अगाधा । लैगई २ चेटक सी मन लैगई २ लै गई राधा ॥१२८९॥

चोंरिन गौरिन में मिलि के इत आई ही हाल गुवालि कहां की। को न बिलोकि रह्यो पदमाकर वा तिय की अवलोकनि बांकी॥ धीर अबीर कीं धुंधुरि में कछु फेर सो कै मुख फेर सो झांकी। कै गई काट करेजन को कतरे २ पतरे करि हांकी॥१२९०॥

बीर अबीर अभीरन को दुख भाखै बनै न बनै बिन भाखें। त्यों पदमाकर मोहन मीत के पाये संदेसन आठये पाखें॥ आये न आपनी पाती लिखी मन की मनहीं मे रही अभिलाखें। सीत के अंत बसंत लग्यो अब कौन के आगे बसंत लै राखैं॥१२९१॥

जानति हैं कि गए मथुरा चढ़ि मारन कंस छड़ावन ओलै। फाग के आवत जैसी दसा भई सो रघुनाथ सुनो मन जोलै॥ कै सुधि होरी के खेलन की भुलए सिगरी सुधि नन्द के टोलै। फेट गुलाल भरे पिचकारी लै बाल गुपालहि ढूंढ़त डोलै॥१२९२॥

केतिको २ बार सिखापन मैं दियो पै न हिए धरती हैं। है वह नायक श्रीरघुनाथ वृथा तिनसों भ्रम कै लरती हैं॥ देखो मनैबे को मेरेहू तेरेहू

आय कें पांयन पै परती हैं। कौन कथा कहिये इनकी गए फाग को ढाढ़स एं करती हैं ॥१२९३॥

मम प्रान प्रमान करो उरमें पुरमें सरसे सुरसालतहीं। सरदार चले न चले तब तो अब हालत का डफ हालतहीं ॥ हुरहारन हारन हार फिरैं पनिहारिन रोकत बालतहीं। पनपाल रहो दिन चार हहा चलि जैयो गुलाल के चालतहीं ॥१२९४॥

फाग बिलोकिबे को रघुनाथ गुपाल की जो दुचिती बहुतैहौ। चाहो चल्यो तौ चलौ चलै संग चले बिनु जानति हौं पछतैहौ ॥ पै इतनी कहे राखति हौं मन मै न अकेलोई मोद बसैहौ। कै सुख के दुख पैही बलाई ल्यों चेत कैं आज अचेत ह्वै ऐहौ ॥ १२९५ ॥

फागुन आयो सुहायो सबै रस कौतुक या ब्रज मे सरसै है। गोपिन के गन मैं चलिहौं तुम गोपिन मे मनमोहन ऐहै ॥ केसर सों रंगिहो उत्त के अंग लाल रंगीलो तुमै रंगि देहै। होरी के खेल मे मेरे मिलाप को आप से आप भले बनि जैहै ॥१२९६॥

बैठी हुती एक ठौर कठोर वै कोप की ओपन की अधिकाई। आय गये नँदनन्द तहां मिलि

फाग के रंग सों रंग सोहाई ।। एक की आंखन डाऱ्यो गुलाल निहाऱ्यो न वा फिरि जौलौं-तुं गाई। दूसरी को अरबिन्द से आनन चूमि लयो तब लों रसिकाई ।। १२९७ ।।

खेलि के होरी गये जमुनातट सोहंत बाग तहां सुखकारी । धाम जहां अभिराम बने तिन ओर तें दीठि टरै नहिं टारी ॥ रंग भरे अनुराग भरे छबि दंपति की मनमोहन बारी । बासर रैनि बिहार करैं नित कुंजन में बसि कुंजबिहारी ॥ १२९८ ॥

अनुराग गुलाल उड़ाय सबै नँदलाल हिए हरखावती हैं । गिरिधारन चोवा बन्यो रसराज समाज महा छबि छावती हैं ॥ भरि रंग सुढंग उमंग सनी पिचकारी दृगें बरसावती हैं । ब्रजराज कुमार के साथ धमार मैं मार की मार मचावती हैं ॥१२९९॥

खेलन मैं रस मेलन मैं गिरिधारन आजु बने रंग-राते । ता छन आय गयो अबला दल सेस प्रभा कहते सकुचाते ॥ आनन गोपातियान के मंडित बन्दन तें तहं यों दरसाते । केसर केसर के सरसीरुह बेस बने सब नैन सुहाते ॥१३००॥

रस खेल मैं रेल मैं रंगन की पिचकारिन कों कर

लै करसैं। गिरिधारन चन्दन कीच के बीच खेलार फंसे सुखमा सरसैं ॥ नँदनन्दन लै कर बन्दन कों अंग लाये हिये अतिहीं हरसैं। तब चारु अहीर बधूटिन के तन बीर बधूटिन से दरसैं ॥१३०१॥

लाल गुलाल समेत अरी जब सो यह अंबर ओर उठी है। देखत हैं तब सों तितही लखि चंद चकोर की चाह झुठी है ॥ डारत ही गिरिधारन दीठि अबीरन के कन साथ लुठी है। मोहन के मनमोहन कों भटू मोहन मूठ सी तेरी मुठी है ॥१३०२॥

केसर सों रंग चोवा से केस गुलाल सी है अधरान ललाई। कुंकुम से कर कुंकुमा से कुच नैन की सैन बनी पिचकाई ॥ बुक्का सी सारी लसै गिरिधारन टेसू सी चोली चुभी अधिकाई। गोरी गोपाल सों खेलत होरी सरूप धरे मनो होरी सुहाई ॥१३०३॥

चोवा के मेघ गुलाल की दामिनी बुक्का बलाका लसै अधिकाई। केसर सक्रसरासन चारु सुरंगन की बरसा बरसाई ॥ बाजनि बाजन की गिरिधारन गाजनि सो अति लागै सुहाई। आजु गोपाल ने होरी के बीच में पावस की परमा प्रगटाई ॥१३०४॥

खेलत खेल झमेलन मैं रस खेलंन खेल बढ्यो अन-मोला। सोहत है गिरिधारन मार हजारन बारन रूप अतोला॥ एक सखी तहं रामहि देखि कै सीस तें चन्दन को घट ढोला। मांनहु सुद्ध सतोगुन नै पहिऱ्यो धरि चाह रजोगुन चोला॥१३०५॥

फागुन की उजियारी एकादसी देति बिनोद सुमोद के पुंजें। गावतीं गीत बजावतीं नागरी ताल पखावज आवज रुंजें॥ तैसे फिरै अलि मैं गिरिधारन त्यों अलि बृन्द चहूं दिसि गुंजें। काम कलोलन मैं कलता करैं कालिंदी कूल कदंब की कुंजें॥ १३०६॥

गोप सबै मिलि गोकुल के करतारिन देत उड़ावत रोरी। चाले अनूप सिंगार किये गिरिधारन गारी सुनावैं अथोरी॥ चारहु ओर अबीर उड़ै ढरकावत केसर बोरि कमोरी। दारु बटोरि कै जोरि कै चारु लगावत होरी औ गावत होरी॥१३०७॥

ग्वाल अनेक सवांग किये संग गारी कहैं रस ढंग लपेटी। कोऊ लिये पिचकारिन कों कोउ केसर बुक्का अबीर अखेटी॥ बीथिन मैं ब्रंज की गिरिधारन तैसीं बनी उत गोप की बेटी। धाइ

कै होरी की धूंधर बीच धमारन की करैं धूम घुरेटी ॥ १३०८ ॥

जहं लालन की महि लाली परी हरी बुन्दन पन्नन ही की बटी। चपला सी गुलाल घटा में दिपै जहं दासी अनेक जराय जटी ॥ द्विजदेव घनागम भोरे तहां भरि फाग में गाइन कुंज तटी। सखि राधिका संग चले बनि भीजत ये कपटी लिये ये कपटी ॥ १३०९ ॥

ढोल बजावती गावती गीत मचावती धूंधुरि धूरि के धारन। फेट फते की कसे द्विजदेव जू चंचलता बस अंचल तारन ॥ औचक हीं बिजुरी सी जुरी दृग देखत मूँदि लये देखरावन। दामिनि सी घनस्यामहिं भेंटि गई गहि गोरी गुपाल के हारन ॥ १३१० ॥

इत ते बनि आई नई अवला उत ते मनमोहनऊ उमहे। लखि सांकरी खोरि बिथोरि गुलाल बिसाल दुहूं भुज जोरि रहे ॥ द्विजदेव अभूत भई यह ता छिन देखे बने पै बने न कहे। कसि बोरि के चाहत जौ लौं लला रस की सरिता मह आपै बहे ॥ १३११ ॥

तन सूधे सुभाय सिरीख सों कोमल मीजत मंजु भयोई चहै । श्रुति लाल गुलाल घटा ते मलीन सो आनन चन्द भयोई चहै ॥ द्विजदेव जू ऊक औ बीक हिये में गुपाल के फन्द परोई चहै । दृग बीर अबीर की चांदनी मे अरबिन्द लो मन्द भयोई चहै ॥ १३१२ ॥

लोल करे दृग गोल गुवालिनि दै करताल सुढोल बजावति । चूनरि चारु चुरी जु नरायन पायन पैंजनियां झमकावति ॥ अंग उमंग अनंग भई रंग छूटि छटा छिति पै छबि छावति । धावति धूम मचावति गावति लाल गुलाल उडावति आवति ॥ १३१३ ॥

लाल लयें पिचका कर में भए आप खरे सिय सामुहें आय के । तैसी बनी मुख की सुखमा विधु पूरन सीत निसा जनु पाय के ॥ पीत दुकूल कसे कटि में जिहि तें बिजुरी दबि जाति लजाय के । प्रेम सखी हिय में वह माधुरी राखत ज्यों निधि रंक चोराय के ॥ १३१४ ॥

भूखन भूखित संग सखा इत संग सखी सब कीने सिंगार है । को बरने तिन की छबि को बहु

रूप धरे बिलसे रतिमार है ॥ लीने उतै पिचका कर में इत तें बहु फूल की गेंद अपार है । प्रेम सखी सिय के पिय के ढिग ठाढे भए सब खेलन हार है ॥ १३१५ ॥

चोवन के चुरुवा इत तें अलि डारे गुलाल की मूठि अपार है । केसर रंग भरे सिगरे पिचकान की मानो रही जुरि धार है ॥ प्रेम पयोधि में जाय परे बहि के सिगरे सुख देखनहार है । प्रेम सखी न टरै रस मत्त इतै नृपजा उत राजकुमार है ॥ १३१६ ॥

फूल छरी तरवार चली उत तें पिचका भरि मारत तीर हैं । भीजि गई रंग तें सिगरी बिथुरी अलकैं न संभारत चीर हैं ॥ सस्त्रप्रहार सहैं सिगरी भट रोस भरे न गने तनपीर हैं। प्रेमसखी प्रमदाम्न मत्त खरे मनो घायल घूमत बीर हैं ॥ १३१७ ॥

गावत बालन राग सखी गलि भेद तें बाजन लागी मृदंग है । को बरने तिहि औसर को सुख छाय रह्यो स्वर ताल तरंग है ॥ राम सिया छबि ऊपर मैं बलिहारी करों रति कोटि अनंग है । प्रेम-सखी छबि दंपति की हिय में छहराय रह्यो वह रंग है ॥ १३१८ ॥

गोकुल फाग मची सजनी जिन्हि की सुखमा कहि जात न जोहै। भीजि रहीं ललना अरु लाल गुलाल छयो नभ मंडल सोहै ॥ ऊंचे उरोज अबीर सों मंडित भोडर संग अजानहुं मोहै ॥ मानो सुरंग घटा जुत चंद सु आनि गिरीस के सीस बसो है ॥ १३१९ ॥

फागुन मास की पूरनमासी भई सुखरासी जबै ब्रज गाँउ में। चंद की चाँदिनी चांदनी चारु तनी दिसि चारिहू ठाउहिं ठाँउ में ॥ गोप सबै इत तें जुरि कै गये ग्वालिनी आई उतै निज दाँउ में। फागु मची रघुराज तहाँ बरसाने के औ नँदगाँउ के गाँउ में ॥ १३२० ॥

फाबि रहे कटि फेटे कसे कर में लिये कंचन की पिचकारी। सीस में सूर से सोहैं किरीट लसैं तिमि बागे बने जरतारी ॥ रोरी भरी लिये झोरी सखा कटि पीत पिछोरी सुहोरी तयारी। गोप समाज में श्रीरघुराज बिराजि रहे बलदेव बिहारी ॥१३२१॥

साजि कै बरसाने तें आईं अलिँ किये खेलन फागु तयारी भली। तहं ठाढ़ी भईं धरि गोकुल की गली लै पिचकी दुनली तिनली ॥ तैन सारी

बिराजि रही अमली रघुराज मनौ बहु चांपकली।
इमि गोपलली प्रनरोपि चलीं बचि जैहै हली
नहिं छैल छली ॥ १३२२ ॥

बाजे तहां डफ ढोल उभै दिसि राग बहार में
गाय धमारी। ह्वैगो झिलाझिलि दोहुंन की चलीं
मूठी गुलाल की औ पिचकारी॥ सांवन सांझ सो
सोह्यो अकास अबीर की छाय गई अंधियारी।
केसरि कीच के बीच में भूले भ्रमै बलिराम औ
कुंजबिहारी ॥ १३२३ ॥

खेलतीं फाग फबीं अबला कमला सी अनेक
कलानि दिखावैं। लै पिचकी कहुं औचक आय
बिहारी के अंगनि रंग चलावैं ॥ जौलौ गुलाल
की मूठि भरैं रघुराज चलावन को हरि धावैं।
तौ लगि वै ब्रज की नवला चमकैं चपला सी
लला नहिं पावैं ॥ १३२४ ॥

बादले की ह्वै गई बसुधा तिमि गाठी गुलाल की
भै अंधियारी। बाजि रहे बहु बाजे सुहावन ह्वै रही
किंकिनि की झनकारी ॥ देखो परै नहिं नैनन सो
रघुराज भयो तहं यों भ्रम भारी। लालन धाय गहैं
लतिकान तमालन धाय गहैं ब्रजनारी ॥१३२५॥

गोकुल गाँउ के गोपन गोल सों आगू गोविंद कहूँ कढि आये। त्यों बरसाने की प्यारी लली इत जे निकसी सुख सिंधु नहाये॥ होत जुरा जुरी श्री रघुराज चलावन को चले मूठि उठाये। दोऊ रहे छबि मैं छकि कै ब्रजबाल गोपाल गुलाल बहाये॥ १३२६॥

लैकै अबीर की झोरिन को कर फूटि सखानि सों राम कन्हाई। धाय धसे ब्रजग्वालिन गोल में चारिहूँ ओर अबीर उडाई॥ धाई सबै गहिबे को अली जुरि केसरि की पिचकारी चलाई। चंचल तो चपला सो चमंकिगो गोपिका घेरि रह्यो बलराई॥ १३२७॥

कोई सखी तहँ बोली निसँकन संक करो हौं तिहाँरई बोरिहौं। गाय धमारि को धाय धरा पर ग्वालन गोलन हौं हठि फोरिहौं॥ तेरिये सौंह करौं रघुराज लगे पिचकारीन मैं मुख मोरिहौं। गोपिन भीर लै मेलि अबीर रंगे बलबीर के बीर को बोरिहौं॥ १३२८॥

धीर धरो न डरो न टरौ सब देखिहौं आजु जो खेलिहौ ख्यालै। गाइये गीत बजाइये बाज

बलाइये और संहाँमन बाले॥ आवन दे रघुराज इतै साजि ल्यावन दे संग ग्वालन लालै। गोपिन गोल गुलाल की गेरि कै घेरि कै हों गहि लेहौं गोपालै॥ १३२९॥

रोरी कि झोरी भरे ब्रजगोरी सु खेलतीं होरी जहां छबि छाई। आयो तहां सुख सों सनि कै बर बानक सों बनि कै ब्रजराई॥ जौलौं चलायो चहैं लखि कै उन पै भरि मूठि चहूँ कित धाई। तौलौं कियो सब को मुख लाल गोपाल गुलाल बिना मुसकाई॥ १३३०॥

मूठि गुलाल लै आलिन ते कढ़ि साँवरे पै चलि गोपकिसोरी। त्यों नँदनँदनहूँ उत धाय महा सुख छाय लइ कर रोरी॥ होत जुराजुरीहीं उमठे दोऊ खेले अनूपम प्रेम की होरी। हाथ दुहूँ के उठाये न उठे न रहे लिखे चित्र से नैनन जोरी॥१३३१॥

गहि केसरि रंग भरीं पिचकी सब बाल रसाल गुलाल लई। रघुराज बजावत बीन धमारि को गावत कान्ह पै जात भई॥ अति आनंद सों उतवोऊ खड़े जु डीठि भई अनुराग मई। जकि कै भयो सामरो बावरो सो बृज डाबरी बावरी सी ह्वै गई॥१३३२॥

आंजु सखी है कहा ब्रज में घरही घरं आनँद साज़त हैं। बन्दनवारं लगे लहरैं कदलीन के खंभ बिराजत हैं॥ अम्बिकादत्त जू चाह भरे पिचकारी लिये छबि छाजत हैं। धूम धमारन की धमकै धधकान भरे डफ बाजत हैं॥ १३३३॥

धरती धरती डरती पद कों घुघुरु नहिं नेकु बजावती हो। झुकी झांकती भौंह चलावती हो नकबेसरं झूमि झुमावती हो॥ कबिअम्बिकादत्तहि हेरि चितै छिपती सी हहा मुसकावती हो। कर मैं पिचकारी लिये किन कों तुम रंग भिगांवन आवती हो॥ १३३४॥

गई आज़ु हुती ब्रजबाट सखी सुकहा कहूं साध धरी की धरी रही। हरि आय अचानक धों कित सों मोहि अंक भरी मैं खरी की खरी रही॥ कबि अम्बिकादत्त के हाथ परी भरी झोरी अबीर परी की परी रही। लरकी लरीहार चुरी करकी कर की पिचकारी भरी की भरी रही॥ १३३५॥

आजु की बात कहा कहि हों मुख सों कछुहू कहि जात न प्यारी। साध सबै मन की मनहीं रही ऐसी कछू बिधि बात बिगारी॥ अम्बिकादत्त

जू जादू कर्‍यो जनु मैं अपनी सुधि हाय बिसारी। देखत ही मनमोहन को मुख हाथ सो छूटि परी पिचकारी ॥ १३३६ ॥

क्यों अठिलान लगे अबही तें सु आमन मौर दिखावन दीजिये। कोकिल कों कल पंचम तानि कै कामिन कों ललचावन दीज़िये॥ अम्बिकादत्तहु कों कबिता करि कै फगुआ कछु गावन दीजिये। आजुही तें हरि होरी मचावत फागुन तो भला आवन दीजिये ॥ १३३७ ॥

लाये हो चोआ कहा एहि सों मुख बास है सौ गुनो मेरो रसीलो। रंग दिखावत हो कहा मो पट यासों अहै छगुनो सो छबीलो ॥ अम्बिकादत्त जू मूठी भरे का दिखावत आनन हो गरबीलो। तेरी गुपाल गुपालन सों मम अंग है चौगुनो सो चटकीलो ॥ १३३८ ॥

गारी जुपै मुख एकहू काढिहो तो सगरे ब्रज सोर परैगो। नन्द जसोदहु कों नहिं छाडिहों मो तन जो दृग कोर परैगो॥ अम्बिकादत्त जू सूधी सुनो सुनिबे में कहा कछु जोर परैगो। छींटहू चूनर पै जो परी तो घरै घर मे लला घोर परैगो॥१३३९॥

होरी की बातनि के चलतै तुअ बोलनि क्यों लरजाय गई। अंग लता तुअ कंचन सी किमि हाय रोमञ्चन छाय गई॥ अम्बिकादत्त को देखत ही झुकि झांकती क्यों सरमाय गई। धूम धमारन की सुनतै अली सेद के बिन्दु नहाय गई॥१३४०॥

फेटे कसे कटि में चटकीले मजीले महीप लला हैं अनोखे। चौलड़े त्यौं मुकुताहल माल सुतारावली छवि छीने अदोखे॥ खेलन फाग सजे रघुराज सुराज कुमार महा चितचोखे। अंगनि अंग उमंग भये जिन जोहत होत अनंग के धोखे॥१३४१॥

देखि सखी सब राजकिसोरन चित्त के चोरन सो अनुरागी। बाजे बजावन लागी अनेकन गावन लागी धमार सुरागी॥ आये लला अब आये लला अब जान न पावैं सखान लै भागी। श्रीरघुराज को धाय धरो झुकि झारि कै झोरिन संगहि लागी॥ १३४२॥

कोइ गोरी कही कढ़ि कै न रुकौंगी जबै लगि आप को पाइहौं ना। मोहि आनि किसोरी की कै बरजोरी बनाइहौं छोरी बचाइहौं ना। तुम चोरी करी चित की रघुराज लला जो कहूं भगि जाइहौं ना। झिल झारि कै झोरी जु मोरो मुखै तो सिया सखी फेरि कहाइहौं ना॥ १३४३॥

सो सखि नागरि की सुन बात दियो हरि हेरि हरे मुसकाई। कोई सुजान सखा कह्यो नर्म, कहूं रघुबंसिन हार न पाई ॥ तूं कहे कैसे वृथा अरी बैन इते पिचकारिन की झरि लाई। है रघुराज सखा बिजई बिजें पाय के जैहैं निसान बजाई ॥१३४४॥

धाकर कंचन की पिचकी मुख मारत, श्याम मनोहर आकर। आकर गाल गुलाल मलैं नंदलाल नचै अरु मोहि नचाकर ॥ चाकर जान लियो हम को सरबोर करै रंग सों घर जाकर। जाकर क्यों न लख्यो सजनी रंग को उमड्यो बसुधा पै सुधाकर ॥ १३४५ ॥

जाति चली बृषभानलली हरि आय गए दुपटी मै छपाय कै। दे कुच पै पिचकारी छराक दै हों कहि ज़ात रहे हिय लाय कै ॥ गोकुल खीजि कै रीझि रही कछु चाह्यो कह्यो मुह तें सतराय कै। बोल कढ्यो न गरो गरुओ करि हारि सी हेरी न फेरि लजाय कै ॥ १३४६ ॥

होरी कों औसर हेरि लला हरएं ढिग आय गली मै लई गहि। ही छरकायल छूटि गई रघुनाथ छबीले न फेरि सकेलहि ॥ रीझ औ खीझ

दोऊ प्रगटी बृषभानलली इमि दूरि खरी रहि। नैन नचाए कछु कहिबे कों पै चाह्यो कह्यों नहिं आयो कछू कहि ॥ १३४७ ॥

ग्रीषम में तपै भीषम भान गई बन कुंज सखीन की भूल सों। घाम तें काम लता मुरझानी बयारि करैं घनस्याम दुकूल सों ॥ कंपित यों प्रगटे परसेद उरोजनि दत्त जू ठोढ़ी के मूल सों। द्वै अरबिन्द कलीन पै मानो झरै मकरंद गुलाब के फूल सों ॥ १३४८ ॥

है जलजंत्र के मोहनी मंत्र बसीकर सी करसी अवली सों। कै ससि के हित मोद भरो जलजात अकास है भूमि थली सों ॥ कै मुकताफल को बिरवा बिरच्यो यह फूल जले सरली सों। कंज सनाल तें कै मकरंद चल्यो तरराय कै भाँति भली सों ॥ १३४९ ॥

चंदन के चहला मैं परी परी पंकज की पँखुरी नरमी मै। धाय धसी खसखान नहाय निकुंजन पुंज फिरी भरमी मै ॥ त्यों कबि दत्त उपाय अनेक किये सिगरी सहि बेसरमी मै। सीतल कौन करैं छतियाँ बिन पीतम ग्रीषम की गरमी मै ॥१३५०॥

ऊँची अटा पैं लखैं घटा दोऊ दुहून की ह्वै रही रूप कला सीं । बेनी बडे बडे बुँदन तें एक बारहीं बारिध कीन हलासी ॥ चौंकि चली बिचली गच पैं लचकी करिहां कुच भार छलासी । त्यौं घन-स्याम गही अबला फिर कै गरैं लागि गई चपला सी ॥ १३५१ ॥

कबि बेनी नई उनई है घटा मुरवा बन बोलत कूकन री । छहरै बिजुरि छिति मंडल छ्वै लहरै मन मैन भभूकन री ॥ पहिरो चुनरी चुनि कै दुलही सँग लाल के झूलिये झूकन री । रितु पावस योंहीं बितावती हौ मरिहौ फिर बावरी हूकन री ॥१३५२॥

चमकैं चपला झमकैं जुगनूँ रव भेकिन को भय छावत है । पिक झिल्लिन को गन मोरन सों मिलि कै अति सोर सुनावत है ॥ कबि गोकुल प्यारी बिना गिरधारी कहौ अब कौन बचावत है । इहिं ओर लखो छिति छोर हि तें घन बोरत सो चलो आवत है ॥ १३५३ ॥

नई नोखी भई हो कहा तुमहीं उमही रहती मति दीन्ही दई । दई काहू की बीरी न लेति भटू तुम्हैं या बतियाँ कहीं को सिखई ॥ खई में न बडो

भयो कोऊ कहूँ छिन हीं अति हीं रिसि पूरी गई। गई भार मे नाहीं न नाहीं करो लखो कैसी घनेरी घटा उनई ॥ १३५४ ॥

रितु पावस स्याम घटा उनई लखि कै मन धीर धिरातो नहीं। धुनि दादुर मोर पपीहन की सुनि कै छिन चित्त थिरातो नहीं ॥ जब तें बिछुरे कबि बोधा हितू तब तें उर दाह बुझातो नहीं। हम कौन तें पीर कहैं जिय की दिलदार तौ कोऊ दिखातो नहीं ॥ १३५५ ॥

भूमि हरी भँई गैलें गईं मिटि नीर प्रवाह बहाव बहा है। कारी घटान अँधेरो कियो दिन रैन में भेद कछू न रहा है ॥ ठाकुर भौन तें दूसरे भौन लौं जात बनै न बिचार महा है। कैसे कै आवैं कहा करैं बीर बिदेसी बिचारन दोष कहा है ॥ १३५६ ॥

घूमि घटा घंन की गरजैं चमकैं चपला छित छ्वै फिरैं फेरी। सोर करैं चहुं ओर तें मोर जुरीं करैं कैलिया कूक घनेरी॥ गोकुल सीरो समीर लगें केहिं भाँति सों धीर रहैंगी धरेरी। मोहि बिना यह सावन की निसि भाँवन कैसे बितायहैं येरी ॥ १३५७॥

घेरि घटा उनई चहुँघाँ छिन एक मे बिज्जु छटा छबि छायहैं। श्रीपति राय कहा करबी अंरबी करिकै पिक चातक गाय हैं ॥ कारो पिछौरा उतारि हहा अब चूनरी लाल अनूप सोहाय हैं। हौं जो सुनि घरी चारिक मै तिया आजु तिहारो पिया घर आय हैं ॥ १३५८ ॥

घहरात घमंड केकी बलकैं लहरात सुहात बने बनए। उलहे महि अंकुर मंजु हरे बगरे तहां इन्द्रबधू गन ए॥ अस जानि किसोर समै रस मै कस होंहिँ न मैन मई मन.ए। चित चैन चए नभ आनि छए अब देखु नए उनए घन ए॥१३५९॥

देखि तमासो दिसा बिदिसा बिरही उर अंतर काँपति सी है। केकी पपीहन की बरबानि झिल्ली झनकार कों झांपति सी है॥ ठाकुर ठाढ़ी मनोहर पास कहै बर बाल निसापति सी है। काम कृसानु की डोरी चली चपला फिरैं मेघन मापत सी है॥१३६०॥

दिन रैनि की संधिन बूझिबे की मति कोक तमी चुरवान लगी। नदिया नद लौं उमडी लतिका तरु तैसे न पैं गुरवान लगी॥ कहु सेवक ऐसे से कैसे जियैं जेहिँ काम तिया उरबा न

लगीं। मति मोरिनी की मुरछान लगी गति बीजुरी की धुरवान लगी ॥ १३६१ ॥

सावन की रितु आई सखी पतिया न लिखी अजहूं मनभावन। भावन राग मलार मै भूपति रंग उमंग सों लागे हैं गावन ॥ गावन मे हरखैं सबही ब्ररखैं बरबुंद घटान की आवन ॥ आवन आज भयो नहीं पीव को जीव कों मैन लग्यो तरसावन ॥ १३६२ ॥

उठि देखरी बीर अटान अटा चढि बिज्जु छटा छहरान लगी। अति सीरी बयार सुगन्ध सनी द्रुम बेलिन पै फहरान लगी ॥ सखि औधि की आस धरीयै रही लखि कै छतियाँ थहरान लगी। यह कैसी अचानक आनि बनी री घटा घन की घहरान लगी ॥ १३६३ ॥

झर लाग्यो, झरी उघरै न घरी नदियाँ उमगी जलधारन सों। यह भूमि हरी मन लेत हरी धुरवा धुकि जात बयारन सों ॥ लखि बादर दादुर सोर करैं मिलि कूकत मोर. मलारन सों। हँसि दोऊ मिले गरबाँह गरें झुकि झूमें कदंब की डारन सों ॥ १३६४ ॥

सदाँ चात्रिक चाय सों बोल्यो करो मुरंवान को ओर सुहावन है। चमकै चपला चहुँ चाव चढी घनघोर घटा बरसावन है॥ पलको पपिहा न रहो चुप ह्वै अरु पौन चहूंदिसि आवन है। मिलि प्यारी पिया लपटे छतियाँ सुख को सरसावन सावन है॥ १३६५॥

घन घोर घटा उमडी चहुँओर सों मेह कहै न रहौं बरसौं। हरि राधिका दौरि दुरे दोऊ कुंज मै लागि रहे तेहि ठाँवर सों॥ अति सीरी बयारि बहै सजनी मुसुकाय तिया जु कहै बरसों। अजू आज को द्यौस न भूलिबे को यंह याद रहै बरसों बरसों॥ १३६६॥

नीर झलान को पोखत पीरन बीरन बूंद बिसारे हैं बानये। धूम बियोगिनि के घट कों घुटि भूमि पै झूमि रहे धुरवान ये॥ ज्यों झरते न रहैंगे सो नैन नदी नद सिंधु भरैंगे निदान ये। पीकहि पी कहि पापी पपीहरा पी गये जानि के पी गये प्रान ये॥ १३६७॥

आयो असाढ हहा अब्रही तैं चढी चपला अति चापि कै तूं दैं। ह्वै है कहा सजनी रजनी

दिन पापी कलापी मचाय हैं दूंदें ॥ स्याम बिना कल नाहीं परे अँसुवा न रहै भरि आँखिन मूंदें । ग्रीषम भान सी सोहत सान सी लागतीं बान सी बारि की बूंदें ॥ १३६८ ॥

चहुंओरन ज्योति मगावें किसोर जगी प्रभा जेवन जूटी परे । तेहिं तें झरि मानो अँगार अनी अवनी घनी इन्द्रबधूटी परे ॥ चहुं नाचै नटी सी जराव जटी सी प्रभा सों पटीसी ना खूटी परै । अरी येरी हटापटी बिज्जु छटा छटी छूटी घटान ते टूटी परे ॥ १३६९ ॥

अंगन अंगन माहिँ अनंग के तुंग तुरंग उमाहत आवें । त्यों पदमाकर आसहू पास जवासन के बन दाहत आवें ॥ मानवतीन के प्रानन में जु गुमान के गुंमज ढाहत आवें । बान सी बुंदन के चदरा बदरा बिरहीन पै बाहत आवें ॥१३७०॥

आयो असाढ भई अति गाढ गई सब रैनि पहारी सी ठाढें । कौन सुनै अरु कासों कहौं चहुँओर तें दामिनी नाखति बाढें ॥ भोरहीं तें करें कोकिल कूक सिरोमनि लेत करेजोई काढें । कामिनी के हनिबे कों मनो चमकी झमकी जमकी जम दाढें ॥१३७१॥

निसि नील नए उनए घन देखि फटी छतियाँ ब्रजबालन की। कवि गंगजू ये छबि छीन भई सुथरी दुति देखि तमालन की॥ दसहूं दिसि जोति जगामगी होति अनूपम जींगन जालन की। मनो काम चमकी चढ़ी किरचैं उचटैं कलधौंत के नालन की॥ १३७२॥

कूकैं कलापी न चूकैं कहूं झुकि झूकैं समीर की आन झकोरत। त्यों पपिहा पपिहा गपिहा भयो पीव को नाव लै हीय हिलोरत॥ पावस पीर अधीर नध्यावस घूंटैं घरा घट त्यों घन घोरत। बूंदैं बदाबदी बारिध लौं बढि बैरिनि आज वियोगिनि बोरत॥ १३७३॥

गरजी घनघोर घटा चहुंओर भयो बिरहा तब हीं सरजी। सरजी जु भए पिक दादुर मोर लिये रतिनायक की मरजी॥ मरजीजु उठी पिय की सुधि लै चपला चमकै न रहै बरजी। बरजी अब कौन रहै सजनी भयो पावस मो जिय को गरजी॥ १३७४॥

घेरि घटान तें आयो उनै धुरवान की डोरन लागि कशोरन। मोरन के गन सोर करैं चहुंओर

तें चातिक लागे चिकारन ॥ ऐसी समै छवि देखिबे कों द्विज तुहूं चलै किन दौरि अंगारन । झूलत हेम हिंडोरन मैं दोऊ कालिंदीकूल कदंब की डारन ॥ १३७५ ॥

झूलत दंपति नेह रंगे रस पुंज निकुंजनि हों बलिहारी । रंग भरे पिय दीनी सखी कल झूल झकोर कै रंचक भारी ॥ ढीली भई मोतियान की डोर सुकोर ह्वै हेर्‍यो लला तन प्यारी । आलीरी लाज भरी बिच घूंघुट कैसी लसी अँखियाँ अनि-यारी ॥ १३७६ ॥

चित चाय सों चारु हिंडोरे चढी सुख सावन गावन को सचरा । झझकी हुकि हूकन लेत परे कच ऊपर ब्यालिन के बचरा ॥ ललकै लखि बेनी प्रवीन कहै मनु मैन महीपति को कचरा । कुच कंचुकी मंदिर माहँ महेस ध्वजा फहरात मनो अँचरा ॥ १३७७ ॥

कंचन खंभ कदंब तरें करि कोऊ गई तिय तीज तयारी । हौंहूं गई पदमाकर त्यौं चलि औंचकाँ आइगो कुंजविहारी ॥ हेरि हिंडोरे चढाय लियो कियो कौतुक सो न कह्यो परैं भारी ।

फूलनवारी पिआरी निकुंज की झूलन है न वा भूल न वारी ॥ १३७८ ॥

रितु चाप न चाप लसै कर में जलधारन जार लसै सर कौ । कुहकार न मोर गुलाब करें भय कार कुलाहल भै भर कौ ॥ जुगनूं गन इंदबधून फिरें छित जात परै भट के घर कौ । हिय हारिन री बरखा न भटू यह संगर मैंन पुरंदर कौ ॥१३७९॥

घूमि घने घुमेरें घनघोर चहूं चढ़ि नाचत मोर अटारी । त्यों द्विजदेव नई उनई दरसात कदंबनं की छबि न्यारी ॥ चूनरी सी छिति मानो बिछी इमि सोहत इन्दबधू की पत्यारी । काहि न भावति ऐसी हंसी ठकुराइनियां हरियारी तिहारी ॥१३८०॥

होते रहे नव अंकुर की छबि छाह कछारन में अनियारी । त्यों द्विजदेव कदम्बन गुच्छन एई नए उनए सुखकारी ॥ कीजिये बेग सनाथ इन्है चलियै नव कुंजन कुंजबिहारी । पावस काल के मेघ नये नव नेह नई बृषभानकुमारी ॥ १३८१ ॥

उत कारी घटा इत में अलकें बकपंक्ति उतै इत मोति लरी । उत दामिनि त्यों तिय दंत इतै उत चाप इतै भौंह बंक धरी ॥ उत चातक तौ

पिय पीय रटैं बिसरै न इतै पिय एक घरी । उत बूंदें अगाध इतै अंसुआ बिरही घन होड़ाहोड़ परी ॥ १३८२ ॥

आज अटा चढिआई घटान में बिज्जुछटा सी बधू बनि कोऊ । देव तिया कबिं देवन केती पैं एते बिलास हुलास न ओऊ ॥ पूरब पूरन पुन्यन तें बडभाग बिरंचि रच्यो जन सोऊ । जाहि लखें लहु अंजन दै दुखभंजन ए दृगखंजन दोऊ ॥ १३८३ ॥

प्रान प्रिया मिलिहै मन तू न तरस न तरस न तरस न तरस । छिन एक छिमा कर मैंन हियें न सरस न सरस न सरस न सरस ॥ हासिसेक अरे बिरहा अब तौ न दरस न दरस न दरस न दरस । इत आवहि प्यारी घटा तब लौं न बरस बरस न बरस न बरस ॥ १३८४ ॥

न्यारे भये जब ते हम ते तुम हैं तब ते अतिही दुख भारे । सारे दिना उकलात खरे निस नींद न आतप लौं पचिंहारें ॥ कारे भमान बिलोकि ये बादर दादुर लौं दिलजान पुकारे । प्यारे तिहारे निहारे बिना दिन रैन चुचावत नैन हमारे॥ १३८५॥

मारे मनोज के बान हिये सु दियें दुख तैंने बियोग के भारे। भारे भये निसि बासर मोय चुचावत हैं अखियां जल धारे॥ धारें बिलोकि पयोद भमान सु आवत याद अनंद तिहारे। हारे हियो हहरात अबै दिलजान लगौ गरें आन हमारे॥ १३८६॥

झिल्लिन की झनकार बढी मदमाते मयूर महा धुनि टेरत। देत दोहाई मनोज बहादुर दादुर दूँद दिसान दरेरत॥ ऐसे में कैसी भई है नरायन नेक इतै न चितै हांसि हेरत। बिज्जु छटा उछटै री पटा सम देखि अटा तें घटा घन घेरत॥ १३८७॥

केकी की कूक पिकी की पुकार चहूं दिसि दादुर दुंद मचायौ। भूमि हरी चमके चपला अरु श्याम घटा जुरि अम्बर छायौ॥ ऐसे में आमन होय लछू अबला लिखि लालै संदेस पठायौ। बामन कौ पग भौ बिरहा सु अहो मन भामन सामन आयौ॥ १३८८॥

धामन कोऊ पठाऊं उतै उन तौ इहि औसर में कह्यो आमन। गामन एरी लगे मुरवा धुरवा नभमंडल में लगे धामन॥ छामन जोगी लगे शिवलाल सु भोगी लगे हैं दसा दरसामन।

तामन लाग्यो बियोगिन कों तन सामन बीर लगे बरसामन ॥ १३८९ ॥

श्रावन पूरन मास भए यह कौन लला चित में अबिलाखी। छोडत प्रानप्रिया अपनी परभूमि तका-वन कों मति माखी॥ ए सरदार विचार करो किनको सुध सोध सबै सुचि नाखी। साखी दै देवन को कर मैं घर राखत हैं पर की बरराखी ॥१३९०॥

हैं धुरवा मुरवान कहूं पुरवान कहूं बर बीज न लागी। छत्र लगाए महूं सँग मे यहि कौतुक में मति छीजन लागी ॥ री बलिजाति न जाति कही सुनि सेवकहू न पतीजन लागी। ये घनस्याम अनोखे नए बृषभानसुता लखि भींजन लागी ॥१३९१॥

दोऊ अनंद सों आँगन माझ बिराजे असाढ की साँझ सुहाई। प्यारी के बूझत और तिया को अचानक नाम लयो रसिकाई ॥ आयो उनै मुह मेह सों कोहनि त्यों सुरचाँप सी भौंहैं चढाई। आँखिन तें गिरे आँसू के बुंद सो हाँस गयो उडि हंस की नाई ॥ १३९२ ॥

औध के आस गोपाल के पास चली बन कों निसि जाम गए द्वै। एते मै मेघ अकास मे आय

कै छाय दिसान अंधेरी लई च्वै। पायबे कों पथ ऐसी समै रघुनाथ की सोंह सुनो सुख सों भ्वै। अंग के संग अभूषन जाल सों आपुही बाल मसाल गई ह्वै ॥ १३९३ ॥

सौंमरी सारी सखी सँग साँमरी साँमरे धारि बिभूषन ध्वैकै। त्यौं पदमाकर साँमरेई अँग रागनि आँगी रची कुच द्वैकै ॥ साँमरी रैनि मै साँवरियै घहरै घनघोर घटा छिति छ्वैकै। सामरी पामरी की देखुही बलि सामरे पै चली सामरी ह्वैकै॥१३९४॥

छाय रह्यो तम कारी घटान यों आपनो हाथ पसारि लखै को। अंग रचे मृग के मद सों मनि-मर्कत भूषन साजि अँकै को ॥ नील निचोलन की छबि छाजति त्यौं भ्रमरावली सों मग छेकै। सावन की निसि साहस कै निकसी मनभावन के मिलिबे को ॥ १३९५ ॥

सामन आमन हेरि सखी मनभामन आमन चोप बिसेखी। छाये कहूं घनआनंद जानि सम्भार की ठौर लै भूल बिसेखी ॥ बूंदे लगें सब अंग उदौ उलटी गति आपने पापन पेखी। पौन सों जागति अग्नि सुनीह्वि पै पानी सों लागति आगि न देखी॥१३९६॥

चहुंओर उठीं घनघोर घटा बन मोर करैं सखि सोर खरे । ब्रज ओर निहारि निहारि तिया कहि बैन इतै दोऊ नैन भरे ॥ आवत नांहिन लाज तुम्हें फटि जाहु न पापि हो प्रान अरे । जिन बीच न हार परे कबहूं तिन बीचन आज पहार परे ॥ १३९७ ॥

लाग्यौ असाढ सबै सुख साजन मो जिय में बिरहा दुख बोई । सामन में सब केलि करें मैं अकेली परी सँग साथ न कोई ॥ कैसें जियों अब ए सजनी रितु पावस में घनस्याम बिगोई । कौन सी चूक परी बिधना बरसात गई बर साथ न सोई ॥ १३९८ ॥

लागे असाढ सबै घर आवत देस बिदेस रहै नाहिं कोई । मानस की कहियै जु कहा पसु पंछी सबै बस काम के होई ॥ कोरी सखी मुखमोरी हंसै यह पांवस देखि तिया रति जोई । कैसें ये प्रान रहें घट में बरसात गई बर साथ न सोई ॥ १३९९ ॥

पीतम गौन किधौं जिय भौंन कि भारुक भौंन भयानक भारौ । पावस फूल की पावक सूल पुरंदरचाप कि सुन्दर आरौ ॥ सीरी बयारि किधौं तरवारि है बारिद बारि कै बान बिसारौ । चातक

बोलं की चोट चुभैं चित इंदबधू के चकोर कौ चारी ॥ १४०० ॥

बरस्यौई करो हित प्रीतम कौ उर आलिन कौ हरख्यौई करौ। हरख्यौई करौ घन देखि सखी धुनि दादुर की सरस्यौई करौ ॥ सरस्यौई करौ सरस्रोत भमान भलें बिरही तरस्यौई करौ। तरस्यौई करौ जिय सौतिन कौ नित ये बदरा बरस्यौई करौ ॥ १४०१ ॥

कूंजन दै कल कोकिल कूक पपैयन सोर मचामन दैरी। गामन दै मुरवान अरी धुरवा नभ मंडल छामन दैरी ॥ आलिन के गन को बरजे जिन पावस रश्क सुनामन दैरी। अंक में जौ मन भामन तौ घन सामन के बरसामन दैरी॥१४०२॥

धुरवा न धुकौ तिहि भांति गुलाब जथा दुखदानिहु ते तबरी। झुरवाय गये जुगनूं गनहूं धुरवाय गये कबहू कबरी ॥ दुरवाय गये दुर दादुर बावर बादरवा बरसे तबरी। उर बालम सोहति हौं पिय के मुरवान करें सुरवा अबरी ॥१४०३॥

दादुर चातक सोर करौ किन सोर सुहागन कौ भैरि हैं। नाह तैंही सोई पायो सखी सोहि भाग

सुहागहु कौ बर है ॥ जानि सिरोमनि साह जहाँ ढिग बैठ्यौ महा बिरहा हर है। चपला चमकौ गरजौ बरसौ घन पास पिया तौ कहा डर है ॥ १४०४ ॥

चौंक उठी चपला छन मैं घनघेरि चहूँदिस तें घुमरे है। छोर दुहू भरि कै सलिता बनिता सुरँगी चुनरी पहिरे है ॥ दादुर मोर चकोर सदा गति कोकिल छेद हिये मैं करे है। प्यारे सुजान बिना कबि रांम सु कैसे असाढ के द्योस परे है ॥१४०५॥

बैठी अटा पर औध बिसूरत पाये सँदेस न श्रीपति पीके। देखत छाती फटै निपटै उछटै जब बिज्जु छटा छबि नीके ॥ कोकिल कूकैं लगै मन लूकैं उठै हिय हूकैं बियोगिनि तीके। बारि के बाहक देह के दाहक आये बलाहक गाहक जीके ॥१४०६॥

पपिहा की पुकार परी है चहूँ बन मैं गन मोरन गावन के। कहि श्रीपति सागर से उमगे तरु तोरत तीर सुहावन के ॥ बिरहानल ज्वाल दहै तन को छिन होत सखी पग बावन के। दिन गे मनभावन आवन के घहरान लगे घन सावन के ॥ १४०७ ॥

पारथ को धनु घूमि गयौ बरम्यौ घनघोर चहूँ

दिसि ते ज्यौं । लंकपतीहूँ उतारि धरी धनु टारि धरी रघुबीर बली त्यौं ॥ एकईहै रस बात नई ये जू सालत प्रान अचंभ एही यौं । बैरी मनोज के हाथ रही बरषारितु ये री कमान चढी क्यौं ॥१४०८॥

बरसैं जुरि कै अति कारी घटा लखि बातन आवत है गरसैं । गरसैं अब चाहत है बिजुरी बन के खग देखि सभै हरसैं ॥ हरि सैं कोउ जाय कहैं बतियाँ बुँदियाँ तन लागत है सरसैं । सरसैं छबि साँवरो की कबिराम घटा अरि कै जुरि कै बरसैं ॥१४०९॥

पानिय मोती मिलाय पुही गुन पाट पुही सो जुही अभिलाखी । नीके सुभायक़ रंग भरी हित जोति खरी न परै कछु भाखी ॥ चाह लै बांधी है प्रीति की गाँठ सो है घनआनँद जीवन साखी । नैनन पान बिराजत जान जो रावरे रूप अनूप की राखी ॥ १४१० ॥

है घनघोर घने घहरात सो मोर सुनि हहरात हिया है । कौन करै मनसा धर को रस भीजबे की भईभीत भिया है ॥ काम के काज इलाज इहै बिन काज की और सबै बतिया है । पावस मै सुख सोइ लहै जेहि की रतियां छतिया छतिया है ॥१४११॥

झरु है झहरान झकोरन हैं दुरु है कहि दादुर दूदन को। बरही करही मिलि सोर महा भय नेकन दामिनी कूदन को॥ ब्रजराज बिचारत भीजेगी राधिका कुंजन कोनन मूँदन को। अपने कर तानत कामरी कान्ह जितै भर जानत बूँदन को॥१४१२॥

बरसै घन औ चमकै चपला सुख दंपति के हिय में सरसै। सरसै पिक चातक सब्द प्रवीन रु काम बियोगिन कों दरसै॥ दरसै सब ओर घटा गज सी घर मध्य पिया सु प्रिया बरसै। बरसै बिरहानल एक घरी बिरहीन को एक घरी बरसै॥ १४१३॥

चढि चारु अटा पै घटान बिलोकत साथ सखीन के गाय रही। दिजदेव जू औचक दीठि कहूं मनभावन ऊपर जाइ रही॥ लखि लालन के कर चंपकली गहि चंपकली सकुचाय रही। धरि और ई की जनु देह धरीक दरीचिका मे मुरझाय रही॥ १४१४॥

है धुरवा धुरवारे अली दिजदेव चहूं दिसि दौरत ह्वैहै। त्यौं मनमत्थ सखा पैं सिखी मनमोहनऊ को बिलोरत ह्वैहै॥ पावस काल कराल हहा छिन

एकहू संग न छोडत ह्वैहै । फूल से वे अंग पीऊ के हाथ घनी घन चोटन ओडत ह्वैहै ॥१४१५॥

कालिंदी कूल कदंब की डारन कूजत केकिन के गन एखैं । तुंग तरंगित त्यों जमुना तहं तामहं सोर करै बहु भेकैं ॥ मंदहि मंद सुगाजत है घन राजत बूंद महीन अलेखैं । बल्लभ राधिका स्याम तहां सुभ स्याम घटान अटा चढि देखैं ॥१४१६॥

नीर निरंतर नारिन माँझ गुलाब कहै रमिकै सुख पावै । पीव पुकारत हैं खग जीव अज़ीभन को गन सोर मचावै ॥ बूढन के अँग में रँग होत सिखंडिन को मन मैंन जगावै । बालन बालम सों करि मान कहाँ यह काल गयो फिरि आवै ॥१४१७॥

खग जात उडे बिदिसो दिस मै मग पावत ना जहँ कूक जगी । सब आकजवास झुराय गये जरि नारि पुकारत पीव पगी ॥ धर माँझ गुलाब अँगार परे भरि अंबर में चिनगी उमगी । अब धीर धरै उर का बिधिरी जलधारन भीतर लाय लगी ॥ १४१८ ॥

बन बागन में गन जें गन है घन आँगन में तनताप करै । बस मीर मवासन माँझ गुलाब

अकास बकावलि कोपि लरैं ॥ धंसि आवत हैं धुरवा घर मैं लखि बीरबधू अति जीव जरैं । बिष धार भरी दसहों दिसरी अब क्यौं करि कै उर धीर धरै ॥ १४१९ ॥

धुरवा धुकि आवत भूमि तऊ झुरसायन जीतन हू तरकैं । मुरवा सुरवा सुनि श्रौन रहैं चुप चाप न चोट कछू खरकै ॥ नहिं बीरबधू बकजाल गुलाब जरा जुग नैनन मैं करकै । अब का करिये उपचार भटू जलधारन तैं उर ना दरकै ॥१४२०॥

झरनाहिं बराबर बान जुरे बक नाहिं लगी पर ऊपर है । जुगुनू गन बूढन एकन आंगि परैं भिरि भालन को भर है ॥ मुरवा अरु चातक दादुर सोरन जंतु कुलाहल को गर है । बिरही बनजीवन के बध कौं बरखा न सखी सर पंजर है ॥१४२१॥

घनघोरन घोर निसान बजैं बगुलान धुजा गन खेचर को । चपलान गुलाब कृपान कटी जलधारन ही झर है सर को ॥ धुनि दादुर चातक मोरन की न कुलाहल है अरि के घर कों । धरि धीर हिये बरखान भटू गिरि ऊपर कोप पुरंदर को ॥१४२२॥

बक मारनही दृग बारि परैं धुरवान रुमावलि

ठाकर की । यह मौंरन को नहिं सोर गुलाब अभै कर वानि दया कर की ॥ नहि बूढ प्रजा अनुरांग रँगी जलधारन पाल चराचर की । जनि सोच करै बरखांन भटू धर ऊपर प्रीति दिवाकर की ॥१४२३॥

बक बीरबधू जुगुनू सुरचाँप सबै सुख के सरसाँवन भे । मुरवा गन दादुर चातक सोर गुलाव कहै हित जावँन भे ॥ बर बापि तड़ागनि बान नदी नद नारन के जलपाँवन भे । घर आवत ही मनभाँवन के घन सावन के मनभाँवन भे ॥१४२४॥

देखैं अटा चढि दोऊ घटा द्रग लागे दुहूनि सों प्रीति लही है । दै पटयो कुसुमी रंग की पटयो पर प्रीतम प्रीति कही है ॥ चूनो मिलैं हरदी रंग रोचन प्यारे कुमार पढायो सही है । बाढत रंग है एकतैं संगही संग भये बिन रंग नहीं है ॥१४२५॥

बरसै बन कुंजन पुंज लता सिक मंजु मयूरन को दरसै । मधु घोर किसोर करैं घन ये चपला चल चारु कला दरसै ॥ अलि हो बल तूं चल बेगि हहा उत तो बिन प्रानपिया तरसै । उमडै ढुमड़ै घुमडै घन आज मिहीं बुंदियांन मंडो बरसै ॥१४२६॥

धीर घंटा घहरैं नभमंडल तैसिय दामिनि की

दुति जागत । धावत धूर भरे धुरवा मुरवा गिरि शृङ्गन पै अनुरागत ॥ फैली नई हरियारी निहारि संजोगिन के हियरा अनुरागत । रीति नई रितु पावस में ब्रजराज लखे रितुराज सों लागत ॥१४२७

झूमि रहे घन घूमि घने तलि बोरत भूमि मनो चहुँघा घिरि । है अपसोस न रोस न वारौ बिन हौंस लता रहि रूखन सों भिरि ॥ बेनी पपीहन मोरनहूं हहरानन ढूंढि करैं बहुते फिरि । ज्यों डरपै तड़पै बिजुरी परै काहू बियोगिनि पै न कहूं गिरि ॥ १४२८ ॥

भावती, जो पिय की बतियां सखि सालति हैं उर सूल सी बोई । घोरघटा बिजुरी चमकै तिसरे पपिहा पिय पीय रटोई ॥ भौन भनै भ्रम भामिनि को लरजै छतियां तन काम बिगोई । स्वासन स्वास उसासत हैं बरसात गई बर सात न सोई ॥१४२९॥

कांहि को रूसति पावस [illegible] ...तनि नोरि न को[illegible] ...। पौन लगे[illegible]

बहु फूलें कदंबनि कुंजन में अरु भावतो पौन बहै नितमैं । बरजै जनि कोऊ मयूरन कों गरजैं घन आपने ही मतमैं ॥ सिवलाल भयो मनभायो जितो अब और करौंगी तितौ नितमैं । बरसाइत में घर आइ गये बडे भाग भटू बरसाइत मैं ॥१४३१॥

मुख चंद मनोहर हांस छटा छबि पुंज मिले छिति पै छहरैं । द्रिग खंजन खेलैं सरोज कलीन उरोजन ओप लखें लहरैं ॥ गति हेरि मरालन की मनसा हठि मानसरोवर में हहरैं । छिति-पाल बिकास बनो पट में घट सारद थान थकी थहरैं ॥ १४३२ ॥

पिय देखत मानो रमा उझकी मुख कुंकुम रंजित भ्राजत है । रजनी उर को अनुराग यहै किधौं मूरतिवंत बिराजत है ॥ किधौं पूरनचंद्र सु छंद उदोत मुकुंद सबै सुख साजत है । किधौं प्राची [illegible] ाल के भाल गुलाल को बिंदु

[illegible]३ ॥